अमूल्य शास्त्र दानदाता

स्व. राजा बहादुर लाला सुखदेव सहायजी, जौहरी

लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी

मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री सुखा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य श्री तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने शुभ भाव से महा परिश्रम से हैदराबाद जैसा बड़ा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व परोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैदराबाद में हुए इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे

भिक्षु अमोल ऋषि

उपकारी महात्मा

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्य पाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज!

आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आप के परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा

दास अमोल ऋषि

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर श्री नागचन्द्रजी महाराज !

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचीन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय२पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेमेंही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के आभारी होंगे

शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया और ऐसा सरल बनादिया कि हर कोई हिन्दी भाषा सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तले दबे हुवे हम आप के बडे आभारी हैं

सबकी तर्फ से

सहायक मुनिवरम

अपनी छती ऋद्धि का त्याग कर हैदराबाद सीकन्दराबादमें दीक्षा धारक बाल ब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाको बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोप चार का संयोग मिला दो पहर का व्याख्यान, प्रश्नोत्तर आदि कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतना शीघ्रता से सरलता पूर्ण हुवा इस लिए इस कार्य पहले उक्त मुनिवरों का भी बड़ा उपकार है

— ज्ञाता प्रसाद

और भी-सहायदाता

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहन लालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी, तपस्वीजी माणकचन्दजी, कवि वर श्री अमी ऋषिजी, सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी व श्री नथमलजी वे श्री जोरावरमलजी कविवर श्री नानचन्द्रजी मधार्थिनी सतीजी श्री पार्वतीजी गुणज्ञ सतीजी श्री रंभाजी योगजी सर्वत्र भंडार मिला सरदारमलजी कनीरामजी बहादुरमलजी बाँठीया, भीकनजी भंडार, कुचेरा भंडार, इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं

— सुखदेव सहाय ज्वालाप्रसाद

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दृढ़धर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी।

आपने साधु सेवा व और ज्ञान दान जैसे महा लाभके लोभी बन साधुमार्गीय जैन धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने का रु. २००००, का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नहीं होते भी आपने उस ही उत्साह से काम को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों की गौरव दर्शक व परमादरणीय है।

सोवासा (काठीयावाड) निवासी धर्म प्रेमी कार्यदक्ष कृतज्ञ मणिलाल शिवलाल शेठ। इन्होंने जैन ट्रेनिंग कालेज रतलाम में संस्कृत प्राकृत व अंग्रेजी का अभ्यास कर तीन वर्ष उपदेशक रह अच्छी कौशल्यता प्राप्त की इन से शास्त्रोद्धार का कार्य अच्छा होगा ऐसी सूचना गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज से मिलने से इन को बोलाये इन्होंने अन्य प्रेस में शुद्ध अच्छा और शीघ्र काम होता नहीं देख शास्त्रोद्धार प्रेस कायम किया और प्रेस के कर्मचारियों को उत्साही कार्य दक्ष बना काम लिया तैसे ही भाषानुवाद की प्रेसकोपी बनाइ यद्यपि यह माह पगार से रह थे तथापि इन्होंने इस कार्य की सेवा वेतन के प्रमाण से अधिक की इस लिये इनका भी धन्यवाद करते हैं

श्री स्थानांग सूत्र की प्रस्तावना

श्रीवीर जिन नाथ, नत्वा स्थानांगकातिपयपदानां॥प्रायोऽन्यस्मिन् शास्त्रे, दृष्टकरोम्यहं विवरण ।१।

श्री महावीर भगवान को नमस्कार कर के श्री स्थानांग नाम का तृतीय अंग का सूत्रानुसार मैं हिंदी विवरण करता हुं ॥ १ ॥ सूयगडांग सूत्र में द्रव्यानुयोग का कथन किया इस स्थानांग सूत्र में चारों प्रकार के अनुयोग का पृथक् २ कथन किया गया है मतमतान्तरों के निराकरण से जिन की बुद्धि स्थिर हुइ है उन को चतुर्भंगी आदि गहन ज्ञान समझाने को तीसरा स्थानांग सूत्र है

स्थनांगाय दशस्थान, स्थापिताखिलवस्तुने ॥ नमामिकाभित फलप्रदानसुरशाखिने ॥ १ ॥

अर्थात् इस स्थानांग सूत्र का एक ही श्रुतस्कन्ध है जिस में दश स्थान (१० अध्ययन) है प्रथम अध्ययन में लोक में रही हुइ एकेक वस्तु का कथन किया है, दूसरे में दो दो वस्तु का यावत् दशवे स्थान में दश २ वस्तु का कथन है यह यों ही पढने में सरल मालुम होता है परंतु इस के चौथे स्थान मे कही हुई चौभंगीयों यथार्थ समाना उस का भावार्थ बराबर उतारना उस के अनुसार एक की अनेक चतुर्भंगीयों बनाना वैसे ही अन्य भी इस में कहे हुवे संक्षिप्त पदार्थों का स्वरूप विस्तरित रूप से समझाना बहुत कठीन है इस का यथार्थ स्वरूप के समझनें समझाने वाले को स्थविर व पंडित कहे हैं इस स्थानांग शास्त्र की धनपतसिंह बाबू वाले की प्रत, कच्छ देश पावन कर्ता आठ कोटी मोटी पक्ष के महंत मुनि राज श्री नागचन्द्रजी महाराज के पास से मिली थी गुरुवातामें उस के अनुसार से और गौणताये चोरासी गच्छ भंडार से दो मात्रिन प्रतोंसे तथा दो मेरे पास की प्रतों

से यों पांच प्रतों से मिलाकर शुद्धिपूर्वक के साथ हिंदी भाषानुवाद किया है इस से इसस्थल प्रतों भेजने वालों का उपकार मानने में आता है

ठाणांग सूत्र की विषयानुक्रमणिका.

☞ बाल ब्रह्मचारी पं. मुनि श्री अमोलक ऋषिजीने मात्र तीन वर्ष में ३२ शास्त्रों का हिंदी भाषानुवाद और उन को मात्र पांच वर्ष में छपवाकर राजा सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी की तरफ से अमूल्य दिये गये

॥ तृतीयाङ्ग ठाणांग सूत्र ॥

सु० सुना मे० मैंने आ० आयुष्मन् भ० भगवानने ए० ऐसा भ० कहा ॥ ए० एक आ० आत्मा ॥ १ ॥

सुयं मे आउस तेणं भगवया एव मक्खायं ॥ एगे आया ॥ १ ॥ एगे दण्डे ॥ २ ॥

श्री सुधर्मास्वामी जम्बू स्वामी से कहते हैं कि अहो आयुष्मन् जम्बू ! श्री श्रमण भगवंत महावीर देवने ठाणांग सूत्र का जो अर्थ कहा है उसे तुम सुनो “ उवओगलक्खणा जीवो ” अर्थात् जीवात्मा का लक्षण उपयोग मात्र ही है जगत् में सब आत्मा उपयोग लक्षणवाले हैं द्रव्य की अपेक्षा से अनेक होने पर भी एक ही कहा जाता है इसलिये सब जगत् में आत्मा एक ही है ॥ १ ॥ यह आत्मा स्वतंत्र होने पर भी दंड करके पीड़ित होता है अथ अनर्थ ऐसे दंड होने पर भी खराब मन वचन व काया की

प० एक द० दंड ॥ २ ॥ प०एक कि०क्रिया ॥ ३ ॥ प० एक लो० लोक ॥ ४ ॥ प० एक अ० अलोक ॥ ५ ॥ प० एक ध० धर्म ॥ ६ ॥ प एक अ० अधर्म ॥ ७ ॥ प० एक ब० बन्ध ॥ ८ ॥ प० एक

एगा किरिया ॥ ३ ॥ एगे लोए ॥ ४ ॥ एगे अलोए ॥ ५ ॥ एगे धम्मे ॥ ६ ॥

प्रवृत्तिमे एकही दंड गीना गयाहै ॥२॥ यह दंड क्रियासे उत्पन्न होता है यद्यपि क्रियाके भेद अनेकहैं तथापि उन सब का उत्पादक स्वभाव एक दंड ही है इसलिये एकक्रिया कहीजातीहै षट्काया प्रमुखसे जोपाप लगता है उस क्रिया कहतेहैं ॥३॥ चउदह रज्ज्वात्मक एक लोक है यह षड्द्रव्य को एकसा धारक होने से एक कहा जाता है ॥ ४ ॥ लोक अलोक में रहाहुवा है यद्यपि अलोक अनंत है तथापि एक आकाश द्रव्य से प्रणमित होने से एक कहा जाता है ॥ ५ ॥ लोकालोक का भेद करनेवाली धर्मास्तिकाया है यह असख्यात प्रदेशी होने पर चलण सहायक एक ही गुण से एक ही कही जाती है ॥ ६ ॥ धर्मास्तिकाया का प्रतिपक्ष अधर्मास्तिकाया है, यह भी असंख्यात प्रदेशी होने पर स्थिर स्वभाव का गुण होने से एक ही कहीजाती है ॥ ७ ॥ धर्मास्तिकाया व अधर्मास्तिकाया में प्रवर्तता हुवा जीव क्रिया द्वारा कर्मबंध करता है उस बंध के प्रकृत्यादि चार भेद हैं तथापि आत्मा को संसार में परिभ्रमण कराने का ही स्वभाव होने से एक ही कहा जासकता है ॥ ८ ॥ बंध से मुक्त होना उसे मोक्ष कहते हैं उस का भी मार्ग मुक्त

मो० मोक्ष ॥ ९ ॥ ए० एक पु० पुन्य ॥ १० ॥ ए० एक पा० पाप ॥ ११ ॥ ए० एक आ० आश्रव ॥ १२ ॥ ए० एक सं० संवर ॥ १३ ॥ ए० एक वे० वेदना ॥ १४ ॥ ए० एक नि० निर्जरा ॥ १५ ॥

एगे अहम्मे ॥ ७ ॥ एगे बंधे, ॥ ८ ॥ एगे मोक्खे ॥ ९ ॥ एगे पुण्णे, ॥ १० ॥ एगे पावे, ॥ ११ ॥ एगे आसवे, ॥ १२ ॥ एगे संवरे, ॥ १३ ॥ एगा वेयणा,

करने का ही स्वभाव है इस लिये एक कहा गया है ॥ ९ ॥ पुण्य पाप का क्षय से मोक्ष होता है इसलिये पुण्य पाप का स्वरूप बताते हैं पुण्य शुभकर्म की ८२ प्रकृतिरूप है परंतु सुखमदफल का देनेवाला होने से एक ही कहाजाता है ॥ १० ॥ पुण्य का प्रतिपक्षी पाप अशुभ कर्म की ८२ प्रकृतिरूप है, परन्तु दुःखरूप फल देने का ही स्वभाव होने से एक कहाजाता है ॥ ११ ॥ शुभाशुभ कर्म का आना उसे आश्रव कहते हैं इस के ४२ भेद हात हुवे कर्म आगम का ही स्वभाव होने से एक कहा आता है ॥ १२ ॥ आश्रव का प्रतिपक्षी संवर है इस के ५७ भेद हैं परंतु कर्मों का निरोध करने का स्वभाव होने से एक कहाजाता है ॥ १३ ॥ संवर नहीं करनेवाले जीवों आश्रवसे संचित किये हुवे शुभाशुभ कर्मों के फल वेदते हैं यह वेदना साता असाता रूप दो प्रकारकी है तो भी कर्मफल भोगने रूप ही स्वभाव होने से एक ही कही जाती है ॥ १४ ॥ कर्मों का क्षय होना सो निर्जरा यह सकाम अकाम ऐसे दो तथा बारह प्रकार की होने पर कर्मक्षय करने का ही स्वभाव होने से एक कहीजाती है ॥ १५ ॥ प्रत्येक शरीर में अलग २

ए० एक जी० जीव पा० प्रत्येक स० शरीर से ॥ १६ ॥ ए० एक जी० जीवक अ० विनाग्रहण किये वि० वैक्रेय ॥ १७ ॥ ए० एक म० मन ॥ १८ ॥ ए० एक व० वचन ॥ १९ ॥ ए० एक का० काया का वा० व्यापार ॥ २० ॥ ए० एक उ० उत्पात ॥ २१ ॥ ए० एक वि० विगति ॥ २२ ॥ ए० एक वि० शरीर

॥ १४ ॥ एगा णिज्जरा, ॥ १५ ॥ एगे जीवे पाडिक्कएणं सरीरएण, ॥ १६ ॥ एगा जीवाण अपरिआइत्ता विउव्वणा, ॥ १७ ॥ एगे मणे, ॥ १८ ॥ एगा वयी, ॥ १९ ॥ एग कायवायामे, ॥ २० ॥ एगा उप्पा ॥ २१ ॥ एगा वियती, ॥२२॥

एक ही जीव है उस का स्वभाव प्राण को धारण करने का है ॥ १६ ॥ देवता को भी एक ही शरीर है और जो वैक्रेय रूप बनाते हैं सो बाहिर के पुद्गलों ग्रहण कर बनाते हैं इसलिये भवधारणीय मूल शरीर एक ही है ॥ १७ ॥ सत्यासत्यादि भेद से मन के चार प्रकार है और सभीकी अपेक्षा से असंख्य भेद होते हैं परंतु मनन लक्षण से एक ही मन कहा गया है ॥ १८ ॥ उदारिक वैक्रेय व आहारिक शरीर से भाषा के पुद्गलों को ग्रहण कर निकालना उसे वचन कहते हैं उस के अनेक भेद होने पर भी सब वचन की सामान्यता से एक ही कहागया है ॥ १९ ॥ उदारिक शरीर युक्त आत्मा में वीर्य की परिणति उसे काया कहते हैं उस के साथ भेद व अनंत जीव होने से अनंत भेद हैं परंतु काया की प्रवृत्ति सामान्य होने से एक ही भेद कहागया है ॥ २० ॥ एक माति में एक समय में एक ही जीव उत्पन्न होता है ॥ २१ ॥ एक

॥ २२ ॥ ए० एक ग० गति ॥ ए० एक आ० आगवि ॥ २५ ॥ ए० एक च० चवन ॥ २६ ॥ ए० एक उ० उपपात ॥ २७ ॥ ए० एक त० तर्क ॥ २८ ॥ ए० एक स० संज्ञा ॥ २९ ॥ ए० एक म० मति ॥ ३० ॥ ए० एक वि० विज्ञान ॥ ३१ ॥ ए० एक वे० वेदना ॥ ३२ ॥ ए० एक छे० छेदन ॥ ३३ ॥

एगा विथया ॥ २३ ॥ एगा गती ॥ २४ ॥ एगा आगती ॥ २५ ॥ एगे चयणे
॥ २६ ॥ एगे उववाए ॥ २७ ॥ एगा तक्का ॥ २८ ॥ एगा सन्ना ॥ २९ ॥
एगा मन्ना ॥ ३० ॥ एगा विन्नू ॥ ३१ ॥ एगा वेयणा ॥ ३२ ॥ एगे छेयणे

ही मरता है ॥ २२ ॥ अकेला ही शरीर धारन करता है ॥२३॥ अकेला की गति, आगति है ॥ २४ २५ ॥ एकचारी चवण और उत्पत्ति है यद्यपि एक समय में समुच्चय जीवों की अपेक्षा से सख्यात असख्यात व अनंत चवते हैं और उत्पन्न होते हैं परंतु प्रत्येक जीवों के कर्म भिन्न हैं इसलिये उन की उत्पत्ति व चवण में कुच्छ भी भिन्नता रहती है इसलिये एक ही मानाजाता है ॥ २६ २७ ॥ तर्क विमर्श एक है यद्यपि तर्क वितर्क नाना प्रकारके उत्पन्न होते हैं तथापि तर्क एक ही नाम से कहाजाता है ॥ २८ ॥ आहारादि संज्ञा चार प्रकार की है तथापि इच्छा रूप से एक कहीजाती है ॥ २९ ॥ उत्पातादि मति चार प्रकारकी या अनेक भेदवाली है तथापि बुद्धिरूप से एक ही कहीजाती है ॥ ३० ॥ यद्यपि पंडितों का विज्ञानवाद अनेक प्रकारका है तथापि भाव का स्वरूप पंडितपना एक ही कहाजाता है ॥ ३१ ॥ शूलादिक वेदना अनेक

ए० एक भे० भेदन ॥ ३४ ॥ ए० एक म० मरण अ० चरम सा० शरीरवाले का ॥ ३५ ॥ ए० एक सं० शुद्ध अ० यथातथ्य प० पात्र ॥ ३६ ॥ ए० एक दु० दुःख जी० जीवको ॥ ३७ ॥ ए० एक भू० भूत ॥ ३८ ॥ ए० एक अ० अधर्म प० प्रतिमा जं० जिससे आ० आत्मा प० क्लेश पाता है ॥ ३९ ॥ ए

॥ ३३ ॥ एगे भेयणे ॥ ३४ ॥ एगे मरणे अतिमसारीरियाणं ॥ ३५ ॥ एगे ससुद्धे अहाभूते पत्ते ॥ ३६ ॥ एगे दुक्खे जीवाण ॥ ३७ ॥ एगे भूते ॥ ३८ ॥ एगा अहम्मपडिमा ज से आया पडिकिलेसति ॥ ३९ ॥ एगा धम्मपडिमा जं से

प्रकारकी है परन्तु वेदना एक ही नाम से कहीजाती है ॥ ३२ ॥ शस्त्रादि से छेदने के व भालादि से भेदने के अनेक प्रकार है तथापि छेदन भेदन एक २ ही कहाजाता है ॥ ३३ ३४ ॥ चरम शरीरी मनुष्यों का मरना एक ही बार है फीर वे मुक्त होजाते हैं ॥ ३५ ॥ इस जगत् में अत्युत्तम यथाभूत पात्र एक अत्यंत शुद्ध श्री तीर्थंकर केवली भगवान ही है ॥ ३६ ॥ चरम शरीरी जीवों उसी भव में मोक्ष में जावें इसलिये एक ही दुःख कहागया है और सब दुःख का क्षय होने से अन्य दुःखों का अभाव होता है॥३७॥सब जीवों का आत्म रूप स्वभाव एक ही है ॥ ३८ ॥ जिस अधर्म से आत्मा क्लेश पावे ऐसा पापरूप अधर्म का करनेवाला शरीर एक ही है ॥ ३९ ॥ जिस धर्म से आत्मा ज्ञानादि गुणकी प्राप्ति करे वैसा धर्म का करने

एक ध० धर्म प० प्रतिमा जं० जिससे आ० आत्मा प० प्राप्ति पावे ॥ ३० ॥ ए० एक म० मन दे० देव म० असुर म० मनुष्यों का तं० उस २ स० समय में ए० एक व० वचन दे० देव अ० असुर म०मनुष्यों का तं० उस २ स० समय में ए० एक का० काया का व्यापार दे० देव अ० असुर म० मनुष्यों का तं० उस २ स० समय में ए० एक उ० उत्थान क० कर्म व० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम दे० देव अ० असुर म० मनुष्यों का त० उस २ स० समय में ॥ ३१ ॥ ए० एक ना० ज्ञान ॥ ३२ ॥

आया पव्वज्जाए ॥ ३० ॥ एगे मणे देवासुरमणुआण तंसितंसि समयंसि, एगा वयी देवासुरमणुआणं तंसितंसि समयंसि, एगे कायवायामे देवासुरमणुयाण तंसि तंसि समयंसि, एगे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमे देवासुरमणुयाण तंसि तंसि समयंसि

वाला शरीर एक है ॥ ३० ॥ विमानवासी, भुवनपत्यादि देवता व मनुष्य को मन योग, वचन योग, काया योग, तथा उत्थान[1] कर्म[2], बल[3], वीर्य[4], पुरुषात्कार[5], और पराक्रम[6], एक समय में एक २ ही होते हैं क्यों कि समय अती सूक्ष्म होने से एक समय में दो क्रिया नहीं हो सकती हैं ॥ ३१ ॥ ज्ञानावरणीय का क्षय से उत्पन्न होवे सो ज्ञान वह मतिज्ञानादिक पांच प्रकार का है तथापि जानने का स्वभावसे एक ही

---

१ कार्य के लिये उठना, २ कार्य को ग्रहण करना, ३ शरीर का सामर्थ्य, ४ कार्य में प्रवृत्ति करना ५ कार्य निपजाना, ६ कार्य पार पहोंचाना

ए० एक भे० भेदन ॥ २४ ॥ ए० एक म० मरण अ० चरम सा० शरीरवाले का ॥ २५ ॥ ए० एक अ० शुद्ध अ० यथातथ्य प० पात्र ॥ २६ ॥ ए० एक दु० दुःख जी० जीवको ॥ २७ ॥ ए० एक भू० भूत ॥ २८ ॥ ए० एक अ० अधर्म प० प्रतिमा जं० जिसमे आ० आत्मा प० क्लेश पाता है ॥ २९ ॥ ए०

॥ २३ ॥ एगे भेयणे ॥ २४ ॥ एगे मरणे अतिमसारीरियाणं ॥ २५ ॥ एगे ससुद्धे अहाभूते पत्ते ॥ २६ ॥ एगे दुक्खे जीवाण ॥ २७ ॥ एगे भूते ॥ २८ ॥ एगा अहम्मपडिमा ज से आया पडिकिलेसति ॥ २९ ॥ एगा धम्मपडिमा ज से

प्रकारकी है परन्तु वेदना एक ही नाम से कहीजाती है ॥ २२ ॥ शस्त्रादि से छेदने के व भालादि से भेदने के अनेक प्रकार है तथापि छेदन भेदन एक २ ही कहाजाता है ॥ २३ २४ ॥ चरम शरीरी मनुष्यों का मरना एक ही बार है फीर वे मुक्त होजाते हैं ॥ २५ ॥ इस जगत् में अत्युत्तम यथाभूत पात्र एक अत्यंत शुद्ध श्री तीर्थंकर केवली भगवान ही है ॥ २६ ॥ चरम शरीरी जीवों उसी भव में मोक्ष में जावें इसलिये एक ही दुःख कहागया है और सब दुःख का क्षय होने से अन्य दुःखों का अभाव होता है॥२७॥ सब जीवों का आत्म रूप स्वभाव एक ही है ॥ २८ ॥ जिस अधर्म से आत्मा क्लेश पावे ऐसा पापरूप अधर्म का करनेवाला शरीर एक ही है ॥ २९ ॥ जिस धर्म से आत्मा ज्ञानादि गुणकी प्राप्ति करे वैसा धर्म का करने

एक प० धर्म प० प्रतिमा जं० जिससे आ० आत्मा प० प्राप्ति पावे ॥ ४० ॥ ए० एक म० मन दे० देव अ० असुर म० मनुष्यों का तं० उस २ स० समय में ए० एक व० वचन दे० देव अ० असुर म० मनुष्यों का त० उस २ स० समय में ए० एक का० काया का व्यापार दे० देव अ० असुर म० मनुष्यों का त० उस २ स० समय में ए० एक उ० उत्थान, क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम दे० देव अ० असुर म० मनुष्यों का त० उस २ स० समय में ॥ ४१ ॥ ए० एक ना० ज्ञान ॥ ४२ ॥

आया पज्जवज्जाए ॥ ४० ॥ एगे मणे देवासुरमणुआणं तंसितंसि समयंसि, एगा वयी देवासुरमणुआणं तंसितंसि समयंसि, एगे कायवायामे देवासुरमणुयाण तंसि तंसि समयंसि, एगे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमे देवासुरमणुयाण तंसि तंसि समयंसि

वाला शरीर एक है ॥ ४० ॥ विमानवासी, भुवनपत्यादि देवता व मनुष्य का मन योग, वचन योग, काया योग, तथा उत्थान[1] कर्म[2], बल[3], वीर्य[4], पुरुषात्कार[5], और पराक्रम[6], एक समय में एक २ ही होते हैं क्यों कि समय अती सूक्ष्म होने से एक समय में दो क्रिया नहीं हो सकती हैं ॥ ४१ ॥ ज्ञानावरणीय का क्षय से उत्पन्न होवे सो ज्ञान यह मतिज्ञानादिक पांच प्रकार का है तथापि जानने का स्वभावसे एक ही

---

१ कार्य के लिये उठना, २ कार्य को ग्रहण करना, ३ शरीर का सामर्थ्य, ४ कार्य में प्रवृत्ति करना ५ कार्य निपजाना, ६ कार्य पार पहोंचाना

ए० एक द० दर्शन ॥ ४३ ॥ ए० एक च० चारित्र ॥ ४४ ॥ ए० एक स० समय ॥ ४५ ॥ ए० एक प० प्रदेश ॥ ४६ ॥ ए० एक प० परमाणु ॥ ४७ ॥ ए० एक सि० सिद्धि ॥ ४८ ॥ ए० एक सि० सिद्ध ॥ ४९ ॥ ए० एक प० निर्वाण ॥ ५० ॥ ए० एक प० मोक्ष ॥ ५१ ॥ ए० एक स० दुःख ॥ ५२ ॥

॥ ४१ ॥ एगे नाणे ॥ ४२ ॥ एगे दसणे ॥ ४३ ॥ एगे चरित्ते ॥ ४४ ॥ एगे समए ॥ ४५ ॥ एगे पएसे ॥ ४६ ॥ एगे परमाणु ॥ ४७ ॥ एगा सिद्धी ॥ ४८ ॥ एगे सिद्धे ॥ ४९ ॥ एगे परिनिव्वाणे ॥ ५० ॥ एगे परिनिव्वुए ॥५१॥

जाता है ॥ ४२ ॥ दर्शनावरणीय का क्षय से उत्पन्न होवे सो दर्शन उस के चक्षुदर्शनादि चार भेद हैं वस्तु को बताने का ही स्वभाव होने से एक कहाजाता है ॥ ४३ ॥ चारित्र पांच प्रकारके हैं परंतु रति रोकनेका स्वभाव मात्र होने से एक कहाजाता है ॥ ४४ ॥ कालका अती सूक्ष्मभेद सो समय है एक कहाजाता है क्यों कि उस से कोई सूक्ष्म काल नहीं है ॥ ४५ ॥ धर्मास्तिकायादिक का अवयव देश वह एक ही है क्यों कि उन का दो विभाग नहीं होता है ॥ ४६ ॥ द्रव्य का अत्यंत सूक्ष्म भेद परमाणु इस को दो खण्ड नहीं होसकने से एक ही गीनाजाता है ॥ ४७ ॥ सिद्धशिला ॥ ४८ ॥ मात्र योजन की एक ही है ॥ ४८ ॥ सब कर्मों से मुक्त होवे सो सिद्ध वे अनंत है परंतु सब का सुख रूप एक ही स्वभाव होने से एक कहाजाता है ॥ ४९ ॥ सब दुःखों से मुक्त होना सो निर्वाण वह भी एक

ए० एक रू० रूप ॥ ५३ ॥ ए एक गं० गंध ॥ ५४ ॥ ए० एक र० रस ॥ ५५ ॥ ए० एक फा० स्पर्श ॥ ५६ ॥ ए० एक सु० अच्छा स० शब्द ए एक दु० खराब स० शब्द ॥ ५७ ॥ ए० एक सु० अच्छा रूप ए० एक दु० खराबरूप ॥ ५८ ॥ ए० एक दी० बडा ए० एक र० छोटा ॥ ५९ ॥ ए० एक वं० गोल ए० एक तं० त्रिकोण ए एक च० चौरस ए० एक पि० लंबगोल ए० एक प० परिमंडल ॥ ६० ॥ ए० एक कि० कृष्ण ए० एक नी० नील ए० एक लो० रक्त ए० एक ह० पीला ए० एक सु० शुक्ल॥६१

एगे सद्दे ॥ ५२ ॥ एगे रूवे ॥ ५३ ॥ एगे गंधे, ॥ ५४ ॥ एगे रसे ॥ ५५ ॥ एगे फासे ॥५६॥ एगे सुब्भिसद्दे, एगे दुब्भि सद्दे ॥ ५७ ॥ एगे सुरूवे एगे दुरूवे, ॥ ५८ ॥ एगे दीहे, एगे रहस्से ॥५९॥ एगे वट्टे, एगे तंसे, एगे चउरंसे, एगे पिहुले, एगे परिमंडले ॥६०॥ एगे किण्हे, एगे नीले, एगे लोहिए, एगे हालिद्दे, एगे सुक्किले,

न्द्रिय को ग्राह्य रूप होनेवाला एक ही प्रकार का शब्द है ॥ ५२ ॥ नेत्र का विषय रूप शरीर का आकार एक है ॥ ५३ ॥ नासिका के विषय रूप गंध एक है ॥ ५४ ॥ जिव्हा विषय रूप रस एक है ॥ ५५ ॥ काया का विषय रूप स्पर्श एक है ॥ ५६ ॥ एक अच्छा शब्द एक कठिन शब्द ॥ ५७ ॥ एक अच्छा रूप और एक खराब रूप ॥ ५८ ॥ एक लंबी कायावाला और एक ठींगना ॥ ५९ ॥ वर्तुलाकार, त्रिकोन, चतुष्कोन, लंबगोल और परिमंडल ऐसे भिन्न २ संस्थान एक एक है ॥ ६० ॥ एक कृष्ण, नील, रक्त,

ए० एक सु० सुरभिगंध ए० एक दु० दुरभिगंध ॥ ६२ ॥ ए० एक ति० तीखा ए० एक क० कडवा ए० एक क० कसायला ए० एक अं० खट्टा ए० एक म० मधुर ॥ ६३ ॥ ए० एक क० कर्कश जा० यावत् लु० रुक्ष ॥ ६४ ॥ ए० एक पा० प्राणातिपात जा० यावत् ए० एक प० परिग्रह ए० एक को० क्रोध जा० यावत् लो० लोभ ए० एक पे० राग ए० एक दो० द्वेष जा० यावत् ए० एक प० परपरिवाद ए०

॥ ६१ ॥ एगे सुब्भिगंधे एगे दुब्भिगंधे, ॥ ६२॥ एगे तित्ते, एगे कडुए, एगे कसाए, एगे अंबिले, एग महुरे ॥ ६३ ॥ एगे कक्खडे जाव लुक्खे ॥ ६४ ॥ एगे पाणातिवाए जाव एगे परिग्गहे, एगे कोहे जाव लोभे एगे पेज्जे, एगे दोसे, जाव एगे परपरि-

पीत और एक वर्ण है ॥ ६१ ॥ एक सुरभिगंध और एक दुरभिगंध ॥ ६२ ॥ एक तिक्त कटुक, कषायला, अम्ल, मधुर रस है ॥ ६३ ॥ एक कर्कश, कोमल लघु, गुरु, शीत, ऊष्ण, रुक्ष और स्निग्ध स्पर्श है॥६४॥ दश प्रकार के प्राणों से जीव को पृथक् करना उसे हिंसा कहते हैं वह द्रव्य भाव के भेद से दो प्रकार की है अथवा विनाश परिताप व संक्लेश के भेद से तीन प्रकार की है परंतु हनन स्वभाव मात्र होने से एक ही कहीजाती है वैसे ही एक मृषा, अदत्त, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह अ भ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, रति अरति माया मृषा, और मिथ्या दर्शन शल्य ऐसे अठारह पापस्थान

एक अ० अराति र० रति ए० एक मा० मायामृषा ए० एक मि० मिथ्यादर्शन शल्य ॥
पा० प्राणातिपात से वे० विरमण जा० यावत् पं० परिग्रह से वे० विरमण ए० एक को० क्रो० -
मा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन शल्य वि० विवेक ॥ ६६ ॥ ए० एक ओ० अवसर्पिणी ए० एक सु० सु
सम सुसमा जा० यावत् ए० एक दु० दुसम दुसमा ए० एक उ० उत्सर्पिणी ए० एक दु० दुसम दुसमा

घाए एगा अरतिरति एगे मायामोसे एगे मिच्छादंसणसल्ले ॥ ६५ ॥ एगे पाणाइ-
वायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, एगे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे
॥ ६६ ॥ एगा ओसप्पिणी एगा सुसमसुसमा जाव एगा दुसमदुसमा एगा उसप्पि

एक २ है ॥ ६५ ॥ वैसे ही किसी भी जीव की घात से निवर्तना उसे एक अहिंसा नाम से बोलायीजाती है वैसे ही मृषावाद, अदत्तादान यावत् मिथ्या दर्शन शल्य यों अठारह पाप स्थान से निवर्तना ॥ ६६ ॥ एक अवसर्पिणी काल है जिस में आयुष्य शरीर प्रमुख प्रतिसमय घटते रहते हैं उस के छ आरे में से पहिला एक आरा सुसम सुसमा (मात्र सुख ही) दूसरा सुसम, तीसरा सुसम दुसम, चौथा दुसम सुसम, पांचवा दुसम और छट्ठा दुसम दुसमा है और जहां आयुष्य शरीर प्रमुख वृद्धि पाते रहते हैं उसे उत्सर्पिणी कहते हैं उस में दुसम दुसमा से यावत् सुसम सुसमा ऐसे छ विभाग हैं इन उत्सर्पिणी व अवस

णी एगा दुसमदुसमा जाव एगा सुसमसुसमा ॥ ६७॥ एगा णेरइयाण वग्गणा, एगा असुरकुमाराणं वग्गणा, चउविसदंडओ जाव एगा वेमाणियाण वग्गणा ॥ ६८ ॥ एगा भवसिद्धियाण वग्गणा, एगा अभवसिद्धियाण वग्गणा, एगा भवसिद्धियाण णेरइयाण वग्गणा, एगा अभवसिद्धियाण णेरइआण वग्गणा, एवं जाव एगा भवसिद्धियाण

ए० एक सु० सुसम सुसमा ॥ ६७ ॥ ए० एक णे० नारकी की व० वर्गणा ए० एक अ० असुर कुमारकी व० वगणा च० चौवीस दं० दंडक जा० यावत् ए० एक वे० वैमानीक की व० वर्गणा ॥ ६८ ॥ ए० एक भ० भवसिद्धिया की व० वर्गणा ए० एक अ० अभवसिद्धिया की व० वर्गणा ए० एक भ० भवसिद्धिया ण० नारकी की व० वगणा ए० एक अ० अभवसिद्धिया ने० नारकी की व० वर्गणा ए० ऐसे जा० यावत् ए० एक भ० भवसिद्धिया वे० वैमानिक की व० वर्गणा ए० एक अ० अभव सिद्धिया वे० वैमानिक

पिणी के बारह विभागों का स्वभाव भिन्न २ होने से अलग एक एक कहलाते हैं ॥ ६७ ॥ नारकी के जीवों की एक वर्गणा (१) असुरकुमारादि दश भुवनपति की एक वर्गणा, पांच स्थावर जीवों की अलग २ एक एक वगणा, वैसे ही विगलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य और वैमानिक यों चौवीस दण्डक के जीवों की अलग २ एक एक वर्गणा हुइ ॥ ६८ ॥ (२) भव सिद्धिये जीवों की एक वर्गणा है और (३) अभव

(१) एक ही नाम का बहुत समुदाय को वर्गणा कहते हैं (२) जो अनंत भव में भी मोक्ष जावेंगे

की व वगणा ॥ ६९ ॥ ए० एक स० समदृष्टि की वर्गणा ए० एक मि मिथ्यादृष्टि की व० वगणा ए०
एक स० समामिथ्यादृष्टि की व० वर्गणा ए० एक स समदृष्टि ने नारकी की व वगणा ए० एक मि०
मिथ्या दृष्टि ने० नारकी नारकी की व० वर्गणा ए० एक स० सममिथ्या दृष्टि ने० नारकी की व वगणा
ए० एसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमारकी ए० एक मि० मिथ्यादृष्टि पु० पृथ्वी काया की व०वगणा ए०
ऐसे जा० यावत् व वनस्पति काया की ए० एक स०सम्दृष्टि बे० बेइन्द्रिय की ए० एक मि० मिथ्यादृष्टि

वेमाणियाण वग्गणा, एगा अभवसिद्धियाण वेमाणियाण वग्गणा ॥ ६९ ॥ एगा सम्म
दिट्ठियाण वग्गणा, एगा मिच्छदिट्ठियाण वग्गणा, एगा सम्ममिच्छदिट्ठियाण
वग्गणा । एगा सम्मदिट्ठियाण णेरइयाण वग्गणा, एगा मिच्छदिट्ठियाण णेरइयाण व
ग्गणा, एगा सम्मामिच्छदिट्ठियाण णेरइयाण वग्गणा, एवं जाव थणियकुमाराण ।
एगा मिच्छदिट्ठियाण पुढविकाइयाण वग्गणा एवं जाव वणस्सइ काइयाण, एगा सम्म

सिद्धिया की एक वर्गणा है—ऐसे ही नरक के भव्य जीवों की व अभव्य जीवों की एक २ वर्गणा है
यों वैमानिक तक चौवीस दंडक के भव्य और अभव्य जीवों की वगणा है ॥ ७० ॥ समदृष्टि की एक वग
णा, एक मिथ्यादृष्टि की वगणा और समामिथ्यादृष्टि की एक वर्गणा समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि और
समामिथ्यादृष्टि नारकी की एक २ वगणा ऐसे ही असुरकुमारादि दशभुवनपति की वर्गणा जानना

वे० बइन्द्रिय की व वर्गणा व ऐसे ते० तेइन्द्रिय की च चउरेन्द्रिय की से० शेप अ० जैसे ने० नारकी जा यावत स० समामिथ्या दृष्टि वे० वैमानीक की व० वर्गणा ॥ ७० ॥ ए० एक क० कृष्ण पाक्षिक की व० वर्गणा ए० एक सु० शुक्ल पाक्षिक की वर्गणा ए एक कि० कृष्ण पाक्षिक णे० नारकी की व० वर्गणा ए० एक सु० शुक्ल पक्षिक ण० नारकी की व० वर्गणा ए० ऐसे च० चौवीसे दं०डक में भा० कहना ॥ ७१॥

दिट्ठियाण बइंदियाण वग्गणा, एगा मिच्छदिट्ठियाण बेइंदियाण वग्गणा, एवं तेइंदियाणं वि चउरिंदियाणवि सेसा जहा नेरइया, जाव एगा सम्मामिच्छदिट्ठियाण वेमाणियाण वग्गणा ॥ ७० ॥ एगा कण्हपक्खियाणं वग्गणा, एगा सुक्कपक्खियाणं वग्गणा, एगा कण्हपक्खियाणं णेरइयाण वग्गणा, एगा सुक्कपक्खियाण णेरइयाण वग्गणा, एवं च

मिथ्यादृष्टि पृथ्वीकाया, अपकाया, तेउकाया, वायुकाया और वनस्पतिकाया की एक २ वर्गणा एक सम दृष्टि, व मिथ्या दृष्टि बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय और चौरेन्द्रियकी एक २ वर्गणा शेप तिर्यंच पंचेन्द्रियसे लेकर वैमानिक तक की वर्गणा का अधिकार नारकी जैसे कहना ॥ ७० ॥ अर्धपुद्गल परावर्तन से अधिक संसार में रहने वाले कृष्णपक्षी कहे जाते हैं और जिनको अर्धपुद्गल परावर्तन करने का है वे शुक्लपक्षी कहे जाते हैं नरकादि चौवीस दंडकों में एक २ वर्गणा कृष्णपक्षी जीवों की है और एक २ वर्गणा शुक्लपक्षी जीवों की है ॥ ७१ ॥

ए० एक कृ० कृष्णलेश्या की व० वर्गणा ए० एक णी० नीललेश्या की वर्गणा ए० ऐसे जा० यावत् सु० शुक्ल ले० लेश्याकी व० वर्गणा ए० एक कृ० कृष्ण लेशी ने० नारकी की व० वर्गणा जा० यावत् का० कापुत ले० लेशी ने० नारकी की व० वर्गणा ए० ऐसे ज० जिनको ज जितनी ले० लेश्या भ० भुवन पति वा० व्यंतर पु० पृथ्वी आ० अप् व० वनस्पति का० काया की च० चार ले० लेश्या ते० अग्नि वा० वायु बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चउरिन्द्रिय की ति० तीन ले लेश्या प० पचेन्द्रिय ति० तिर्यंच यो

उवीस दडओति भाणियव्वो ॥ ७१ ॥ एगा कण्ह लेस्साण वग्गणा, एगा णील लेस्साण वग्गणा, एव जाव सुक्कलेस्साण वग्गणा, एगा कण्हलेस्साण नेरइयाण वग्गणा जाव काउलेस्साण नेरइयाण वग्गणा एवं जस्स जति लेस्साओ भवणवइ वाण मतर पुढविआउवणस्सइकाइयाणं चचारि लेस्साओ, तेऊवाऊबेइंदियतेइंदियचउ रिंदियाणं तिन्नि लेस्साओ पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं मणुस्साण छल्लेस्साओ, जोइ

शुक्ल लेश्यावाले जीवों की एक २ वर्गणा उस में से कृष्ण लेश्या वाले नरक के जीवों का समुदाय, नील लेश्या वाले नरक के जीवों का समुदाय और कापुत लेश्यावाले नरक के जीवोंका समुदाय एक २ है ऐसे नरकी में तीन लेश्याओं हैं और इसी तरह जिस दण्डक में जितनी वर्गणा होवे उन सब को एक २ के नाम से कहना भवनपति, व्यंतर, पृथ्वी, पानी और वनस्पति में चार लेश्या हैं अग्नि, वायु, द्वि इन्द्रिय, त्रिइन्द्रिय और चौरेन्द्रिय में तीन २ लेश्याओं हैं तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य में छ लेश्याओं,

नि का प मनष्य की छ० ए६ म० लेश्या जो० ज्योतिषी की ए० एक ते० तेजस ले लेश्या वे० वैमा
निक की नि० तीन उ० उपर की ले० लेश्या ए० एक क० कृष्णलेशी भ० भवसिद्धिया की व० वर्गणा
ए एक क० कृष्ण ले० लेशी अ० अभव सिद्धिया की व० वर्गणा ए० ऐसे छ छह ले० लेश्या में दो०
रा ए० एक भा० कहना ए० एक क० कृष्णलेशी भ० भवसिद्धिया ने० नारकी की व० वर्गणा ए०
एक क० कृष्णलेशी अ० अभव सिद्धिया ने० नारकी की व० वर्गणा ए० ऐसे ज० जीन की ज जितनी

निषाण एगा तेउलेस्सा, वेमाणियाण तिन्नि उवरिमलेस्साओ । एगा कण्हलेस्साण
भवसिद्धियाण वग्गणा, एगा कण्हलेस्साण अभवसिद्धियाण वग्गणा, एव छसुविलेस्सा
सु दोदो पयाणि भाणियव्वाणि एगा कण्हलेस्साण भवसिद्धियाण नेरइयाण वग्गणा,
एगा कण्हलेस्साण अभवसिद्धियाण नेरइयाण वग्गणा, एव जस्स जति लेसाओ त

ज्योतिषी में एक तेजु लेश्या और वैमानिक में ऊपर की तीन लेश्याओं कृष्ण लेश्या वाले भव्य जीवो
की एक वर्गणा और अभव्य जीवोंकी एक वर्गणा ऐसे ही शेष लेश्याओं में भव्य और अभव्य जीवों
की वर्गणा का दो दो पद कहना कृष्ण लेश्या वाले भवसिद्धिया नारकी के जीवों की एक वर्गणा, और
कृष्ण लेश्या वाले अभवसिद्धिया नारकी के जीवों की एक वर्गणा ऐसे जिस दंडक में जितनी लेश्या
होवे उतनी ही चौवीस दंडक में भव्य अभव्य जीवों की वर्गणा कहना कृष्ण लेश्या वाले समदृष्टि के

ले० लेश्या त० उनकी त उतनी भा० कहना जा० यावत् वे० वैमानिक की ए० एक क० कृष्णलेशी स० समदृष्टि व० वर्गणा ए० एक क० कृष्णलेशी मि० मिथ्यादृष्टि की व०वर्गणा ए एक क० कृष्णलेशी स समामिथ्यादृष्टि की व० वर्गणा ए० ऐसे छ० छह ले० लेश्या में जा० यावत वे० वैमानिक जे० जिसमें ज० जितनी दि० दृष्टि ए० एक क कृष्णलेशी क० कृष्णपाक्षिक की व० वर्गणा ए० एक कृष्णलेशी सु० शुक्ल पक्षिक की व० वर्गणा जा० यावत् वे० वैमानिक की ज० जिनकी ज० जितनी ले० लेश्या ए० ये

स्स तत्तिया भाणियव्वाओ, जाव वेमाणियाण । एगा कण्हलेस्साण सम्मदिट्ठियाण वग्गणा। एगा कण्हलेस्साण मिच्छदिट्ठियाण वग्गणा, एगा कण्हलेस्साण सम्मामिच्छ दिट्ठियाण वग्गणा एव छसुवि लेस्सासु जाव वेमाणियाण जेसिं जहिं दिट्ठीओ । एगा कण्हलेस्साण कण्हपक्खियाण वग्गणा एगा कण्हलेस्साण सुक्कपक्खियाण वग्गणा

एक वर्गणा, कृष्ण लेश्या वाले मिथ्यादृष्टि की एक वर्गणा और कृष्ण लेश्या वाले समामिथ्यादृष्टि की एक वर्गणा ऐसे ही शेष लेश्याओं में तीनों पद कहना और चौविस दंडक में भी जहां जितनी लेश्या की प्राप्ति होवे वहां उनकी लेश्या वाले समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि व सम मिथ्यादृष्टि वाले की वर्गणा कहना कृष्ण लेश्या वाले कृष्णपक्षी जीवों की एक और शुक्लपक्षी जीवों की एक २ वर्गणा है ऐसे ही सब लेश्या वालों का अलग २ समुदाय दोनों पक्ष वालों का है और ऐसे ही चौविस दंडक में जहां जितनी लेश्या की

अ० आठ च० चौवीस दंडक में ॥ ७२ ॥ ए० एक ति० तीर्थसिद्ध की व वर्गणा ए एक अ० अतीर्थ सिद्धकी व० वर्गणा ए० ऐसे जा० यावत् ए एक ए० एकसिद्धकी व गणा ए० एक अ अनेक सि-

जाव वेमाणियाण जस्स जति लेसाओ एए अट्ठ चउवीस दंडया ॥ ७२ ॥ एगा तित्थसिद्धाण वग्गणा, एगा अतित्थ सिद्धाण वग्गणा एवं जाव एगा एगसिद्धाण व

प्राप्त होवे वहां उतनी ही संख्या की वर्गणा दोनों पक्ष आश्रित कहना पूर्वोक्त आठों बोल चौविस दंडक पर अलग २ कहना ॥ ७२ ॥ (१) चतुर्विध संघकी स्थापना हुवे बाद मुक्ति में गये सो तीर्थसिद्ध पुंडरीकादि गणधर उनकी एक वर्गणा (२) संघकी स्थापना हुवे पहिले जाति स्मरणादि ज्ञान से मुक्ति जाने वाले अतीर्थसिद्ध मरुदेवी आदि उन अतीर्थसिद्धों की एक वर्गणा (३) तीर्थंकर सिद्ध की एक वर्गणा (४) अतीर्थंकर सिद्ध-गौतम गणधरादिक सामान्य केवलज्ञानकी पर्याय पाकर मुक्ति गये उनों की एक वर्गणा, (५) स्वयंबुद्धसिद्ध गुरु का उपदेश बिना स्वयं प्रतिबोध पाकर मुक्त होनेवाले अनाथी मुनिका एक समुदाय (६) प्रत्येकबुद्धसिद्ध वस्तु को देख कर मुक्ति में जानेवाले नमिराजादिक का एक समुदाय (७) बुद्ध बोधित सिद्ध गुरुके पाससे ज्ञान श्रवण कर मुक्तिमें जानेवाले गजसुकुमारादिक का समुदाय (८) स्त्रीलिंग सिद्ध स्त्रियों के लिंग से सिद्ध होनेवाले राजेमति आदि (९) पुरुष लिंग सिद्ध, थावरचापुत्र पुरुष लिंग से मुक्त हुवे (१) नपुंसक लिंग सिद्ध-गांगेय आदि नपुंसक लिंग से सिद्ध हुवे

सिद्धकी व० वगणा ॥ ७२ ॥ ए० एक प० परमाणु पो पुद्गल की व० वर्गणा ए० ऐसी जा० यावत् ए० एक अ० अनंत प० प्रदेशी खं० स्कन्ध पो० पुद्गल की व० वर्गणा ए० एक ए० एकप्रदेश ओ० अवगाह ना करने वाले पो० पुद्गल की व० वर्गणा जा० यावत् ए एक अ० असंख्यात प० प्रदेश ओ० अवगा

गगणा, एगा अपेग सिद्धाण वग्गणा, एगापढमसमयसिद्धाण वग्गणा, एव जाव अणतसमयसिद्धाणं वग्गणा ॥ ७३ ॥ एगा परमाणुपोग्गलाण वग्गणा एव जाव एगा अणंतपएसियाण खधाणं पोग्गलाण वग्गणा एगा एगपएसो गाढाण पोग्गला णं वग्गणा जाव एगा असखेज्जपएसोगाढाण पोग्गलाण वग्गणा, एगा एगसमय

(११) स्वलिंग सिद्ध-अर्जुनमाली आदि साधु का लिंग से मुक्ति में गये (१२) अन्य लिंग सिद्ध असोचा केवली आदि अन्य लिंग से मुक्ति में गये (१३) गृहलिंगसिद्ध मरुदेवी माता गृहस्थ में ही सिद्ध हुवे (१४) एकसिद्ध-महावीर स्वामी की जैसे एक ही समय में सिद्ध होनेवाले और (१५) अनेक सिद्ध ऋषभदेव जैसे एक समयमें अनेक सिद्ध होनेवाले जीवोंकी एक२ वर्गणा विरह पडे बाद प्रथम समयमें सिद्ध दूसरे, तीसरे यावत् अनंत समय में सिद्ध बने हुवे जीवोंकी एक२ वर्गणा है ॥७३॥ चर्मचक्षु से जो नहीं दीख ता है अथवा जिस पुद्गल का दो विभाग नहीं हो सकता है उसे परमाणु कहते हैं ऐसे सूक्ष्म परमाणुओं

हना करने वाले पो० पुद्गल की वर्गणा ए० एक ए० एकसमय की ठि० स्थितिवाले पो०पुद्गल की व०वर्गणा जा० यावत अ०असंख्यात स०समयकी ठि०स्थितिवाले पो०पुद्गलकी व०वर्गणा ए०एक ए०एक गुण काला पो० पुद्गल की व० वर्गणा जा०यावत् ए एक अ०असंख्यात गु०गुणकाला पो०पुद्गलकी व०वगणा ए०ऐसा

ठितियाण पोग्गलाण वग्गणा, जाव असंखेज्जसमयाठितिआण पोग्गलाण वग्गणा, एगा एगगुणकालयाण पोग्गलाण वग्गणा जाव एगा असंखेज्ज एगा अणत गुणकालयाण पो ग्गलाण वग्गणा, एव वण्ण गध रस फासा भाणियव्वा, जाव एगा अणतगुण लु

की एक वर्गणा है और इसी तरह दो परमाणु मिले उसे द्विप्रदेशी स्कंध, तीन मिले वह तीन प्रदेशी स्कंध चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश यावत संख्यात, असंख्यात, और अनत प्रदेशी स्कंध की एक २ वर्गणा है यह द्रव्य का कथन हुवा अब क्षेत्र का कथन करते हैं क्षेत्र का एक ही प्रदेश की अवगाहना करके रहने वाले पुद्गलों की वर्गणा, यों दो प्रदेश, तीन प्रदेश यावत् संख्यात असंख्यात + प्रदेश की अवगाहना करके रहनेवाले पुद्गलों की एक २ वर्गणा है अब काल का कथन करते हैं एक समय की स्थितिवाले

+ चउदह रज्ज्वात्मक लोक के असंख्यात ही आकाश प्रदेश हैं और काल के भी असंख्यात

वर्गणा ए० ऐसा व वर्ण ग० गंध र० रस फा० स्पर्श मा कहना जा० यावत् ए एक अ० अनन्तगुण लु० रूप पो० पुद्गल की व० वर्गणा ए० एक ज जघन्य प० प्रदेशी सं० स्कन्ध की व० वर्गणा ए० एक उ० उत्कृष्ट प प्रदेशी स० स्कन्ध की व वर्गणा ए० एक अ० मध्यम प्रदेशी स० स्कन्ध की व० र्गणा ए० एमे ज जघन्य आ० अवगाहना वाले उ० उत्कृष्ट ओ० अवगाहना वाले अ० मध्यम ओ० अवगाहनावाले ज० जघन्य ठि० स्थितिवाले उ० उत्कृष्ट ठि० स्थितिवाले अ० मध्यम ठि० स्थितिवाले ज०

खंधाण पोग्गलाणं वग्गणा एगा जहन्नपएसियाण खधाण वग्गणा एगा उक्कोस पएसियाण खधाण वग्गणा एगा अजहन्नुक्कोस पएसियाण खधाण वग्गणा, एवं ज हन्नोगाहणगाण, उक्कोसोगाहणगाण, अजहन्नुक्कोसोगाहणगाण, जहन्न ठितियाण

एक ही आकाश प्रदेश में अवगाह कर रहेहुवे परमाणु पुद्गल की एक वर्गणा ऐसे ही दो, तीन, चार यावत् संख्यात असंख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गलों की भी अलग २ एक एक वर्गणा है अब भाव का कथन करते हैं एक गुण काले पुद्गलों की वर्गणा यों दो, तीन, चार यावत् संख्यात, असंख्यात व अनंत गुण काले पुद्गलों की अलग २ एक २ वर्गणा ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस और आठ स्पर्श इन बीसों ही बोल के पुद्गलोंकी एक गुण से लेकर अनंत गुणतक की अलग २ वर्गणा कह देना दो परमाणु आदि के स्कंध रूप जघन्य प्रदेशी स्कंध की एक वर्गणा अनंत परमाणु प्रदेशवाला उत्कृष्ट प्रदेशी

जघन्य गुणकाला उ० उत्कृष्ट गुणकाला म० मध्यम गुण काला की ए० ऐसे व० वर्ण ग० गंध र० रस फा० स्पर्श की व० वर्गणा भा० कहना जा० यावत् ए० एक अ० मध्यम गुण लु० रूक्ष पो० पुद्गल की व० वर्गणा ॥ ७८ ॥ ए० एक ज० जंबूद्वीप स० सर्व द्वी द्वीप स समुद्र में जा यावत् अ० अर्ध अ०

उक्कोस ठितियाण, अजहन्नुक्कोस ठितियाण, जहन्नगुण कालगाण, उक्कोसगुण कालगाण, अजहन्नुक्कोस गुण कालगाण, एव वण्ण गध रस फासाणं वग्गणा भाणियव्वा जाव एगा अजहन्नुक्कोस गुण लुक्खाण पोग्गलाण वग्गणा ॥ ७८ ॥ एगे जबूद्दीवे

का स्कंध की एक वर्गणा एक जघन्य उत्कृष्ट प्रदेश के स्कंध की वर्गणा ऐसे ही जघन्य अवगाहना का स्कंध उत्कृष्ट अवगाहना का स्कंध और मध्यम अवगाहना का स्कंध की वर्गणा जघन्य (एक दो समयकी) स्थितिवाले उत्कृष्टी स्थिति (असंख्यात समय की स्थिति) वाले और मध्यम स्थितिवाले पुद्गलों का स्कंध की वर्गणा जघन्य से एक दो गुण काला वर्णवाले उत्कृष्ट अनंत गुण काला वर्णवाले और मध्यम गुण काले पुद्गलों का स्कंध की वर्गणा ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस और आठ स्पर्श का जघन्य, उत्कृष्ट और मध्यम गुण आश्रित पृथक् २ वर्गणाका कथन करना ॥ ७८ ॥ एक जम्बू द्वीप नामक द्वीप सब द्वीप समुद्र के मध्य भाग में हैं जम्बू नामक शाश्वत वृक्ष इस में रहाहुवा है और सब

अंगुल च और कि० किंचित् वि० विशेष प० परिधिस ॥ ७५ ॥ ए० एक स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर इ० इस ओ० अवसर्पिणी में च० चौवीस ति० तीर्थंकर में च० छेले ति० तीर्थंकर सि० सिद्ध बु० बुद्ध मु० मुक्त जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख से प० दूर ॥७६॥ अ० अनुत्तर उ० उपपातिकादिक दे० देवों का ए० एक हाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने प० कहा ॥ ७७ ॥ अ० आर्द्रा न० नक्षत्र ए० एकतारा प०

सव्वदसिसमुद्दाण जाव अङ्गुलगं च किंचि विसेसेहिं परिक्खेवेण ॥ ७५ ॥ एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमतित्थयेर सिद्धे बुद्धे मुत्ते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ ७६ ॥ अणुत्तरोववाइयाण देवाण एगारयणी उड्ढं उच्चत्तेण पन्नत्ता॥७७॥ अद्दा नक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते, चित्ता नक्खत्ते

मनुष्य और ॥७४॥ अंगुलकी है ॥७५॥ इस अवसर्पिणी कालके आदिनाथ आदि चौविस तीर्थंकरों में से चरम तीर्थंकर श्री महावीर देव अकेले ही सिद्ध हुवे, कृतार्थ हुवे, केवल ज्ञान से संसार मे सब पदार्थ को जाने कर्म रहित हुवे यावत् सब दुःखों से मुक्त हुवे ॥ ७६ ॥ विजय, विजयंत, जयंत अपराजित और सर्वार्थ सिद्ध इन पांच अनुत्तर विमान के देवता के शरीर एक हाथ के ऊंचे कहे हैं ॥ ७७ ॥ आर्द्रा, चित्रा, और स्वाति नक्षत्र का एक २ तारा है ॥ ७८ ॥ एक प्रदेश को अवगाह कर रहनेवाले परमाणुरूप पुद्गल

करा, वि० विमान क्षमका ए एकतारा प० कहा, सा० स्वाति क्षमका प पकतारा प०कहा ॥७८॥ए०एक प० प्रदेश ओ० अवगाहना करने वाल पो० पुद्गलँ अ० अनंता प० कहा ए० ऐसे ए० एक समय की ठि० स्थितिवाले ए० एक गुण काला पो पुद्गल अ० अनंत प कहा जा० यावत् ए० एक गुण लु० रुक्ष पु० पुद्गल अ० अनंत प० कहे ॥ ७९ ॥ *

एगतारे पन्नत्ते, साति नक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते ॥७८॥ एगपएसोगाढा पोग्गला अणतापन्नता एवमेगसमयठितिया, एग गुण कालगा पोग्गला अणता पन्नत्ता जाव, एग गुण लुक्खा पुग्गला अणता पन्नत्ता ॥ ७९ ॥ इति पढम ठाण सम्मत्त ॥ १ ॥

तथा स्कंध रूप पुद्गल अनंत कहे हैं एक समय की स्थितिवाले एक गुण काले पुद्गल यावत् एक गुण रुक्ष पुद्गल अनंत कहे है ॥ ७९ ॥ यह प्रथम स्थानक रूप ठाणांग सूत्र का प्रथम स्थानक समाप्त हुवा इस में एक एक बोल का कथन कहा अब दूसरे स्थान में दो दो बोल का कथन करते हैं ॥ १ ॥ ×
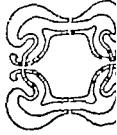
* द्वितीय स्थानकम् *

ज० जो इ० यहां लो लोक तं० उसका स० सर्व का दु० दोमकार तं० वह ज० जैसे जी० जीव अ० अजीव त० त्रस था० स्थावर स० सयोनिक अ० अयोनिक सा० आयुष्य सहित अ० आयुष्य रहित स० सइन्द्रिय अ अनिन्द्रिय स० सवेदी अ० अवेदी स० रूपी अ० अरूपी स० सपुद्गली अ० अपुद्गली सं०

जदित्थण लोगे तं सव्वं दुपडोआर तंजहा जीवा चेव अजीवाचेव, तसेचेव थावरेचेव, सजोणियाचेव अजोणियचेव, साउयाचेव अणाउयचेव, सइंदियचेव अणिंदियचेव, सवेयगाचेव अवेयगाचेव, सरूविचेव अरूविचेव, सपोग्गलाचेव अपोग्गलाचेव, संसार

अब श्री सुधर्मा स्वामी फरमाते हैं कि अहो जम्बू ! इस जगत में सब पदार्थ दो मकारक हैं सो बताते हैं १ चेतना लक्षणवाला जीव २ और चेतना रहित सो अजीव। जीव के दो भेद, १ त्रस द्वीन्द्रियादिक २ स्थावर पृथिव्यादिक और भी जीव के दो भेद १ चोरासी लक्षयोनि में उत्पन्न होवे सो सयोनिक और २ बिना योनि उत्पन्न होवे सो अयोनिक सिद्ध भगवंत। आयुष्य सहित जीव संसारी और आयुष्य रहित जीव सिद्ध। १ इन्द्रिय सहित जीव सइन्द्रिय और २ इन्द्रिय रहित जीव सो अणिन्द्रिय। १ वेद वाले जीव सवेदी और २ वेद रहित जीव अवेदी। १ शरीर सहित रूपी २ शरीर रहित अरूपी

संसारी अ० असंसारी सा० शाश्वत अ० अशाश्वत आ० आकाश नो० नहीं आ० आकाश ध० धर्म अ० अधर्म बं० बंध मो० मोक्ष पु० पुन्य पा० पाप आ० आश्रव सं० संवर वे० वेदना णि० निर्जरा ॥१॥ दो० दो कि०

समावन्नगाचेव असंसारसमावन्नगाचेव, सासयचेव असासयचेव आगासेचेव नोआगासेचेव धम्मेचेव अधम्मेचेव, बंधेचेव मोक्खेचेव, पुण्णेचेव पावेचेव, आसवेचेव संवरेचेव, वेयणाचेव णिज्जराचेव ॥ १ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा—जीव किरियाचेव

सिद्ध। कर्म पुद्गल सहित और कर्म पुद्गल रहित। संसार में परिभ्रमण करनेवाले और संसार से मुक्त होनेवाले। जन्म मरण से मुक्त होने से शाश्वत जीव हैं और जन्म मरण करने से अशाश्वत जीव हैं इस तरह जीव के दो २ भेद बतलाये अब अजीव के भेद बतलाते हैं १ आकाश—अनगार घर रहनेवाला २ नो आकाश—धर्मास्तिकाय प्रमुख। और भी अजीव के दो दो भेद बताते हैं १ धर्म—विरतिरूप धर्म २ पाप सो अधर्म।। १ आश्रव रूप द्वार से जीव की साथ कर्मों बंधावे सो बंध २ सब कर्मों से मुक्त होना सो मोक्ष। १ दानादि करना सो पुण्य २ जीव हिंसादि करना सो पाप। १ कर्म आनेका मार्ग सो आश्रव २ आते कर्म का रुंधन करना सो संवर। सुख दुःख को भोगना सो वेदना २ उसे तपश्चर्यादि से दूर करना सो निर्जरा ॥ १ ॥ जिस प्रकार के कार्यों करने से कर्मरूप पुद्गलों का आत्मा से संबंध

क्रिया प० कही त० वह ज० जैसे जी० जीव क्रिया अ० अजीव क्रिया जी० जीव क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे स० सम्यक्त्वक्रिया मि० मिथ्यात्वक्रिया अ० अजीव क्रिया दु० दो प्रकार से प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे इ० ईर्यापथिक स० सांपरायिक ॥ २ ॥ दो० दो कि क्रिया प०

अजीव किरियाचेवा, जीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता तजहा—सम्मत्त किरिआचेव, मिच्छत्त किरियाचेव, अजीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता तजहा ईरियावहियाचेव, सपराइया चेव ॥ २ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा—काइयाचेव, अहिगरणियाचेव, काइया

होता है उसी प्रकार के कार्यों को क्रिया कहते हैं ऐसी क्रिया के दो भेद हैं १ जीव का व्यापार से उत्पन्न होवे सो जीव क्रिया और २ अजीव का व्यापार से उत्पन्न होवे सो अजीव क्रिया। जीव क्रिया भगवानने दो प्रकारकी कही है १ सम्यक्त्व क्रिया—सत्यतत्त्व की श्रद्धा करने रूप व्यापार २ मिथ्यात्व क्रिया—असत्य तत्त्व की श्रद्धा रूप जीव का व्यापार। अजीव क्रिया के दो भेद भगवानने कहे हैं १ अकषायी जीवोंको योग की प्रवृत्ति से कर्मबंध होवे और तुर्तही क्षय जाय सो ईर्यापथिक क्रिया और २ सकषायी जीवों को योगों की प्रवृत्तिसे कर्म पुद्गलों आकर बंधावे सो सांपरायिक क्रिया ॥ १ ॥ अब आगे सांपरायिक क्रिया के दो दो भेद बताते हैं १ कायिकी क्रिया—कायाके व्यापार से लगे सो, २ उपकरणों के व्यापार से जो कर्म पुद्गल आते हैं उसे अधिकरणिया क्रिया कहते

अरूपी तं० यह ज० जैसे का० काइया अ० अभिकरणीया का० काइया क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० यह ज० जैसे अ० अनुपरतकाइयाक्रिया दु० दुप्रयुक्त काइयाक्रिया अ० अधिकरणीया क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० यह ज० जैसे स० संयोजन अधिकरणीया णि० निर्वर्तन अधिकरणीया ॥ २ ॥ दो दो कि० क्रिया प० प्ररूपी तं० यह ज० जैसे पा० द्वेषकी प० परितापकी पा० द्वेषकी क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० यह ज० जैसे जी० जीवद्वेषीया अ० अजीव

किरिया दुविहा पन्नता तंजहा अणुवरय कायकिरियाचेव, दुप्पउत्तकाय किरियाचेव आहिगरणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा संजोयणाहिगरणियाचेव, णिव्वत्तणाहिगरणिया चेव ॥ २ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा पाउसियाचेव पारियावणियाचेव पाउसिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीव पाउसियाचेव, अजीव पाउसियाचेव

हैं। इसमें से कायिकी क्रिया के दो भेद १ अविरति सम्यग्दृष्टि व मिथ्यादृष्टि काया की जो हलन चलन क्रिया करते हैं उसे अनुपरत कायिकी क्रिया कहते हैं दुष्ट दुःख परस्पर होने से या मन के खराब संकल्पों से श्रमण साधु को जो क्रिया लगती है उसे दुप्रयुक्त कायिकी क्रिया कहते हैं अब अधिकरणिया क्रिया के दो भेद १ संयोजनाधिकरणिया—शस्त्रादि शस्त्रों को मुष्टि द्वारा लगाना २ निर्वर्तनाधिकरणिया शस्त्र, धर्मी मूसलादिक बनाकर रखना ॥ ३ ॥ और भी क्रिया दो प्रकार की १ किसी पर द्वेष करना

दुवीया प० परितापनीया कि० क्रिया दु० दो प्रकार से प० प्ररूपी तं० यह ज० जैसे स० स्व हस्त से प० दूसरे के हस्त से ॥ ८ ॥ दो० दोक्रिया प० प्ररूपी तं० यह ज० जैसे पा० प्राणातिपात क्रिया अ० अप्रत्याख्यान क्रिया पा० प्राणातिपात क्रिया दु० दोप्रकार से प०प्ररूपी तं० यह ज० जैसे स० स्वहस्त से पा० प्राणातिपात क्रिया प० दूसरे के हस्तसे पा० प्राणातिपात क्रिया

पारियावणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सहत्थपारियावणियाचेव, परहत्थपारियावणियाचेव ॥ ४ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा पाणाइवाय किरियाचेव, अपच्चक्खाणकिरियाचेव । पाणाइवायकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सहत्थपाणाइवाय किरि-

करना सो पाउसिया (प्राद्वेषिकी) २ और किसी को ताडनादि करना या दुःख उपजाना सो परिताप क्रिया (परितापनिकी)। इस में से पाउसिया क्रिया के दो भेद १ किसी जीव से द्वेष करना सो जीव पाउसिया २ अजीव-स्वभादि से अथडाने से उसपर द्वेष करना सो अजीव पाउसिया। दूसरी परितावणिया क्रिया के दो भेद १ अपने हाथ से अपने शरीर को व अन्य के शरीर को दुःख देना सो स्व हस्त परियावणिया दूसरे के हाथ से अपन को या दूसरे को परिताप देना सो परहस्त परियावणिया क्रिया ॥ ८ ॥ और भी क्रिया दो प्रकार की प्राणातिपात जीव हिंसा से जो पाप कर्म बंधावे सो पाणाइ

म० अप्रत्याख्यान क्रिया इ० इसप्रकार स प० प्ररूपी तं० तद्यथा ज० जैसे जी० जीव अप्रत्याख्यान क्रिया म० अजीव अप्रत्याख्यान क्रिया ॥ ८ ॥ दो० दो कि० क्रिया प० प्ररूपी तं० तद्यथा जैसे आ० आरंभिया प० परिग्रहिया मा० आरंभिया क्रिया इ० इसप्रकार से प० प्ररूपी जी० जीव आरंभीया

पाचेव, परइत्थपाणाइवाय किरियाचेव । अपच्चक्खाण किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीव अपच्चक्खाण किरियाचेव, अजीव अपच्चक्खाण किरियाचेव ॥ ५ ॥ दोकिरिया ओ पन्नत्ता तंजहा आरंभियाचेव, परिग्गहियाचेव । आरंभिया किरिया दुविहा पन्नत्ता

माइवा (प्राणातिपातिकी) २ और बिना प्रत्याख्यान से जो पाप बंध होवे सो अपच्चखाणिया क्रिया । इस में से प्रथम प्राणातिपातिकी क्रिया के दो भेद कहते हैं १ स्वहस्तसे स्वहस्त करके अपने प्राण को या अन्य के प्राण का हनन करे सो स्वहस्त प्राणातिपात की क्रिया २ वैसे ही दूसरे के हस्त से अपने प्राणको या अन्य के प्राणों का हनने से परहस्त प्राणातिपात की क्रिया । दूसरी अप्रत्याख्यानी क्रिया के दो भेद १ जीवसंबंधि जीव प्रतिबंध वस्तु में प्रत्याख्यान बिना कर्म बंधावे सो जीवअप्रत्याख्यानी क्रिया २ और मदिरादि अजीव में प्रत्याख्यान नहीं होने से अजीव अप्रत्याख्यान क्रिया होती है ॥ ५ ॥ और भी क्रिया दो प्रकारकी है १ आरंभ से होवे सो आरंभिया और अन्य पुरुषों में ममत्व से उत्पन्न होवे सो परिग्रहिया उस में से आरंभिया क्रिया के दो भेद १ सचित्त मिट्टी आदि के आरंभ से कर्म बंधावे सो जीव आरंभिया

म० अजीव आरंभीया ए० एस प० पारग्रहिया ॥ १ ॥ दो० दोकिया प० प्रज्ञप्ता तं० यह जा० जसा मा० मायावत्तिया मि० मिथ्यादर्शन वत्तिया मा० मायावत्तिया क्रिया दु० दोप्रकार से प० परूपी तं० यह

तजहा जीव आरंभिआचेव अजीव आरंभिआचेव । एव परिग्गाहियावि ॥ १ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तजहा मायावत्तिआचेव, मिच्छादंसणवत्तिआचेव । मायावत्तिआकिरिया दुविहा पन्नत्ता तजहा आयभाव वंकणयाचेव, परभाव वंकणयाचेव । मिच्छादंसणवत्तिआकिरिया दुविहा पन्नत्ता तजहा ऊणाइरित्तमिच्छादंसणवत्तियाचेव, तव्वइरित्त

२ जीव रहित कलेवर को अग्नि संस्कार तथा वस्त्रादि बनाने का आरंभ से कर्म बंधावे सो अजीव आरंभिया । ऐसे ही परिग्रही क्रिया के दो भेद द्विपद चतुष्पदादिक की ममता करे सो जीव परिग्रहिया और सुवर्णादि की ममता करे सो अजीव परिग्रहिया ॥ १ ॥ और भी क्रिया के दो भेद कहलाते हैं १ कपट करने से लगे सो मायावत्तिया (माया प्रत्ययिकी) क्रिया २ मिथ्याकरणी करने से कर्म बंधावे सो मिथ्यादर्शनवत्तिया ॥ इन में से माया प्रत्ययिक के दो भेद १ आभ्यंतर टेढा और बाहिर अच्छा बग स्थापे सो आत्मभाव वंकनता है २ खोटे लेख लिखकर अन्य को ठगना सो परभाव वंकनता क्रिया । दूसरी मिथ्यादर्शन क्रिया के दो भेद १ सर्वज्ञ के कथन से हीनाधिक माने सो ऊनातिरिक्त क्रिया जैसे कोई मिथ्यात्वी जीव को तिल बराबर दीपक बराबर अंगुष्ठ बराबर है ऐसे कहे २ तदव्यतिरिक्त मिथ्यादर्शन

न जैसे आ० आत्मभाव वकनता प० परभाव वकनता मि० मिथ्यादर्शन वत्तिया क्रिया दु दो प्रकारकी प० प्ररूपी तं०यह अ० जहा उ० ऊनातिरिक्त मिथ्यादर्शन वत्तिया त० तद्व्यतिरिक्त मिथ्यादर्शन वत्तिया ॥ ७ ॥ दो० दोक्रिया प० प्ररूपी तं० यह ज० जैसे दि० दिट्ठिया पु०पुट्ठिया दि० दिट्ठिया क्रिया दु० दो प्रकारसे प० प्ररूपी है यह ज० जैसे जी० जीवदिट्ठिया अ० अजीव दिट्ठिया ए० ऐसे पु० पुट्ठिया ॥ ८ ॥ दो० दोक्रिया प० प्ररूपी तं० यह पा० पाडुच्चिकी सा० सामतोपनिपातिकी दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी त०

मिच्छादंसणवत्तिआचेव ॥ ७ ॥ दो किरियाओ पण्णत्ता तंजहा दिट्ठियाचेव पुट्ठियाच्चेव दिट्ठिया किरिया दुविहा प० त० जीवदिट्ठियाच्चेव, अजीवदिट्ठियाच्चेव । एवं पुट्ठियावि ॥ ८ ॥ दो किरियाओ प० त० पाडुच्चियाचेव सामतोवणिवाइयाचेव । पाडुच्चिया किरिया दुविहा प० तं० जीव पाडुच्चियाचेव अजीव पाडुच्चियाचेव । एवं सा

क्रिया जैसे कोई मिथ्यात्वी आत्मा का अस्तित्वको ही माने नहीं परंतु पंचभूत से आत्मा बना हुवा है ऐसा माने ॥ ७ ॥ और भी दो प्रकार की क्रिया कही है १ किसी वस्तु देखने से लगे सो दिट्ठिया (दृष्टिकी) २ और स्पर्शने से लगे सो पुट्ठिया ॥ दृष्टिकी क्रिया के दो भेद १ अश्व, गज, मनुष्यादि जीव वस्तु देखने से लगे सो जीव दृष्टिकी २ और चित्र, महल भूषणादि देखने से क्रिया लगे सो अजीव दृष्टिकी । ऐसे ही रागद्वेष से जीव अजीव को स्पर्शे सो जीव अजीव स्पर्शिया क्रिया ॥ ८ ॥ और भी क्रिया दो प्रकार की १ अपनी वस्तु की अन्य कोई निन्दा करता होवे जिस से उस पर रागद्वेष होवे सो पाडुच्चिकी २

यह जी० जीव मातीतिका अ० अजीव मातीतिका ए० एसे सा० सामंतोपनिपातिका ॥ ९ ॥ दो० दोक्रिया प० मरूपी तं० यह सा० स्वहस्तिकी णे० नेसात्थिया सा० स्वहस्तिकी क्रिया दु दोमकार से प० मरूपी तं० यह ज० जैसे भी जीवस्वहस्तिकी अ अजीव स्वहस्तिकी ए० ऐसे णे नेसात्थिया ॥ १० ॥ दो०

भतोत्राणित्राइयात्रि ॥ ९ ॥ दो किरियाओ प० त० साहत्थियाचेव, णेसात्थियाचेव, साहत्थिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तजहा—जीव साहत्थियाचेव, अजीव साहत्थिया चेव । एवं णेसात्थियावि ॥ १० ॥ दो किरियाओ प० तं० आणवणियाचेव वेयार-

अपनी अच्छी वस्तु देख कर कोई मशंसा करे जिस से उस पर प्रेम भाव उत्पन्न होवे सो सामंतोपनिपातिकी उस में से मातीतिकी के दो भेद जीव आश्री कर्म बंधे सो जीव मातीतिकी और अजीव आश्री कर्म बंधे सो अजीव मातीतिकी ऐसे ही जीव अजीव की अन्य से मशंसा सुन उन पर प्रेम उत्पन्न होवे सो जीव अजीव सामंतोपनिपातिकी ॥ ९ ॥ और भी क्रिया दो मकारकी १ अपने हस्त से बनाए हुए वस्तु से आरंभ उत्पन्न होवे सो स्वहस्तिकी क्रिया २ अयत्ना से वस्तु फेंकने से जो घात होवे सो नेसात्थिया (नैश स्त्रिकी) उस में से मथम क्रिया के दो भेद १ अपने हाथ में जीव को पकडकर जीव को मारना २ अथवा अजीव को पकड कर जीव को मारना सो जीव अजीव स्वहस्तिकी क्रिया हुई ऐसे ही नेसात्थि या क्रिया के दो भेद—सजीव, अजीव वस्तु उपर से डाले ॥ १० ॥ और भी क्रिया के दो भेद कहते हैं

दाकिया प० मरूपी तं० यह आ०आज्ञापिनी वे० वेदारिणी ज० जैसे ने० नेसत्थिया की ॥११॥ दो० दो किया प० मरूपी तं० यह ज० जैसे अ० अनाभोगवत्तिया अ० अनवकंखवत्तिया अ० अनाभोगवत्तिया कि० किया दु० दोमकार से प० मरूपी अ० उपयोग रहित आ० ग्रहण करना अ० उपयोग रहित प० साफ करना अ० अनवकंख वत्तिया का दोभेद आ० आत्म शरीर अनवकंखवत्तिया प० परशरीर अनवकंख वत्तिया ॥ १२ ॥ पे० राग वत्तिया दो० द्वेषवत्तिया पे० रागवत्तिया किया दु० दोमकार से मरूपी

गियाचेव अहेवनेसत्थिया ॥ ११ ॥ दो किरियाओ प० त० अणाभोगवत्तियाचेव, अणवकंखवत्तियाचेव । अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा प० तं० अणाउत्तआयणा चेव, अणाउत्त पमज्जणाचेव । अणवकंखवत्तिया किरिया दुविहा प० त० आय सरीर अणवकंखवत्तियाचेव, परसरीरअणवकंखवत्तियाचेव ॥ १२ ॥ दो किरियाओ

१ स्वामी की आज्ञा से कर्म बंधावे सो आज्ञापिनी (आणवणिया) और २ किसी वस्तु के छेदन भेदन से किया लगे सो विदारिकी (विदारणिया) इन दोनों के दो दो भेद नेसत्थिया जैसे करना ॥ ११ ॥ और भी किया के दो भेद १ बिना उपयोग से कर्म बंध होवे सो अणाभोगवत्तिया २ और अपेक्षा बिना कर्म लगे सो अनवकंखा । उस में से अणाभोगवत्तिया के दो भेद १ उपयोग बिना वस्त्रादिक ग्रहण करने से २ उपयोग बिना पूंजने से । अनवकंखा के दो भेद १ स्व

[illegible]

मा० मायावत्तिया लो० लोभवत्तिया दो० द्वेषवत्तिया कि० क्रिया दु० दोप्रकार की प० प्ररूपी को० क्रोध मा० मान ॥ १३ ॥ दु० दोप्रकार की ग० गर्हा म० मन से ग० गर्हता है व वचन से ग० गर्हता है अ० अथवा दी० दीर्घ काल ग० गर्हता है र० थोडे काल ग० गर्हता है ॥ १४ ॥ दु० दोप्रकार के प मत्या

पन्नत्ता तं० पेज्जवत्तिआचेव, दोसवत्तियाचेव, पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा प० त० मा यावत्तियाचेव, लोभवत्तियाचेव, दोसवत्तिया किरिया दुविहा प० त० कोहेचेव माणो चेव ॥ १३ ॥ दुविहा गरिहा प० त० मणसावेगे गरिहइ वयसावेगेगरिहइ । अहवा गरिहा दुविहा पन्नत्ता तजहा दीहं एगे अद्धं गरिहइ, रहस्स एगे अद्धं गरिहइ ॥ १४ ॥ दुविहे

भी दो प्रकार की क्रिया प्रेम वत्तिया व द्वेष वत्तिया प्रेम से उत्पन्न होवे सो प्रेम वत्तिया उस के दो भेद माया और लोभ तथा द्वेष से उत्पन्न होवे सो द्वेष वत्तिया उस के दो भेद क्रोध और मान यह पचीस क्रिया के भेद हुवे ॥ १३ ॥ पूर्वोक्त क्रिया के भेदों गर्हणीय हैं इसलिये गर्हा का स्वरूप कहते हैं पापकी निन्दा सो गर्हा इस के दो भेद हैं कितनेक मन से ही पापकी निन्दा करते हैं और कितनेक वचन से पापकी निन्दा करते हैं और दूसरी तरह से भी इस के दो भेद हैं कितनेक बहुत काल के पापों की गर्हणा करे और कितनेक अल्प काल के पापों की गर्हा करे ॥ १४ ॥ प्रत्याख्यान के दो भेद कहे हैं २

ख्यान म०मन से प०प्रत्याख्यान करता है व०वचन से प०प्रत्याख्यान करता है अ अथवा प०प्रत्याख्यान दु०दोप्रकारके प०प्ररूपे दी०दीर्घकाल प०प्रत्याख्यान करता है र०थोडेकाल प०प्रत्याख्यान करता है ॥१८॥ दो०दो ठा०स्थान से अ०अनगार सं०युक्त अ०अनादि अ०अनंत दी०दीर्घकाल चा० चार गति सं०संसार कं० मंगल को वि० अंतकरे त० वह ज० जैसे वि० विद्यासे च० चारित्र से ॥ १६ ॥ दो० दोस्थान अ० जानेबिना आ० आत्मा णो० नहीं के केवली प० प्ररूपा ध० धर्म को ल० प्राप्तकरे स० सुनने को त०

पच्चक्खाणे प० त० मणसावेगे पच्चक्खाति, वयसावेगे पच्चक्खाति अहवा पच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा दीहं एगे अद्धं पच्चक्खाति, रहस्स एगे अद्ध पच्चक्खाति ॥१५॥ दोहिं ठाणेहिं अनगारे संपन्ने अणाइय अणवदग्ग दीहमद्धं चाउरंतससारकंतार विइवएज्जा तंजहा विज्जाएचेव चरणेणचेव ॥ १६ ॥ दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया

मन से मानपूर्व रखकर प्रत्याख्यान करे सो समदृष्टि और दूसरे मात्र वचन से प्रत्याख्यान करे सो मिथ्या दृष्टि अथवा दोप्रकार के प्रत्याख्यान कहे हैं कोई प्राणी जीवन पर्यंत प्रत्याख्यान करते हैं और कोइ प्राणी अल्प काल का प्रत्याख्यान करते हैं ॥१५॥ विद्या (ज्ञान) और चारित्र ऐसे दोस्थानक से संपन्न अणगार अनादि अनंत चतुर्गतिक संसारका अन्तकर मुक्ति प्राप्त करते हैं॥१६॥ आरंभ और परिग्रहत्व को

मु० मुंड म० होके आ० आगार से म अनगार को प० अंगीकार करे तै० वह ज० जैसे आ० आरंभ परिग्रह ए० ऐसे णो० नहीं के० केवल बं० ब्रह्मचर्य वास को स रहे णो० नहीं के० केवल सं० संयम से स० संयम करे णो० नहीं के० केवल सं० संवर से सं० संवरे णो० नहीं के० केवल अ० मतिज्ञान उत्पन्न होवे ए० ऐसा प० पद सु० श्रुतज्ञान ओ० अवधिज्ञान म० मन पर्यवज्ञान के० केवलज्ञान ॥ १७ ॥

णो केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए तंजहा आरंभेचेव, परिग्गहेचेव,। दो ठाणा इ अपरिआणित्ता आया णो केवल मुंड भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वेज्जा तंजहा आरंभेचेव परिग्गहेचेव एव णो केवल बंभचेर वा समावसेज्जा णो केवलेण संजमेण संजमेज्जा णो केवलेण संवरेण संवरेज्जा, णो केवल माभिणिबोहियणाण उप्पाडेज्जा एव पद सुअणाण ओहिणाण मणपज्जवणाण केवलणाण ॥ १७ ॥ दो ठाणाइ परि

नहीं प्राप्त कर सकता है वैसे ही बोधिबीज सम्यक्त्व भी नहीं प्राप्त कर सकता है इन पूर्वोक्त आरंभ परिग्रह दोनों स्थानकों को जाने बिना जीव द्रव्य भाव से मुंडित बनकर व गृहस्थावास छोडकर साधु पना नहीं पाल सकता है वह जीव शुद्ध शील, षट्काया की रक्षारूप संयम, व संवर नहीं पाल सकता है वैसे ही मति, श्रुति, अवधि, मन पर्यव व केवलज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता है ॥ १७ ॥ आरंभ व परि

शा० दास्थान प जानकर आ आत्मा के० केवली प० मरूपा ध० धर्म को ल भासकरे स० सुनने को आ० आरंभ प० परिग्रह ए० एते मा० यावत् के० केवल ज्ञान उ० माप्त करे ॥ १८ ॥ दो० दो ठा० स्थान से आ० आत्मा के० केवली प० मरूपा ध० धर्म को ल० माप्त करे स० सुनने को तं० यह ज० जैसे सा० सुनकर स० श्रद्धकर जा० यावत् के० केवल ज्ञान उ० माप्त करे ॥ १९ ॥ दो० दो स० समय प० मरूपा उ० उत्सर्पिणी ओ० अवसर्पिणी स० समय ॥ २० ॥ दु० दोमकार से उ० उन्माद प०

याइंचा आया कवली पन्नत्तं धम्म लभेज्ज सवणयाए तंजहा आरंभेचेव परिग्गहेचेव एवं जाव केवलिनाण मुप्पाडेज्जा ॥ १८ ॥ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्म लभेज्ज सवणयाए तंजहा सोच्चाचेव अभिसमेच्चाचेव जाव केवलनाण उप्पाडेज्जा॥ १९॥ दो समाओ पन्नत्ताओ तंजहा उसप्पिणिसमाचेव ओसप्पिणिसमाचेव ॥ २० ॥ दुविहे

प्रह इन दोनों स्थानकों को जानकर त्याग करनेवाला जीव केवली भाषित धर्म व सम्यक्त्व जान सकता है व साधुपना, संजम, संवर, शील पाल सकता है वैसे ही मति ज्ञान यावत् केवल ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है ॥१८॥ शास्त्र का श्रवण व उस में श्रद्धा ऐसे दोनों कारणों से जीव केवली भाषित धर्म सुनने की यावत् केवल ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है ॥ १९ ॥ भरत ऐरवत क्षेत्र में दो प्रकारका काल कहा उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी ॥ २० ॥ जीव को दो प्रकारका उन्माद कहा १ व्यंतरादि किसी देव के प्रयोग से २ मोहनीय

सु॰ सुख से वेदे सु॰ सुख से छूटे स॰ वहां जे॰ जो मो॰ मोहनी कर्म का उ॰ उदय से दु॰ दुःख से वेदे दु॰ दुःख से छुटे ॥ २१ ॥ दो॰ दो दं॰दंड प॰ परूपा अ॰ अर्थदंड अ॰ अनर्थदंड ने॰ नारकी को दो॰

उम्माए पन्नत्ते तंजहा जक्खावेसेचेव मोहणिज्जस्सचेव कम्मस्स उदएण, तत्थ णं जेसे जक्खावेसेसेण सुहवेयतराएचेव सुहविमोयतराएचेव तत्थणं जेसे मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण, सेणं दुहवेयतराएचेव दुहविमोयतराएचेव ॥ २१ ॥ दो दंडा पन्नत्ता तंजहा अट्ठादंडेचेव अणट्ठादंडेचेव । नेरइयाणं दो दंडा प॰ तंजहा अट्ठादंडेचेव अणट्ठादंडे

कर्म का उदय से उस में से यक्षादिक से पैदा हुआ उन्माद सरलता से वेद सकते हैं और उस से मुक्त होना भी सहज होता है अर्थात् मंत्रादिक के प्रयोग से मुक्त हो सकते हैं, परंतु मोहनीय कर्म का उदय से जो उन्माद होता है उस का वेदना बडा कठिन होता है वैसे ही उस से मुक्त होना भी बहुत कठिन है क्यों कि यह अनंत संसार में परिभ्रमण कराता है उस की उत्कृष्ट स्थिति ७० कोडाकोडी सागर पर्यंत की है ॥ २१ ॥ दो प्रकार के दंड कहे हैं पंचइन्द्रियों के लिये पाप करना सो अर्थ दंड और विना स्वार्थ पाप करना सो अनर्थ दंड है ये दोनों प्रकारके दंड नरक में यावत् वैमानिक देव तक चौबिस ही दंडक

दोण्हं अ० अवरुड अ० अनथ वह ए० एसे च० चौवीस दं० दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ? ॥ दु० दोमकार से द दर्शन स सम्यक् दर्शन मि० मिथ्यादर्शन स० सम्यक दर्शन दु० दोगकार से णि० निसर्ग सम्यक् दर्शन अ अभिगम सम्यक् दर्शन णि० निसर्गसम्यक् दर्शन दु० दोप्रकार से प प्रतिपाति अ अप्रतिपाति अ० अभिगम सम्यक् दर्शन दु० दोमकार से प० प्रतिपाति अ० अप्रतिपाति मि० मिथ्या दर्शन दु दोमकार स अ अभिग्रहिक मिथ्यादर्शन अ० अनाभिग्रहिक मिथ्यादर्शन अ० अभिग्रहिक

चेव एव चउवीस दंडओ जाव वेमाणियाण ॥ २२ ॥ दुविहे दसणे प० त० सम्म दसणेचव, मिच्छादसणेचेव । सम्मदसण दुविहे प० त० णिसग्ग सम्मदंसणेचेव, अभिगम सम्मदसणेचेव । णिसग्ग सम्मदसणे दुविहे प० त० पडिवाइचेव अपडिवा ईचव आभिगम सम्मदंसण दुविहे प० त० पडिवाईचेव, अपाडिवाइचेव । मिच्छादसणे दुविहे प० त अभिग्गहिय मिच्छादसणेचेव, अणभिग्गहिय मिच्छादसणेचेव । आभिग

पाते हैं ॥ २२ ॥ भगवन्त ने दो प्रकारके दर्शन फरमाये हैं १ समकित दर्शन—यथार्थ वस्तु का ज्ञान २ मिथ्या दर्शन—वस्तु को अयथार्थपने जान । सो उस में से समकित दर्शन के दो भेद १ स्वभाव से ही जिनोक्त तत्त्व में रुचि उत्पन्न होवे सो निसर्ग समकित मरुदेवी मातावत् २ गुरु के उपदेश से तत्त्व की रुचि उत्पन्न होवे सो अभिगम समकित भरतादिकवत् निसर्ग समकित के दो भेद १ प्रतिपाति आकर पीछी

मिथ्यादर्शन दु० दोमकार स स० अन्त सहित अ० अन्त रहित ए० एस अ० अनाभिग्रहिक मिथ्यादर्शन ॥ २१ ॥ दु० दोमकार का ना० ज्ञान प० प्ररूपा प० प्रत्यक्ष प० परोक्ष प० प्रत्यक्ष ज्ञान दु० दोमकार से

ग्गहिय मिच्छादसणे दुविहे प० त० सपज्जवसिएचेव, अपज्जवसिएचेव । एवं मणाभि ग्गहिय मिच्छादसणेवि ॥ २३ ॥ दुविहे नाणे पन्नत्ते तजहा पच्चक्खेचेव, परोक्खेचेव

चली जाय सो उसमें उपशम समकित अंतरमुहूर्त तक रहे और क्षयोपशम उत्कृष्ट साधिक ६६ सागरोपम तक रहे इस लिये उसे प्रतिपातीनिसर्गसमकित कहा है अप्रतिपाती आये पीछे जावे नहीं, क्षायक भाव से रहे क्षायक समकित जहां लग जीव मोक्ष में जावे वहां लग रहे, इसलिये अप्रतिपाती निसर्ग समकित कहा है ऐसे ही अभिगम समकित के भी प्रतिपाती और अप्रतिपाती ऐसे दो भेद जानना अब मिथ्यादर्शन के दो भेद पकडी हुइ हठ को छोडे नहीं सो आभिग्रहिक मिथ्यात्व और भोले भाव से मिथ्या श्रद्धा का धारण कर सो अनभिग्रहिक मिथ्यात्व आभिग्रहिक मिथ्यात्व के दो भेद, १ जिस मिथ्यात्व का अंत है सो सपर्यवसितआभिग्रहिक मिथ्यात्व भव्य जीवों को, और जिस का अंत नहीं है सो अपर्यवसित आभिग्र हिक यह अभव्य जीवों को होता है वैसे ही अनभिग्रहिक मिथ्यात्व के सपर्यवसित और अपर्यवसित ऐसे दो भेद होते हैं ॥ २१ ॥ श्री भगवन्तने ज्ञान के दो भेद कहे हैं १ पांच इन्द्रियों की सहायता विना

प० प्ररूपा के० केवल ज्ञान णो० ना केवल क केवल ज्ञान दु० दोप्रकार से भ भवप्राहिक केवल ज्ञान सि० सिद्धस्थ केवल ज्ञान भ० भवप्राहिक केवल ज्ञान दु० दोप्रकार से स० सयोगी भवप्राहिक केवल ज्ञान भ० अयोगी भवप्राहिक केवल ज्ञान स० सयोगी भवस्थ केवल ज्ञान दु० दोप्रकार का प० प्रथम समय सयोगी भवप्राहिक केवल ज्ञान भ० अप्रथम समय सयोगी भवप्राहिक केवल ज्ञान भ० अथवा च० चरमसमय समय सयोगी भवप्राहिक केवल ज्ञान भ० अचरम

पच्चक्खनाणे दुविहे प० त केवलनाणेचेव, णो केवलनाणेचेव । केवलनाणे दुविहे प० तं भवत्थ केवलनाणेचेव, सिद्धकेवलनाणेचेव । भवत्थ केवलनाणे दुविहे प० तं० सजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव अजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव । सजोगिभवत्थ

ज्ञान उत्पन्न होवे सो प्रत्यक्ष और इन्द्रिय मन की सहायता से जो ज्ञान होवे सो परोक्ष प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद १ सब द्रव्य क्षेत्र, काल, भाव को जाने सो केवल ज्ञान और २ अवधि मनःपर्यव ज्ञान सो नो केवल प्रत्यक्ष ज्ञान केवल ज्ञान के दो भेद संसार में रहनेवाले जीवों को भवस्थ केवल ज्ञान २ सिद्धस्थ केवल ज्ञान मोक्ष के जीवों को भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद सजोगी भवस्थ केवल ज्ञान मन, वचन व काया के योगों सहित तेरवे गुणस्थान में रहनेवाले, २ अजोगी भवस्थ केवल ज्ञान चौदमें गुणस्थान में रहनेवाले जीवों को सजोगी भवस्थ केवल ज्ञान के दो भेद १ प्रथम समय सजोगी भवस्थ केवल ज्ञान-ज्ञान उत्पन्न होवे जब तेरवे गुणस्थान में रहनेवाले जीवों को जो ज्ञान होवे सो २ दूसरे अप्रथम समय सजोगी भवस्थ केवल ज्ञान.

समय सयोगी भवस्थादिक केवल ज्ञान ऐ० ऐसे अ० अयोगी भवस्थादिक केवल ज्ञान सि सिद्ध केवल ज्ञान दु० दोप्रकार का अ० अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान प परंपरा सिद्ध केवल ज्ञान अ० अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान दु०दोप्रकार का ए०एक अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान अ०अनेक अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान प०परंपरासिद्ध केवल ज्ञान दु० दो प्रकार का ए० एक परंपरासिद्ध केवल ज्ञान अ० अनेक परंपरासिद्ध केवल ज्ञान णो०

केवलनाणेदुविहे प० त० पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव अपढमसमय सजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव । एवं अजोगिभवत्थकेवलनाणेवि ॥ सिद्धकेवलनाणे दुविहे प० त० अणंतरसिद्धकेवलनाणेचेव, परंपरसिद्धकेवल

दूसरा समय का भवस्थ सयोगी जीवकों जो ज्ञान होवे सो और भी दो भेद बतलाते हैं १ चरम समय सयोगी भवस्थ केवल ज्ञान चौदहमें गुणस्थान आते सयोगी भवस्थ जीव को छेल्ले समय में जो ज्ञान होवे सो २ अचरम समय सयोगी भवस्थ केवल ज्ञान—अन्तिम समय प्राप्त न हुवा होवे ऐसे जीवों का केवल ज्ञान ऐसे ही अजोगी भवस्थ केवल ज्ञान के भेद जानना सिद्ध केवल ज्ञान के दो भेद १ पहिले समय में सिद्ध होवे सो अनंतर सिद्ध केवलज्ञान और सिद्ध होने में दो, तीन, चार समय हुवे हो ऐसे सिद्ध को परंपरा सिद्ध केवलज्ञान अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान दो प्रकारका एक समय में एक ही सिद्ध होवे उस को एक

नोकेवल ज्ञान दु० दोप्रकार का ओ० अवधि ज्ञान म० मनः पर्यव ज्ञान ओ० अवधिज्ञान दु० दोप्रकार का भ० भवप्रत्यय ख० क्षायोपशमिक दो० दोप्रकार का भ० भवप्रत्यय दे० देवता को ने० नारकी को दो० दोप्रकार का क्षयोपशमिक म० मनुष्य को पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच जो योनिवाले म० मनः पर्यव

नाणेचेव । अणतरसिद्धकेवलनाणे दुविहे प० तं० एक्काणतर सिद्ध केवलणाणेचेव अणेक्काणतरसिद्ध केवलनाणेचेव । परपरसिद्धकेवलनाणे दुविहे प० त० एक्का परंपरसिद्ध केवलणाणेचेव अणेक्कापरपरसिद्धकेवलणाणेचेव ॥ णो केवलणाणे दुविहे प० त० ओहिनाणेचेव, मणपज्जवनाणेचेव । ओहिनाणे दुविहे प० त० भव

अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान होता है और एक समय में अनेक सिद्ध होवे उन को अनेक अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान. परंपरा सिद्ध केवल ज्ञानके दो भेद एक समय में एक ही सिद्ध हुवे होवे वैसे का केवल ज्ञान, दूसरा अनेक परंपरा सिद्ध का केवल ज्ञान । नो केवल ज्ञान के दो भेद मर्याद-सहित रूपी द्रव्य, क्षेत्र, कालभाव को जाने सो अवधि ज्ञान और अढाइ द्वीप के अन्दर के संज्ञी पंचेन्द्रिय के मनोभाव को जाने सो मनःपर्यव ज्ञान अवधि ज्ञान के दो भेद १ भव प्रत्ययी-भव में होवे सो २ क्षायोपशमिक ज्ञानावरणीय का क्षयोपशम से होवे सो भव प्रत्ययी देवता और नारकी को होवे वैसे ही क्षायोपशमिक मनुष्य को तथा तिर्यंच पंचेन्द्रिय को होता है मनःपर्यव ज्ञान के दो भेद ऋजुमति कुच्छ क्षेत्र रूपी

ज्ञान दु० दोमकार का उ० ऋजुमति वि० विपुलमति प० परोक्ष ज्ञान दु० दोमकार का आ० मतिज्ञान सु० श्रुतज्ञान आ० मतिज्ञान दु दोमकार का सु० श्रुतनिश्रित अ अश्रुतनिश्रित सु० श्रुतनिश्रित दु दोमका का अ० अर्थावग्रहि व० व्यंजनावग्रहि अ० अश्रुतनिश्रित भी प० ऐसे सु० श्रुतज्ञान दु दोमकार का अं०

पच्चइएचेव, खओवसमिएचेव । दोण्ह भवपच्चइए प० त० देवाणचेव, णेरइयाणचेव दोण्ह खओवसमिए प० तं० मणुस्साणचेव, पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणचेव । मण पज्जवणाणे दुविहे प० त० उज्जुमईचेव विउलमईचेव ॥ परोक्खणाणे दुविहे प० त० आभिणिवोहियणाणेचेव, सुअणाणेचेव । आभिणिबोहियणाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा सु

माने मुल्ला नहीं माने, और आया हुवा पीछा चलाजावे सो २ संपूर्ण अढाइ द्वीप जाने भेदानुभेदयुक्त जाने वैसे ही आयाहुवा पीछा चला नहीं जावे सो विपुलमति मन पर्यव ज्ञान यह सब प्रत्यक्ष ज्ञान के भेदा नुभेद हुवे अब परोक्ष ज्ञान के भेद कहते हैं परोक्ष ज्ञान के दो भेद मति ज्ञान—बुद्धि से उत्पन्न होवे सो और सूत्रादिक का श्रवण करन से उत्पन्न होवे सो श्रुतज्ञान मति ज्ञान के दो भेद १ श्रुतका पठन किये बाद बुद्धि उत्पन्न होवे सो श्रुत निश्रित और श्रुत का पठन किये पहिले बुद्धि उत्पन्न होवे सो अश्रुत निश्रित श्रुत निश्रित के दो भेद १ वस्तु के सामान्यपना से ग्रहण करना अर्थात् दूर से वस्तु देख कर कहना कि यह अमुक वस्तु है सो अर्थावग्रह २ फीर उस को पहिचाने कि यह पुरुष है या स्त्री है सो

अंगपविट्ठ अं० मगबाहिर अ० अंगबाहिर दु० दोप्रकार का आ आवश्यक आ० आवश्यक व्यतिरिक्त आ० आवश्यक व्यतिरिक्त दु० दोप्रकार का का० कालिक उ० उत्कालिक ॥ २८ ॥ दु० दोप्रकार का प० धर्म प० प्ररूपा सु० श्रुतधर्म च चारित्र धर्म सु श्रुतधर्म दु० दोप्रकार का सु० सूत्रश्रुतधर्म अ०

यनिस्सिएचेव असुयानिस्सिएचेव । सुयानिस्सिए दुविहे पन्नत्ते तजहा अत्थोग्गहेचेव वजणोग्गहेचेव असुयनिस्सिएवि एवमेव ॥ सुयणाणे दुविहे प० त० अंगपविट्ठचेव अंगबाहिरेचेव । अंगबाहिरे दुविहे प० त० आवस्सएचेव, आवस्सवइरित्तेचेव आवस्सवइरित्ते दुविहे प० त० कालिएचेव उक्कालिएचेव ॥ २४ ॥ दुविहे धम्मे

व्यंजनावग्रह अर्थात् इन्द्रिय और शब्दादिक का संबंध सो व्यंजनावग्रह ऐसे ही अश्रुत निश्रित के दो भेद जानना अब श्रुत ज्ञान के दो भेद आचारांगादि सूत्रों से ज्ञान उत्पन्न होवे सो अंगप्रविष्ट और उत्तराध्ययनादि से उत्पन्न होवे सो अंग बाहिर अंग बाहिर के दो भेद सामायिकादि आवश्यक सूत्र और इस से अन्य छेद सूत्रादि सो आवश्यक व्यतिरिक्त आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद दिन रात्रि के प्रथम और अन्तिम प्रहर में पठनादि क्रिया हो सके उसे कालिक सूत्र कहते हैं और संध्या, प्रभात मध्याह्न व मध्यरात्रि को भी जिन सूत्रों का पठन हो सके सो उत्कालिक ॥ २८ ॥ दुर्गति में गिरते हुवे जीवों को रखे सो धर्म उस के दो भेद भगवंतने कहे हैं १ द्वादशांगी रूप सिद्धांत सो श्रुत धर्म २ और पंच महाव्रत रूप धर्म सो

अर्थ श्रुतधर्म च० चारित्र धर्म दु० दोमकार का आ० आगार चारित्र धर्म अ० अनगार चारित्र धर्म अ० अनगार चारित्र धर्म दु० दोमकार का स सराग संयम वी० वीतराग संयम स० सराग संयम दु०दो प्रकार का सु० सूक्ष्म संपराय सराग संयम बा० बादर संपराय सराग संयम सु० सूक्ष्म संपराय सराग संयम दु०दोमकार प०प्रथम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम अ० अप्रथम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम अ०अथवा च० चरम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम अ० अचरम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम अ० अथवा

पन्नत्ते तंजहा सुअधम्मेचेव, चरित्तधम्मेचेव सुअधम्मे दुविहे प० त० सुत्तसुअधम्मेचेव अत्थसुअधम्मेचेव ॥ चरित्तधम्मे दुविहे प० त० आगारचरित्तधम्मेचेव, अणगार चरित्त धम्मेचेव । अणगारचरित्तधम्मेदुविहे प० त० सराग संजमेचेव वीय राग संजमेचेव सरागसंजमे दुविहे प० त० सुहुमसंपरायसरागसंजमे, बादरसंप

चारित्र धर्म। श्रुत धर्म दो प्रकार का है ? जिस में गणधरोंने अथ गुथे सो सूत्र श्रुत धर्म और भगवंतने जो अर्थ प्ररूपा सो अर्थ श्रुत धर्म । चारित्र धर्म के दो भेद गृहस्थावास में रहकर सम्यक्त्व सहित बारह व्रत का आचरण करे सो आगार चारित्र धर्म और गृहस्थावास का त्याग कर पंच महाव्रत, समिति, व गुप्ति पालना सो अनगार चारित्र धर्म। अनगार धर्म के दो भेद शरीरादि पे राग रखता हुवा संयम पालना सो सराग संयम और माया कपट रहित चारित्र पालना सो वीतराग संयम।

सु० सूक्ष्म संपराय सराग संयम दु० दोमकार का सं० संक्लिश्यमान वि० विशुद्ध्मान बा० बादर संपराय सराग संयम दु० दोमकार का प० प्रथम समय बादर संपराय सराग संयम अ० अप्रथम बादर संपराय सराग संयम च० चरम समय बादर संपराय सराग संयम अ० अचरम समय बादर संपराय सराग संयम अ० अथवा बा० बादर संपराय सराग संयम दु० दोमकार का प० पडवाइ अ० अपडवाइ वी० वीतराग संयम दु० दोमकार का उ० उपशान्त कषाय वीतराग संयम खी० क्षीण कषाय वीतराग संयम उ० उपशांत

रायसरागसंजमेचेव । सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे प० त० पढमसमयसुहुम संपराय सराग संजमेचेव अपढमसमयसुहुम संपराय सराग संजमेचेव । अहवा चरिमसमयसुहुम संपराय सराग संजमेचेव, अचरिम समय सुहुम संपराय सराग संजमेचेव । अहवा सुहुमसंपराय सराग संजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा संकिलेसमाणएचेव विसुज्झमाणएचेव ॥

सराग संयम के दो भेद दशवें गुणस्थान रहनेवाला साधु को सूक्ष्म संज्वलन कषाय का उपशम या क्षय हुआ सो सूक्ष्म संपराय सराग संयम और जहां बादर कषाय है उसे बादर संपराय सराग संयम कहते हैं। सूक्ष्म संपराय सराग संयमके दो भेद चारित्रके प्रथम समयमें सूक्ष्म संपरायी बने सो प्रथम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम और सूक्ष्म संपराय को अन्तिम समय तक नहीं प्राप्त हुआ हो सो अप्रथम सूक्ष्म समय संपराय सराग संयम और भी उस के दो भेद बतलाते हैं अन्तिम समय अर्थात् जिस की पीछे वीतराग संयम की

कषाय वीतराग संयम दु० दोमकार का प० प्रथम समय उपशांत कषाय वीतराग संयम अ अप्रथम समय उपशांत कषाय वीतराग संयम अ० अथवा च० चरम समय उपशांत कषाय वीतराग संयम अ० अचरम

बादर संपराय सराग संजमेदुविहे पण्णत्ते तंजहा, पढमसमयबादर संपराय सराग संजमे अपढम समय बादर संपराय सराग संयमे। अहवा चरिम समय बादर संपराय सराग संजमे अचरिम समय बादर संपराय सराग संजमे। अहवा बादर संपराय सराग संजमे दुविहे प० त० पडिवातिएचेव, अपडिवातिएचेव॥ वीयराग संजमे दुविहे

प्राप्ति होवे उसे चरम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम कहते हैं और अंतिम से प्रथम समय तक का संयम अचरम समय सूक्ष्म संपराय सराग संजम। और भी उस के दो भेद उपशम श्रेणि मे पडते जो सूक्ष्म संपराय सराग संयम है वह संक्लिश्यमान है और २ क्षपक श्रेणि पे चढता जो संयम है सो शुद्धिमान कहाजाता है। बादर संपरायिक सराग संयम के दो भेद प्रथम समय का बादर संपराय सराग संयम और अप्रथम (द्वितीय, तृतीय) समय का बादर संपराय सराग संयम अथवा दो भेद अन्तिम समय का बादर सराग संयम अर्थात् उस की पीछे सूक्ष्म संपराय सराग संजम आवे अथवा तो असंजम आवे सो और अचरम समय का बादर सराग संयम और भी उस के दो भेद बतलाते हैं उपशम श्रेणि से पडतेहुवे जीवों का जो संयम होता है सो प्रतिपाती और क्षपक श्रेणि में चढते हुवे जो संयम रहे सो अप्रतिपाती।

गमन उपशांत कषाय वीतराग भयम पी० क्षीण कषाय वीतराग भयम दु० दोमकार छ० छमस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम क० कषायी क्षीण कषाय वीतराग भयम छ० छमस्थ कषाय वीतराग दु० दोमकार का म० स्वय वुद्ध छमस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम वु० बुधबोधि छमस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम स० स्वय वुद्ध क्षीण कषाय वीतराग भयम दु० दोमकार का प० प्रथम समय स्वयं बुद्ध छमस्थ क्षीण

प० त० उवसंत कसाय वीयराग सजमेचेव खीण कसाय वीयराग सजमेचेव उवसत कसाय वीयराग सजम दुविह प० तं० पढम समय उवसत कसाय वीयराग संजमे चेव अपढम समय उवसत कसाय वीयराग सजमेचेव । अहवा चरिम समय उवसत कसाय वीयराग संजमचेव अचरिम समय उवसत कसाय वीयराग सजमेचेव ॥ खीण कसाय वीयराग सजमे दुविहे प० त० छउमत्थ खीण कसाय वीयराग सजमेचेव, कवलि खीण कसाय वीयराग सजमेचेव छउमत्थ खीण कसाय वीयराग सजमे दुविहे प० तं० सयंबुद्ध छउमत्थ खीण कसाय वीयराग सजमे बुद्धबोहिय छउमत्थ खी

वीतराग संयम के दो भेद कषायोंका उपशम सो उपशांत कषाय वीतराग संयम यह इग्यारवा गुणस्थान वाले साधु को होवे और कषायों का क्षय सो क्षीण कषाय वीतराग संयम यह बारवा गुणस्थानवाले को होवे उपशांत कषाय वीतराग संयम के दो भेद प्रथम समय का उपशांत कषाय वीतराग संयम और

कषाय वीतराग संयम अ०प्रथम समय स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतरागसंयम अ अथवा चरम समय
स्वय बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम अ० अचरम समय स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग
संयम बु०बुद्ध बोधि छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम बु० रोमकार का प०प्रथम समय बुद्धबोधि छद्मस्थ

ण कसाय वीयराग संजमे । सयंबुद्ध खीण कसाय वीयराय संजमे दुविहे प० तं०
पढम समय सयबुद्ध छउमत्थ खीण कसाय वीयराग सजमे अपढम समय सयबुद्ध
छउमत्थ खीण कसाय वीयराग सजमे । अहवा चरिम समय सयबुद्ध छउमत्थ खीण
कसाय वीयराग संजमे, अचरिम समय सयबुद्ध छउमत्थ खीण कसाय वीयराग सज
मे ॥ बुद्धबोहि य छउमत्थ खीण कसाय वीयराग सजमे दुविहे प० तं० पढम समय
बुद्धबोहि य छउमत्थ खीण कसाय वीयराय सजमे अपढमसमय बुद्धबोहि य छउमत्थ
खीण कसाय वीयराय सजमे । अहवा चरिम समय बुद्धबोहि छउमत्थ खीण कसा

अप्रथम समय का उपशांत कषाय वीतराग संयमअथवा चरम समय का और अचरम समय का उपशांत
कषाय वीतराग संयम । क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो भेद ज्ञानावरणीयादि चार घन
घाति कर्मों रहित जो संयम है वह छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम और केवली का संयम सो केवली
क्षीण कषाय वीतरागसंयम । छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो भेद गुरु के उपदेश बिना जाति

क्षीण कषाय वीतराग संयम अ० अप्रथम समय बुद्धबोधि छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम अ० अथवा च० चरम समय बुद्धबोधि छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम अ० अचरम समय बुद्धबोधि छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के० केवलि क्षीण कषाय वीतराग संयम दु० दोप्रकार का स० सयोगी केवलि क्षीण

य वीयराय सजम अचरिम समय बुद्धबोहिय छउमत्थ खीण कसाय वीयराय सजमे॥ केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे दुविहे प० तं० सजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय सजमे अजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय सजमे। सजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय सजमे दुविहे प० त० पढम समय सजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय सजम, अपढम समय सजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय सजमे। अहवा चरम समय सजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय सजम अचरम समय सजोगि

स्वयं ज्ञानादि से स्वयं प्रतिबोध पाकर कषायों को क्षीण करे सो स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम. और आचार्यादिक के उपदेश से प्रतिबोध पाकर कषाय को क्षीण करना सो बुद्धबोधित क्षीण कषाय वीतराग संयम इस में से स्वयं बुद्धछद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो भेद प्रथम समय का और अप्रथम समय का अथवा चरम समय का या अचरम समय का ऐसे ही बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के भी प्रथम, अप्रथम अथवा चरम, अचरम ऐसे दो दो भेद जानना केवली

कषाय वीतराग संयम अ० अयोगी केवलि क्षीण कषाय वीतराग संयम स० सयोगी केवलि क्षीण कषाय वीतराग संयम दु० दोमकार का पूर्ववत् ॥ २८ ॥ दु० दोमकार की पु० पृथ्वी काया सु० सूक्ष्म वा० बादर प० ऐसे जा० यावत् व वनस्पति काया सु० सूक्ष्म वा बादर दु० दोमकार की पु० पृथ्वी

केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे ॥ अजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे, अपढम दुविहे प० त० पढम समय अजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे । अहवा चरम समय अयोगि समय अजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे, अचरम समय अयोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे ॥ २५ ॥ दुविहा पुढविकाइया प० त० सुहुमाचेव, बायराचेव एव जाव दुविहा वणस्सइकाइया प० त० सुहुमाचेव बायराचेव दुविहा पुढवि काइया

क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो भेद सयोगी तेरवें गुणस्थान में रहनेवाले जीवों का संयम सो सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग संयम और अयोगी चौदवें गुणस्थान रहनेवाले जीवों का संयम सो अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग संयम, उस में सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग संयम के प्रथम समय, अप्रथम समय अथवा चरम समय अचरम समय ऐसे दो दो भेद, वैसे ही अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग संयम के भी भेद जानना ॥ २८ ॥ श्री भगवानने पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति इन

काया प० पर्याप्ता अ० अपर्याप्ता ए० ऐसे व० वनस्पति काया दु० दोप्रकार की पु० पृथ्वीकाया प० परिणत अ० अपरिणत जा० यावत् व वनस्पति काया दु० दोप्रकार का द० द्रव्य प० परिणत अ० अपरिणत दु० दोप्रकारकी पु पृथ्वी काया ग०गतिसमापन्न अ०अगतिसमापन्न ए एसे जा०

प० तं० पज्जत्तगाचेव अपज्जत्तगाचेव एव वणस्सइ काइया । दुविहा पुढविकाइया प० तं० परिणयाचेव, अपरिणयाचेव जाव वणस्सइकाइया दुविहा दव्वा प० तं० परिणयाचेव अपरिणयाचेव । दुविहा पुढविकाइया प० त० गइसमावन्नगाचेव अ

पांचो स्थावरों के दो दो भेद कहे हैं १ सब लोक व्यापि चर्म चक्षु से दृष्टि गोचर में नहीं आ सके वैसे सूक्ष्म २ और लोक के देश विभाग में रहे सब के दृष्टि गोचर में आसके वैसे बादर जीव। और भी दो प्रकार बताते हैं छही पर्याप्ति पूर्ण करके काल करे सो पर्याप्त और इन छमें से एकेन्द्रिय को चार, बेन्द्रिय, तेइन्द्रिय चौरेन्द्रिय को पांच और संज्ञी को छ उस में से आहार पर्याप्ति एक समय में होवे और दूसरी पांच पर्याप्ति असंख्यात समय में होवे सब अंतर्मुहूर्त में होवे जिन श्वासोश्वास छोड कर और तीन पहिली पर्याय पूर्ण करे और परभव का आयुष्य बांधकर कालकर जावे सो अपर्याप्त ॥ और भी दो प्रकार शस्त्रादि परिणम कर अचित्त बने हुवे सो परिणत और जीव सहित सचित्त सो अपरिणत ॥ दो प्रकारके द्रव्य कहे हैं जिन की पर्याय का पलटा होवे सो परिणत और पलटा न होवे सो अपरिणत ॥

पावत् व० वनस्पति काया दु दोप्रकार का द० द्रव्य ग० गतिसमापन्न अ० अगतिसमापन्न दु० दोप्रकार की पु० पृथ्वी काया अ० अनंतर अवगाढा प० परंपरा अवगाढा जा० यावत् द० द्रव्य ॥२६॥ दु० दोप्रकार का का० काल ओ

गइसमावन्नगाचेव एवं जाव वणस्सइकाइया दुविहा दव्वा प० तं० गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगाचेव । दुविहा पुढवि काइया प० तं० अणतरो गाढगाचेव परंपरो गाढगाचेव जाव दव्वा ॥ २६ ॥ दुविहे काले प० तं० आसप्पिणीकाले चव अवस-प्पिणीकालेचेव ॥ २७ ॥ दुविहे आगासे प० त० लोगागासेचेव अलोगागासेचेव,

और भी पृथ्वी काय के दो भेद विग्रह गति से उत्पन्न होनेके स्थानमें गमन करे सो गतिसमापन्न और एक ही स्थानक में रहना सो नोगति समापन्न वैसे ही वनस्पति काया के सब स्थावर के भेदों को जानना और भी द्रव्य गमन करे सो गति समापन्न और स्थिर रहे सो अगति समापन्न ॥ और भी पांचो स्थावर के दो दो भेद बतलाये हैं जो जीव तुर्त ही उत्पन्न हो कर आकाश प्रदेश को अवगाह रहे हैं वे अनंतरो वगाढ कहाते हैं और जिस को उत्पन्न हुवे दो, तीन, चार समय हो गये होवे सो परंपरावगाढ कहलाते हैं वैसे ही द्रव्य के भेद जानना ॥ २६ ॥ श्री भगवन्तने दो प्रकार का काल कहा जिस में पुद्गल परिणम जीव अजीव का आयुष्य व शरीर की लम्बाइ समय २ में वृद्धि को प्राप्त होवे सो उत्सर्पिणी काल तथा घटती जावे सो अवसर्पिणी काल ॥ २७ ॥ दो प्रकार का आकाश कहा है जीव व अजीव को अवकाश

उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी॥२७॥ दु० दोमकारका आ० आकाश लो० लोकाकाश अ० अलोकाकाश ॥२८॥ णे० नारकी के दो दोशरीर अ० आभ्यन्तर बा० बाह्य अ० आभ्यन्तर क० कार्माण बा० बाह्य वे० वैक्रेय ए० ऐसे दे० देवता का भा० कहना पु० पृथ्वीकाया को दो० दोशरीर अ० आभ्यन्तर बा० बाह्य अ० आभ्यन्तर क० कार्माण बा० बाह्य उ० उदारिक जा० यावत् व० वनस्पति काया का बे० बेइन्द्रियके दो० दोशरीर अ० आभ्यन्तर बा० बाह्य अ० आभ्यन्तर अ० अस्थि मं० मांस सो० रुधिर से ब० बन्धाहुवा

॥२८॥ णेरइयाणं दो सरीरगा प० त० अब्भतरगेचेव बाहिरगेचेव, अब्भंतरए कम्मए, बाहिरए वेउव्विए। एवं देवाणं भाणियव्वं ॥ पुढविकाइयाणं दोसरीरगा प० त० अब्भतरगेचेव बाहिरगेचेव, अब्भंतरए कम्मए, बाहिरगे उरालिए जाव वणस्सइ काइयाणं। बेइंदियाणं दो सरीरगा प० त० अब्भंतरएचेव बाहिरएचेव, अब्भंतरए

रहे सो आकाश जिस में धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय, आकाशास्ति काय, पुद्गलास्ति काय, व जीव रह हुवे हैं सो लोकाकाश है, यह सातवी नरक से सिद्ध शिलातक चौदह राजु प्रमाण ऊंचा है और अलोक में मात्र आकाश ही रहाहुवा है ॥ २८ ॥ नारकी के व देवता के शरीर के दो २ भेद १ आभ्यंतर कि जो जीव के प्रदेश से क्षीर नीर जैसे मिला हुवा रहता है सो तेजस और कार्माण शरीर २ और दूसरा बाह्य सो जीव प्रदेश से कथंचित भिन्न और कथंचित मिला हवा वह वैक्रेय शरीर १ पृथ्वि-

बा० बाह्य उ० उदारिक जा० यावत् च० चौरेन्द्रियको पं०पंचेन्द्रिय ति०तिर्यंच यो० योनिवाले को दो शरीर अ० आभ्यन्तर बा० बाह्य अ आभ्यन्तर कार्माण अ० अस्थि मं० मांस सो० रुधिर ण्हा० नस क० नाडी से ब० बन्धा हुआ बा० बाह्य उ० उदारिक म० मनुष्यकाभी ए० ऐसे नि० विग्रहगति स० युक्त ने० नारकी को दो० दोशरीर ते० तैजस क० कार्माण नि० निरतर जा० यावत् वे० वैमानिक के ने०

कम्मए अट्ठिमससोणितबद्धे बाहिरए उरालिए । जाव चउरिंदियाण । पचेन्दिय तिरिक्खजोणियाण दो सरीरगा प० त० अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणियण्हारुच्छिराबद्धे बाहिरए उरालिए । मणुस्साणवि एव चेव । विग्गहगति समावन्नगाण नेरइयाण दो सरीरगा प० त० तेइएचेव कम्मएचेव निरतर जाव वेमाणियाण । नेरइयाण दोहिं ठाणेहिं सरीर उप्पाति सिया त० रागेणचेव

पृथ्व्यादि पांच स्थावरों को दो दो शरीर १ आभ्यंतर सो तेजस कार्माण २ और बाह्य हाड मांस सहित सो उदारिक ॥ बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय और चौरेन्द्रिय के दो दो शरीर आभ्यंतर-तेजस और कार्माण और बाह्य हड्डी मांस लोही से बंधा हुवा सो उदारिक. यहांतक नाडी शिरा नहीं होते हैं ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य के दो दो शरीर आभ्यतर सो तेजस कार्माण और बाह्य हड्डी मांस, रुधिर नाडी, शिरा से बंधाहुवा

नारकी की दो० दोस्थान से स० शरीर उत्पत्ति भि० होवे रा० रागसे दो० द्वेषसे जा० यावत् वे० वैमानिक ने नारकी की दु०दोस्थान से नि निर्वर्तना स० शरीर की रा० रागनिर्वर्तना दो० द्वेष निर्वर्तना जा यावत् वे० वैमानिक ॥ २९ ॥ दो० दोकाया त० त्रसकाया था० स्थावर त० त्रसकाया दु दोप्रकार की भ० भवसिद्धिया अ० अभवसिद्धिया ए० ऐसे था० स्थावर काया ॥ ३० ॥ दो० दोदिशा में प० प्रव्रज

दोसेणंचेव जाव वेमाणियाणं । नेरइयाणं दुट्ठाणनिव्वत्तिए सरीरगे प० तं० रागनिव्वत्तिएचेव दोसनिव्वत्तिए चेव,। जाव वेमाणियाणं ॥ २९ ॥ दो काया प० त० तसकाएचेव थावरकाएचेव तसकाए दुविहे प० त० भवसिद्धिएचेव अभवसिद्धिएचेव, एवं थावरकाएवि ॥ ३० ॥ दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ णिग्गंथाण वा, णिग्गंथीण वा

सो उदारिक विग्रह गतिवाले नारकी के जीवों के दो शरीर तेजस और कार्माण, वैसे ही चौविस दंडकको कह देना चौविस दंडकों के जीवों के शरीर की उत्पत्ति राग और द्वेष ऐसे दो कारणों से होती है नारकी को शरीर की निर्वर्तना दो स्थानक से होती है राग और द्वेष से वैसे ही चौविस दंडक की निर्वर्तना जानना ॥ २९ ॥ श्री भगवन्तने दो प्रकारकी काया फरमाइ है त्रस काया और स्थावर काया त्रस काया के दो भेद मोक्ष में जानेवाले भवसिद्धिये और मोक्ष में नहीं जानेवाले अभव सिद्धिये वैसे ही स्थावरकाया के भेद मानना ॥ ३ ॥ साधु साध्वी को उत्तर और पूर्व इन दो दिशाओं में दीक्षा देना कल्पता है वैसे

१ प्रथम प्रारंभ मात्र सो उत्पत्ति और शरीर के अवयवों का पूर्ण होना सो निर्वर्तना

करना क० कल्पता है पि० साधु को भि० साध्वी को प० मव्रजालेना पा० पूर्व में उ० उत्तर में ए० ऐसे मु० साथकरना सि० शिक्षालेना उ० सावधान होना स० भोजन करना स० बैठना स०सूत्र उ० उपदेशना स० सूत्र स० समुद्देशना स० सूत्र म० ज्ञान करना आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण करना नि निन्दना ग गर्हना वि० छोडना वि विशुद्ध होना अ० फिर न करना अ० सावधान होना अ० कहा

पव्वावित्तए, पाईणंचेव उदीणंचेव एवं मुंडावित्तए सिक्खावित्तए, उवट्ठावित्तए, संभुजित्तए संवासित्तए सज्झाय उद्दिसित्तए सज्झायं समुद्दिसित्तए, सज्झाय मणुजाणित्तए आलोइत्तए पडिक्कमित्तए निंदित्तए, गरिहित्तए विउट्टित्तए विसोहित्तए अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए अहारिहं पायच्छित्तं तवो कम्मं पडिवज्जित्तए । दो दिसाओ अभिगिज्झ

ही २ लोच करना, ३ सूत्र का पठन करना, ४ धर्म में सावध बनना, ५ पंच महाव्रत को स्थापना, ६ मांडले में आहार का जीमना ७ सदैव आसनपर बैठना ८ सूत्राभ्यास करना ९ सूत्रार्थ चिन्तवना १० सूत्रार्थ पढने की आज्ञा देना, ११ गुरु अभिसन्मुख अपने पाप की आलोचना करनी १२ प्रतिक्रमण करना १३ पाप की निंदा करना १४ गुरु की साक्षी से अपने दुर्गुणों की निन्दा करना १५ पाप छेदने का प्रयत्न करना १६ पुनःपाप नहीं करने का प्रत्याख्यान करना १७ आचार्य जो प्रायश्चित्त देवे उसे बराबर आचरना और अंतिम समय में संलेषणा युक्त प्रत्याख्यान कर भक्त (आहार का प्रत्याख्यान)

हुवा पा० प्रायश्चित त० तप कर्म प० आदरना दो० दोदिशाओ अ० ग्रहण करना क० कल्पता है पि० साधु को पि० साध्वी को अ० अपश्चिम मरणांतिक सलेखना झू० झूसणा झू० झूसे भ० भत्तपानी प० छोरे पा० पापरहित का० कालको अ० नहि इच्छता हुवा वि० विचरना पा० पूर्व उ० उत्तर ॥२१॥ जे० जो दे० देव उ० ऊर्ध्व उ० उत्पन्न ते० वे दु० दोप्रकार का प० प्ररूपा तं० यह ज० जैसे क०

कप्पइ णिग्गंथाणं वा णिग्गंथीण वा अपच्छिममरणातिए संलेहणा झूसणा झूसिचाण भत्तपाण पडियाइक्खेचाण पाओवगयाणं कालं अणवकंखमाणाण विहरित्तए तंजहा पाईणचेव उदीणचेव ॥ २१ ॥ इति बीय ट्ठाणस्स पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥

जे देवा उड्ढोववन्नगा ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा कप्पोववन्नगा, विमाणोववन्नगा, चारोव

र पादोपगमन (आहार व शरीर दोनों का प्रत्याख्यान रूप) संथारा करना, पूर्वोक्त सब कामों उत्तर और दिशा में साधु को करना कल्पता है ॥ २१ ॥ यह ठाणांग सूत्र का दूसरा ठाणा का प्रथम उद्देशा पूर्ण हुवा और आगे दूसरा उद्देशा कहते हैं

देव लोक में उत्पन्न होनेवाले देवता के दो भेद हैं १ बारह देव लोक में उत्पन्न होनेवाले कल्पोपपन्न देव हैं और नव ग्रीवेक तथा पांच अनुत्तर विमान के देवताओंको विमानोपपन्न देव कहे हैं चलनेवाले ज्यो तिषी अढी द्वीप में फीरते हैं और स्थिर रहनेवाले सो अढी द्वीप के बाहिर के ज्योतिषी

कल्पोत्पन्न वि० विमानोत्पन्न चा० चलने वाले था० चलने में स्थिर ग० चलने में प्रेम ग० गतिरहित वे दे० देवता स० सदैव जे० जो पा० पापकर्म क० करते हैं त० वहां ग० रहेहुवे ए० कितनेक वे० वेदना वे० वेदते हैं अ० अन्यतर ग० रहेहुवे ए० कितनेक वे० वेदना वे वेदते हैं जा यावत् प० पचेन्द्रिय ति० तिर्यच जो० योनिवाले म० मनुष्य स सदैव जे० जो पा० पापकर्म क० करता है इ० यहां रहे हुवे ए० कितनेक वे० वेदना वे वेदते हैं अ० अन्यत्र रहे हुवे भी ए० कितनेक वे० वेदना वे० वेदते

तेसिं देवाण सयासमिय जे पावे कम्मे कज्जइ तत्थगयावि एगइया वेयणं वेयति अन्नत्थगयावि एगइया वेयणं वेयति नेरइयाण सयासमिय जेपावेकम्मे कज्जइ तत्थ गयावि एगइया वेयण वेयति अन्नत्थ गयावि एगइया वेयण वेयंति जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण, मणुस्साणं सयासमिय जे पावे कम्मे कज्जइ इहगयावि एगइया वेयणा वेयति अन्नत्थगयावि एगइया वेयण वेयंति मणुस्सवज्ज

और दूसरे गति रहित उन देवताओं को जोपाप कर्म बंधाता है उसे कितनेक देवताओं उसी भव में भोगते हैं और कितनेक अन्य भव में भोगते हैं ऐसे ही नरक के जीवों भी जो पाप कर्म बांधते हैं उस के फल कितनेक उसी भव में भोगते हैं अथवा कितनेक अन्य भव में भी भोगते हैं और ऐसे ही पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय और तिर्यच पंचेन्द्रिय भी कृतकर्म का फल भोगते हैं कितनेक मनुष्य अपना कृत कर्म का फल यहां पर भी भोगते हैं और अन्यत्र भी भोगते हैं और यहां पर भी सब कर्म का क्षय

है म० मनुष्य प० वर्ज्य से०शेष ए एकसाही ॥१॥ ने०नारकी दु दोगति दु०दो आगति ने०नारकी ने० नरक में उ०उत्पन्न होवे म० मनुष्य में से पं० पचेन्द्रिय ति० तिर्यंच जो० योनिमें से उ० उत्पन्न होवे से० वे से० निश्चय ने० नरक को नि० छोडता हुवा म० मनुष्यपने पं० पचेन्द्रिय ति० तिर्यंच यो० योनिपने ग० जावे ए ऐसे अ० असुर कुमार का ण० विशेष अ० असुर कुमार को वि० छोडताहुवा म० मनुष्यपने ति० तिर्यंच योनिपने ग० जावे ए० ऐसे स सर्व दे० देव पु० पृथ्वीकाया दु० दोगति की दु० दोआगति

सेसाएगगामा ॥१॥ नेरइया दुगइया दुयागइया प०तं० नरइए नेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंतो वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वा उववज्जेज्जा सेचेवणं से नेरइयत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियत्ताए वा गच्छेज्जा । एव असुर कुमाराणवि णवरं सेचेवणं से असुरकुमारत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा तिरिक्खजो णियत्ताए वा गच्छेज्जा एवं सव्वदेवा पुढवि काइया दुगइया दुयागइया प० तं० पु

करके मोक्ष चलेजाते हैं इसलिये अन्यत्र गोगवना नहीं भी होता है ऐसे ही व्यंतर ज्योतिषी आदि का एक सरिसा मानना ॥ १ ॥ जिस गति का जिस जीवने आयुष्य का बन्ध किया होवे उसे गति कहते हैं इस तरह नरक के जीव, मनुष्य और तिर्यंच पचेन्द्रिय में से चवकर नारकी में उत्पन्न होते हैं और वहां से चवकर मनुष्य और तिर्यंच पचेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं भुवनपति वाणव्यंतर, ज्योतिषी और विमानिक देवतओं की पहिले जैसे कहना विशेष इतना ही दूसरे देवलोक तक के देवताओं [illegible] और इन

पु० पृथ्वीकाया पु० पुथ्वीकाया में उ० उत्पन्न होते पु० पृथ्वीकायामें से णो० नोपुथ्वीकाया में से उ० उत्पन्न होवे से० वे पु० पृथ्वीकायाको वि० छोडताहुवा पृथ्वीकायापने णो० नोपृथ्वीकायापने ग० जावे ए० ऐसे म० मनुष्य ॥२॥ दु० दोमकारके णे० नारकी भ०भवसिद्धिया अ अभवसिद्धिया जा० यावत वे वेमा निक दु० दोमकारका णे० नारकी अ० अन्तररहित उ० उत्पन्न होवे प परपरासे उ० उत्पन्न होवे ना०

ढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा णो पुढविकाइएहिंतो उववज्जेज्जा सेचेवणं से पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा णो पुढवि काइयत्ताए वा गच्छेज्जा एवं जाव मणुस्सा ॥ २ ॥ दुविहा णेरइया प० तं० भवसि द्धियाचेव अभवसिद्धियाचेव, जाव वेमाणिया। दुविहा णेरइया प० तं० अणतरोववन्न

स्याते में भी जावे हैं पृथ्वी काया के जीव दो गति से आते हैं और दो गति में जाते हैं पृथ्वी काया का आयुष्य बांधकर पुथ्वी काया में से ही जीव उत्पन्न होता है अथवा नो पृथ्वी काया (नारकी छोड कर अन्य २३ दण्डक) में से जीव उत्पन्न होता है और पृथ्वी कायां से चवकर जीव पृथ्वी काया में अथवा ना पृथ्वी काया (देव और नारकी छोड कर अन्य २२ दंडक) में जाता है ऐसे ही मनुष्यतक कहना ॥ २ ॥ अब चौवीस दंडक के दो २ भद कहते हैं सो बतलाते हैं १ भव्य २ अभव्य। एक समय में पहले उत्पन्न होवे सो अनंतरोपपन्न और एक समय में एक दूसरा समय में दूसरा ऐसे उत्पन्न

पावत् वे० वैमानिक दु० दोमकारका ण० नारकी ग० गतिको माप्त अ० अगतिको माप्त जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोमकारका नारकी प० मथमसमय माप्त अ० अमथमसमय माप्त जा०यावत् वे० वैमानिक दु० दोमकार का ण० नारकी आ० आहारी अ० अनाहारी जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोम कार का ण० नारकी उ० श्वासोश्वास लेन वाले णो० श्वासोश्वास नहीं लेने वाले जा० यावत् वे० वै

गाचेव परंपरोववन्नगाचेव जाव वेमाणिया। दुविहा णेरइया प० त० गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगाचेव, जाव वेमाणिया। दुविहा णेरया प० त० पढमसमय उववन्नगाचेव, अपढमसमयउववन्नगाचेव जाव वेमाणिया। दुविहा णेरइया प० त० आहारगाचेव अणाहारगाचेव एवं जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० त० उस्सासगाचेव नोउस्सासगाचेव जाव वेमाणिया। दुविहा णेरया प० त० सइंदियाचेव अणिंदियाचेव

होवसो परंपरोपपन्न। एक शरीर छोडकर अन्य शरीर में जानासो गति समापन्न और वहां रहना सो अगति समापन्न। प्रथम समयके उत्पन्न हुवे सो प्रथमसमयोपपन्न और अप्रथम(दूसरा तीसरा वगैरह) समयके उत्पन्न हुए सो अप्रथम समयोपपन्न. सदैव आहार लेवे सो आहारक और विग्रह गतिसे उत्पन्न होने पहिले एक दोसमय तक अनाहारी रहे सो अनाहारक। पर्याप्तसो श्वासोश्वास लेनेवाले और अपर्याप्तसो श्वासोश्वास नहीं लेनेवाले। इन्द्रिय सहित और इन्द्रिय रहित अर्थात् अपर्याप्त अवस्था होने से पूर्ण इन्द्रियों नहीं बंधाइ सो। पर्याप्त और

म ानिक दु० दोमकार का ने० नारकी स० सइन्द्रिय अ० अनिन्द्रिय जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोम कार का ने० नारकी प० पर्याप्ता अ० अपर्याप्ता जा० यावत् वे० वैमानिक दु दोमकार का ने० नारकी स० सन्नी अ० असंज्ञी ए० ऐसे जा यावत् पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व वे० विकलेन्द्रिय व० वर्ज्य जा० यावत् वा० व्यन्तर दु० दोमकार का ने० नारकी भा० भापक अ० अभापक ए० ऐसे ए० एकेन्द्रिय व० वर्ज्य स० सर्व दु० दोमकार का ने० नारकी स० सम्यक् दृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि ए एकेन्द्रिय व० वर्ज्य

जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० त० पज्जत्तगाचेव अपज्जत्तगाचेव जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० तं सन्नीचेव असन्नीचेव एव जाव पांचेंदिया सव्वे विगलिंदिय वज्जा जाव वाणमंतरा। दुविहा णेरइया प० तं० भासगाचेव अभासगाचेव एव मेगिंदिय वज्जा सव्वे। दुविहा णेरइया प० तं० सम्मादिट्ठियाचेव मिच्छादिट्ठियाचेव एगिंदिय

अपर्याप्त ॥ मनपर्याप्ति सहित सो संज्ञी और मनपर्याप्ति रहित सो असंज्ञी संज्ञी असंज्ञी के दो २ भेद सब पंचेन्द्रिय में जानना और एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरेन्द्रिय में मात्र असंज्ञी है ॥ नारकी के दो भेद भापक, अभापक परंतु एकेन्द्रिय मात्र अभापक ही है। एकेन्द्रिय छोड कर सब जीव समदृष्टिवाले और मिथ्या दृष्टिवाले हैं ॥ एक परत संसारी—देशउना अर्धपुद्गल परावर्तन में मोक्ष जानेवाले दूसरा अनन्त संसारी अधिक पुद्गल परावर्तन करने का होवे सो। संख्याता कालकी स्थितिवाले और असंख्याता कालकी

प० सब दु० दोमकार का ने० नारकी प० परित ससारी अ० अनंत संसारी जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोमकार का ण० नारकी स० संख्यात काल की स्थितिवाले अ० असंख्यात काल की स्थितिवाले प० एम प० पंचेन्द्रिय ए० एकेन्द्रिय वि० विकलेन्द्रिय व० वर्ज्य जा० यावत् वा० व्यंतर दु० दो प्रकार का ण० नारकी सु० सुलभबोधि दु० दुर्लभ बोधि जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोमकार का णे० नारकी क० कृष्ण पक्षिक सु० शुक्लपक्षिक जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोमकार का णे० नारकी प०

यज्जा सव्वे दुविहा णरइया प० त० परित्तससारियाचेव अणतससारियाचेव जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० त० ससेज्जकालसमयट्ठियाचेव असखेज्जकालसमय ट्ठियाचेव एव पचिंदिया एगिंदिया विगलेंदियवज्जा जाव वाणमंतरा । दुविहा णरइया प० त० सुलभबोहियाय दुल्लभबोहियाय जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० त० कण्हपक्खियाचेव सुक्कपक्खियाचेव जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० त० चरमा

स्थितिवाले इस में एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय की मात्र संख्यात कालकी स्थिति है और ज्योतिषी और व्यंतर देवों की स्थिति मात्र असंख्यात कालकी है इसमें नरकों में दोनों प्रकार की स्थिति है ॥ सहज में धर्म समझ सके सो सुलभ बोधी और कठिनतासे धर्म समझनेवाले दुर्लभ बोधी ॥ बहुकर्मी जीव कृष्ण पक्षी और हलुकर्मी जीव शुक्ल पक्षी हैं ॥ उक्त सब बोल चौबिस दंडक में पाते हैं ॥ जिन को फीर उसी स्थान में

आत्म स्वभाव से अ०.अधोलोक जा० जानता है, पा० देखता है ए ऐसे तिर्यक् लोक उ० ऊर्ध्व

चेव अचरमाचेव जाव वेमाणिया ॥२॥ दोहिं ठाणेहिं आया अहे लोग जाणइ पासइ तंजहा समोहएणचेव अप्पाणेण आया अहेलोगं जाणइ पासइ असमोहएणचेव अप्पाणेणं आया अहेलोग जाणइ पासइ अधोहि समोहएअसमोहएणचेव अप्पाणेण आया अहे लोगं जाणइ पासइ। एव तिरियलोग उड्ढलोग केवलकप्पं लोगं। दोहिं ठाणेहिं

मरम अ० अचरम जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २ ॥ दो दो ठा० स्थान स आ० आत्मा अ अभ्रा लो० लोक जा० जानता है पा० देखता है तं० वह ज० जैसे स समुद्घात स अ० आत्म स्वभाव से आ० आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है अ० समुद्घात बिना आ आत्म स्वभाव से आ०आत्मा अ०अधोलोक जा०जानता है पा०देखता है अ नीचे स०समुद्घात से अ०बिनासमुद्घात से

उत्पन्न होन का न होवे सो चरम शरीरी और फीर वहां ही उत्पन्न होने का होवे सो अचरम शरीरी यह भी चौबीस दंडक में पाता है ॥ २ ॥ ऊर्ध्व अधो और तिर्यक् इन तीनों लोककी बात को आत्मा दो कारण से जान सकता है और देख सकता है १ वैक्रेय समुद्घात करके अवधिज्ञानी आत्म स्वभाव से जान सकते हैं और २ वैक्रेय समुद्घात किये बिना ही जीव आत्म स्वभाव से जान सकते हैं अथवा जिन को परम अवधिज्ञान उत्पन्न हुआ होवे वैसे जीव वैक्रेय समुद्घात करके या बिना किये अवधिज्ञान से तीनों

लोक के केवल कल्प लोक दो० दोस्थान से आ० आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है त० वह ज० जैसे वि० वैक्रेय से अ० आत्मस्वभाव से आ० आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है अ वैक्रेयविना अ० आत्मस्वभाव से आ० आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है अ० वैक्रेय करके या बिना किये अ० आत्मस्वभाव से आ० आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है ए० ऐसे ति० तिर्यक् लोक उ० ऊर्ध्व लोक के० केवल कल्प लोक ॥ ४ ॥ दो० दोस्थान से

आया अहे लोगं जाणइ पासइ त जहा विउव्विएणंचेव अप्पाणेण आया अहोलोग जाणइ पासइ अविउव्विएणचेव अप्पाणेण आया अहो लोग जाणइ पासइ अहोहि विउव्विया विउव्विएणचेव अप्पाणेणं आया अहोलोग जाणइ पासइ। एव तिरियलोगं, उड्ढलोग केवलकप्प लोगं ॥ ४ ॥ दोहिं ठाणेहिं आया सद्दाइ सुणेइ तंजहा देसेणवि आया स

लोक के भाव जान व देख सकते हैं ॥ और दूसरा कारण इस से मिलता हुवा शरीराश्रित यह है कि वैक्रेय शरीर को भेज कर या बिना भेजे भी अवधि ज्ञान से आत्मा तीनों लोक को जान सकते हैं और देख सकते भी हैं वैसे ही परम अवधि ज्ञान से वैक्रेय शरीर युक्त या शरीर रहित जान सकते हैं और देख सकते हैं ॥ ४ ॥ जीव देश थकी १ व सर्व थकी २ ऐसे दो स्थानक से शब्द श्रवण करे

¹ एक कान से सुने और एक कान से बाधिर होवे २ दोनों कान से श्रवण करे अथवा संभिन्न श्रोतोपलब्धि का धनी सब सुनता है

आ० आत्मा स० शब्द सु० सुनता है रू० पर ज० जैसे द० देखस स० सब स प० पसे रू० रूप पा० देखता है गं० गंध आ० सूंघता है र० रस आ० स्वादलेता है फा० स्पर्श प० स्पर्शता है दो० दोस्थान से आ० आत्मा ओ० दीप्त होता है दे० देशसे स० सर्व से ए० ऐसे प० प्रकाशता है वि० वैक्रेय करता है प० परिचारणा करता है भा० भाषा भा० बोलता है आ० आहार करता है परिण

दाइ सुणेइ सव्वेणवि आया सद्दाइ सुणेइ । एव रूवाइ पासइ । गंधाइ आघायइ । रसाइं आसाएइ । फासाइ पडिसंवेएइ ॥ दोहिं ठाणेहिं आया ओभासइ तंजहा देसेणवि आया ओभासइ, सव्वेणवि आया ओभासइ एव पभासइ, विउव्वइ, परियावेइ, भा

ऐसे ही दो भेदों म रूप देखे, गंध सूंघे, रस का स्वाद ले और स्पर्श को अनुभवे जीव दो स्थानक से प्रकाशित होता है १ देश से अर्थात् काजवे (आगिया) की तरह प्रकाशे २ सर्व से दीपक की तरह प्रकाशे ऐसे ही वैक्रेय भी दो प्रकार से होवे १ हस्तादि अंग बनावे सो देश वैक्रेय और संपूर्ण शरीर बनाना सो सर्व वैक्रेय ऐसे ही मैथुन सेवन का भी दो प्रकार अनंग क्रीडा करना सो देश मैथुन और सर्वांग क्रीडा करना सो सर्व मैथुन यों शब्दोच्चार भी दो तरह से होवे हैं मात्र जिव्हा से बोले सो देश और तालु, ओष्ठ, जिव्हा आदि से बोले सो सर्व ऐसे ही आहार मुख मात्र से लेना सो देश और पूर्ण आहार करना सो सर्व ऐसे ही परगमाना—रोगादि कारण से हस्त आदि से विशेष नीकले और थोडा रहे सो देश और

क्या है श० शब्द है णि० निर्जरता है दो० दोस्थान से दे० देव स० शब्द सु० सुनता है स० सर्व
न० नेम द० द्रव्यसे म मन म जा० यावत् णि० निर्जरता है शेषपूर्ववत् ॥ ५ ॥ म० मरुद्देव दु० दो
प्रकार का० प० एक गरीरी वि० विशेष शरीरी ए० ऐसे कि किन्नर कि० किंपुरुष गं० गंधर्व णा०

स भासइ आहारेइ परिणामइ वेएइ, निज्जरेइ । दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइ सुणेइ तज
हा देसेणवि देव सद्दाइ सुणेइ सव्वेणवि सद्दाइ सुणेइ जाव णिज्जरेइ ॥ ५ ॥ मरुया
देवा दुविहा प० त० एगसरीरीचेव विसरीरीचेव एव किन्नरा किंपुरिसा गधव्वा णा

सहरााधे की मवन्ता से मन पावन सामाने सो सर्व वेदने के दो भेद—कार्य मयोमन से थोडी वेदना
हार सो देश और व्याधि से आकुल व्याकुल बनना सो सर्व निर्जराके दो भेद शरीर के अमुक एक
अंग से निकलना सो देश और सब अंग से निकलना सो सर्व ऐसे ही देवता भी दो प्रकारसे शब्द
सुनते हैं यावत निर्जरते हैं ॥ ५ ॥ [illegible], देवलोक, में रहनेवाले तथा लोकान्तिक देवताओं को मरुत देवता
कहते हैं उन के दो भेद एक शरीरी अर्थात् भव धारणीय शरीर जब होता है तब एक शरीरी कहलाते हैं
और वैक्रेय शरीर करते हैं तब विशेष शरीरी कहलाते हैं ऐसे ही किन्नर, किंपुरुष, गंधर्व, नाग
कुमार, अग्नि कुमार, और वायु कुमार तक मानना शेष दो प्रकारके भव धारणीय शरीर

नागकुमार सु० सुवर्णकुमार अ अग्निकुमार वा० वायुकुमार दे० देव दु० दोप्रकार का ए एक शरीरी वि० विशेष शरीरी ॥ ६ ॥

दु० दोप्रकार का स० शब्द प० परूपा त० वह भा० भाषा शब्द णो० नोभाषा शब्द भा भाषा शब्द दु० दोप्रकार का अ० अक्षर सबंध नो नोअक्षर सबंध णो० नोभाषा शब्द दु० दोप्रकार का आ० ताडन से स० शब्द णो विनाताडन से स० शब्द आ० ताडन शब्द दु० दोप्रकार का० त ताल का

गकुमारा, सुवन्नकुमारा अग्गिकुमारा, वायुकुमारा देवा दुविहा प० त एगसरीरी चेव विसरीरीचेव ॥ ६ ॥ इति बीयठाणस्स बीओदेसो सम्मत्तो ॥

दुविहे सद्दे प० त भासासद्दे चेव नोभासासद्देचेव । भासासद्दे दुविहे प० त० अक्खरसबद्धे चेव नोअक्खरसंबद्धे चेव । णोभासासद्दे दुविहे प०त० आउज्जसद्देचेव

वाले एक शरीरी और उत्तर वैक्रेय करनेवाले विशेष शरीरी यह दूसरा स्थानक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा आगे तीसरा उद्देशा कहते हैं

श्री भगवन्तने भाषा के दो भेद कहे हैं एक मनुष्य पशु आदि शब्द करे सो भाषा और अजीव का जो शब्द होवे सो नोभाषा भाषा के दो भेद अक्षर सहित और अक्षर रहित नो भाषा के दो प्रकार ताडनादि से अक्षरों होवे सो और विना ताडनासे वांस प्रमुख तोडवे आ होवे सो ताडना से जो शब्द

शब्द वि० ताल विनाका शब्द त० तालका शब्द दु० दोप्रकार का घ० घनशब्द सु० पोला शब्द ए० ऐसे वि० तालविनाका शब्द णो० बिना ताडन शब्द का दु० दोप्रकार भु० भूषण का शब्द णो० नो भूषण शब्द णो० नोभूषण शब्द के दोभेद ता० ताल शब्द ल० लात का शब्द दो० दोस्थान से स० श०शब्द उत्पन्न होवे सं० वह अ० जैसे सा० संघप मिलने से पु पुद्गल का स० शब्द उत्पन्न होवे भि०

णो आउज्जसद्देचेव । आउज्जसद्दे दुविहे प० तं० तते चेव वितते चेव, तते दुविहे प० तं० घणे चेव झुसिरेच्चेव एवं वितते वि ॥ णोआउज्जसद्दे दुविहे प० त० भूसणसद्दे चेव, णो भूसणसद्देचेव । णोभूसणसद्दे दुविहे प० तं० तालसद्दे चेव लत्तिया सद्देचेव ॥ दोहिं ठाणेहिं सद्दुप्पाए सिया तजहा साहन्नताण चेव पुग्गलाण सद्दुप्पाए सिया

होवे तत के दो भेद तत और वितत तत वादित्र के दो भेद घन—जिस का अवाज बहुत घनघोर नि कले सो पटह मृदंगादि और झुसर करताल कसालादि ऐसे ही वितत के दो भेद करना बिना ताडना से जो शब्द होवे उस के दो भेद १ भूषण शब्द—नेऊर घोघर प्रमुख भूषण के शब्द और भूषण बिना के शब्द नो भूषण के दो भेद हाथ से ताली बजाने का और किसी का लात मारना इत्यादि और भी शब्द दो प्रकारसे उत्पन्न होते हैं पुद्गल प्रमुख मिलने से जो अवाज होता है सो और ...

भेदहोने,से पो० पुद्गल का स० शब्द उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ दो० दोस्थान से पो० पुद्गल मा० बनाते हैं तं०
सह, म० जैसे स० स्वभाव से प० दूसरे से दो० दोस्थान से पो० पुद्गल भि० भेदाते हैं स० स्वभाव से
प० दूसरे से दो० दोस्थान पो०पुद्गल प०सडते हैं स०स्वभाव से प दूसरे से ए० एसे प० पडते हैं वि०
मायपातहैं भेदपूर्ववत् ॥२॥ दु०दोप्रकार का पो०पुद्गल प०प्ररूपा तं०यह भि०भिन्न अ०अभिन्न दु०दोप्रकार
का पो० पुद्गल प० प्ररूपा भि० भिदूर धर्म नो०नोभिदुरधर्म दु०दोप्रकार का पुद्गल प०परमाणु पुद्गल ना०

भिज्जंताणचेव पोग्गलाण सदुप्पाएसिया ॥ १ ॥ दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहन्नंति
तंजहा सयं वा पोग्गला साहन्नंति परेण वा पोग्गला साहन्नंति । दोहिं ठाणेहिं पो
ग्गला भिज्जंति तजहा सय वा पोग्गला भिज्जंति परेण वा पोग्गला भिज्जंति । दोहिं
ठाणेहिं पोग्गला परिसडंति तजहा सय वा पोग्गला परिसडंति परेणवा पोग्गला परि
सडंति । एव परिपडंति विद्धसंति ॥ २ ॥ दुविहा पोग्गला प० त० भिन्नाचेव
अभिन्नाचेव । दुविहा पोग्गला प० त० भिउरधम्माचेव नोभिउरधम्माचेव । दुविहा

जो शब्द होवे सो ॥ १ ॥ श्री भगवन्तने पुद्गल मिलने के, बिखरने के, सडने के और विध्वंस होने के
दो दो भेद बतलाये हैं १ स्वभावसे और २ अन्य के संयोग से ॥ २ ॥ श्री भगवन्तने पुद्गल दो प्रकारके
फरमाये हैं १ भस्मा बिखरे हुवे धुल, मिट्टी प्रमुख सो भिन्न और २ एक साथ मिले हुवे सक्करादि प्रमुख सो

पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनोहर दु० दोप्रकारका स० शब्द अ० आत्मग्राही अ० नोआत्मग्राही जा० यावत् ए० ऐसे इ० इष्ट म० मनोहर दु० दोप्रकार का रू० रूप अ० आत्मग्राही अ० नोआत्मग्राही जा० यावत् म० मनोहर ए० ऐसे गं० गंध र० रस फा० स्पर्श ए० ऐसे इ एकेक के (छ० छह) आ० आला पक मा० कहना ॥ १ ॥ दु० दोप्रकार का आ० आचार णा० ज्ञानाचार णो० नोज्ञानाचार णो० नो

अत्ताचेव अणत्ताचेव । दुविहा पोग्गला प० त० इट्ठाचेव अणिट्ठाचेव । एवं कंता, पिया, मणुन्ना, मणामा ॥ दुविहा सद्दा प० तं० अत्ताचेव अणत्ताचेव एव मिट्ठा जाव मणामा ॥ दुविहा रूवा प० तं अत्ताचेव अणत्ताचेव जाव मणामा । एव गंधा रसा फासा एवं मिक्किके छ आलावगा भाणियव्वा ॥२॥ दुविहे आयारे प० त० णाणा

ही सो पर्यायातीत और नहीं स्पर्शी सो अपर्यायातीत और भी दो भेद जीवने ग्रहण कीये सो शरीरादि आत्मग्राही और ग्रहण नहीं किय सो अनात्मग्राही और भी दो भेद इष्ट और अनिष्ट ऐसे ही कान्तकारी, अकान्तकारी, प्रियकारी, अप्रियकारी, मनोहर, अमनोहर, और मनोज्ञ, अमनोज्ञ ऐसे भेद जानना ऐसे ही शब्द, रूप, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के ग्रहे हुवे नहीं ग्रहे हुवे, कान्तकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ और अमनोज्ञादि भेद कहना ऐसा पुद्गलों का स्वभाव सदैव रहता है ॥ १ ॥ आचार के दो भेद १ ज्ञाना

ज्ञानाचार दु० दोमकार का दं० दर्शनाचार णो० नोदसनाचार णो० णोदसनाचार दु० दोमकार का च० चारित्राचार ना० नोचारित्राचार णो० नोचारित्राचार दु० दोमकार का त० तपाचार वी० वीर्याचार ॥ ४ ॥ दो० दोमतिमा स० समाधि प्रतिमा उ० उपधान प्रतिमा दो० दोमतिमा वि० विवेक प्रतिमा वि० व्युत्सर्ग प्रतिमा दो० दोमतिमा भ० भद्र सु० सुभद्र दो० दोमतिमा म० महाभद्र स० सर्वतोभद्र दो० दो

यारेचेव णोणाणायारेचेव । णोणाणायारे दुविहे प० त० दसणायारेचेव, णोदसणायारे चेव । णोदसणायारे दुविहे प० तं० चरित्तायारेचेव णोचरित्तायारेचेव । नोचारित्तायारे दुविहे प० त० तवायारचेव वीरियायारेचेव ॥ ४ ॥ दो पडिमाओ प० तं० समाहि पडिमाचेव उवहाणपडिमाचेव । दो पडिमाओ प० तं० विवेगपडिमाचेव विउसग्गपडि

चार-सूत्रादिकका अभ्यास करना समझना और २ नोज्ञानाचार सो ज्ञान बिना दूसरा आचार नोज्ञानाचार के दो भेद दर्शनाचार-निसंकिय निकंखियादि आठ बोल सहित और नो दर्शनाचार सो दूसरा नो दर्शनाचार के दो भेद दर्शन से श्रद्धे हुवे पदार्थो से आदरने योग्य आदरना और छोडने योग्य छोडना सो चारित्र आचार और चारित्र से भिन्न सो नो चारित्र आचार नो चारित्र आचार के दो भेद तपाचार और वीर्याचार ॥ ४ ॥ भगवन्तने दो प्रकारकी प्रतिमा कही है मन के परिणाम पवित्र होना सो समाधि प्रतिमा और साधु की बारह प्रतिमा तथा श्रावक की अग्यारह प्रतिमा का आचरण करना सो उपधान

मतिमा, खु० छोड्डिमोकमतिमा म० महीमोकमतिमा दो० दोमविमा म० यवमध्यचंद्र मतिमा व० वज्रमध्य

माचेव । दो पडिमाओ प० त० मद्देचेव सुभद्देचेव । दो पडिमाओ प० त० महाभद्दे

चेव सव्वतोभद्देचेव । दो पडिमाओ प० तं० खुड्डियाचेव मोयपडिमा, महल्लियाचेव

मतिमा और पडिमा दो मकारकी कषाय ममुख का त्याग करना सो विवेक मतिमा और कायोत्सर्ग करना सो व्युत्सर्ग मतिमा और भी मतिमा दो मकारकी पूर्व दिशा में चार महरतक कायसग्ग करना, उपसर्ग परिषह सहन करना, और साधु श्रावकको योग्य उपधान तपका करना सो भद्रा मतिमा यह मतिमा दो दिन में पूर्ण होती है ऐसे ही दसोदिशी में कायसग्ग करना, उपसर्गादि सहन करना सो सुभद्रा मतिमा और भी दो मकार की मतिमा एक २ दिशी में अहोरात्रि कायोत्सर्ग करे यों चार अहो रात्रि तक कायोत्सर्ग करे यह महाभद्रा पडिमा और दस दिशाओं में एक २ अहोरात्रि कायोत्सर्ग करके दश दिनों में पूर्ण करे सो सर्वतोभद्र मतिमा और भी दो पडिमा एक छोटी मोक पडिमा = चौदह अथवा

= द्रव्य से मश्रवण परठना नहीं क्षेत्र से गांव की बाहिर रहना काल से आहार सहित करे तो चौदह भक्त में पूर्ण होवे और आहार छोड कर करे सो अठारह भक्त में पूर्ण होवे और भाव से देवादिक के उपसर्ग सहन करे. बडी मोक पडिमा भी वैसेही कहना परन्तु काल से आहार सहित करेतो सोलह भक्त और आहार रहित करेतो अठारह भक्त में पूर्ण होवे

चंद्र प्रतिमा ॥८॥ दु० दामकार की सा० सामायिक अ० आगारिक सामायिक अ० अनागारिक सामायिक ॥ ३ ॥ दो० दो स्थ का उ० उपपात दे० देवता का ने० नारकी का दो० दो का उ० नीकलना ने०

मोयपडिमा । दो पडिमाओ प० त० जवमज्झेचेव चंदपडिमा वइरमज्झेचेव चंदपडि मा ॥५॥ दुविहे सामाइए प० तं० अगारसामाइए, चेव अणगारसामाइए चेव ॥ ६॥

सोलह भक्त में पूर्ण होवे और दूसरी बडी मोक पडिमा सोलह अथवा अठारह भक्त में पूर्ण होवे और भी दो पडिमा यवमध्य चंद्र पडिमा यव जैसा मध्य भागवाली और चंद्र की समान वर्धा घटती होवे सो प्रतिपदा के दिन एक कवल का आहार लेवे और प्रति दिन एक २ कवल बढाते जावे यावत् पूर्णिमा के दिन १५ कवल लेवे और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा के दिन १५ कवल और प्रति दिन एक २ कवल आहार घटाते जावे यावत् अमावास्या को एक कवल का आहार करे सो यवमध्य चंद्रपडिमा तप और वज्रमध्य चंद्र पडिमा अर्थात् वज्र सरिखा मध्य भागवाली पडिमा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को पंद्रह कवल का आहार लेवे और प्रति दिन एक घटाते २ अमावास्या को एक कवल का आहार लेवे और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को एक कवल यावत् पूर्णिमा को १५ कवल का आहार करे यह वज्रमध्य चंद्र पडिमा ॥ ८ ॥ दो प्रकारकी सामायिक कही है, गृहस्थ-श्रावक को मुहूर्तादिक की मर्यादा से सामायिक सो होवे आगारिक सामायिक और जाव जीव तक सामायिक करना सो साधु की अनागारिक सामायिक ॥ ६ ॥ उपपात

नारकी का भ भवनवासी का दो० दो का च० चवण जो० ज्योतिषी का वे० वैमानिक का दो दो
की गर्भ में उत्पत्ति म० मनुष्य की प० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले की दो० दो का ग० गर्भस्थान में आ०
आहार म० मनुष्य को पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले को दो०दोको ग० गर्भस्थान में वु० वृद्धि म०मनुष्य
को पं०पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले को ए० ऐसे नि०हानि वि०विकुर्वणा ग० गतिपर्याय स० समुघात का०

दोण्हं उववाए प० त० देवाणंचेव नेरइयाणचेव । दोण्हं उवट्टणा प० त० नेरइयाण
चेव भवणवासीणचेव । दोण्हं चयणे प० त० जोइसियाणचेव वेमाणियाणंचेव । दो
ण्हं गब्भवक्कं प० तं मणुस्साणंचेव, पचेंदियतिरिक्खजोणियाणचेव । दोण्हं गब्भ
त्याण आहारे प० तं० मणुस्साणचेव, पचेंदियतिरिक्खजोणियाणचेव । दोण्हं गब्भ

दो प्रकार का है १ चार जाति के देवता का उपपात और २ सात नारकी का उपपात यहां पर गर्भ
स्थिति नहीं है । दो प्रकार की उद्वर्तना चवकर उपर आना उसे उद्वर्तना कहते हैं नारकी को और
भवनपति देवताओं को मरण रूप उद्वर्तना होती है दो प्रकारके जीवों चवते हैं (नीचे लोक में आते हैं)
चन्द्र सूर्यादि ज्योतिष देवता का चवन और वैमानिक देवताओं का चवन दो प्रकारके जीव गर्भ में उत्पन्न
होते हैं मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैसे ही मनुष्य और तिर्यंच गर्भ में रहे हुवे आहार करते हैं, गर्भ में
वृद्धि पाते हैं गर्भ में ही क्षीण होजाते हैं, वैक्रेय शरीर करते हैं, गतिपर्याय अर्थात् गर्भ में से

कमल संयोग मा० मस्तुरोंमें दो० दोको प० वमदी से आच्छादित शरीर म० मनुष्य का पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले के दो० दो सु० वीर्य सो० रुधिर में स० उत्पत्ति म० मनुष्य की पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच यो निवाले का दु० दोप्रकार की ठि० स्थिति का० कायस्थिति भ० भवस्थिति दो० दो की का० काय स्थिति म० मनुष्य की प० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले की दो० दोकी भ० भवस्थिति दे० देवकी

त्याण चुड्डी प० त० मणुस्साणचेव पचेंदियतिरिक्खजोणियाणचेव । एव निवुटीवि गुव्वणा गब्भपरियाए समुग्घायकालसंजोगे आयाइमरणे । दोण्ह छविपव्वा प० त० मणुस्साणचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणचेव । दोसुक्कसोणिअसंभवा प० त० मणु स्साणचेव पंचेदिय तिरिक्खजोणियाणचेव दुविहा ठिई प० त० कायठिईचेव भवठि ईचेव दोण्हं कायठिई प० तं० मणुस्साणचेव पचेंदिय तिरिक्ख जोणियाणचेव । दो-

प्रदेश बाहिर नीकालकर संग्राम करे (भगवती सूत्र का कथन) गर्भ में ही मरणान्तिक समुद्घात करते हैं गर्भ से बाहिर निकलते हैं और मरण भी इन दोनों का होता है और भी मनुष्य और तिर्यंच इन दोनों को चमडी का बंधन होता है वे पिता का वीर्य और माता का रुधिर से उत्पन्न होते हैं जीव की दो प्रकार की स्थिति कही है मरकर पुनः उसी काया में उत्पन्न होना सो कायस्थिति और मात्र एक ही भव उस शरीर में करे सो भवस्थिति इस में से मनुष्य और तिर्यंच १ पंचेन्द्रिय कायस्थिति के धारक हैं

---

१ यहां पर सात आठ भव का ग्रहण करने से ही मात्र तिर्यंच पंचेन्द्रिय ग्रहण किये गये हैं।

ने० नारकी का दु० दोमकार का आ० आयुष्य अ० काल प्रधान, भ० भव प्रधान हो० होता भ काल प्रधान आयुष्य म० मनुष्य का पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले का दो० दो का भ० भवप्रधान आयुष्य दे० देवता का ने० नारकी का दु० दोमकार का कर्म प० प्रदेश कर्म अ० अनुभावकर्म दो० दो म०

एवं भवाठिई प० त० देवाणचेव णेरइयाणंचेव । दुविहे आयुए प० त० अद्धाउएचेव भवाउएचेव । दोण्हं अद्धाउए प० त मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणचेव दोण्हं भवाउए प० त० देवाणचेव नेरइयाणचेव । दुविहे कम्मे प० त० पदेसकम्मे चेव अणुभावे कम्मेचेव । दो अहाउयं पालेइ तं० देवच्चेव नेरइयचेव दोण्हं आउय

क्यों कि समीक्षण उस के आठ भव कर सकते हैं नरक व देवता के जीव भवस्थिति के धारक होते हैं अर्थात् यहां से मरकर फिर यहां नहीं उत्पन्न होते हैं, परंतु मनुष्य और तिर्यंच में उत्पन्न होते हैं भगवन्तने आयुष्य दो प्रकार का कहा है काल प्रधान आयुष्य और भव प्रधान आयुष्य, मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय का काल प्रधान आयुष्य है क्यों कि उनका आयुष्य निश्चित नहीं है कि कब काल आवेगा देव और नारकी को भव प्रधान आयुष्य होता है क्यों कि यहां उत्पन्न होनेवाले जीवों को जो निश्चित आयुष्य होता है उतनाही पूर्ण किये विना वे मरते नहीं हैं दो प्रकार के कर्म हैं प्रदेश कर्म आत्मप्रदेश में ही सुख दुःख का अनुभवना और अनुभाव कर्म रस वेदना सो नारकी और देवता पूर्ण आयुष्य पालकर काल करे और

पूरा आयुष्य पा० भोगते है दे० देव ने० नारकी दो दोका आ० आयुष्य सं० सवर्तक म० मनुष्य का प० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले का ॥ ७ ॥ जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु प०पर्वत की उ० उत्तर दा०दक्षिण में दो० दो वा० क्षेत्र ब० बहुत तुल्य अ० अविशेष अ० अन्योन्य अ० सरीखा है आ० लम्बाइ अ० चौडाइ सं० संस्थान प० परिधिसे तं० यह ज० जैसे भ० भरत ए० ऐरवत ए० ऐसे ए० इस अ० अभिलाप से ने० जानना है० हेमवय ए० ऐरणवय ह० हरिवास र० रम्यकवास ॥ ८ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु

संवट्टए प० तं० मणुस्साणचेव पचेंदिय तिरिक्ख जोणियाणचेव ॥ ७ ॥ जम्बुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणणं दोवासा प० तं० बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नणाइवट्टाति, आयामविक्खंभसंठाणपरिणाहेण तंजहा भरहेचेव एरवएचेव एवमेएण अहिलावेण नेयव्व हेमवएचेव एरण्णवएचेव, हरिवरिसेचेव रम्मयवरिसेचेव ॥ ८ ॥ जम्बुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं दो खित्ता प०

मनुष्य और तिर्यंच व्यवहार से कमी ज्यादा आयुष्य पाल करके काल करते हैं ॥ ७ ॥ परिपूर्ण चंद्र मंडलाकार जम्बू द्वीप में एक लक्ष योजन का मेरु पर्वत है उस की उत्तर और दक्षिण दोनों बाजु में भरत और एरावत नामक क्षेत्र हैं, उन दोनों की लंबाइ, चौडाइ, परिधि, आकार और स्वभाव एकसा मिलता हुआ है किंचिन्मात्र भी भिन्नता नहीं है ऐसे ही उन क्षेत्रों की पास हेमवय और एरणवय परस्पर क्षेत्र मिलते हुवे हैं और उन की पास हरिवास और रम्यक वर्ष दोनों क्षेत्र परस्पर मिलते हुवे हैं ॥ ८ ॥ जम्बू द्वीप में रहा

पर्वत का पु० पूर्व प० पश्चिम में, दो० दोक्षेत्र व० बहुत तुल्य अ० अविशेष जा० यावत् पु पूर्व विदेह म० अपर विदेह ॥ १ ॥ जं० जंबूद्वीप के मेरु पर्वत की उ० उत्तर दा दक्षिण दिशामें दो० दोकुरु प० बहु तुल्य अ० अविशेष जा० यावत् दे देवकुरु उ० उत्तरकुरु त० तहां म० बडे म० बडे रूंखे दु० वृक्ष ब० बहुत तुल्य अ० अविशेष अ० अन्योन्य णा० सरीसे हैं आ० लंबा भ० चौडा उ० ऊंचे प० ऊंडे सं० संस्थान प० परिधि से कू० कूडसामली जं० जंबूसुदर्शन त० तहां दो० दोदेव म० महर्धिक जा०

तं० बहुसमतुल्ला अविसेसा जाव पुव्वविदेहेचेव, अवरविदेहेचेव ॥ १ ॥ जम्बूमदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेण दो कुराओ प० तं० बहुसमतुल्ला अविसेसा जाव देवकुराचेव, उत्तरकुराचेव । तत्थणं दो महइ महालया महादुमा प० तं० बहुसम तुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्न णाइवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाण परिणाहेण तंजहा कूडसामलीचेव जंबूचेव सुदंसणा । तत्थण दो देवा महड्डिया जाव

हुवा मेरु पर्वत की पूर्व और पश्चिम दिशामें पूर्व विदेह और पश्चिम विदेह ऐसे दो क्षेत्र बराबर मिलते हुवे रहे हैं ॥ १ ॥ जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत की पास दक्षिणमें देवकुरु और उत्तर में उत्तर कुरु ऐसे ही दोनों क्षेत्र बराबर हैं देव कुरु में शिखराकार शाल्मली वृक्ष है और उत्तर कुरु में जम्बू वृक्ष है ये दोनों वृक्ष मनोहर, बडे, और तेजवंत है उस की लंबाइ, चौडाइ, ऊंडाइ, परिधि सब सरिखे हैं शाल्मली वृक्ष पर गरुड देव और जम्बू वृक्ष पर

पावत् प० महाद्युती प० पल्योपमकी ठि० स्थिति वाले प० बसते हैं ग० गरुड्देव वे० वेणुदेव (अ० अणाढिय देव) जं० जम्बूद्वीप के अ० अधिपती ॥ १० ॥ जं० जम्बूद्वीप का मं० मेरुपर्वत उ० उत्तर दा० दक्षिण दिशामें दो० दो वर्षधर पर्वत ब० बहुत तुल्य चु० चूल हेमवंत सि० शिखरी ए० ऐसे म० महाहिमवंत रु० रुपी ए० ऐसे नि० निषद नी० नीलवंत ॥ ११ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की उ० उत्तर

महासोक्खा पलिओवम ठिइया परिवसति त० गरुलेचेव, वेणुदेवेचेव (अणाढिएचेव) जंबुद्दीवाहिवई ॥ १० ॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासहरपव्वया प० तं० बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता, अन्नमन्नणाइवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तो व्वेहसंठाणपरिणाहेणं तंजहा चुल्लहिमवंते चेव सिहरीचेव । एवं महाहिमवंतेचेव रुप्पीचेव एवं णिसढेचेव णीलवंतेचेव ॥ ११ ॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहि-

वेणुदेव अपरनाम अणाढिय देवता का रहने का स्थान है ये दोनों देवताओं जम्बूद्वीप के मालिक हैं और महा ऋद्धिवन्त, तेजवाले और सुख के भोक्ता हैं इन दोनों का एक पल्य का आयुष्य है ॥ १० ॥ जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत की पास उत्तर और दक्षिण दिशा में क्षेत्र की मर्यादा करनेवाले दो वर्षधर चूल हेमवन्त और शिखरी पर्वत हैं दोनों की लम्बाइ, चौडाइ, ऊंचाइ, व परिधि बराबर है ऐसे ही हेमवय क्षेत्र की मर्यादा करनेवाला महाहिमवन्त और एरण्यवय क्षेत्र की मर्यादा करनेवाला रुपी पर्वत ये दोनों बराबर हैं ऐसे ही, निषद और निलवन्त पर्वत हैं ॥ ११ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण में हेमवन्त के मध्य में

दा० दक्षिण में हे० हेमवय ए० ऐरणवय में दो० दो गोल वैताढ प० पर्वत म० बहु तुल्य अ० अविसेष जा० यावत् स० शब्दापाति वि० विकटापाति त० तहां दो० दो देव म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्यो पम की स्थिति वाले प० रहते हैं सा० स्वाति प० प्रभास ॥ १२ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी उ० उत्तर दा०दक्षिणमें ह०हरिवास र०रम्यकवास में दो०दो व०गोल वे०वैताढ प० पर्वत ब० बहुत तुल्य जा०यावत्

पेण हेमवएरन्नवएसु वासेसु दोवट्टवेयड्डपव्वया प० त० बहुसमतुल्ला अविसेस भणाणत्ता जाव सद्दावईचेव वियडावईचेव तत्थण दो देवा महड्डिया जाव पलिओवम ट्ठिइया परिवसति तजहा साइचेव पभासेचेव ॥ १२ ॥ जबूमदरस्स उत्तरदाहिणेणं हरिवरिसरम्मएसु वासेसु वोयट्टवेयड्डु पव्वया प० त० बहु समतुल्ला जाव गधावई

शब्दापाति नामक और उत्तर के एरणवय क्षेत्र के मध्य में विकटापाति नामक दो अत्यन्त वर्तुलाकार वैताढ पर्वत हैं ये दोनों बराबर हैं शब्दापाति वैताढ पर स्वाति नामक देवताका भवन और वि कटापातिवैताढ पर प्रभास नामक देवता का भवन है ये दोनों देवताओं महाऋद्धि के धारि यु क्त के मोक्ता और पल्योपम की स्थितिवाले हैं ॥ १२ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण हरिवर्ष क्षेत्र के मध्य में गंधापाती और रम्यक वर्ष क्षेत्र में माल्यवंत वैताढ हैं ये दोनों परस्पर मिलते हुवे हैं गंध

गं० गधापाति मा० माल्यवत प० पद्माव त० तहां दो दोदेव म महर्धिक जा० यावत् प० पल्योपम ष्थिति वाले प वसत है अ० अरुण प० पद्म ॥ १२ ॥ ज० जम्बूद्वीप के दा० दक्षिण में दे० देवकुरु की पु पूर्व प० पश्चिम दिशामें ए० यहां आ० अश्वस्कन्ध सरिखे अ० अर्धचन्द्राकार दो० दोवक्षारा पर्वत प० बहु तुल्य जा० यावत् सा सोमनस वि० विद्युत्प्रभ जं जम्बूद्वीप के म० मेरुपर्वत की उ० उत्तर में

पव मालवतपरियाएचेव तत्थण दो देवा महड्डिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवस ति तजहा अरुणचेव पउमेचेव ॥ १२ ॥ जबूमदरस्स दाहिणेण देवकुराए पुव्वावरे पासे एत्थणं आसक्खधसरिसा अद्धचदसठाणसठिया दोवक्खारपव्वया प० त० बहु समतुल्ला जाव सोमणसेचेव, विज्जुप्पभेचेव । जबूमदरस्स उत्तरेण उत्तरकुराए पुव्वावरे पासे एत्थण आसक्खधसरिसा अद्धचदसठाणसंठिया दोवक्खारपव्वया प०

पानि पर अरुण देव और माल्यवत पर पद्मदेव महा ऋद्धि क मालिक है और एक २ पल्योपम की स्थितिवाले हैं ॥ १२ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में जो देवकुरु है उस की पूर्व में विद्युत्प्रभ और पश्चिम में सोमनस नामक पर्वत है वैसे ही मेरु स उत्तर में आया हुआ उत्तरकुरु की पूर्व पश्चिम में गंधमादन और माल्य वत है उस को वक्षस्कार पर्वत कहते हैं * ... स्कंध की आकार मे

उ० उत्तरकुरु की पु० पूर्वपश्चिम दिशामें जा० यावत् ग० गंधमादन मा० माल्यवंत ॥ १४ ॥ ज० जम्बू
प के म० मेरुपर्वत के उ० उत्तर द० दक्षिणमें दो० दीर्घवैताढ्य प० पर्वत ब बहुसम जा० यावत्
मा० भरत में दी० दीर्घवैताढ्य एरवत में दी दीर्घवैताढ्य भा० भरत के वे वैताढ्य में दो० दोगुफा

त० बहुसमतुल्ला जाव गंधमायणेचेव मालवंतेचेव ॥ १४ ॥ जम्बूमंदरस्स पव्वय-
स्स उत्तरदाहिणेणं दो दीहवेयड्ढपव्वया प० त० बहुसमतुल्ला जाव भारहेचेव
दीहवेयड्ढे एरवएचेव दीहवेयड्ढे । भारहेणं दीहवेयड्ढे दोगुहाओ प० त० बहु स
मउल्लाओ अविसेस मणाणत्ताओ अन्नमन्नणाइवट्टंति आयमाविक्खंभुच्चत्तसंठाण प
रिणाण तंजहा तिमिसगुहाचेव खंडगप्पवायगुहाचेव तत्थणं दो देवा महड्ढिया जाव

ह भाग नीचे और तेज रूप ऊंचे हैं मेरु की पास पांचसो योजन के अर्ध चंद्राकार संस्थानवाले हैं
चारों ही बराबर हैं ॥ १४ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण में भरत क्षेत्र है और उत्तर में एरवत क्षेत्र
है इन दोनों क्षेत्र के मध्यभाग में पूर्व पश्चिमतक लम्बे दो वैताढ्य हैं वे पचीस योजन के ऊंचे हैं और
परस्पर सरिखे हैं इन दोनों वैताढ्यों में दो २ गुफाएं हैं तिमिस्रा और खंडप्रपात उन दोनों की लंबाइ
चोडाइ ऊंचाइ सब सरीखी हैं कुच्छ भी अधिकता नहीं है उन की ऊंचाइ आठ योजन की है और लम्बाइ
पचास योजनकी है, और दो योजनका आंतरा है, उसमें उमग्गा और निमग्गा ऐसी दो नदियां हैं उस में तिमिस्र

त० तिमिसगुफा खं० खंडप्रपातगुफा त० तहां दो० दोदेव क० कृतमाल न० नृत्यमाल पूर्ववत् ॥ १८ ॥ जं० जम्बूद्वीप के म० मेरुपर्वत के दा० दक्षिण में चु० चूलहेमवंत व० वर्षधर पर्वत में दो दो कूट चू० चुलहेमवन्त कूट वे० वैश्रमण कूट म० महा हिमवन्त वर्षधर पर्वत के दो कूट म० महाहिमवन्त कूट वे० वेरुली कूट ए० ऐसे नि० निषध पर्वत के दो कूट नि० निषध कूट रु० रुचक कूट ज० जम्बूद्वीप के व०

पलिओवमट्ठिइया परिवसति तजहा कयमालएचेव णट्टमालएचेव ॥ ऐरावएण दीह वेयड्ढे दोगुहा प० त० जाव कयमालएचेव नट्टमालएचेव ॥ १५ ॥ जंबूमदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए दोकूडा प० त० बहु समतुल्ला जाव विक्खंभुच्चत्तसठाणपरिणाहेण तजहा चुल्लहिमवंत कूडच्चेव वेसमणकूडेचेव। जंबू मदरस्स दाहिणेणं महाहिमवते वासहरपव्वए दोकूडा प० त० बहुसमतुल्ला जाव

गुफा का पालिक कृतमाल और खंडप्रपात गुफा का पालिक नृत्यमाल ऐसे दो देवताओं बडी ऋद्धिवाले और पल्योपम के आयुष्यवाले हैं ॥ १८ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशामें जो चूलहिमवंत पर्वत है उस पर दो कूट हैं चूल हेमवंत कूट और वैश्रमण कूट उन की लम्बाइ, चौडाइ, ऊंचपना, सं ठाण और परिधि बराबर है ऐसे ही मेरु से दक्षिण दिशा में महा हिमवन्त पर्वत पर भी दो कूट हैं

उत्तर मे नी० नीलवन्त वर्षधर पर्वत में दो० दोकूट नी० नीलवन्त कूट उ० उपदर्शन कूट ए एसे रु० रुपीवर्षधर पर्वतपे दोकूट रु० रुपीकूट म मणिकंचन कूट सि० शिखरी वर्षधर पर्वतपे दो० दोकूट सि० शिखरी कूट ति० तिगिच्छकूट ॥ १३ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की उ० उत्तर दा० दक्षिण में

महाहिमवतकूडेचेव वेरुलियकूडेचेव । एवं निसढे वासहरपव्वए दोकूडा प० त० यहु समतुल्ला जाव निसढकूडेचेव रुयगकूडेचेव । जंबूमंदरस्स उत्तरेण नीलवते वा सहरपव्वए दोकूडा प० त० यहुसमतुल्ला जाव नीलवतकूडेचेव उवदंसंण कूडेचेव एव रुप्पिम्मि वासहरपव्वए दोकूडा प० त० यहु समतुल्ला जाव तंजहा रुप्पिकूडेचेव मणिकचण कूडेचेव । एव सिहरिम्मिवि वासहरपव्वए दो कूडा प० यहु समतुल्ला तजहा सिहरिकूडेचव तिगिच्छिकूडेचेव ॥ १६ ॥ जंबूमदरस्स उ

महाहिमवन्त कूट और वेरुली कूट ये दोनों बराबर है ऐसे ही मेरु से दक्षिण दिशा में निषध पर्वत पर दो कूट हैं निषध कूट और रुचकप्रभ कूट, जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दिशा में नीलवंत नामक पर्वत पर नीलवंत कूट, उपदर्शन कूट ऐसे ही रुपी पर्वत पर दो कूट रुपी कूट और मणिकंचन कूट वैसे ही शिखरी पर्वत पर दो कूट शिखरी कूट और तिगिच्छ कूट ये दो दो कूटों परस्पर लम्बाइ, चौडाइ में बराबर हैं ॥ १६ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण दिशा में चूलहेमवत पर्वत पर पद्मद्रह और शिखरी पर्वत पर

चु० चुल्लहिमवन्त सि० शिखरी वर्षधर पर्वतपे दो द्रा म० महापद्म प० पद्मद्रह पु पुंडरीकद्रह त त्रां दा० ना देवी प० रहती हैं सि श्रीदेवी ल० लक्ष्मीदेवी ए० ऐसे म महाहिमवन्त रु० रुपी वर्षधर पर्वतपर दा० द्रा द्रह म० महापद्मद्रह म० महापुंडरीकद्रह दे० देवी हि० ह्रीदेवी बु० बुद्धिदेवी ए० ऐसे

चरदाहिणण चुल्लहिमवत सिहरीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा प० बहु समतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्ण नाइवट्टति आयामविक्खभउव्वेहसठाण परिणाहेण त० पउमद्दहेचेव पुंडरीयद्दहेचेव । तत्थण दो देवीयाओ महिड्डियाओ जाव पलिओ यमट्ठियाओ परिवसति त० सिरीचेव लच्छीचेव ॥ एव महाहिमवत रुप्पीसु वासह रपव्वएसु दोमहद्दहा प० बहुसमतुल्ला जाव महापउमद्दहेचेव महापोंडरीयद्दहेचेव ।

पुंडरीक द्रह है ये दोनों लम्बाइ, चौडाइ, ऊंचाइ आकार व परिधि में बराबर हैं उस में पद्मद्रह के कमल ऊपर श्रीदेवी और पुंडरीक द्रह के कमल पर लक्ष्मी देवी रहती है ये दोनों देवियों महाऋद्धि, परिवार व सुखवाली है उन की स्थिति एक पल्योपम की है ऐसे ही महा हिमवन्त पर्वत पर महा पद्मद्रह और रूपी पर्वत पर महा पुंडरीक द्रह है ये दोनों द्रह लम्बाइ, चौडाइ वगैरह सब बातों में सरिखे हैं महा पद्मद्रह पर ह्री और महापुंडरीक द्रह पर बुद्धि एसी दो देवियों हैं व महा ऋद्धिवाली यावत् एक पल्योपम की स्थितिवाली हैं ऐसे ही निषध और नीलवंत पर्वत पर तिगिच्छ और केसरी द्रह हैं और उस की

नि० निषद्द नी० नीलवंतपे ति० तिगिच्छद्रह के० केसरीद्रह धि० धृतिदेवी कि० कीर्तिदेवी ॥ १७ ॥ अं० जम्बूद्वीपके म० मेरु पर्वत की दा० दक्षिण में म० महाहिमवन्त वर्षधर पर्वत का म० महापद्मद्रह में से दो म०महीनदी प० वहती हैं रो०रोहिता ह०हरिकान्ता नि०निषद पर्वतका ति०तिगिच्छद्रह में से ह०हरिसलीला सी० सीतोदा जं० जंबूद्वीप के म० मेरु की उत्तर में नी० नीलवंत पर्वत के के० केसरि द्रह में से सी०सीता

देवताओ हिरिचेव बुद्धिचेव ॥ एवं निसहनीलवंतेसु तिगिच्छिद्दहेचेव केसरिद्दहेचेव देवताओ धिईचेव किचीचेव ॥ १७ ॥ जंबूमंदरदाहिणेण महाहिमवताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दो महाणईओ पवहति तंजहा रोहियचेव हरिकंतएच्चेव एवं निसहाओ वासहरपव्वयाओ तिगिच्छिद्दहाओ दोमहानईओ पवहति तं० हरिचेव सलिलाचेव । जंबूमंदर उत्तरेणं नीलवंताओ वासहर पव्वयाओ केसरिद्दहाओ दो महाणईओ पवहति तंजहा सीताचेव नारिकंताचेव एवं रुप्पी वासहरपव्वयाओ महा

पालिक दो देवियों धृति और कीर्ति हैं वे महाऋद्धि की धारक यावत् एक पल्योपम की स्थितिवाली हैं ॥ १७ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु की दक्षिण दिशा में महाहिमवंत पर्वत का महापद्मद्रह से रोहिता और हरिकान्ता नामक दो बडी नदियों निकलती हैं निषध नामक वर्षधर के तिगिच्छ द्रह से हरिसलीला नदी तथा सीतोदा नदी नीकलती हैं जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की उत्तर दिशा में नीलवंत पर्वत के केसरी

ना० नारिकान्ता रु० रुपीपर्वत के म० महापुंडरीक द्रह में से न० नरकान्ता रु० रुपकूला जं० जंबूके मे० मेरु पर्वत की दा०दक्षिण दिशामें] भ० भरत क्षेत्र में दो० दोमपातद्रह गं० गंगामपात द्रह सिं० सिन्धु मपातद्रह ए० ऐसे हे० हेमवयक्षेत्र में दो० दोमपातद्रह रो० रोहित मपातद्रह रो० रोहितांसा मपातद्रह ह० हरिसल

पोंडरीयद्दहाओ दो महाणईओ पवहंति तंजहा णरकताचेव रुप्पकूलाचेव । जंबूमंदर दाहिणेणं भरहेवासे दोपवायद्दहा प० तं० बहु समतुल्ला जाव गंगप्पवायद्दहेचेव । सिंधुप्पवायद्दहेचेव । एवं हेमवएवासे दोपवायद्दहा प० बहु समतुल्ला त० रोहियप्पवायद्दहेचेव रोहियंसप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरदाहिणेणं हरिवासे दोपवायद्दहा प० बहु समतुल्ला तं० हरिप्पवायद्दहेचेव हरिकंतप्पवायद्दहेचेव । जंबूमंदर उत्तरदाहिणेणं महाविदेहे वासे दोप्पवायद्दहा प० त० बहु समतुल्ला जाव सीयप्पवाय द्दहेचेव सी-

न्द में सीता और नारीकान्ता ऐसी दो बडी नदियों नीकलती हैं ऐसे ही रुपी पर्वत के महापुंडरीक द्रह से नरकंता और रुप्पकुला ये दो बडी नदियों नीकलती हैं जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा के भरत में दो मपात हैं गंगा मपात कुंड और सिन्धु मपात कुंड जिस में पर्वत पर से नदी का मवाह पडता है उसे मपात द्रह कहते हैं ऐसे ही हेमवत क्षेत्र में रोहिता और रोहितांसा मपात द्रह और हरिवर्ष

में ह० हरिसलील मपात ह० हरिकान्ता मपात म० महाविदेहसेत्र में दो० दोमपात सी० सीतामपात सी०
सीतोदा मपात र० रम्यकवास में दो० दामपात न० नरकान्ता मपात ना० नारीकान्ता मपात ए० एरण-
वयसेत्र में दो० दोमपात सु० सुवर्ण कुला मपात रू० रूप कुला मपात ए० एरवतसेत्र में र० रक्तामपात
र० रक्तवती मपात भ० भरत सेत्र में दो० दोमहानदी गं० गंगा सिं० सिंधु ए० ऐसे ज० जैसे प० मपात

ओयप्पवायदहेचेव। जम्बूमदरउत्तरेण रम्मएवासे दोपवायदहा प० बहु समतुल्ला
जाव नरकंतप्पवायदहेचेव णारिकंतप्पवायदहेचेव। एवं एरन्नवएवासे दोपवायदहा प०
बहु समतुल्ला जाव सुवन्न कूलप्पवायदहेचेव रुप्पकूलप्पवायदहेचेव। जम्बूमदर उत्त
रेण एरवयवासे दोपवायदहा प० बहुसमतुल्ला जाव रत्तप्पवायदहेचेव रत्तवइप्पवायद
हेचेव॥ जम्बूमदर दाहिणेण भरहेवासे दो महानईओ प० बहु समतुल्ला जाव गंगा
चेव सिंधूचेव। एव जहा पवायदहा एव णइओ भाणियव्वाओ॥ एव जहा एरवएवासे

सेत्र में हरिमपात और हरिकान्ता मपात नामक दो द्रह हैं जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दक्षिण दिशा में महा
विदेह सेत्र में सीता मपात और सीतोदा मपात कुंड हैं मेरु पर्वत से उत्तर दिशा में रम्यक् वर्ष सेत्र में
नरकान्ता और नारीकान्ता मपात द्रह हैं एरणवय सेत्र में सुवर्ण कूला और रुप्यकूला नामक दो मपात
द्रह हैं ऐरवत सेत्र में रक्ता और रक्तवती नामक मपात कुंड हैं पूर्वोक्त सब मपात द्रह में से उसी नामकी

नर प० ऐसे न०नदी मा०कहना ए० ऐसे न० जैसे ए० ऐरवत क्षेत्र में दो दोगदीनदी र०रक्ता र० रक्तवती ॥ १८ ॥ जं० जम्बूद्वीप के भ भरत ऐरवत में ती० अतीत उ उत्सर्पिणी में सु० सुषम सुषमा स काल में दा० दो सागरोपम को क्रोडा क्रोडी का काल हो० था ए० ऐसे इ० इस ब० अवसर्पिणी में जा यावत आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में जा० यावत् भ० होगा जं० जम्बूद्वीप के भ भरत ऐरवत में ती अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु० सुषम काल में म०मनुष्य दो दोगाउ उ०ऊंचे उ०ऊंचाइ में हो थे दो० दोपल्योपम प उत्कृष्ट आ० आयुष्य पा० पाला ए० ऐसे इ इस उ० अवसर्पिणी में जा यावत पा०

दो महानईओ प० बहु समतुल्लाओ जाव रत्ताचेव रत्तवईचेव ॥ १८ ॥ जम्बूदीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए सामाए दो सगरोवम कोडाकोडीओ काले होत्था । एवामिसीसे उसप्पिणीए जाव प० एवं आगामिस्साए उसप्पिणीए जाव भविस्सइ । जम्बूदीवेदीवे भरहेरवएसुवासेसु तीयाएउसप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दोगाउयाइ उड्ढ उच्चतेण होत्था, दोन्नियपलिओवमाइ

नदियों अनुक्रमसे नीकलती हैं अर्थात् भरत क्षेत्र में गंगा प्रपात में से गंगा और सिन्धुप्रपात में से सिन्धु ऐसे ही अनुक्रम से सब नदियों का अधिकार जानना ॥ १८ ॥ भरत ऐरवत क्षेत्र में अतीत अनागत और वर्तमान कालकी अवसर्पिणी में सुषम सुषम आरा दो क्रोडाक्रोडी सागरोपम का कहा है उस में दोगाउ का

पाला ए० एसे आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में जा० यावत् पा० पालेंगे ॥ १९ ॥ जं० जंबूद्वीप के भ० भरत ऐरवत क्षेत्र में ए० एक समय में ए० एकयुग में दो० दो अरिहंतवंश उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्न होंगे ए० एसे च० चक्रवर्तिवंश द० दशारवंश दो० दो अरिहंत उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्न होवेंगे ए० ऐसे च० चक्रवर्ति ब० बलदेव वा० वासुदेव जा० यावत उ० उत्पन्न होवेंगे ॥ २० ॥ जं० जंबूद्वीप के दो० दो कुरुक्षेत्र में म० मनुष्य स० सदा सु० सुषमसुषमा उ०

परमाउ पालयित्ता, एवमिमीसे उसप्पिणीए जाव पालयित्ता । एवमागामिस्साए उसप्पि णीए जाव पालइस्सति ॥ १९ ॥ जंबूदीवेदीवे भरहेरएसुवासेसु एगसमए एगजुगे दो अरहतवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पजंति वा उप्पज्जिसति वा । एव चक्कवट्टिवसा, दसारवसा, ॥ जबूभरहेरवए एगसमए दो अरिहता उप्पज्जिंसु वा उप्पजति वा उप्प ज्जिस्सतिवा । एव चक्कवट्टी एव बलदेवा एव वासुदेवा जाव उपज्जिस्सतिवा ॥ २० ॥

ऊंचा और आयुष्य भी दो पल्योपम का होता है ॥ १९ ॥ इस जम्बूद्वीप में भरत और ऐरवत क्षेत्र में एक युग में और एक ही समय में साथ ही अरिहंत, चक्रवर्ति, दसार राजाओं के वंश की उत्पत्ति गत काल में हुइ थी, वर्तमान काल में होरही है, और अनागत काल में होवेगी वैसे ही एक समय में दो अरिहंत, चक्रवर्ति, बलदेव और वासुदेव उत्पन्न होवे हैं हुवे हैं और होवेंगे ॥ २० ॥ जम्बूद्वीप के देवकुरु और

उत्तम इ० ऋद्धिवाले प० अनुभवते वि० विचरते हैं त० वह ज० जैसे दे० देवकुरु उ० उत्तरकुरु में जं० जंबूद्वीप के दो० दोक्षेत्र में म० मनुष्य स० सदा सु० सुषम इ० ऋद्धिवाले प० अनुभवते वि० विचरते हैं ह० हरिवास र० रम्यकवास में है० हेमवय ए० ऐरणवय ज० जंबूद्वीप के दो० दोक्षेत्र में म० मनुष्य स० सदा दु० दुषम सुषमा उ० उत्तम इ० ऋद्धिवाले प० अनुभवते वि० विचरते हैं त० वह ज०

जबू दोसु कुरासु मणुया सया सुसमसुस मुत्तम मिड्डिंपत्ता पच्चणुभवमाणा विहरति तंजहा देवकुराएचेव उत्तरकुराएचेव। जबूदीवे दीवे दोसुवासेसु मणुया सया सुसमुत्त ममिड्डिंपत्ता पच्चणुभवमाणा विहरति तंजहा हरिवासेचेव रम्मगवासेचेव जबू दोसुवासे-सु मणुया सया सुसमदुसमुत्तम मिड्डिंपत्ता पच्चणुभवमाणा विहरति तंजहा हेमवएचेव एरण्णवएचेव जबूदीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुया सया दुसमसुसमुत्तम मिड्डिं पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरति तंजहा पुव्वविदेहेचेव अवरविदेहचेव जंबूदीवे दीवे दो

उत्तर कुरु इन दोनों क्षेत्र में सदैव सुसमासुसम नामक पहिला आरा जैसा भाव है, हरिवर्ष और रम्यक वर्ष क्षेत्र में सदैव सुषम नामक दूसरे आरे के भाव प्रवर्तते हैं हेमवय और एरणवय क्षेत्र में सदैव सुषम दुषम नामक तीसरे आरेके भाव प्रवर्तते हैं पूर्व और पश्चिम विदेह क्षेत्र में सदैव दुषम सुषम नामक चौथा आरा

जैसे पु० पूर्व विदेह प० पश्चिम विदेह ज० जम्बूद्वीप के दो० दोसेश में म० मनुष्य उ० उपरि का० काल को प० अनुभवते वि० विचरते हैं तं० यह ज जैसे भ भरत ए० ऐरवत ॥ २१ ॥ जं० जंबूद्वीप में दो० दो चंद्र प० प्रकाशे प० प्रकाशते हैं प० प्रकाशेंगे दो० दोसूर्य त० तपे त० तपते हैं त० तपेंगे दो० कृत्तिका रो० रोहिणी मि० मृगसर अ० आर्द्रा ए० ऐसे मा० कहना क० कृत्तिका रो० रोहिणी मि० मृगसर अ० आर्द्रा पु० पुनर्वसू पु० पुष्य त० तथा अ० अश्लेषा म० मघा दो० दो फाल्गुणी [१] ह०

सु वासेसु मणुया छव्विहपि काल पच्चणुब्भवमाणा विहराति तंजहा भरहेचेव एरवएचेव ॥ २१ ॥ जंबूदीवे दोचंदा पभासिंसुवा पभासतिवा पभासिस्सतिवा दोसूरिया तवइंसु वा, तवंतिवा, तविस्संति वा। दोकत्तियाओ, दोरोहिणीओ, दोमियसिराओ दो अद्दाओ एव भाणियव्व ॥ कत्तिय रोहिणि मियसिर। अद्दाय पुणव्वसूय पुस्सोय॥तत्तोवि अस्सलेसा। महाय दोफग्गुणीओय ॥१॥हत्थो चित्ता साईय। विसाहा होंति अणुराहा॥ जेट्ठा मुलो

का भाव प्रवर्तता है और भरत व ऐरवत क्षेत्र में छ आरेके भिन्न २ भाव प्रवर्तते हैं ॥ २१ ॥ जम्बूद्वीप में दो चंद्र प्रकाशते हैं, प्रकाशे और प्रकाशेंगे, वैसे ही दो सूर्य तपे, तपते हैं और तपेंगे जम्बूद्वीप में दो कृत्तिका नक्षत्र, दो रोहिणी, दो मृगशर, दो आर्द्रा ऐसे ही पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित श्रवण, धने

इन्द्र नि० निश्रा सा० स्वाति वि० विशाखा अ० अनुराधा ज० ज्येष्ठा मू० मूल पु० पूर्वाषाढा उ० उत्तराषाढा ( ) अ० अभीजित स० श्रवण घ० धनेष्ठा स० शतभिष दो० दो हैं भ० भाद्रपद रे० रेवती अ० अश्विनी भ० भरणी ण० जानना अ० अनुक्रम से (१) ए० ऐसे गा० गाथानुसार से णा० जानना जाव० यावत् भ० भरणी दो० अग्नि दो० प्रजापति सो० सोम रु० रुद्र अ० आदिति व० बृहस्पति स० सर्प पि० पितर भा० भग अ० अर्यमा स० सविता त० त्वष्टा वा० वायु इ० इन्द्राग्नि मि० मित्र इं० इन्द्र नि० निर्ऋति आ० आप वि० विश्व ब० ब्रह्मा वि० विष्णु व० वसु व० वरुण अ० अज वि० विवृद्धि पु०

पुव्वाय। आसाढा उत्तरासेव ॥२॥ अभिइ सवण धणिट्ठा। सयाभिसया दोय होंति भद्दवया॥ रेवइ अस्सिणि भरणी। णेयव्वा अणुपुव्वीए ॥३॥ एवं गाहानुसारेण णायव्वं जाव दो भरणीओ दो अग्गी दोपयावई दोसोमा दोरुद्दा दोअदिई दोबहस्सई दोसप्पी दोपिई दोभगा दोअज्जमा दोसविया दोतट्ठा दोवाऊ दो इंदग्गी दोमित्ता दोइंदा दोनिरई, दोआऊ, दोविस्सा, दोबम्हा, दोविण्हू, दोवसू, दोवरुणा, दोआया, दोविविद्धी,

ष्ठा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, और भरणी, यों सब के दो दो भेद जानना अब ताराओं के स्वामी के नाम कहते हैं अग्नि, प्रजापति, सोम, रुद्र, अदिती, बृहस्पति, सर्प, पितर, भग, अर्यमा, सविता, त्वष्टा, वायु, इंद्राग्नि, मित्र, इंद्र, निर्ऋति, आप, विश्व, ब्रह्मा, विष्णु, वसु,

पुष्य भ० अग्नि य० यम इं० अंगारक वि० व्याल लो० लोहिताक्ष स० शनैश्चर आ० आधुनिक पा० प्राधुनिक क० कण क० कनक क० कनकनक क० कनकवितान क० कनकसंतानक सो० सोम स० सहित भ० अश्वासन क० कज्जोपग क० कर्बट भ० अयस्कर दु० दुंदुभक सं० शंख सं० शंखवर्ण सं० शंखवर्णाभ कं० कंस कं० कंसवर्ण कं० कंसवर्णाभ रू० रूपी रू० रूपाभास नी० नील नी० नीलाभास भा० भस्म भ० भस्मराशी ति० तिल ति० तिलपुष्पवर्ण द० दक द० दक पंचवर्ण का० काक का० काकवध्या

दो दोपुरसा दोअरसा, दोयमा, दोइंगालगा, दोवियालगा दोलोहियक्खा दोसणिंचरा दो आहुणिया दोपाहुणिया दोकणा दोकणगा दोकणकणगा दो कणगवियाणगा दोकणग सताणगा, दोसोमा दोसहिया, दोआसासणा दोकज्जोवगा, दोकब्बडगा, दोअयकरगा, दोदुंदुभगा, दोसखा दोसखवन्ना, दोसखवन्नाभा, दोकंसा दोकंसवन्ना दोकंसवन्नाभा दोरुप्पी, दोरुप्पाभासा दोनीला दोनीलाभासा, दोभासा दोभासरासी, दोतिला, दोतिलपुष्फवन्ना दोदगा, दोदगपंचवण्णा, दोकाका दोकायवंज्झा, दोइंदग्गी दोधूमकेऊ दोहरी

वरुण, अज, विवृद्धि, पूषण, अग्नि यम इन सब के दो दो भेद आगे ८८ ग्रह के नाम कहते हैं अंगारक, व्याल, लोहिताक्ष, शनैश्चर, आधुनिक, प्राधुनिक, कण, कनक, कनकनक, कनक वितान, कनकसंतानक, सोम, सहित, अश्वासन, कज्जोपग, कर्बट, अयस्कर, दुंदुभक, शंख, शंखवर्ण,

इं० इन्गालि धू० धूमकेतु ह० हरि पिं० पिंगल बु० बुध सु० शुक्र व० बृहस्पति रा० राहु अ० अगस्ति मा० मानवक का० काश फा० स्पर्श धु० धुर प० प्रमुख वि० विकट वि० विसंधि नि० नियल्ल प० पयिल्ल ज० जटिल्लक अ० अरुण अ० अग्गिल का० काल म० महाकाल सो० स्वस्तिक सो० सौवस्तिक व० वर्द्धमान पु० पुष्पमानक अं० अंकुश प० पलम्ब नि० नित्यलोक नि० निस्योदयित स० स्वयंप्रभ ओ० उसभ से० श्रेयंकर खे० क्षेमंकर आ० आभंकर प० प्रभंकर अ० अपराजित अ० अरज अ० अशोक वि०

दो पिंगला दो बुहा दो सुक्का दो वहस्सई दो राहू दो अगत्थी दो माणवगा दो कासा दो फासा दो धुरा दो पमुहा दो वियडा दो विसंधी दो नियल्ला दो पइल्ला दो जडियाइल-गा, दो अरुणा, दो अग्गिला, दो काला दो महाकालगा दो सोत्थिया दो सोवत्थिया, दो वद्ध-माणगा, दो पुसमाणगा, दो अंकुसा दो पलवा, दो निच्चालोगा दो निच्चुज्जोया, दो सयपभा दो ओभासा, दो सेयकरा, दो खेमकरा दो आभकरा दो पभकरा, दो अपराजिया, दो अरया

अंगारक, विकालक, लोहिताक्ष, शनैश्चर, आधुनिक, प्राधुनिक, कण, कणक, कणकणक, कणवितानक, कणसंतानक, सोम, सहित, आश्वासन, कार्योपग, कर्बुरक, अजकरक, दुंदुभक, शंख, शंखनाभ, शंखवर्णाभ, कंस, कंसनाभ, कंसवर्णाभ, रूपी, रूप्याभास, नील, नीलाभास, भस्म, भस्मराशि, तिल तिल पुष्पवर्ण, दक, दकपंचवर्ण, काक, काकन्ध, इन्द्राग्नि, धूमकेतु, हरि, पिंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति, राहु, अगस्ति, माणवक, काश, स्पर्श, धुर, प्रमुख, विकट, विसंधि, नियल्ल, पइल्ल, जटिलक, अरुण, अ-ग्गिल, काल, महाकाल, स्वस्तिक, सौवस्तिक, वर्धमान (पुष्पमानक और अंकुश) प्रलंब, नित्यलोक, नित्योदयित,

विगतशोक वि० विमल वि० विमुख वि० वितत वि० विमस्त वि० विशाल सा० शाल मु० मुक्त भ० भनिवर्तक ए० एकजटी दु० द्विजटी क० करकरीक रा० रामगल पु० पुष्पकेतु भा० भावकेतु ॥ २२ ॥ जं० जंबूद्वीप की वे० वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊंची उ० ऊंचपने ल० लवण समुद्र दो० दोसस योजन च० चक्रवाल वि० पहोल सा० लवण समुद्र की वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊंची उ० ऊंचपने ॥ २३ ॥

दोअसोगा दोविगयसोगा दोविमला दोविमुहा दोवितत्ता दोवितत्था दोविसाला दोसाला दोसुव्वया दोअणियट्टीदोएगजडी दोदुजडी दोकरकरिगा दोरायलग्गा दोपुप्फकेऊदोभावकेऊ ॥२२॥जम्बूदीवस्सणं दीवस्स वेइया दोगाउआइ उड्ढं उच्चत्तेण प० लवणेणं समुद्दे दो जो यणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण प० लवणस्सणंसमुद्दस्स वेइया दोगाउआइ उड्ढं उच्चत्तेण प० ॥२३॥ धायईसंडे णं दीवे पुरत्थिमद्धेण मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदा

स्वयंप्रभ, तमस, श्रेयस्कर,सेमंकर, आभंकर, प्रभंकर, अपराजित, भरज, अशोक, विगत शोक, विमल, विमख वितत, विभस्त, विशाल, शाल, मुक्तक, भनीवर्त, एकजटी, द्वीजटी, करकरिक, राजगल, पुष्पकेतु, और भाव केतु इन अठासी गृहों के दो २ भेद जानना ॥ २२ ॥ जम्बूद्वीप की जुगति (कोट) आठ योजन का ऊंचा है उस पर दो कोस की वेदिका है जम्बूद्वीप की चारों तरफ लवण समुद्र नामक समुद्र दो लाख योजन का चौड़ा है और उस के कोटकी वेदिका भी दो कोस की ऊंची है ॥ २३ ॥ धातकीखंड द्वीप

धा० धात की खंडके पु० पूर्वअर्धभाग में म० मरुपर्वत की उ० उत्तर दक्षिण में दो० दो क्षेत्र ब० बहु तुल्य जा० यावत् भ० भरत ऐ० ऐरवत ए० ऐसे ज० जैसे जं० जम्बूद्वीप में त० तैसे ए० यहां भा० कहना जा० यावत् दो० दो क्षेत्र में म० मनुष्य छ० छ का० काल को प० अनुभवते वि० विचरते हैं त० वह ज० जैसे भ० भरत में ऐ० ऐरवत में ण० विशेष कू० कूटशामली वृक्ष धा० धातकीवृक्ष दे० देव ग० गरुडदेव वे० वेणुदेव सु० सुदर्शनदेव धा० धातकी खंडमें प० पश्चिम अर्धभागमें म० मेरुपर्वतकी उ० उत्तर दक्षिणमें दो दो क्षेत्र

हिणेण दो वासा प० बहुसमतुल्ला जाव भरहेचेव, ऐरवएचेव एवं जहा जम्बुद्दीवे त

हा एत्थ भाणियव्वं जाव दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहर

ति तंजहा भरहेचेव ऐरवएचेव णवरं कूडसामलीचेव धायईरुक्खेचेवदेवा गरुलेचेव वेणुदे

वे सुदंसणेच्चेव धायईसंड दीवपच्छिमद्धे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा

की पूर्व दिशा में मेरु पर्वत से उत्तर और दक्षिण दिशा में परस्पर सरिखे भरत और ऐरवत नामक दो क्षेत्र हैं जैसा जम्बूद्वीप का अधिकार कहा वैसा ही यहां सब अधिकार कहना इन दोनों क्षेत्रों में छ आरा का भाव वर्तता है इतना विशेष है कि यहां पर देवकुरु क्षेत्र में कूटसामलि वृक्ष है जिस पर गरुड नामक देवता का निवास स्थान है और उत्तर कुरु में धातकी वृक्ष है जिस पर वेणुदेव अपर नाम सुदर्शन देव का निवास स्थान है धातकी खंड की पश्चिम में मेरु पर्वत से उत्तर और दक्षिण दिशा में

ब सु तुल्य जा० यावत भ० भरत ए ऐरवत जा० ...
वि० विपरतें ण० विशेष कू० कूट शामली वृक्ष म० महा धातकी वृक्ष दे० देव ग० गरुड वे० वेणुदेव पि० प्रियदर्शन धा०
धात की खण्ड के प० पश्चिम अर्धभाग में मं० मेरुपर्वत के धा० धातकी खंडद्वीप में दो० दो भ० भरत ए०
ऐरवत हि० हिमवन्त ऐ० ऐरण्यवय ह० हरिवास र० रम्यकवास पु० पूर्वविदेह अ० पश्चिम विदेह दे०
देवकुरु के दे० देवकुरु महावृक्ष दे० देवकुरु महावृक्ष के देव उ० उत्तर कुरु के उ० उत्तर कुरुवृक्ष के म०

प० बहुसमतुल्ला जाव भरहेचेव एरवएचेव । जाव छव्विहपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरति। णवर कूडसामलीचेव महाधायईरुक्खेचेव देवा गरुलचेव वेणुदेवे पियदसणेचेव धायईखडपच्छिमद्धे मदरस्स पव्वयस्स धायईखडेण दीवे दोभरहाइ दोएरवयाइ दोहि मवताई दोएरण्णवयाइ दोहरिवासाइ दोरम्मगवासाइ दो पुव्वविदेहाइ दोअवरविदेहाइ

परस्पर सरिसे भरत और ऐरवत नामक दो क्षेत्र हैं वहां पर छ आरों के भाव वर्तते हैं मात्र इतना विशेष है कि इस के देवकुरुक्षेत्र में कूट सामली वृक्ष जिस पर गरुड नामक देव रहते हैं और उत्तर कुरु में महा धातकी वृक्ष है वहां पर वेणुदेव अपर नाम प्रीति दर्शन देव हैं धातकी खंड द्विप में दो भरत दो ऐरवत, दो हेमवय, दो ऐरण्यवय, दो हरिवर्ष, दो रम्यक् वर्ष, दो पूर्व महा विदेह, दो पश्चिम महा विदेह, दो देव कुरु, और दो उत्तर कुरु है, दो देव कुरु नाम वृक्षों रत्नमय व शाश्वते हैं और उस में

पद्मवृक्ष उ० उत्तरकुरु महा वृक्ष के दे० देवता चु० चुल्लहेमवन्त म० महाहेमवन्त नि० निषध नी० नीलवन्त रू० रूपी सि० सिखरी स० सब्दापाति स० सब्दापाति देव वि० विकटापाति वि० विकटापाति के प० पभास देव गं० गंधापाति गं० गंधापाति के अ अरुण देव मा० माल्यवंत पर्याय मा० माल्यवंत के प पद्मदेव मा० माल्यवंत चि० चित्रकूट प० पद्मकूट न० नलिन कूट ए० एकशैल ति० त्रिकूट वे० वैसमण कूट अं० अंजना

दोदेवकुराओ दोदेवकुरुमहदुमा दोदेवकुरुमहदुमावासा देवा दोउत्तरकुराओ दोउत्तरकुरु महदुमाओ दोउत्तरकुरुमहदुमावासा देवा, दोचुल्लहिमवंता दोमहाहिमवंता दोनिसढा, दोनीलवंता दोरुप्पी दोसिहरी दोसद्दावई दोसद्दावईवासीसाइ देवा दोवियडावई दोवियडावई वासी पभासीदेवा दोगंधावई दोगंधावईवासी अरुणादेवा दोमालवंतपरियागा दोमाल वंत परियागावासी पउमादेवा दोमालवंता दोचित्तकूडा दो पउमकूडा दोनलिनकूडा

देवता रहते हैं और भी यहां दो उत्तर कुरु हैं दो उत्तर कुरु नामक वृक्ष हैं और यहां रहनेवाले दो देवों हैं दो चुल्लहिमवन्त, दो महाहिमवन्त, दो निषध, दो नीलवंत, दो रूपी, दो शिखरी, दो शब्दापाति नामक वैताढ्य और उस के वासी दो स्वाति नामक देवता, दो विकटापाति वैताढ्य और उस के वासी दो पद्म नामक देव, दो माल्यवन्त और दो गजदंत, दो चित्रकूट, दो पद्मकूट, दो नलिनकूट, दो एकशैल, दो त्रिकूट दो वैश्रमणकूट, दो अंजनकूट, और दो मातंजन पर्वत हैं दो सोमनस, दो विद्युत्प्रभ, दो अंकावती नगरी

मा० मातमन सो० सोमनस वि०विद्युत्प्रभ अ० अंकावती प० पद्मावती आ० आसीविषा सु० सुखावह च० चंद्र पर्वत सू० सूर्य पर्वत णा० नाग के पर्वत दे० देवताके पर्वत गं० गंधमादन इ० इषुकार चू० चूल्लहेमवन्त कूट वे० वैश्रमण कूट म० महाहेमवन्त कूट वे० वेरूलीय कूट नि०निषध कूट रु० रुक्मि कूट नी० नीलवंत कूट उ० उपदर्शन कुट रु० रुपी कूट म० मणिकंचन कूट सि० शिखरी कूट ति० तिगिच्छ

दो एगसेला दोतिकुडा दोवेसमणकूडा दोअंजणा दोमात्तंजणा दोसोमणसा दोविज्जुप्पभा
दो अकावई दोपम्हावई दोआसीविसा दोसुहावहा दोचंदपव्वया दोसूरपव्वया दोणागप
व्वया दोदेवपव्वया दोगंधमायणा दोउसुगारपव्वया दोचुल्लहिमवंतकूडा दोवेसमणकूडा
दोमहाहिमवंतकूडा दोवेरुलियकूडा दोनिसहकूडा दोरुयगकूडा दोनीलवंतकूडा,
दोउवदंसणकूडा, दोरुप्पिकूडा, दोमणिकंचणकूडा, दोसिहरिकूडा, दोतिगिच्छिकूडा,

दो पद्मावती नगरी, दो आशीविषा, दो सुखावहा, दो चंद्र पर्वत, दो सूर्य पर्वत, दो नाग पर्वत, दो देव पर्वत, दो गंधमादन, गजदंता ये सब उत्तरकुरु के पश्चिम भाग में धातकी खंड की पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध रहे हुवे हैं. इसलिये दो दो कहलाये गये हैं धातकी खंड के उत्तर और दक्षिण ऐसे दो भाग करने वाले दो इषुकार नामक पर्वत हैं, दो चुल्लहेमवन्त पर्वत के कूट, दो वैश्रमण पर्वत के कूट, दो महाहिमवंत पर्वत के कूट, दो वैडूर्यकूट, दो निषध पर्वत के कूट, दो रुचक के कूट, दो नीलवन्त के कूट, दो उपदर्शन

प० पद्मद्रह प० पद्मद्रह में वा० रहने वाली देवी सि० श्री म० महापद्मद्रह म० महापद्मद्रहमें वा० रहने वाली देवी हि ही ए०ऐसे जा० यावत् पु० पुंडरीकद्रह पुं० पुंडरीकद्रह की देवी ल० लक्ष्मी ग०गंगाप्रपातद्रह जा० यावत् र रक्तवती प्रपातद्रह रो रोहिता जा० यावत् रु रूपकूला गा०गाहावती द० द्रहवती पं०पंकावती त० तप्तजला उ० उन्मत्तजला खी०खीरोदा सी०सीहश्रोता अ० अन्तर्वाहिनी ऊ०ऊर्मिमालिनी फे० फेनमालि

दोपउमद्दहा, दोपउमद्दहवासिणीओ सिरिओ देवीओ, दोमहापउमद्दहा, दोमहापउमद्दहवासिणीओ हिरीओ एवं जाव दोपुंडरीयद्दहा, दोपुंडरीयद्दहवासिणीओ लच्छीओ देवीओ, दोगंगप्पवायद्दहा, जाव दोरत्तवईप्पवायद्दहा, दोरोहियाओ, जाव दो रुप्पकूला दोगाहावईओ दोदहवईओ, दोपंकवईओ, दोतत्तजलाओ दोमत्तजलाओ, दोउम्मत्तजलाओ, दोखीरोयाओ दोसीहसोयाओ, दोअंतोवाहिणीओ,

कूट, दो रुप्यकूट, दो मणि कंचन कूट, दो शिखरी कूट दो तिगिच्छ कूट, दो पद्मद्रह, दो पद्मद्रह की श्री देवियों, दो महा पद्मद्रह, दो महा पद्मद्रह में रहनेवाली ही देवियों, ऐसे ही पुंडरीकद्रह, पुंडरीकद्रह में रहने वाली लक्ष्मी देवता तक कहना दो गंगा प्रपात द्रह यावत् दो रक्तवतीद्रह, दो रोहिता नदी यावत् दो रूप्यकूला नदी, दो गाहवती नदी, दो द्रहवती नदी, दो पंकवती, दो तप्तजला, दो उन्मत्तजला, दो क्षारोदा, दो सिंहश्रोता, दो अन्तर्वाहिनी, दो उर्मिमालिनी, दो फेनमालिनी, और दो गंभीरमालिनी नदी दो

सिनी गं० गंभीर मालिनी क० कच्छ सु० सुकच्छ म महाकच्छ क० कच्छगावती आ० आवर्त मं० मंगला वर्त पु० पुष्कल पु० पुष्कलावती व० वच्छ सु० सुवच्छ म महावच्छ व०वच्छगावती र० रम्य र रम्यक र०रमणिक मं० मंगलावती प० पद्म सु० सुपद्म म० महापद्म प पद्मावती स० संखावती न० नलिना कु० कुमुदा न० नलिनावती व० वप्रा सु०सुवप्रा व० महावप्रा व०वप्रगावती व वग्गु सु० सुवग्गु गं० गंधिला गं०गंधिलावती खे०खेमा खे०खेमपुरा रि०रिट्ठ रि०रिट्ठपुरा ख०खड्गी मं० मंजूसा ओ०ओषधि पुं०पुंडरीकिनी दोउम्मिमालिणीओ, दोफेणमालिणीओ दोगंभीरमालिणीओ, दोकच्छा, दोसुकच्छा, दो महाकच्छा, दोकच्छगावई,दोआवत्ता दोमंगलावत्ता दोपुक्खला दोपुक्खलावई दोवच्छा दोसुवच्छा, दोमहावच्छा दोवच्छगावई दोरम्मा, दोरम्मगा, दोरमणिज्जा, दोमंगलावई, दोपम्हा, दोसुपम्हा,दोमहापम्हा, दोपम्हगावई, दोसखा, दोनलिणा, दोकुमुदा,दोनलिणावई, दोवप्पा दोसुवप्पा दोमहावप्पा दोवप्पगावई दोवग्गु दोसुवग्गु दोगंधिला दोगंधिलावई कच्छ विजय, ऐसे ही सुकच्छ विजय, और महा कच्छ विजय कच्छगावति, आवर्ता, मंगलावर्ता, पुष्कला, पुष्कलावती, वच्छ, सुवच्छ, महावच्छ, वच्छगावती, रम्या, रम्मगा, रमणिज्जा, मंगलावती, पद्मा, सुपद्मा, पम्हगावती, शंखा, नलीना, कुमुदा, नलिनावती, वप्रा, सुवप्रा, महावप्रा, वप्रगावती, वग्गु, सुवग्गु, गंधिला और गंधिलावती के दो दो भेद जानना अब राजधानी के दो दो भेद बताते हैं खेमा, खेमपुरा, रिष्ट

सु० सुसीमा कुं० कुण्डला अ० अपराजिता प० प्रभंकरा अं० अंकावती प० पद्मावती सु० सुभा र० रत्नसंचया मा० मासपुरा सी० सिंहपुरी म० महापुरी वि० विजयपुरी अ० अपराजिता अ० अपराया अ० असोका वि० विगत शोका वि० विजया वि० विजयन्ता ज० जयन्ता अ० अपराजिता च० चक्रपुरा ख० खड्गपुरा अ० अवंध्या अ० अयोध्या भ० भद्रशालवन नं० नंदनवन सो० सोमनसवन पं० पंडकवन पं० पांडुकंबलशिला र० रक्त

दोखेमाओ दोखेमपुराओ दोरिट्ठाओ दोरिट्ठपुराओ दोखग्गीओ दोमंजूसाओ दोओसहीओ दोपुंडरीगिणीओ दोसुसीमाओ दोकुंडलाओ दोअपराइयाओ दोपभंकराओ दोअंकावईओ दोपम्हावईओ दोसुभाओ दोरयणसंचयाओ दोआसपुराओ दोसीहपुराओ दोमहापुराओ दोविजयपुराओ दो अवराजियाओ दोअवराओ दोअसोयाओ दोविगयसोगाओ दोविजयाओ दोवेजयंतीओ दोजयंतीओ दोअपराजियाओ दोचक्कपुराओ दोखग्गपुराओ दोअवज्झाओ दोअओज्झाओ । दोभद्दसालवणा दोणंदणवणा दोसोमणसवणा दोपंडगवणा

रिष्टपुर, खड्गी, मंजूषा, औषधि, पुंडरीकिणि, सुसिमा, कुंडला, अपराजिता, प्रभंकरा, अंकावती, पद्मावती, शुभा, रत्नसंचया, मासपुरा, सिंहपुरी, महापुरी, विजयपुरी, अपराजिता, अपराया, अशोका, विगत शोका, विजया, वैजयंती, जयंती, अपराजिता, चक्रपुरा, खड्गपुरा, अवंध्या, और अयोध्या यों सब के दो दो होना धातकी खंड में दो मेरु पर्वत हैं इसलिये दो भद्रशालवन

बलसिला अ०अतिपांडु कंबलसिला र०रक्तकंबलशिला अ०अतिरक्त कंबलशिला मं०मेरुमे मेरुकी चूलिका धा० धातकी खंडकी वे० वेदिका दो० दोगाउ उ०ऊंची उ०ऊंचपने का० कालोदधि समुद्र की वे० वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊंची उ० ऊंचपने पु० पुष्करार्ध के पु० पूर्वके अर्धभाग में मं० मेरुकी उ० उत्तर दक्षिण में दो० दोखेत्र ब० बहु तुल्य जा० यावत् भ० भरत ए० ऐरवत जा०यावत् दो०दोकुरु प० कहे दे० देवकुरु

दोपांडुकंबलसिलाओदोअतिपांडु कंबलशिलाओदोरत्तकंबलसिलाओदोअइरत्तकंबलसिला

ओ,दोमदरा दोमंदरस्स चूलियाओ।धायइखंडस्सण दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेण

प०कालोयस्स णं समुद्दस्सवेइया दोगाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेण

मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेण दोवासा प० बहु समतुल्ला जाव भरहेचेव एरवएचेव जा

य दो कुराओ पण्णत्ताओ देवकुरुचेव उत्तरकुराचेव । तत्थण दोमहतिमहालया

परकंबल, दो पांडुकंबल शीला,दो अति पांडुकंबलशिला दो रक्तकंबलशिला और दो अतिरक्तकम्बलशिलाएं हैं दो मेरुपर्वत हैं मेरु पर्वत की दो चूलिका हैं धातकी खंडकी वेदिका दो कोशकी ऊंची है वैसे ही कालोदधि समुद्र की वेदिका दो कोश की ऊंची है पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व के आधे विभाग में मेरु पर्वत की उत्तर और दक्षिण दिशा में परस्पर समतुल्य भरत और ऐरवत नामक क्षेत्र हैं वैसे सब अधिकार धातकी खंड जैसे दो देव कुरु और उत्तरकुरु तक कहना यहां पर दो बडे वृक्ष हैं कूट सामली वृक्ष तथा पद्म वृक्ष दोनों

उ० उत्पन्न न तहां दो० दो म बडे म० मनोहर म० महावृक्ष कू० कूटसामली प० पद्म वृक्ष दे० देव ग गरुड व वेणुदेव प० पद्म जा० यावत् छ० छ का० काल को प अनुभवते वि० विचरते हैं पु० पुष्करार्ध की प० पश्चिमार्ध में म मेरुकी उ उत्तर दक्षिण में दो० दोक्षेत्र कू० कूटसामली म० महाद्रव पद्म ग० गरुड वे० वेणुदेव पु० पुंडरीक पु० पुष्करार्ध में दो० दोभरत ए० ऐरावत जा० यावत् म मध्य में मध्यकी चूलिका प पुष्करार्ध की वे वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊंची उ० ऊंचपने स०

महद्दुमा प० त० कूडसामलीचेव पउमरुक्खेचेव देवा गुरुलेचेव वेणुदेवे पउमचेव जाव छव्विहपिकालं पच्चणुभवमाणा विहरंति। पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धेण मंदरस्स पव्वय स्स उत्तरदाहिणणं दोवासा प० तं० तहेव णाणत्त कूडसामलीचेव महापउमरुक्खेचेव देवा गरुलेचेव वेणुदेव पुंडरीएचेव पुक्खरवरदीवड्ढेण दो भरहाइ दोएरवयाइ जाव दोमंदरा दोमंदरचूलियाओ पुक्खरवरस्सणं दीवस्स वेइया दोगाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेण

वृक्ष पर गरुड देवता और वेणु देव अपर नाम पद्म देव रहते हैं यावत् छ आरे के सुख दुःख भोगते हैं पुष्करार्ध द्वीप के पश्चिम के आधे भाग में मेरु पर्वत की उत्तर दक्षिण में दो क्षेत्र, कूटसामली वृक्ष, महा पद्म वृक्ष, गरुड देव और वेणुदेव. अपरनाम पुंडरीक देव पुष्करार्ध द्वीप में दो भरत दो ऐरवत यावत् दो मेरु पर्वत दो मेरु पर्वत की चूलिका तक का सब अधिकार धातकी खण्ड जैसे कहना पुष्करवर

मर्व द्वी० द्वीप समुद्र की वे० वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊंची उ ऊंचपन प० कहा ॥ २४ ॥ प० प० अ० असुरकुमार के इन्द्र च चमरेन्द्र ब० बलेन्द्र दो० दोनागकुमार के इन्द्र ध० धरणेन्द्र भू भूतानेन्द्र दो० सुवर्ण कुमारके दो इन्द्र वे० वेणु देव वे०वेणुदाल वि०विद्युतकुमार के इन्द्र ह० हरिकान्त इन्द्र ह०हरि सिंहेन्द्र अ० अग्निकुमार के इन्द्र अ०अग्निशिखा अ० अग्निमानव दी० द्वीपकुमार के इन्द्र पु० पूर्णेन्द्र व० वसिष्ठेन्द्र उ० उदधिकुमार के इन्द्र ज० जलकान्त ज० जलप्रभ दि० दिशाकुमार के इन्द्र अ० अमितगती

प० सव्वेसिं पिणं दीवसमुद्दाणं वेइयाओ दोगाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ताओ ॥२४॥ प० असुरकुमारिंदा प० त० चमरेचेव बलीचेव । दोनागकुमारिंदा प० तं० धरणेचेव भूयाणंदेचेव दोसुवण्णकुमारिंदा प० त० वेणुदेवेचेव वेणुदालीचेव दोविज्जुकुमारिंदा प० त० हरीचेव हरिस्सहेचेव । दोअग्गिकुमारिंदा प० त० अग्गिसिहेचेव अग्गिमाणवेचेव । दादीवकुमारिंदा प० त० पुण्णेचेव वसिट्ठेचेव । दो उदधिकुमारिंदा प० त०

द्वीप की वेदिका दो गाऊकी ऊंची हैं ऐसे ही सब द्वीप समुद्रकी वेदिका का अधिकार जानना ॥ २४ ॥ असुर कुमार के दो इन्द्र, चमरेन्द्र और बलेन्द्र, नाग कुमार के दो इन्द्र धरणेन्द्र भूतानेन्द्र, सुवर्ण कुमार के दो इन्द्र वेणुदेव वेणुदाल, विद्युतकुमार के दो इन्द्र हरिकान्त हरिसिंह, अग्नि कुमार के दो इन्द्र अग्नि शिखा अग्नि मानव, द्वीप कुमार के दो इन्द्र पूर्ण और वसिष्ठ, उदधिकुमार के दो इन्द्र जलकान्त, जलप्रभ, दिशि

भ० भमितवाहन वा० वायुकुमार के इन्द्र वे० वलवेन्द्र प० प्रभंजनेन्द्र य० स्थनित कुमार के इन्द्र घो० घोष म० महाघोष पि० पिशाच के इन्द्र का० काल म० महाकाल भू० भूतके इन्द्र सु० सुरूप प० प्रतिरूप ज० यक्ष के इन्द्र पु० पूर्ण भद्र म० मणिभद्र र० राक्षस केइन्द्र भी० भीम म० महाभीम कि० किन्नरके इन्द्र कि० किन्नर किं किंपुरुष किं० किंपुरुष के इन्द्र स० सत्पुरुष म महापुरुष म० महोरग के इन्द्र अ० अ० अतिकाय म० महाकाय ग० गांधर्व के इन्द्र गी गीतरत्त गी० गीतयश अ० आनपन्निके दो इन्द्र

जलकन्तेचेव जलप्पभेचेव । दोदिसाकुमारिंदा प० त० अमियगइचेव अमिय वाहणेचेव । दोवाउकुमारिंदा प० त० वेलंबेचेव पभंजणेचेव दोथणियकुमारिंदा प० त० घोसेचेव महाघोसचेव । दोपिसायइंदा प० त० कालेचेव महाकालेचेव । दोभूयइंदा प०त० सुरूवेचेव पडिरूवेचेव । दो जक्खिंदा प० त० पुण्णभद्देचेव माणि भद्देचेव । दो रक्खसिंदा प०त०भीमेचेव महाभीमेचेव । दोकिन्नरिंदा प० त० किन्नरे

कुमार के दो इन्द्र अमितगती अमितवाहन, वायु कुमारके दो इन्द्र वेलंब प्रभंजन, स्थनित कुमारके दो इन्द्र घोष और महाघोष ये दशनिकाय के मिलकर २० भुवनपति के इन्द्र जानना पिशाचके दोइन्द्र काल और महाकाल, भूतके दोइन्द्र सुरूप प्रतिरूप यक्ष के दो इन्द्र पूर्ण भद्र मणिभद्र, राक्षस के दो इन्द्र भीम और महा भीम किन्नर के दो इन्द्र किन्नर और किंपुरुष, किंपुरुष के दो इन्द्र सुपुरुष महापुरुष, महोरग के दो इन्द्र

म० सभिक स० समानेन्द्र प० पाणपभिके इन्द्र धा० धात वि० विधात इ० इसिवाइ के इन्द्र इ० इसि इ० इसिपाल भू० भूतवाइ के इन्द्र ई० ईश्वर म० महेश्वर क० कंदियके दो इन्द्र सु० सुवच्छेन्द्र वि० विशालेन्द्र म० महाकंदय के इन्द्र हा० हासेन्द्र हा० हासरति कु० कुमडके इन्द्र से० श्वेत म० महाश्वेत प० पयंगदेव के इन्द्र प० पतंग प० पतगपति जो० ज्योती दे० देवताके दो० दोइन्द्र च० चन्द्र सू० सूर्य सो० सौधर्म

दोमहोरगिंदा पं० तं० अइकायेचेव महाकायेचेव । दोगंधव्विंदा पं० तं० गीयरईचेव गीयजसेचेव । दोअणपन्निंदा पं० तं० सन्निहिएचेव समाणेचेव । दोपणपन्निंदा पं० तं० धाएचेव विधाएचेव । दोइसिवाइंदा पं० तं० इसिचेव इसिपालेचेव । दोभूयवाइंदा पं० तं० ईसरेचेव महेसरेचेव दोकंदिंदा पं० तं० सुवच्छ (वत्थ) चेव विसालेचेव दोमहाक

सेव किंपुरिसेचेव दोकिंपुरिसिंदा पं० तं० सप्पुरिसेचेव महापुरिसेचेव ।

आतिकाय महाकाय, गंधर्व के दो इन्द्र गीतरति गीतयश, आणपन्नी के दो इन्द्र सन्निहित समान, पाणपन्नी के दो इन्द्र धाती विधाती इसीवाय के दो इन्द्र इसी, इसिपाल, भूतवाइ के दो इन्द्र ईश्वर, महेश्वर कंदीय के दो इन्द्र सुवच्छ विशाल, महा कंदीयके दो इन्द्र हास हासरती, कुमड के दो इन्द्र श्वेत महाश्वेत पतंग के दो इन्द्र पतंग

ई ईशान क० कल्प में दो दोइन्द्र स० शक्रेन्द्र ई० ईशानेन्द्र ए० ऐसे स सनत् कुमार मं० माहेन्द्र क० कल्प म दो दोइन्द्र म० सनत कुमार म० माहेन्द्र बं० ब्रह्मलोक ल० लन्तक के दो इन्द्र बं० ब्रह्मेन्द्र ल० लन्तकेन्द्र म० महाशुक्र स० सहस्सार क० कल्प में दो० दोइन्द्र म० महाशुक्र स० सहस्सार आ० आनत पा० पाणत आ० आरण अ० अच्युत क० कल्प में दो० दोइन्द्र पा पाणत अ० अच्युत ॥ २८ ॥

दिसा प० त० हासेचेव हासरईचेव दाकुंमाहिंदा प० त० सेएचेव महासेएचेव पोयय गिंदा प० त० पयएचेव पयगवईचेव ॥ जोइसियाण देवाण दोइंदा प० त० चंदचेव सूरेचेव ॥ सोहम्मीसाणेसुण कप्पेसु दोइंदा प० त० सुक्केचव इसाणेचव एव सणकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु दोइंदा प० त० सणकुमारेचेव माहिंदेचेव बंभलोयलंतगे दोइंदा प० तं० बंभेचेव लंतएचेव महासुक्क सहस्सारेसुण कप्पेसु दोइंदा प० त० महा सुक्केचेव सहस्सारेचेव आणयपाणयारणच्चुतेसुणं कप्पेसु दोइंदा प० त० पाणएचेव अच्चुएचेव ।२५।

लोकमें दो इन्द्र शक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र ऐसे ही सनत्कुमार और माहेन्द्रमें दो इन्द्र सनत्कुमारेन्द्र और माहेन्द्र, ब्रह्मदेव लोक और लंतक में दो इन्द्र ब्रह्मेन्द्र और लांतकेंद्र महाशुक्र और सहस्सार नामक देवलोक में दोइंद्र महा शुक्रेंद्र और सहस्सारेंद्र आनत, प्राणत आरण और अच्युत देवलोकमें दोइंद्र प्राणतेंद्र और अच्युतेंद्र यह सब मि लकर इन्द्र के ६४ नाम हुवे ॥ २८ ॥ महाशुक्र और सहस्सार नामक देवलोक के विमान पीले और

म० महाशुक्र स० सहस्रार क० कल्प में वि० विमान सु० सौवर्ण के प० प्ररूपा हा० पीला सु० श्वेतवर्ण क ग० ग्रिवेक के दे० देवता दो० दोहाथ उ० ऊचे उ० ऊंचपने प० प्ररूपा ॥ २९ ॥

स० समय आ० आवलीका जी० जीव अ० अजीव प० फरमाते हैं आ० श्वासोश्वास थो० थोव सी०

महासुक्क सहस्सारेसुण कप्पेसु विमाणा दुवण्णा प० त० हालिद्दाचेव सुक्किला चेव गेवि

ज्जगाण देवाण देरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेण पन्नत्ता॥ २९॥इतिबियठाणस्सतइओद्देसो सम्मत्तो

समयाइवा आवलियाइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ । आणापाणूइवा थोवाइवा

श्वेत ऐसे दो रंग के हैं और नव ग्रैवेयक के देवता की ऊंचाइ दो हाथ की है यह दूसरा ठाणा का तीसरा उद्देशा पूर्ण हुआ

जीव और अजीव पर कालका भाव सदैव प्रवर्तता है उस कालका अत्यंत सूक्ष्म भेद को समय कहते हैं असंख्यात समय की एक आवलिका [शिघ्रता से अंगुली पर दोरा लपेटते एक आंटा आवे उतना काल होता है] संख्यात [४४४६ झाझेरी] आवलिकाका एक श्वासो श्वास सात श्वासोश्वास का एक थोव (क्षण) सात थोव की एक लव ७७ लव अथवा ३७७३ श्वासोश्वास का एक मुहूर्त, तीस मुहूर्त की एक अहो रात्रि, पंद्रह अहो रात्रि का एकपक्ष, दो पक्ष का एक मास, दो मास की एक ऋतु, तीन ऋतु की एक अयन, दो अयन का एक संवत्सर, पांच

जीव अ० अजीव प० फरमाया ख० खण ल० लव जी० जीव अ० अजीव प० फरमाया ए० ऐसे मु० मुहूर्त अ० अहोरात्रि प० पक्ष मा० मास उ० ऋतु अ० अयन सं० संवत्सर जु० युग वा० सोवर्ष वा० सहस्रवर्ष वा० लक्ष सहस्रवर्ष वा० कोडवर्ष पु० पूर्वांग पु० पूरव तु० त्रुटितांग तु० त्रुटित अ० अडडांग अ०

जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ । खणाइवा लवाइवा जीवाइवा अजीवाइ वा पवुच्चइ । एवं मुहुत्ताइवा, अहोरत्ताइवा, पक्खाइवा, मासाइवा, उऊइवा, अयणा इवा, संवच्छराइवा, जुगाइवा, वाससयाइवा, वाससहस्साइवा, वाससयसहस्साइवा, वासकोडिइवा पुव्वंगाइवा, पुव्वाइवा, तुडियंगाइवा, तुडियाइवा, अडडंगाइवा, अड-

संवत्सर का एक युग, बीस युगका के सो वर्ष, दश सो का एक हजार वर्ष, सो हजार का लाख, सो लाख का क्रोड, चौरासी लाख वर्ष का एक पूर्वांग, चौरासी लाख पूर्वांग का एक पूरव, चौरासी लाख पूरव का एक त्रुटितांग, चौरासी लाख त्रुटितांग का एक त्रुटित, चौरासी लाख त्रुटित का एक अडडांग, चौरासी लाख अडडांग का एक अडड होवे, चौरासी लाख अडड का अववांग, चौरासी लाख अववांग का एक अववाव, चौरासी लाख अववावका एक हूहूतांग और चौरासी लाख हूहूतांग का एक हूहूत, चौरासी लाख हूहूतका एक उत्पलांग चौरासी लाख उत्पलांग का एक उत्पल, चौरासी लाख उत्पल का एक पद्मांग चौरासी लाख पद्मांग का एक पद्म, चौरासी लाख पद्म का एक नलिनांग, चौरासी लाख नलिनांगको एक

मठर अ० अववांग अ० अवव हू० हूहूआंग हू० हूहू उ० उपलांग उ० उपल प० पद्मांग प० पद्म ण० नलीनांग ण० नलीन अ० अक्षरनिकुरांग अ० अक्षरनीकुर अ० अयुतांग अ० अयुत ण० नियुतांग ण०

डाइवा, अववंगाइवा, अववाइवा, हूहूअगाइवा, हूहूयाइवा, उप्पलगाइवा, उप्पला
इवा, पउमगाइवा, पउमाइवा, णलिणगाइवा, णलिणाइवा, अत्थणिउरगाइवा अत्थ
णिउराइवा, अउअगाइवा, अउआइवा, णउअगाइवा, णउआइवा पउअंगाइवा, पउया
इवा, चूलिअंगाइवा, चूलियाइवा, सीसपहेलिअगाइवा, सीसपहेलियाइवा, पलिओवमा

नलीन, चौरासी लाख नलिन का एक अक्षर निकुरांग, चौरासी लाख अक्षर निकुरांग का एक अक्षर निकुर, चौरासी लाख अक्षर निकुर का एक अयुतांग, चौरासी लाख अयुतांग का एक मयुत, चौरासी लाख अयुत का एक नियुतांग और चौरासी लाख नियुतांग से नियुत होवे, चौरासी लाख नियुत का मयुतांग और चौरासी लाख मयुतांग का एक मयुत, चौरासी लाख मयुत का एक चूलिकांग, और चौरासी लाख चूलिकांग की एक चूलिका, चौरासी लाख चूलिका का एक शीर्षप्रहेलिकांग और चौरासी लाख शीर्षप्रहेलिकांग का एक शीर्ष प्रहेलिका ऐसे १९४ अंकतक संख्या है यह व्यवहारिक संख्याता कालका प्रमाण शीर्ष प्रहेलिकातक रहाहुवा है आगे असंख्याता काल रहाहुवा है परंतु व्यवहार में समझ में
... उसर करु जगलीयें के सात

निगुत प मयुतांग प० मयुत चू० चूलीकांग चू० चूलीका सी शीर्षप्रहेली शीर्ष प्रहेली प० पल्योपम सा सागरोपम उ० उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी जी० जीव अजीव प० फरमाया ॥ १ ॥ गा० गाम प० नगर नि० निगम रा० राजधानी से० सेट क० कर्बट मं० मंडप दो० द्रोणमुख प० पाटन आ०

इवा सागरोवमाइवा, उस्सप्पिणीइवा, ओस्सप्पिणीइवा, जीवाइवा अजीवाइवा, पवु-
चइ ॥ १ ॥ गामाइवा, णगराइवा, निगमाइवा, रायहाणीइवा, खेडाइवा, कब्बडा
इवा, मडंबाइवा, दोणमुहाइवा, पट्टणाइवा, आगराइवा, आसमाइवा, संवाहाइवा, स

दिन के बच्चे के बालाग्र क अत्यंत सूक्ष्म खण्ड कर उसे भरे फीर सो सो वर्ष में एक २ बाल निकालते पर कुवा खाली होजावे उतने वर्ष की संख्या को एक पल्योपम कहते हैं दश कोडाकोडी पल्योपम का एक सागरोपम, दश कोडाकोडी सागरोपम का एक उत्सर्पिणी काल और दश कोडाकोडी सागरोपम का एक अवसर्पिणी काल यों बीस कोडाकोडी सागरोपम का एक काल चक्र यह समय से लगाकर काल चक्र का काल जीव अजीव दोनों में बरतता है ॥ १ ॥ काल जैसे ग्रामादिक में भी जीव और अजीव यह दोनों योग्य होते हैं राजादिक का जहां कर (हांसल) लगे सो गांव जहां कर न लगे सो नगर, जहां बहुत वैश्य रहते होवे सो निगम, जहां राजा का राज्याभिषेक होता होवे सो राजधानी, जहां धूलका कोट होवे सो खेड, कुनगर सो कर्बट, चारों दिशि में बहुत दूर २ गांव होवे सो मंडप, जहां जलस्थलका

आकर आ० आश्रम स० सबाह स० सनिवेश घो० घोष आ० आराम उ उद्यान व० वन व वनखन्ड व वापी पु० पुष्करणी स० सरोवर स० सरपक्ति अ० कूवा त० तलाव द० द्रह ण० नदी पु० पृथ्वी उ० उदधि वा० वायुस्कन्ध उ० आकाशान्तर व० वलय वि० विग्रह दी द्वीप स समुद्र वे० वेल वे०

निवेसाइवा, घोसाइवा, आरामाइवा, उज्जाणाइवा, वणाइवा, वणखडाइवा, वावीइवा, पुक्खरणीइवा, सराइवा सरपतियाइवा, अगडाइवा, तडागाइवा, दहाइवा, णदीइवा पुढवीइवा, उदहीइवा, वातखधाइवा, उवासतराइवा, वलयाइवा विगाहाइवा, दीवाइवा,

माग होवे सो गोह भुख, जहां अच्छी २ वस्तुओं उत्पन्न होवे सो पाटण, जहां लोहादिक की खान होवे सो आकर, जहां तीर्थस्थान होता होवे सो आश्रम जहां समभूमि होवे सो सबह, जहां गावालों की वसति होवे सो सन्नीवेश, नदी के किनारे की पास रहे सो घोष, जहां बहुत प्रकारके वृक्ष होवें और स्त्री पुरुष क्रीडा करने को आते रहते होवे सो आराम, जो पुष्पादिक से सुशोभित होवे और वहां लोको गोठ (जिमणादि करे) सो उद्यान, जहां एक जाति के बहुत वृक्ष होवे सो वन, जहां बहुत प्रकारके वृक्ष होवे सो वनखंड, चौखुना जलस्थान होवे सो वापी, जहां बहुत कमलादि होवे सो पुष्करनी, थोडा जल होवे सो सरोवर, जहां बहुत सरोवर होवे सो सरपक्ति, कूवा सो अगड, बहुत थोडा पानी जहां होवे सो तलाव, बहुत ऊंडा पानी होवे सो द्रह, बहुत पानी बहता होवे सो नदी; रत्नप्रभादि पृथ्वी अथाग पानी जिस में

वेदिका दा० द्वार तो० तोरण ने० नारकी ने० नारकी का स्थान जा० यावत् वे वैमानिक का स्थान क० कल्प क० कल्प का स्थान वा० क्षेत्र वा० वर्षधर पर्वत कू० कूट कू० कूट की गुफा वि० विजय रा० राजधानी जी० जीव अ० अजीव प० फरमाये ॥ २ ॥ छा० छाया आ० आतप जो० ज्योति अं०

समुद्दाइवा, वेलाइवा, वेइयाइवा, दाराइवा, तोरणाइवा, णेरइयाइवा, णेरइयावासाइवा जाव वेमाणियावासाइवा, कप्पाइवा, कप्पविमाणवासाइवा, वासाइवा, वासहरपव्वयाइवा कूडाइवा कूडागाराइवा विजयाइवा रायहाणीइवा जीवाइवा अजीवाइवापवुच्चइ ॥ २ ॥

रोष सो समुद्र, वायु का स्कंध सो घनवातादि, नहां सूक्ष्म पृथ्वी के जीव भरे हुवे हैं सो आकाशान्तर, पृथ्वी के घनोदधि घनवात के बंध को वलय कहते हैं, त्रस नाल में जीव रहे सो विग्रह, जम्बूद्वीप आदि द्वीप, लवण समुद्रादि समुद्र, समुद्र मर्यादा रहे सो वेल, कोट की चारों तरफ होवे सो वेदिका, विजयादि द्वार द्वारपर के तोरण, नरकके जीवों सो नारकी, नरक में नारकी को रहने का स्थान सो नरकावासा, यावत् वैमानिक देवताओं को रहने का स्थान को वैमानिक वास कहते हैं और देव लोक को कल्प कहते हैं और उस में रहने का स्थान को कल्पविमान वास कहते हैं भरतादि क्षेत्र, क्षेत्र की मर्यादा करनेवाला वर्ष धरादि पर्वत, पर्वत के शिखर सो कूट, पर्वतोंकी गुफा सो कूटागार और जहां पर देवताओंका निवास स्थान होता है कच्छ महाकच्छादिक विजय, जहां राजा रहे सो क्षेमादिक राजधानी, उक्त सब पदार्थों जीव और अजीव करके संयुक्त होते हैं ॥ २ ॥ शरीर वृक्षादिक की छाया सूर्यादिक का आतप इत्यादिक की

अन्धकार मो० अवमान प० प्रमाण उ० उन्मान अ० प्रवेश उ० उद्यान अ० अपासिम्प स० संनीमपात जी० जीव अ० अजीव प० फरमाया ॥ १ ॥ दो० दोराशि प० प्ररूपी त० यह जी० जीवराशि अ० अजीवराशि दु० दोप्रकार का बंध पे० रागबन्ध दो० द्वेषबन्ध जी० जीव दो० दोस्थान से पा० पापकर्म

छायाइवा आतवाइवा जोसिणाइवा अधकाराइवा ओमाणाइवा पमाणाइवा उम्माणाइ
वा अतिताणगिहाइवा उज्जाण्णगिहाइवा अवालिंवाइवा सणिप्पवायाइवा जवाइवा अजी
वाइवा पवुच्चइ ॥ २ ॥ दोरासी प० त० जीवरासीचेव अजीवरासीचेव । दुविहे बंधे
प० त० पेज्जबंधेचेव दोसबंधेचेव जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावकम्म बंधइ त० रागेण

क्रान्ति, रात्रि आदि का अंधकार, सेभादिक का अवमान, हाथ भर खेत वगैरह प्रमाण; सेर मन वगैरह उन्मान, गृह नगर आदिका प्रवेश, बगीचे आदि के बंगले सो उद्यान गृह; अवासिम्प सो देश विशेष और पानी आदि का प्रपात स्थान वगैरह जीव और अजीव ये दोनों से व्याप्त होते हैं ॥ १ ॥ श्री भग वतने जीव राशि और अजीव राशि ऐसी दो राशि कही हैं दो प्रकार का बंध—माया और लोभ रूप राग बंधन और क्रोध मान रूप द्वेष बंधन जीव दो स्थानक से पाप का बंध करते हैं राग से और द्वेष से पाप का बंध करते हैं बंधे हुवे पाप की जीव दो प्रकार से उदीरणा[1] करते हैं १ स्ववशपना से तपश्चरण

[1] उदय का अवसर आये बिना कर्मों को उदय में लाना उसे उदीरणा कहते हैं

पं० शोषता है रा० रागसे द० द्वेषसे जी० जीव दो० दो० दोस्थान से पा० पापकर्म उ० उदीरता है अ० आध्यात्मिक वे० वेदना उ० उपक्रान्तकर वे० वेदना ए० ऐसे वे० वेदता है ए० ऐसे णि० निर्जरता है अ० आध्यात्मिक वे० वेदना उ० उपक्रान्तकर वे० वेदना दो० दोस्थान से आ० आत्मा स० शरीरका फु० स्पर्शताहुवा णि० निर्जरताहै द० देश दे देशसे आ० आत्मा स० शरीरको फु० स्पर्शकर णि० निर्जरताहै स० सर्वसे स० शरीरको फु० स्पर्श कर णि० निर्जरता है ए० ऐसे फु० फोडकर ए० ऐसे सं० सकोचकर नि०

चेव दोसेणचेव । जीवाणं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं उदीरेइ तं० अब्भोवगमियाएचेव वेयणाए उवक्कामियाएचेव वेयणाए एवं वेदेंति एवं णिज्जरेंति अब्भोवगमियाएचेव वेयणाए उवक्कामियाएचेव वेयणाए दोहिं ठाणेहिं आया सरीरं फुसित्ताण णिज्जाति तं० देसेणवि आया सरीर फुसित्ताणं णिज्जाति सव्वेणवि आया सरीर फुसित्ताणं णि

* केशलोचनादि काया क्लेश कर के पीडा भोगवे, और २ स्वभाव से उत्पन्न हुए ज्वरादि वेदना को वेदे इन दोनों कारणों से उदय आये हुवे कर्मों को वेदते हैं, उन का क्षय करते हैं दो स्थानक से जीव शरीर को स्पर्श कर नीकलता है १ देश से यह अमुक अमुक अंगोपांग स्पर्श कर नीकले और सर्व से सब शरीर का स्पर्श कर नीकले ऐसे ही देश से और सर्व से ऐसे स्थानकों में फरक कर आत्मा नीकले उन को फोड कर आत्मा नीकले दो प्रकार से शरीर सकोच कर आत्मा नीकले इलीकाकी गति से धीरे २

निर्वर्तकर दो० दोस्थान से आ० आत्मा के० केवली प० प्ररूपा ध० धर्म को ल० माप्तकरे स० सुन करके त० वह ज० जैसे ख० क्षय से उ० उपशम से ए० ऐसे जा० यावत् म० मनः पर्यवज्ञान उ० प्राप्त करे तं० वह जं० जैसे ख० क्षय से उ० उपशम से ॥ ४ ॥ दु० दोमकारकी अ० काल की उ० उपमा प० पल्योपम सा० सागरोपम से० वह किं० क्यासा प० पल्योपम प० पल्योपम जं० जो जो०

ज्जाति एवं फुरित्ताण एवं फुडित्ताणं एवं संवट्टित्ताणं निव्वाट्टित्ताण दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए तजहा खएणचेव उवसमेणचेव । एव जाव मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा तजहा खएणमेव उवसमेणचेव ॥ ४ ॥ दुविहे अद्धोवमिये प० तं० पलिओवमचेव सागरोवमेचेव । से किं त पलिओवमे पलिओवमे जं जो

भात्म मदेश नीकले सो देश से और गेंद की जैसे उछलकर आत्मा नीकले सो सर्व से दो मकार से केवली भाषित धर्म का श्रवण कर माप्त करते हैं ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय का क्षय और उपशमसे अन्यथा सुनने से भी धर्म की माप्ति नहीं हो सकती है ऐसे ही मति ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि ज्ञान और मनःपर्यव ज्ञान दो मकार से माप्त कर सकते हैं ज्ञानावरणीय के क्षय और उपशमसे ॥ ४ ॥ पल्योपम और सागरोपम ऐसी दो मकारकी कालकी उपमा भी भगवन्तने फरमाई है शिष्य मश्न करता है कि हे

बं० बांधता है रा० रागसे दे० द्वेषसे जी० जीव दो० दो० दोस्थान से पा० पापकर्म उ० उदीरता है अ० आभ्यासिक वे० वेदना उ० उपक्रान्तकर वे० वेदना ए० ऐसे वे० वेदता है ए० ऐसे णि० निर्जरता है अ० आभ्यात्मिक वे० वेदना उ० उपक्रान्तकर वे० वेदना दो० दोस्थान से आ० आत्मा स० शरीरको फु० स्पर्शताहुवा णि० निर्जरताहै द० दद दे० देशसे आ० आत्मा स० शरीरको फु० स्पर्शकर णि० निर्जरताहै स० सर्वसे स० शरीरको फु० स्पर्श कर णि० निर्जरता है ए० ऐसे फु० फोडकर ए० ऐसे सं० संकोचकर नि

चेव दोसेणचेव । जीवाणं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं उदीरेइ तं० अब्भोवगमियाएचेव वेयणाए उवक्कमियाएचेव वेयणाए एवं वेदेंति एवं णिज्जरेंति अब्भोवगमियाएचेव वेयणाए उवक्कमियाएचेव वेयणाए दोहिं ठाणेहिं आया सरीरं फुसित्ताण णिज्जाति स० देसेणवि आया सरीर फुसित्ताण णिज्जाति सव्वेणवि आया सरीर फुसित्ताणं णि

* केशलोचनादि काया क्लेश कर के पीड़ा मागवे, और २ स्वभाव से उत्पन्न हुए ज्वरादि वेदना को वेदे इन दोनों कारणों से उदय आये हुवे कर्मों को वेदते हैं, उन का क्षय करते हैं दो स्थानक से जीव शरीर को स्पर्श कर नीकलता है १ देश से पग प्रमुख अमुक अंगोपांग स्पर्श कर नीकले और सर्व से-सब शरीर का स्पर्श कर नीकले ऐसे ही देश से और सर्व से ऐसे स्थानकों में फरक कर आत्मा नीकले उन को फोड कर आत्मा नीकले दो प्रकार से शरीर संकोच कर आत्मा नीकले इलीकाकी गति से पीछे-

आ० आत्मप्रतिष्ठ प० परप्रतिष्ठ ए० ऐसे ने० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन शल्य ॥ १ ॥ दो० दोप्रकार के सं० संसार को स० प्राप्त जी० जीव त० त्रस था० स्थावर दु० दोप्रकार के स० सर्वजीव सि० सिद्ध अ० असिद्ध स० सइन्द्रिय अ० अनिन्द्रिय ए० ऐसे ए० यह गा० गाथा का० कहना जा० यावत् स० शरीरी सि० सिद्ध स० सइन्द्रिय का० काया जा० योग वे० वेद क० कषाय ले० लेश्या णा० ज्ञान उ० उपयोग आ० आहार भा० भाषक च० चरम

परपइट्ठिएचेव एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं एवं जाव मिच्छादंसण सल्ले ॥ १ ॥ दुविहा संसार समावन्नगा जीवा प० तं० तसाचेव थावराचेव दुविहा सव्वजीवा प० तं० सिद्धाचेव असिद्धाचेव । दुविहा सव्व जीवा प० तं० संइंदियाचेव आणिंदियाचे व । एवं एसा गाहा फासेयव्वा जाव सरीरीचेव असरीरीचेव॥ सिद्धसइंदियकाए जोगवेए क-

दो प्रकार का कहा है आत्म प्रतिष्ठित सो आत्मा-स्वभाव से उत्पन्न होवे और परप्रतिष्ठित सो अन्य के वचन सुन कर उत्पन्न होवे यह दोनों प्रकार का क्रोध नारकी आदि चौविस दण्डक में जानना ऐसे ही अठारह पाप स्थान यावत् मिथ्या दर्शन शल्य तक जानना ॥ १ ॥ संसारी जीव दो प्रकार के कहे हैं द्वीन्द्रियादिक त्रस और एकेन्द्रियादिक स्थावर अथवा सब जीवों के दो भेद सब कर्मों का क्षय होना सो सिद्ध और जो मोक्ष में नहीं गये सो असिद्ध सइन्द्रिय, अनिन्द्रिय इस तरह तेरह बोल कहना १ सिद्ध.

म० मरीरी ॥ ७ ॥ क्षे० दोमरण स० श्रमण भ० भगवान म० महावीरने स० श्रमण णि० निर्ग्रंथ के णो० नहीं णि० नित्य व० वर्णन कीये णो० नहीं नित्य की० कीर्ति की णो० नहीं णि० नित्य पु० पूर्व णो० नहीं प० प्रशंसा की णो० नहीं णि० नित्य म० आज्ञादी म० होवे वं० वर प० वलय मरण व० वसट्ट इन्द्रिय वशभे मरण णि० निदान मरण त० तद्भव मरण गि० गिरिसे पडकरमरे त० वृक्षसे पडकर

साय लेसाय णाणुवओगाहारे भासग चरिमेय ससरीरी(१) ॥७॥ दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गथाणं णो णिच्च वण्णियाइं णो णिच्च कित्तियाइं णो णिच्च वुइयाइं णो णिच्च पसत्थाइं णो णिच्चं अब्भणुन्नाइं भवंति तं० वलयमरणेचेव वसट्टमरणचेव । एवं णियाणमरणेचेव तब्भवमरणेचेव गिरिपडणेचेव तरुपडणेचेव

भाषिक, २ सइन्द्रिय अनिन्द्रिय, ३ सकायी अकायी, ४ सयोगी अयोगी, ५ सवेदी अवेदी, ६ सकषायी अकषायी, ७ सलेशी अलेशी, ८ सज्ञानी अज्ञानी, ९ ज्ञानोपयोगी दर्शनोपयोगी, १० आहारी अनाहारी, ११ भाषक अभाषक, १२ चरम अचरम और १३ शरीरी अशरीरी ॥ ७ ॥ शरीरी को दो मरण होते हैं इसलिये मरण का अधिकार कहते हैं श्री श्रमण भगवंत महावीरने साधु निर्ग्रंथ को संयम से भ्रष्ट होकर मरना और इन्द्रियों के वश में पडकर मरना इन दोनों प्रकारके मरण को किसी प्रकार से अच्छे नहीं बतलाये हैं, आदरने को नहीं कहे हैं और उस के लिये आज्ञा भी दी नहीं है वैसे ही अर्हंत आदि का

मरे ज० जल में डुबकर मरे ज० अग्निमें पडकरमरे वि० विषखाकरमरे स० शस्त्रसे घात करे दो० दोमरण णा० यावत् णो० नहीं णि० सदैव अ० आज्ञादी म० होवे का० कारण से पु० फीर अ० मनाइ है वे० फांसीलेकर गि० गीधादिके मूख्में जाकर ॥ ८ ॥ दो० दोमरन स० श्रमण भ० भगवान म० महावीर

जलप्पवेसेचेव जलणप्पवेसेचेव विसभक्खणेचेव सत्थोवाडणेचेव । दो मरणाइ जाव णो णिच्च अब्भणुन्नाइ भवति कारणेण पुण अप्पाडिकुट्ठाइ तं० वेहाणसेचेव गिद्धपिट्ठे चेव ॥ ८ ॥ दो मरणाइ समणेणं भगवया महावीरेण समणाण निग्गथाण णिच्चं व

नियाणा करके मरना, उसी भव के योग्य आयुष्य बांधकर मरना, पर्वत वृक्षादि से गिरकर मरना पानी में प्रवेश कर मरना सो जलप्रवेश मरण, और अग्नि में प्रवेश कर मरना सो ज्वलन प्रवेश मरण, विष खाकर मरना, शस्त्र कटारी प्रमुख से मरना, इत्यादि प्रकार के मरण सदैव साधु को अप्रशंसनीय है परंतु ब्रह्मचर्य आदि पंच महाव्रतों का निर्वाह नहीं होता वैसे तो फांसी लेकर मरना अथवा ऊंट आदि मरेहुवे जानवरों के कलेवर में प्रवेश कर मरना इन मरणों की भगवानने आज्ञा दी नहीं है वैसे मनाइ भी नहीं की है इसलिये पूर्वोक्त कारण बिना मरण करे नहीं क्यों कि बिना कारण ये मरण भी खोटे हैं ॥ ८ ॥ दो प्रकारके

न प श्रमण णि० निर्ग्रंथ के णि० नित्य व० वर्णने जा० यावत् अ० आज्ञादी भ० है पा० पादोप गमन भ० भक्तप्रत्याख्यान पा० पादोपगमन दु० दोपकार का णी० निहारण अ० अनिहारण नि०नियम भ० प्रतिक्रमण रहित भ० भक्तप्रत्याख्यान दु० दोपकारका णि०निहारण अ० अनिहारण णि नियम स० प्रतिक्रमण सहित॥७॥ क० कैसा अ० यह लो० लोक जी० जीव अ०अनंत अ० अनंतलोक जी०जीव अ०

ण्णियाइ जाव अब्भणुन्नाइ भवति तजहा पाओवगमणेचेव भत्तपच्चक्खाणेचेव । पाओ वगमणे दुविहे प० तं० णीहारिमेचेव अणीहारिमेचेव णियमं अप्पाडिकम्मे । भत्तपच्च क्खाणे दुविहे प० त० णीहारिमेचेव अणीहारिमेचेव णियमं सप्पाडिकम्मे ॥ ९ ॥

पत्नु को भगवन्तने अच्छा कहा है और उन का आचारने की आज्ञा भी दी है वृक्ष की डाली काटने से जैसे नीचे पेड़ रहित पड़े वैसे पादपोपगमन और अशनादि चार या तीन आहार का त्याग करना सो भक्त प्रत्याख्यान पादपोपगमनके दो भेद नीहारम ग्राम में होता है उस के शरीर का नि-हारन (अग्नि संस्कारादि) होताहै और अनीहारण गिरिगुफा में जाकर करे ऐसे ही भक्त प्रत्याख्यान के भी भेद करना इन दोनों मरण में से भक्त प्रत्याख्यान करनेवाले को गमनागमन क्रिया करनी पड़ती है इसलिये अवश्य प्रतिक्रमण करना पड़ता है और पादोपगमनवाले निष्क्रिय होने के कारण से उन को प्रतिक्रमण करने की कुच्छ भी जरूरत नहीं रहती है ॥ ९ ॥ प्रश्न यह लोक कैसा है ? उत्तर

अजीव के० कैसा सा० शाश्वतलोक जी० जीव अ० अजीव ॥१०॥ दु० दोमकारके बो० बोधि णा० ज्ञानबोधि द० दर्शन बोधि दु० दोमकार का बु० बुद्ध णा० ज्ञानबुद्ध दं० दर्शनबुद्ध ए० ऐसे मो० मोह मो० मूढ ॥ ११ ॥ णा० ज्ञानावरणीय क० कर्म दु० दोमकार का दे० देशसे ज्ञानावरणीय स० सर्व

के अयलोए ? जीवच्चेव अजीवच्चेव अणतालोए जीवच्चेव अजीवच्चेव के सासया लोए जीवच्चेव अजीवच्चेव ॥ १० ॥ दुविहा बोही प० तं० णाणबोहीच्चेव दंसणबोहीचेव। दुविहा बुद्धा प० त० णाणबुद्धाचेव दसणबुद्धाचेव एव मोहे मूढा ॥ ११ ॥ णाणावराणिज्जे कम्मे दुविहे प० त० देसणाणावराणिज्जेचेव सव्वणाणावराणिज्जेचेव दरिस

जीव और अजीवादि षट्द्रव्यरूप लोक है। अब क्या लोक यह शाश्वत व अनंत है? द्रव्यकी अपेक्षासे जीवाजीव षट्द्रव्यरूप लोक शाश्वत व अनंत है ॥१०॥ इन छ द्रव्योंमें से जीव द्रव्य बोधिकी प्राप्ति करे उस के दो भेद ज्ञान की प्राप्ति और दर्शन की प्राप्ति ज्ञान और दर्शन इन दोनों गुणों के धारक बुद्ध कहाते हैं ऐसे ही मोह के दो भेद कहे हैं ज्ञान का आवरण सो ज्ञान मोह और दर्शन का आवरण सो दर्शन मोह मोह में फसे हुवे लोकों मूढ कहलाते हैं उस के भी दो भेद ज्ञान रहित और दर्शन रहित ॥ ११ ॥ ज्ञानावरणी यादिक कर्मों से मोह पावे इसलिये कर्मों के भेद कहते हैं ज्ञानावरणीय के दो भेद १ मतिज्ञानादिक को रुकनेवाला देश ज्ञानावरणीय और केवलज्ञान को रुकनेवाला सर्व ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय कर्म के दो

चारित्रधर्म आराधना के० केवलिधर्म आराधना दु० दोप्रकार की अं० अन्तक्रिया क० कल्पविमानोत्पन्न ॥ १४॥ दो० दोतीर्थंकर नी० हरे रंग के म० मात्र मु० मुनिसुव्रत अ० अरिष्टनेमि दो० दोतीर्थंकर पि० पियगुरंग के स० मात्र म० मल्लिनाथ पा० पार्श्वनाथ दो० दोतीर्थंकर प० पद्मगोर व० वर्णवाले प० पद्म प्रभु वा वासुपुज्य दो० दोतीर्थंकर चं० चंद्र गौर वर्णवाले चं० चंद्रप्रभु पु० पुष्पदंत ॥ १५॥ स० सत्य

राहणा दुविहा प० त० अतकिरियाचेव कप्पविमाणोववत्तियाचेव ॥ १४॥ दो ति त्थयरा नीलुप्पलसमावन्नेण प० तं० मुणिसुव्वएचेव अरिट्ठणेमीचेव । दो तित्थय- रा पियगुसमावण्णेणं प० त० मल्लीचेव पासेचेव । दो तित्थगरा पउमगोरा वण्णे ण प० त० पउमप्पहेचेव वासुपुज्जेचेव दो तित्थयरा चंदगोरा वण्णेण प० तं० चंद प्पभेचेव पुप्फदंतेचेव ॥ १५ ॥ सच्चप्पवाय पुव्वस्सण दुवे वत्थु पण्णत्ता पुव्वभद्दवया

आवे सो अंतक्रिया और क्षायोपशमिक श्रुत केवली नव ग्रैवेयक में या अनुत्तर विमान में उत्पन्न होते हैं सो कल्प विमानोपपत्तिया ॥ १४ ॥ इस अवसर्पिणी कालके श्री मुनि सुव्रत और श्री अरिष्ट नेमी इन दोनों तीर्थंकरों का वर्ण नीलोत्पल कमल समान था, श्री मल्लीनाथ और श्री पार्श्वनाथ स्वामी का वर्ण पियंगु वृक्ष सम हरा था श्री पद्म प्रभु और श्री वासुपूज्य इन दोनों का वर्ण कमल समान गौर वर्ण था श्री चंद्रप्रभ और श्री पुष्पदंत (श्री सुविधि नाथ) इन दोनों का वर्ण चंद्र समान गौर वर्ण (श्वेत) था, और अन्य सब तीर्थंकरों का वर्ण सुवर्ण समान पीला था ॥ १५ ॥ सत्य प्रवाद पूर्व के दो अध्ययन, पूर्व भाद्रपद

मथादपूर्वक दु० दो अ० अध्याय प० मरूपा पु पूर्वभाद्रपद नक्षत्र के दु० दोतारे उ० उत्तरभाद्रपद नक्षत्र के दु० दोतारे ए० ऐसे पु० पूर्वफाल्गुनी उ० उत्तर फाल्गुनी ॥ १६ ॥ अ० अदर म० मनुष्य क्षेमकी दो० दोसमुद्र ल० लवणसमुद्र का० कालोदधिसमुद्र दो० दो चक्रवर्ती अ विनात्यागे का० काम भोग को का काल के अवसर में का० काम करके अ० नीचे स० सातमी पु० पृथ्वी में अ०अप्रतिष्ठान नरक में ने० नारकी पने उ० उत्पन्न हुवे सं० यह ज० जैसे सं० संभूम यं० ब्रह्मदत्त ॥ १७ ॥ अ० असूर

नक्खत्ते दुतारे प० उत्तरभद्दवया नक्खत्ते दुतारे प० एवं पुव्वफग्गुणी उत्तरफग्गु णी ॥ १६ ॥ अतोणं मणुस्सखेत्तस्स दो समुद्दा प० तं० लवणेचेव कालोदेचेव दोचक्कवट्टी अपरिच्चत्तकामभोगा कालमासे कालकिच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइ ट्ठाण नरए नेरइयत्ताए उववन्ना त जहा सुभूमेचेव बंभदत्तेचेव ॥१७॥ असुरिंद व

उत्तराभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी इन नक्षत्रों के दो दो तारे हैं ॥ १६ ॥ अढाइ द्वीप मनुष्य क्षेत्र में दो समुद्र १ लवण समुद्र और २ कालोदधि समुद्र इस अवसर्पिणी का आठवा सुभूम और बारवा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ये दोनों कामभोग का त्याग नहीं करने से आयुष्य पूर्ण करके अधोलोक में सातवी नरक के अप्रतिष्ठान नामक नरकावासा में तेतीस सागरोपम का आयुष्य बांध कर नेरिये हुवें ॥ १७ ॥

कुमार के इन्द्र को व० छोडकर भ० भुवनपति देव का दे०देवताकी दोपल्योपम की ठि०स्थिति सो० सौधर्म कल्पके दे०देवकी उ०उत्कृष्ट दो०दोसागरोपम ठि०स्थिति ई०ईशान कल्पके दे०देवकी उ०उत्कृष्ट सा०कुच्छ अधिक दो०दोसागरोपम ठि०स्थिति स०सनत्कुमार कल्प के दे०देवकी ज०जघन्य दो दोसागरोपमकी ठि० स्थिति मा महेन्द्र कल्प के दे०देवकी ज० जघन्य सा० कुच्छ अधिक दो०दोसागरोपम ठि० स्थिति ॥१८॥

जिगाण भवणवासीण देवाण दसूणाइ दोपलिओवमाइ ठिई प० सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेण दोसागरोवमाइं ठिई प० । इसाणेकप्पे देवाण उक्कोसेण साइरेगाइ दोसागरोवमाइ ठिई प० सणकुमारे कप्पे देवाण जहन्नेण दोसागरोवमाइ ठिई प० माहिंदे कप्पे देवाण जहन्नेण साइरेगाइ दोसागरोवमाइ ठिई प० ॥ १८ ॥ दोसु कप्पेसु

दश जाति के भवनपति देवों में से असुर कुमार के इन्द्रों को छोड कर अन्य सब भवनपति देवों की उत्कृष्ट स्थिति देश उनी दो पल्योपम की प्रथम सुधर्म नामक देवलोक का उत्कृष्ट दो सागरोपम का आयुष्य, दूसरे ईशान देवलोकके देवताकी स्थिति उत्कृष्टी साधिक दो सागरोपम, सनत्कुमार देवलोक के देवताकी जघन्य दो सागरोपम की स्थिति और महेन्द्र देवलोक के देवता की जघन्य साधिक दो सागरोपम की

दो० दोकल्प में क० कल्पोत्पन्न स्त्रियों प० फरमाई सो० सौधर्म देवलोक में ई० ईशान देवलोक में दो० दोकल्पमें देव ते० तेजुलेश्या वाले सो० सौधर्म देवलोक में ई० ईशान देवलोक में दो० दोकल्प में का० काया परिचारणा सो० सौधर्म ई० ईशान में दो० दोकल्प में फा० स्पर्श परिचारणा स० सनत्कुमार म० महेन्द्र देवलोक में दो० दोकल्प में देव रू० रूपपरिचारणा ब० ब्रह्मदेवलोक लं० लंतकदेवलोक दो० दोकल्प में देव स० शब्द परिचारणा म० महाशुक्र स० सहस्रार में दो० दोइन्द्र म मनपरिचारणा पा०

कप्पत्थियाओ पण्णत्ताओ तं० सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा प० त० सोहम्मेचेव इसाणेचेव दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा प० तं० सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दासु कप्पेसु देवा फासपरियारगा प० त० सणकुमारेचेव महिंदेचेव दो सु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा प० त० बम्भलोएचेव लंतएचेव । दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा प० तं० महासुक्केचेव सहस्सारेचेव दो ईसा मणपरियारगा प० तं० पा

और इन दी देवलोक में तेजुलेश्या, है इन दोनों देवलोक के देवताओं मनुष्य की तरह काया से कामभोग का सेवन करते हैं तीसरे सनत्कुमार और चौथे महेन्द्र देवलोक के देवताओं देवांगनाओं के शरीर को आलिंगन करके कामभोग सेवते हैं पांचवां ब्रह्मदेवलोक और छठा लंतक इन दोनों देवलोकके देवताओं मात्र रूप देखकर भोग की प्राप्ति करते हैं महाशुक्र और सहस्रार देवलोक के देवताओं शब्द मात्र पे

प्राणत अ० अच्युत ॥ १० ॥ जी० जीवकी दु० दोस्थान से नि० निर्वर्तिक पो० पुद्गल को पा०पापकर्मपने चि० चयपकिया चि० चयप करता है चि० चयपकरेगा त० त्रसकाया का निवर्तिक था स्थावर काया का निर्वर्तिक ए० ऐसे उ० उपचयाकिया उ० उपचय करता है उ० उपचय करेगा बं० बांधा बं० बांधता है बं० बांधेगा उ० उदीरा उ० उदीरता है उ० उदीरेगा वे० वेदा वे० वेदता है वे० वेदेगा णि०

णएचव अच्चुएचेव ॥ ११ ॥ जीवाण दुट्ठाण निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणसु वा चिणति वा चिणिस्सति वा तजहा तसकाय निव्वत्तिएचेव थावरकायनिव्वत्तिए चेव ॥ एव उवचिणसु वा, उवचिणति वा, उवचिणिस्सति वा, बांधिसु वा, बंधति वा, बंधिस्सति वा, उदीरिंसुवा, उदीरतिवा, उदीरिस्संति वा, वेदिंसुवा, वेदितिवा, वेदिस्सतिवा,

भोग सेवन करते हैं नववां व दशवां देवलोक का १ प्राणतेन्द्र और इग्यारवां और बारवां देवलोक का अच्युतेन्द्र मन में ही देवांगनाका चिन्तवन करके कामभोग सेवते हैं ॥ ११ ॥ जीव त्रस और स्थावर में उत्पन्न होने जैसे कर्म इकठे करते हैं, किये और करेंगे, वैसे ही कर्मों का उपचय किया, करते हैं, करेंगे,

१ यहां पर दो दो का बोल चलने से मात्र दो इन्द्रही ग्रहण किये हैं परंतु नवमें दशवें इग्यारवें और बारवें देवलोक के सब देवताओं मात्र चिन्तवन से कामभोग का सेवन करते हैं

निर्जरा णि॰ निर्मरता है णि॰ निर्जरेगा ॥ २० ॥ दु॰ दोमदेशी खं॰ स्कन्ध अ॰ अनंत प॰ फरमाये दु॰ दोमदेश अवगाहे पुद्गल अ॰ अनंता प॰ फरमाये ए॰ ऐसे जा॰ यावत् दु॰ दोगुण रुक्ष पो॰ पुद्गल अ॰ अनंत प॰ फरमाये ॥ २१ ॥ × +

णिज्जरिंसु, वा णिज्जरति वा, णिज्जरिस्साति वा ॥ २० ॥ दुपएसिया खधा अणंता प-ण्णत्ता दुपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णंचा एव जाव दुगुणलुक्खापोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥२१॥ इति बीयठाणस्स चउत्थोद्देसो सम्मत्तो इति बीयठाणं सम्मत्त

वैसे ही कर्मों का बंध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा अतीत काल में की, वर्तमान में कर रहे हैं और आगामिक में करेंगे ॥ २० ॥ श्री भगवन्तने दो प्रदेशी स्कंध अनंत कहे हैं और दो प्रदेश को अवगाहकर रहनेवाले पुद्गल अनंते हैं ऐसे ही दो गुन काले यावत् दो गुन लुखे पुद्गल अनंत कहे हैं यह दूसरा स्थानक का चतुर्थ उद्देशा पूर्ण हुवा और दूसरा स्थानक भी समाप्त हुवा आगे तीसरा स्थानक चलता है

॥ तृतीय स्थानकम् ॥

त० तीन इं० इन्द्र प० प्ररूपे तं० वह ज० जैसे णा० नामइन्द्र ठ० स्थापना इन्द्र द० द्रव्य इन्द्र त०तीन इं० इन्द्र णा० ज्ञानइन्द्र दं० दर्शन इन्द्र च०चारित्र इन्द्र त०तीन इन्द्र देवेन्द्र अ० असुरेन्द्र म० मनुष्य इन्द्र ॥ १ ॥ ति० तीनप्रकार की वि विकुर्वणा प० फरमायी बा० बाह्य पुद्गल प० ग्रहणकर ए० एक विकुर्वणा

तओ इंदा पण्णत्ता त जहा णामिंदे ठवणिंदे दव्विंदे तओ इंदा प० त० णाणिंदे दंस णिंदे चारित्तिंदे तओ इंदा प० त० देविंदे असुरिंदे मणुस्सिंदे ॥१॥ तिविहा विकुव्व णा प० त० बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता एगा विकुव्वणा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता

श्री भगवन्तने तीन प्रकारके इन्द्र कहे हैं किसी मनुष्यादिक का नाम इन्द्र रखना सो नामेन्द्र, इन्द्र की प्रतिमा सो स्थापना इन्द्र, और जो जीव आगामिक काल में इन्द्र होवेंगे सो द्रव्य इन्द्र और भी तीन प्रकारके इन्द्र, ज्ञानेन्द्र केवलज्ञान का धणि, दर्शनेन्द्र क्षायक समकित का धणि, और चारित्रेन्द्र यथाख्यात चारित्र का धणि और भी तीन प्रकारके इन्द्र ज्योतिषी वैमानिक के इन्द्र सो देवेन्द्र, भवनपति व्यंतर के इन्द्र सो असुरेन्द्र और नरेन्द्र चक्रवर्त्यादि ॥ १ ॥ भगवंतने विकुर्वणा के तीन भेद कहे हैं १ भवधा रिणी [मूल शरीर जितना क्षेत्र-अवगाह कर रहाहुवा है] उस क्षेत्र से बाहिर के पुद्गलों को वैक्रेय समुद्

पा० बाह्य पुद्गल अ० विनाग्रहण कर ए० एकविकुर्वणा बा० बाह्य पुद्गल प० ग्रहणकर अ० विनाग्रहण कर ए० एकविकुर्वणा ति० तीनप्रकार की वि० विकुर्वणा भ० आभ्यंतर पुद्गल प० ग्रहणकर ए० एक विकुर्वणा अ० आभ्यन्तर पुद्गल अ० विनाग्रहणकर ए० एकविकुर्वणा अ० आभ्यन्तर पुद्गल प० ग्रहणकर अ० विनाग्रहणकर ए० एक विकुर्वणा ति तीनें प्रकार की विकुर्वणा बा० बाह्यआभ्यन्तर पुद्गल प०

एगाविकुव्वणा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ताचि अपरियाइत्ताचि एगा विकुव्वणा तिविहा विउव्वणा प० त० अब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता एगाविउव्वणा अब्भंतरए पोग्गले अ परियाइत्ता एगाविउव्वणा अब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ताचि अपरियाइत्ताचि एगाविउव्वणा तिविहा विउव्वणा प० त० बाहिरब्भतरए पोग्गले परियाइत्ता एगा विउव्वणा बाहि

ग्रात से ग्रहण करके नविन क्यों बनाना सो, अथवा २ बाह्य क्षेत्र के पुद्गलों को विना लिये मूल शरीर में से ही पुद्गलों ग्रहण करके विकुर्वणा करना ३ और बाह्य क्षेत्र में से कुच्छ और मूल शरीर में से कुच्छ पुद्गलों ग्रहण कर विकुर्वणा करना और भी तीन प्रकारकी विकुर्वणा १ कितनेक भवधारिणी तथा उदारिक शरीर के अंदर के पुद्गलों को ग्रहण करके वैक्रेय करते हैं २ कितनेक आभ्यंतर पुद्गलों विना ग्रहण किये वैक्रेय करते हैं और ३ कितनेक आभ्यंतर पुद्गलों में से कुच्छ ग्रहण कर और कुच्छ विना ग्रहण किये वैक्रेय करते हैं और भी तीन प्रकार की विकुर्वणा कही है १ बाह्य और आभ्यंतर पुद्गलों

ग्रहणकर ए० एकविकुर्वणा बा० बाह्यआभ्यन्तर पुद्गल अ० विनाग्रहणकर ए० एक विकुर्वणा बा० बाह्य आभ्यन्तर पुद्गल प० ग्रहणकर अ० विनाग्रहणकर ए० एकविकुर्वणा ॥ २ ॥ ति० तीन प्रकार का ने० नारकी क० कतिसंचिता अ० अकतिसंचिता अ० अवक्तव्यगसंचिता ए० ऐसे ए० एकेन्द्रिय व० वर्ज्य जा० यावत वे० वैमानिक ॥ ३ ॥ ति० तीन प्रकार की प० परिचारणा ए० कितनेक

रब्भतरए पोग्गले अपरियाइत्ता एगाविउव्वणा बाहिरब्भतरए पोग्गले परियाइत्तावि अपरियाइत्तावि एगाविउव्वणा ॥ २ ॥ तिविहा नेरइया प० त० कतिसंचिया अकतिसंचिया अवत्तव्वगसंचिया एवं मेगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया ॥ ३ ॥ तिविहा परि-

को ग्रहण करके वैक्रेय करे, २ बाह्य आभ्यंतर पुद्गलोंको विना ग्रहण किये वैक्रेय करे ३ बाह्य आभ्यंतर पुद्गलों को कुच्छ ग्रहण और कुच्छ विना ग्रहण किये वैक्रेय करे (तत्त्व केवली गम्य) ॥ २ ॥ विकुर्वणा नारकी को भी होती है इसलिये नरकका अधिकार करते हैं चार स्थावरों में जीवों समय २ में असंख्यात उत्पन्न होते हैं और वनस्पति में समय २ में जीवों अनंते उत्पन्न होते हैं इसलिये एकेन्द्रिय के पांच दंडक को छोडकर १९ दंडक में जीवों संख्याते उत्पन्न होते हैं उन को कतिसंचिता कहना समय २ में असंख्याते उत्पन्न होते हैं उन को 'अकतिसंचिता' कहना और एक २ समय में एकेक अलग २ उत्पन्न होते हैं उन को अवक्तव्य संचिता कहना ॥ ३ ॥ देवताओं मैथुन सेवन करनेकी परिचारना तीन प्रकार से कर

दे॰ देव अ॰ मन्यदेव को अ अन्यदेव की दे॰ देवियों को अ॰ वशकर प॰ भोगते है अ॰ अपनी दे॰ देवियों को अ॰ वशकर प॰ भोगते हैं अ॰ स्वयं अ॰ स्वतः को वि॰ विकुर्वकर प॰ भोगते हैं ए॰ कितनेक देव णो॰ नहीं अ॰ अन्यदेवको णो॰ नहीं अ॰ अन्यदेव की दे॰देवियोंको अ॰ वशकर प॰ भोगते हैं अ॰ अपनी, दे॰ देवीको अ॰ वशकर प॰ भोगते हैं अ॰ स्वयं अ॰ स्वतः को वि विकुर्वकर प॰ भोगते हैं ए॰ कितनेक देव णो॰ नहीं अ॰ अन्यदेव को णो॰ नहीं अन्यदेव की दे॰ देवियों को

यारणा प॰ तं॰ एगेदेवे अन्नेदेवे अन्नेसिं देवाण देवीओय अभिजुंजिय २ परियारेइ अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ अप्पाणमेव अप्पाण विउव्विय २ परियारेइ एगेदेवे णोअन्नेदेवे णोअन्नेसिं देवाण देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ अ-प्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ अप्पाणमेव अप्पाण विउव्विय २

से हैं १ कितनेक देवताओं अपने से कम ऋद्धिवाले देवताओं को अथवा उन की देवियों को अपने वश में करके भोगवते हैं २ अपनी देवी को अपने वश में करके भोगवते हैं, ३ और अपना शरीर का ही वैक्रेय रूप बना कर भोग योग्य देवांगना का शरीर बनावे और उससे भोग भोगवते हैं इन तीनों बोलों की एक परिचारणा, दूसरी परिचारणा कितनेक देवता अन्यदेवता व दूसरी देवी की साथ भोग नहीं करते हैं परंतु अपनी देवी की साथ भोग करते हैं अथवा अपने शरीर का ही वैक्रेय बना कर भोग भोगते हैं तीसरी परिचारणा

अ० वशकर प० भोगते है णो० नहीं अ० अपनी दे० देवीको अ वशकर प० भोगते हैं अ० स्वतः
म० स्वतःको वि० विकुर्वकर प० भोगते हैं ॥ ४ ॥ ति० तीन प्रकार का मे० मैथुन दि० देवता म०
मनुष्य ति तिर्यंच योनिवाले का त० तीन मे० मैथुन को ग० जाते हैं दे० देव म० मनुष्य ति० तिर्यंच
योनिवाले त० तीन मे० मैथुन से० सेवते हैं इ० स्त्री पु० पुरुष ण० नपुंसक ॥ ५ ॥ ति० तीन जो० योग

परियारेइ । एगेदेवे णोअन्नेदेवे णोअन्नोर्सि देवाण देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ
णो अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ अप्पाणमेव अप्पाण विउव्विय
२ परियारेइ ॥ ४ ॥ तिविहे मेहुण प० त० दिव्वे माणुस्सए तिरिक्खजोणिए तओ
मेहुणं गच्छति त० देवा मणुस्सा तिरिक्खजोणिया तओ मेहुण सेवति त० इत्थी पु
रिसा णपुसगा ॥ ५ ॥ तिविहे जोगे प० त० मणोजोगे, वयजोगे, कायजोगे, ।

कितनेकन तो अन्य देव व देवीकी साथ भोग भोग सकते हैं और न अपनी देवीसे भोग भोग सकते हैं परंतु
अपना किया हुआ वैक्रेय शरीर की साथ भोग भोगते हैं ये तीन परिचारणा हुइ ॥ ४ ॥ तीन प्रकारका
मैथुन है देवता का, मनुष्य का और तिर्यंच का तीन मैथुन सेवनेवाले हैं देवता, मनुष्य, और तिर्यंच
अथवा स्त्री, पुरुष और नपुंसक ॥ ५ ॥ तीन प्रकार के योग कहे हैं मनोयोग—मन का व्यापार, वचनयोग

म मनयोग व० वचनयोग का० कायपोग ए०ऐमे ने० नारकी वि० विकलेन्द्रिय व० वर्जकर जा० यावत् वे० वैमानिक ति० तीनप्रयोग म० मनप्रयोग व० वचनप्रयोग का० कायाप्रयोग ज जैसे जो० योग वि० विकलेन्द्रिय व० वर्जकर जा० यावत् वे० वैमानिक त० तैसे प० प्रयोग ति तीन क०करण म० मन करण व० वचन करण का० काया करण ए० ऐसे ने० नारकी के वि० विकलेन्द्रिय व० वर्जकर जा०यावत् वे० वैमानिक के ति० तीन करण आ० आरंभ करण सं० सारंभ करण स० समारंभ करण नि० निरंतर जा०

एव णेरयाणं विगलिंदियवज्जाण जाव वेमाणियाण । तिविहे पओगे प० त० मणपओगे, वयपओगे कायपओगे, । जहा जोगो विगलिंदियवज्जाण जाव वेमाणियाण । तहा पओगोवि । तिविहे करणे प० त० मणकरणे, वयकरणे, कायकरणे, । एव णेरइयाण विगलिंदिय वज्जाण जाव वेमाणियाणं। तिविहे करणे प०त० आरंभकरणे संर

वचन का व्यापार और काया योग—काया का व्यापार वैसे ही कार्यार्थ साधने में प्रवर्तना सो प्रयोग, कार्य करना सो करण, इनों के मन वचन और काया के तीन २ भेद जानना ये तीनों योग, प्रयोग, और करण पांच स्थावर और तीन विगलेन्द्रिय छोड कर अन्यत्र सब दंडक में पाते हैं और भी करण के तीन भेद बतलाते हैं आरंभ षट्काया को हणना, सारंभ पृथिव्यादिक को हणने का संकल्प और समारंभ

पावत् वे० वैमानिक के ॥९॥ ति० तीनस्थान से जी० जीव अ० अल्प आयुष्य के कर्म प० बांधता है पा० प्राणातिपात करता भ० होता है मु० मृषावाद बोलता भ० होवे त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण का अ० अप्रासुक अ० अशुद्ध अ० असन पा० पानी खा० खादिम स० स्वादिम प० देता भ० होवे ए० इन ति० तीनस्थान से जी० जीव अ० अल्प आयुष्य क० कर्म प० बांधता हैं ति० तीनस्थान से जी०

मकरणे, समारंभकरणे णिरतरं जाव वेमाणियाण ॥ ६ ॥ तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पा उअत्ताए कम्म पगरेंति त० पाणे अइवाइत्ता भवइ, मुसवइत्ता भवइ, तहारूव सम ण वा माहणवा अफासुएण अणेसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभित्ता भवइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्म पगरेंति ॥ तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउ अत्ताए कम्म पगरेंति तंजहा णो पाणे अइवाइत्ता भवइ णो मुस वइत्ता

सो पंदकाया को मन से दुःख देना ये तीनों करण १ सब दंडक में पावे हैं ॥६॥ तीन प्रकार से जीव अल्प आयुष्य बांधता है [१] जीव की घात करने स २ मृषा बोलने से, ३ और शुद्ध चारित्रिय महात्माओं को अशुद्ध अकल्पनीय आहार देने से तीन प्रकार से जीव दीर्घायुष्य बांधते हैं १ जीवों की रक्षा करने से, २ मृषा नहीं बोलने से और शुद्ध चारित्रिय साधुओं को शुद्ध निर्दोष आहार पानी आदि

[*] मसमी को पीछले मन आश्रित ग्रहण किये हैं

जीव दी० दीर्घायुष्य कर्म पँ० बांधता है णो नहीं पा० प्राणातिपात करता भ० होवे णो० नहीं मु० मृषा बोलता भ० होवे त० तथारूप स० श्रमण मा० माहणको फा० फासुक ए० शुद्ध अ० अशन पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम प० देता भ० होवे इ० इन तिं०तीन ठा० स्थान से जी० जीव दी० दीर्घायुष्य क० कर्म प० बांधता है ॥ ७ ॥ ति० तीन ठा० स्थान से जी जीव अ० अशुभ दी० दीर्घा युष्य कर्म प० बांधता है पा० प्राणातिपात करता भ० होवे मु मृषाबोलता भ होवे त तथारूप स० श्रमण मा० माहण को ही० हीलना करता निं० निंदता खिं० खिंसता ग० गर्हता अ अपमान करता

भवइ तहारूव समण वा माहण वा फासुए एसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेत्ता भवइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति ॥ ७ ॥ तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति त० पाणे अइवाइत्ता भवइ मुसवइत्ता भवइ तहारूव समणवा माहणवा हीलेत्ता निंदेत्ता, खिंसेत्ता, गरिहित्ता, अवमाणित्ता अन्नयरेण अमणुन्नेणं अपीइकारएण असणं वा पाणं वा खाइमं वा सा

देने से ॥७॥ तीन कारण से जीवों दुःख से परिपूर्ण दीर्घ आयुष्य बांधते हैं १ जीव की घात करने से २ मृषा बोलने से, और ३ तथारूप साधु ब्राह्मण की हीलना, निन्दा, खिंसना करनेसे, अवगुण बोलनेसे उनका अविनय करने से, अथवा उन को दुःख व्याधि उत्पन्न होवे वैसा आहार पानी, खादिम और स्वादिम

अ अन्य प्रकार से अ० अमनोज्ञ अ अमीयकारी अ० अन्न पा पानी खा० खादिम सा० स्वादिम प० देता भ० होवे इ० इन ति० तीन ठा० स्थान मे जी० जीव अ० अशुभ दीर्घायुष्य कर्म प० बांधता है ति० तीनस्थान से जी० जीव सु० शुभ दी० दीर्घायुष्यपने क० कर्म प० बांधता है णो० नहीं पा० प्राणातिपात करता भ होवे णो० नहीं मु० मृषा बोलता भ० होवे त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को व० वंदता न० नमस्कार करता स० सत्कार करता स० सन्मानदेता क० कल्याण कर्ता मं० मंगल कर्ता दे० देवसमान चे० ज्ञानवंत का प० पूजता पी० प्रियकारी अ० अन्न पा० पानी खा०

इमं वा पडिलाभेत्ता भवइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति ॥ तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति तंजहा णो पाणे अइवाइत्ता भवइ णो मुसंवइत्ता भवइ तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेत्ता मणुन्नेणं पीइकारएणं असणं पाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा सुहदीहाउ

देने से और तीन कारण से जीव शुभ दीर्घायुष्य बांधता है प्राणातिपात की घात नहीं करने से, मृषा नहीं बोलने से और तथाभूत साधु ब्राह्मण को वंदना नमस्कार करने से, सत्कार सन्मान देने से, और विनय पूर्वक सेवा कर के प्रियकारी अशन, पानी, खादिम और स्वादिम बहोराने से इन तीन कारणों

स्वादिम सा० स्वादिम प० देता भ० होवे इ० इन ति० तीन स्थान से जी० जीव सु० शुभ दी० दीर्घा युष्य कम प० बांधता है ॥ ८ ॥ त० तीन गु० गुप्ति प० मरूपी म० मनगुप्ति व० वचन गुप्ति का० कायागुप्ति स० सयमवाले म० मनुष्य को त० तीन गुप्ति म० मन व० वचन का० काया त० तीन अगुप्ति प० मरूपी म० मनअगुप्ति व० वचन अगुप्ति का० कायाअगुप्ति ए० ऐसे णे० नारकी जा० यावत् थ० स्तनित कुमार को पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यचयोनि वाले अ० असंयमीमनुष्य को वा० वाणव्यन्तर

अत्ताए कम्म पगरति ॥ ८ ॥ तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ त० मणगुत्ती वयगुत्ती का यगुत्ती । संजयमणुस्साण तओ गुत्तीओ प० तं० मण, वय, काए, ॥ तओ अगु त्तीओ पण्णत्ताओ त० मणअगुत्ती वयअगुत्ती कायअगुत्ती, एव णेरइयाणं जाव थणिगकुमाराणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण असजयमणुस्साणं वाणमतराण जोइ

से भीन मुहुर्त्तमे व्यतीत होसके वैसा दीर्घ आयुष्य बांधता है ॥ ८ ॥ जीवहिंसादि से करना सो गुप्ति इसके तीन भेद कहे हैं मन गुप्ति, वचन गुप्ति और काया गुप्ति ये तीनों गुप्तिओं साधु पुरुषों को होती हैं पाप में मवर्तना सो अगुप्ति इस के भी तीन भेद हैं मन अगुप्ति, वचन अगुप्ति और काया अगुप्ति ये तीनों अगुप्ति नारकी, भवनपति, तिर्यचपंचेन्द्रि, असंयति मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक को होती हैं अगुप्तिवन्त जीव

मो॰ ज्योतिषी वे॰ वैमानिक का त॰ तीन दं॰ दंड म॰ मनदंड व॰ वचनदंड का॰ कायादंड ने॰ नारकी के त॰ तीनदंड प॰ प्ररूपा म॰ मनदंड व॰ वचनदंड का॰ कायादंड वि॰ विकलेन्द्रिय वर्जकर वे॰ वैमानिक ॥ १ ॥ ति॰ तीनप्रकार की ग॰ गर्हा म॰ मन से ए॰ कितनेक ग॰ गर्हते हैं व॰ वचन से ए॰ कितनेक ग॰ गर्हते हैं का॰ काया से ए॰ कितनेक ग॰ गर्हते हैं पा॰ पापकर्म अ॰ नहीं करने को अ॰ अथवा ग॰ गर्हा ति॰ तीनप्रकार की दी॰ दीर्घकाल ए॰ कितनेक ग॰ गर्हते हैं र॰ थोडाकाल

सियाण वेमाणियाण ॥ तओ दंडा प॰ त॰ मणदंडे वयदंडे कायदंडे णेरइयाण तओ दंडा प॰ त॰ मणदंडे वयदंडे कायदंडे । विगलिंदियवज्ज जाव वेमाणियाण ॥ १ ॥ तिविहा गरिहा प॰ त॰ मणसावेगे गरहइ वयसावेगे गरहइ कायसावेगे गरहइ । पावाण कम्माण अकरणयाए ॥ अहवा गरहा तिविहा प॰ त॰ दीहवेगे अद्ध गरहइ

कुमार्ग में प्रवर्तते दंडके अधिकारी होते हैं इसलिये दंडका स्वरूप कहते हैं मन, वचन और काया से दंडाने से मनोदंड, वचन दंड और काया दंड ये तीनों दंड एकेंद्रिय और पंचेन्द्रिय वर्ज कर अन्य सब दंडकों में पाते हैं ॥ १ ॥ पाप कर्म करना नहीं अथवा पापकर्म खराब है उसे मैं नहीं करूं सो गर्हणा यह गर्हणा तीन प्रकार की है मनसे आत्मा को अथवा अन्य को निंदना, वचनसे निंदना अथवा काया से पाप कर्म में नहीं प्रवर्तना गर्हणा के तीन भेद अन्य प्रकार से भी हैं बहुत

प० कितनेक ग० गर्हते हैं का० काया को प० कितनेक प० परिसाहरते हैं पा० पापकर्म अ० नहीं करने को ति० तीनप्रकार के प० प्रत्याख्यान म मन से प० कितनेक प० प्रत्याख्यान करते हैं व० वचन से प० कितनेक प० प्रत्याख्यान करते हैं का० काया से प कितनेक प० प्रत्याख्यान करते हैं ए० ऐसे ज जैसे ग० गर्हा त० तैसे प० प्रत्याख्यान में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ॥ १० ॥ त तीन

इस्सत्वेगे अद्ध गरहइ कायंवेगे पडिसाहरइ पावाण कम्माण अकरणयाए ॥ तिविहे पच्चक्खाणे प० तं० मणसावेगे पच्चक्खाइ वयसावेगे पच्चक्खाइ कायसावेगे पच्चक्खा इ । एव जहा गरहा तहा पच्चक्खाणेवि दो आलावगा भाणियव्वा ॥ १० ॥ तओ

काय के पापों की निंदा करना अल्प काल के पापों की निन्दा करना अथवा काया, को पाप में नहीं प्रवर्तीना प्रत्याख्यान के तीन भेद मन से प्रत्याख्यान, वचन से प्रत्याख्यान, और काया को पाप में नहीं प्रवर्ताना सो काया से प्रत्याख्यान ऐसे ही गर्हा जैसे दो आलापक प्रत्याख्यान में जानना अर्थात् बहुत काल के प्रत्याख्यान, अल्प काल के प्रत्याख्यान और काया को पाप में नहीं प्रवर्ताना ॥ १० ॥ पाप का प्रत्याख्यान करना सो परोपकार है इसलिये वृक्ष का दृष्टांत कहते हैं इस संसार में तीन प्रकार के वृक्ष हैं पत्रवाले, फूलवाले और फलवाले ऐसे ही तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं १ पत्रवाले वृक्ष

रु० वृक्ष प० पत्र पु० पुष्प फ० फल ए० ऐसे त० तीन पु० पुरुष जा० जात प० पत्र वृक्षसमान पु० पुष्पवृक्ष समान फ० फल वृक्षसमान ॥ ११ ॥ त० तीन पुरुष जा० जात णा० नामपुरुष ठ० स्थापना पुरुष द० द्रव्य पुरुष त० तीनपुरुष जा० जात णा० ज्ञान पुरुष दं० दर्शन पुरुष च० चारित्र पुरुष त०

रुक्खा प० तं० पत्तो वा पुप्फोवा फलोवा एवमेव तओ पुरिसजाया प० तं० पत्तो वा रुक्खसमाणे पुप्फोवा रुक्खसमाणे फलो वा रुक्खसमाणे ॥ ११ ॥ तओ पुरिसजाया प० त० णामपुरिसे ठवणपुरिसे दव्वपुरिसे तओ पुरिसजाया प० तं० णाणपुरिसे दसणपुरिसे चरित्तपुरिसे । तओ पुरिसजाया प० त० वेदपुरिसे

समान सो मूलसिद्धांत सुनावे फूलवाले वृक्ष समानसो अर्थ देनेवाले और १फलवाले वृक्ष समान सो सूत्र और अर्थ दोनों दनेवाले ॥ ११ ॥ भगवन्तने तीन प्रकार के पुरुष कहे हैं नाम से पुरुष सो नाम पुरुष, स्थापना पुरुष सो पुरुष प्रतिमा और द्रव्य पुरुष सो आगामिक काल में पुरुषपने उत्पन्न होवेंगे सो और पुरुष की तीन जाती कही ज्ञान सहित सो ज्ञान पुरुष, दर्शन सहित सो दर्शन पुरुष और चारित्र सहित सो चारित्र पुरुष और भी पुरुष के तीन भेद पुरुष वेद को अनुभवे सो वेद पुरुष, चिन्हपुरुष दाढीमुच्छ आदि वेष धरे सो और पुरुष शब्द करके बोला जाय सो जैसे घडा, आम्र वगैरह सो अभिलाप पुरुष

१ यह प्ररूप स्त्री और नपुंसक तीनों में पाता है

तीन पुरुष जा० जात वे० वेदपुरुष चि० चिन्ह पुरुष अ० अभिलाप पुरुष ॥ १२ ॥ ति० तीनप्रकार के पु० मनुष्य उ० उत्तम पुरुष म० मध्यम पुरुष ज० जघन्य पुरुष उ० उत्तम पुरुष ति० तीनप्रकार के ध० धर्म पुरुष भो० भोगपुरुष क० कर्म पुरुष ध० धर्मपुरुष—अरिहंत भो० भोगपुरुष—चक्रवर्ती क० कर्मपुरुष वासुदेव म० मध्यम पुरुष ति० तीनप्रकार के उ० उग्रकुलोत्पन्न भो० भोगकुलोत्पन्न रा० राजपुरुष ज०

चिंधपुरिसे अभिलाव पुरिसे ॥ १२ ॥ तिविहा पुरिसा प० तं० उत्तमपुरिसा मज्झिम पुरिसा जहन्नपुरिसा उत्तमपुरिसा तिविहा प० त० धम्मपुरिसा भोगपुरिसा कम्मपुरिसा । धम्मपुरिसा अरिहंता भोगपुरिसा चक्कवट्टी कम्मपुरिसा वासुदेवा मज्झिमपुरिसा तिविहा प० त० उग्गा भोगा राइन्ना । जहन्नपुरिसा तिविहा प० त० दासा भयगा

॥ १२ ॥ भगवानने तीन पुरुष कहे हैं उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, और जघन्य पुरुष उत्तम पुरुष के तीन भेद धर्म पुरुषसो क्षायिक समकितको धारन करनेवाले अरिहंत, भोग पुरुष मनोहर भोग भोगवनेवाले चक्रवर्ती और तीसरा कर्म पुरुष सो महा आरंभ कर नरक में जानेवाले वासुदेव मध्यम पुरुष के तीन भेद श्री ऋषभदेवजीने कोटवालपने स्थापन किया सो उग्रकुल, गुरुस्थानपने स्थापन किया सो भोगकुल, और (अपने समान) क्षत्रिय वंश में स्थापन किये सो राजकुल जघन्य पुरुष के तीन भेद दासी के पुत्र सो

अगम्य पुरुष ति० तीनप्रकार का दा० दास भ० भृत्य भ भागीदार ॥ १३ ॥ ति तीनप्रकार के म० मच्छ अं० अंडज पो० पोतज स० समूर्छिम अ० अंडजमच्छ ति० तीनप्रकार के इ० स्त्री पु० पुरुष ण० नपुंसक पो पोतजमच्छ ति० तीनप्रकार के इ० स्त्री पु० पुरुष ण० नपुंसक ॥ १४ ॥ ति० तीनप्रकार के प पक्षी अ० अडज पो० पोतज स० समूर्छिम अं० अंडजपक्षी ति तीनप्रकार के इ० स्त्री पु पुरुष न नपुंसक पो० पोतजपक्षी ति० तीनप्रकार के इ०स्त्री पु०पुरुष न० नपुंसक ए ऐसे ए० इस आ० आलापक

भाइयव्वगा ॥ १३ ॥ तिविहा मच्छा प०त० अडया पोयया समुच्छिमा । अडया मच्छा तिविहा प० त० इत्थी पुरिसा णपुंसगा पोयया मच्छा तिविहा प० तं० इत्थी पुरिसा णपुसगा ॥ १४ ॥ तिविहा पक्खी प० त० अडया पोयया समुच्छिमा अड या पक्खी तिविहा प० त० इत्थी पुरिसा नपुसगा पोयया पक्खी तिविहा प० त० इत्थी पुरिसा णपुसगा एवमेएण आभिलावेण उरपरिसप्पावि भाणियव्वा भुजपरिस-

दास, पैसे लेकर काम करे सो भृत्य और चतुर्थ भाग जिस को दियाजावे सो भागीदार ॥ १३ ॥ पानी में रहनेवाले जलचर मच्छ के तीन भेद अंडे से उत्पन्न होवे सो अण्डज, पोत (थेली) से उत्पन्न होवे सो पोतज और गर्भ बिना उत्पन्न होवे सो समूर्च्छिम उस में से अण्डज और पोतज मच्छ के तीन २ भेद होते हैं स्त्री, पुरुष और नपुंसक ॥ १४ ॥ खेचर मच्छ जैसे पक्षी के तीन भेद कहे हैं अंडज हंस प्रमुख पोतज वागुल प्रमुख और समूर्च्छिम खजन प्रमुख अंडज और पोतज के भी स्त्री पुरुष और नपुंसक ऐसे

सु उ० उरपरसर्प भा कहना भु० भुजपरसर्प भा कहना पे० ऐसे ॥ १८ ॥ ति० तीनमकार की इ० स्त्रियों प० मरूपी ति० तिर्यंचयोनि की म० मनुष्यणी दे० देवी ति० तिर्यंचयोनिकी स्त्री ति० तीनमकार की ज० जलचरी थ० स्थलचरी ख० खेचरी म० मनुष्यणी ति० तीनमकार की प०मरूपी क० कर्मभूमिकी अ० अकर्मभूमिकी अंतरद्वीप की ॥ १६ ॥ ति० तीनमकार के पु० पुरुष ति० तिर्यंचयोनि के पुरुष म० मनुष्य पुरुष द० देवपुरुष ति तिर्यंचयोनि के पुरुष ति० तिनमकार के ज० जलचर थ० स्थलचर ख०

प्पात्ति भाणियव्वा एव चेव ॥ १५ ॥ तिविहाओ इत्थीओ पण्णत्ताओ तंजहा तिरिक्ख जोणित्थीओ मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ तिरिक्खजोणित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ त० जलचरीओ थलचरीओ खहचरीओ मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ त० कम्मभूमियाओ अकम्मभूमियाओ अंतरदीवियाओ ॥ १६ ॥ तिविहा पुरिसा प० तं० तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्स पुरिसा देवपुरिसा तिरिक्ख जोणिय पुरि

तीन २ भेद जानना वैसे ही उरपर और भुजपर के तीन मकार जानना ॥ १८ ॥ तीन मकारकी स्त्री, तिर्यंच की, मनुष्य की और देव की तिर्यंच की स्त्री के तीन मकार जलचरी, स्थलचरी और खेचरी, मनुष्य की स्त्री तीन मकारकी कर्मभूमि के मनुष्यों की स्त्री, अकर्मभूमि के मनुष्यों की स्त्री और अंतर द्वीप के मनुष्यों की ॥ १६ ॥ तीन मकार के पुरुष तिर्यंच योनि के पुरुष, मनुष्य पुरुष और देव पुरुष तिर्यंच योनिके पुरुष तीन मकारके जलचर, स्थलचर और खेचर पुरुष ऐसे ही मनुष्यके कर्मभूमि अकर्मभूमि

खेचर म० मनुष्य पुरुष ति० तीनप्रकार के क० कर्मभूमि अ अकर्मभूमि अ० अतरद्वीप के पुरुष ॥१७॥
ति० तीनप्रकार के ण० नपुंसक ण० नारकी नपुंसक ति० तिर्यंचयोनि के नपुंसक म० मनुष्य नपुंसक
ति० तिर्यंचयोनि के नपुंसक ति तीनप्रकार के ज० जलचर थ० स्थलचर खे० खेचर म मनुष्य नपुंसक
ति० तीनप्रकार के क० कर्मभूमि अ० अकर्मभूमि अ० अंतरद्वीप के ॥ १८ ॥ ति० तीनप्रकार की ति०
तिर्यंचयोनि इ० स्त्री पु० पुरुष ण० नपुंसक ॥ १९ ॥ णे० नारकी को त० तीन ले० लेश्या क० कृष्ण

सा तिविहा प० त० जलचरा, थलचरा, खहचरा, । मणुस्सपुरिसा तिविहा प० त०
कम्मभूमिया अकम्मभूमिया अतरदीवया ॥ १७ ॥ तिविहा णपुसगा प० त० णेरइ
यणपुसगा तिरिक्खजोणिय णपुसगा मणुस्स णपुसगा तिरिक्खजोणिय णपुंसगा
तिविहा प० त० जलचरा थलचरा खहचरा मणुस्सणपुसगा तिविहा प० त० कम्म
भूमिया अकम्मभूमिया अंतरदीवगा ॥ १८ ॥ तिविहा तिरिक्खजोणिया प० त० इ
त्थी पुरिसा णपुसगा ॥ १९ ॥ णेरइयाण तओ लेस्साओ प० त० कण्ह लेस्सा नी

और अंतरद्वीप के मनुष्य ऐसे तीन भेद जानना ॥ १७ ॥ नपुंसक तीन प्रकार के नारकी के, तिर्यंच,
योनि के, और मनुष्य के तिर्यंच योनिवाले नपुंसक के तीन भेद जलचर, स्थलचर, और खेचर ऐसे
तीन भेद मनुष्य नपुंसक के तीन भेद कर्म भूमि के, अकर्मभूमि के और अंतरद्वीप के ॥ १८ ॥
तिर्यंच तीन प्रकारके स्त्री, पुरुष और नपुंसक ॥ १९ ॥ नारकी में तीन लेश्याओं कृष्ण, नील, और

ल्लेस्सा काउलेस्सा असुरकुमाराणा तओ लेस्साओ सकिलिट्ठाओ प•त•कण्ह लेस्सा नीलल्लेस्सा काउल्लेस्सा । एव जाव थणियकुमाराण। एव पुढविकाइयाणं आउ वणस्सइ काइयाणवि तेउकाइयाण वाउकाइयाणं बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाणवि तओ लेस्सा जहा णेरइयाणं पचेंदिय तिरिक्ख जोणियाणं तओ लेस्साओ सकिलिट्ठाओ प•तं•कण्ह ले-स्सा नील लेस्सा काउलेस्सा पचेंदियतिरिक्खजोणियाण तओ लेस्साओ अस किलिट्ठाओ प• त• तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा। एवं मणुस्साणवि वाणमतराण

लेश्या नी॰ नील लेश्या का॰ कापोत लेश्या अ॰ असुर कुमार को त॰ तीन ले॰ लेश्या स॰ संक्लिष्ट क॰ कृष्ण लेश्या नी॰ नीललेश्या का॰ कापुतलेश्या ए॰ ऐसे जा॰ यावत् थ स्थनितकुमार ए॰ ऐसे पु॰ पृथ्वी काय आ अप व॰ वनस्पतिकाय ते॰ अग्नि वा॰ वायुकाय बे बेइंद्रिय ते॰ तेइंद्रिय च॰ चौरेन्द्रिय को त॰ तीन लेश्या ज॰ जैसे ण॰ नारकी को पं॰ पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिवालेको त॰ तीन ले॰ लेश्या स॰ संक्लिष्ट क॰ कृष्ण लेश्या नी॰ नील लेश्या का॰ कापोत लेश्या पं॰ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले को त॰ तीन लेश्या अ॰ असंक्लिष्ट कापोत लेश्या असुर कुमारादि दश भुवनपति में तीन संक्लिष्ट लेश्याओं वैसे ही पांच स्थावर, तीन विगलेन्द्रिय और पांच स्थावर में तीन संक्लिष्ट लेश्याओं, तिर्यंच पंचेन्द्रिय में तथा मनुष्य में कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अशुभ और तेजु, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ पाती हैं वैमानिक देव में मात्र तीन शुभ

[1] असुर कुमारादि में चौथी तेजु लेश्या है परंतु संक्लिष्ट नहीं होने से ग्रहण नहीं की है

ते० तेसु प० पद्म सु० शुक्ल ए० ऐसे म० मनुष्यको वा० व्यंतरको ज० जैसे अ० असुरकुमारको वे० वैमानिकका त तीन लेश्या से० तेसु प० पद्म सु० शुक्ल ॥ २० ॥ ति० तीन स्थान से ता० तारा रूप च चले वि० विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते ठा० स्थान से स्थान को स० संक्रमते ता० तारारूप च० चले ति० तीन स्थान से दे० देव वि० विद्युत् क करे वि विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को इ० ऋद्धि जु० द्युति ज० यश ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार

त्ति जहा असुरकुमाराण वेमाणियाण तओ लेस्साओ प० त० तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा ॥ २० ॥ तिहिं ठाणेहिं तारा रूवे चलेज्जा त० विकुव्वमाणे वा परियारे माणे वा ठाणाओवा ठाण संकममाणेवा तारारूवे चलेज्जा । तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुया रं करेज्जा त० विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्सवा इड्ढिं जुइं जस बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कम उवदंसेमाणे देवे विज्जुयार करेज्जा ति-

लेश्याओं पाती हैं तेजु, पद्म और शुक्ल ॥ २० ॥ तीन कारण से तारे चलते हैं, १ वैक्रेय रूप बनाते, २ परिचारणा (मैथुन सेवन) करते ३ एक स्थान से अन्य स्थान शिघ्रतासे जाते अथवा कोई महर्द्धिक देवता वैक्रेय रूप बनाते एक स्थान से अन्य स्थान चलते हैं तीन कारन से देवताओं विजली जैसा उद्योत करे वैक्रेय रूपादि की विकुर्वणा करते, देवांगनासे भोग भोगते और तथारूप श्रमण, माहन को अपनी

प०पराक्रम ब०बताने को दे०देव वि०विद्युत् क करे ति०तीनस्थान से दे० देव थ स्थानित शब्द क० करे वि०विकुरणा करता ए०ऐसे ज०जैसे वि विद्युत् त०तैसे थ०स्थानित शब्द ॥२१॥ ति तीन स्थान से लो० लोकमें अं०अंधकार सि०होवे अ०अरिहंतका वो०विच्छेदहोवे अ०अरिहत प०प्ररूपा ध०धम वो० विच्छेद होते

हिं ठाणेहिं देवे थणियसद्द करेज्जा त० विउव्वमाणे एव जहा विज्जुयार तहेव थणि यसद्दंपि ॥ २१ ॥ तिहिं ठाणेहिं लोगंधयारे सिया तजहा अरहतेहिं वोच्छिज्जमाणे हिं अरहतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे ॥ तिहिं ठाणेहिं लोगु ज्जोए सिया तजहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहतेसु पव्वयमाणेसु अरहंताण णाणुप्पय महिमासु ॥ तिहिं ठाणेहिं देवंधयारेसिया त० अरहतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहतपण्ण

ऋद्धि, यश, कीर्ति, बल, वीर्य आदि पराक्रम बताने को ऐसे ही तीनों कारणों से देवताओं वैक्रेय कर स्तनित गर्जनादि शब्द भी करते हैं ॥ २१ ॥ तीन कारण से लोक में अंधकार होता है अरिहंत मोक्ष में जाते हैं तब, अरिहंत प्ररूपित धर्म का विच्छेद होता है तब, और पूर्वगत दृष्टिवाद सूत्र विच्छेद जाता है तब तीन कारण से उद्योत भी होवे अरिहंत का जन्म होवे, दीक्षा लेवे और केवल ज्ञान उत्पन्न होवे

पु० पूर्वगत वो० विच्छेद होते ति० तीनस्थान से लो० लोक में उ० उद्योत सि० होवे तं० यह ज० जैसे अ० अरिहंत का जा० जन्म होते अ० अरिहंत की प० प्रवर्ज्या होते अ० अरिहंत को णा० ज्ञान उ० उत्पन्न की म० महिमावक्त ति० तीनस्थान से दे० देवलोक में अं० अंधकार सि० होवे ति० तीनस्थान से दे० देवलोक में उ० उद्योत सि० होवे ति० तीनस्थान से दे० देवका स० सन्नि पात सि० होवे ए० ऐसे दे० देव उ० विशेषमिले दे० देव क० कलकल शब्द करे ति० तीनस्थान से दे०

पे धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे ॥ तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोओसिया तंजहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अहंताण णाणुप्पय महिमासु तिहिं ठा-णेहिं देवसन्निवाए सिया तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताण णाणुप्पय महिमासु ॥ एवं देवुक्कलिया देवकहकहए ॥ तिहिं ठाणेहिं देविंदा माणुस

उत्पन्न में तीन स्थान से देवता के भवन में अंधकार होवे अरिहंत मोक्ष जावे, अरिहंत धर्म विच्छेद जावे और द्वादशांग विच्छेद जावे तीन कारनों से देवता के भुवन में प्रकाश होवे अरिहंत का जन्म होवे, अरिहंतकी दीक्षा होवे, और उन को केवल ज्ञान उत्पन्न होवे उक्त तीनों कारनों से देवों का समुदाय एकत्रित होवे, देवउत्कालिक मिले और देवताओं का कलकल होवे उक्त तीनों कारनों से देवेन्द्र

[1] भरत ऐरवत आश्रित. [2] समुदाय मिलाप [3] हर्ष का नाद

इन्द्र मा० मनुष्य लोक में ह० शीघ्र आ० आते हैं ए० ऐसे सा० सामानिक ता० त्रायस्त्रिंश लो० लोकपाल दे० देव अ० अग्रमहिषी दे० देवियों प० परिषद् में बैठनेवाले देव अ० अनिक के अधिपतिदेव आ० आत्मरक्षकदेव मा० मनुष्य लोक में ह० शीघ्र आ० आते हैं ति० तीनस्थान से दे० देव अ० खडे होवे ए० ऐसे आ० आसन च० चले सी० सिंहनाद क० करे चे० चलवृष्टि क० करे ति० तीनस्थान से दे०

लोगं हव्वमागच्छंति तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पय महिमासु ॥ एवं सामाणिया तायत्तीसा लोगपाला देवा अग्गमहिसीओ देवीओ परिसोववन्नगा देवा अणियाहिवई देवा आयरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठेज्जा तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव । एवं आसणाइं चलेज्जा सीहणाय करेज्जा । चेलुक्खेवं करेज्जा ॥ तिहिं ठाणेहिं देवाणं चेइयरुक्खा चलेज्जा तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव तिहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा

सामानिक, (इन्द्र जैसी रीद्धि के धारक) त्रायस्त्रिंशक (गुरु के स्थान) लोकपाल, अग्रमहिषी तीन परिषदा के देवता, अनीक (कटक के देवता) और अंग रक्षक देवों मनुष्य लोक में आते हैं तीन स्थानक से देवताओं सिंहासन से उठे, देवता का आसन चले, सिंहनाद करे, और वस्त्रकी वृष्टि करे उक्त तीनों कारनों से ही सुधर्मादि सभा के द्वारपर रहे हुवे चैत्य वृक्षों चलते हैं और इन तीन कारनों से लोकान्तिक

देवना का चे चैत्यवृक्ष च० चले ति० तीनस्थान से लो० लोकान्तिक दे० देव मा० मनुष्य लोक में ए० शीघ्र आ० आवे शेष पूर्ववत् ॥ २२ ॥ ति तीनका दु दुष्कर प्रतिकार स० आयुष्मन् श्रमण ! तं यह अ०जैसे अ०मातापिता का भ० शेठका ध०धर्माचार्यका स०प्रभाव जैसा कालमें भी के०कोई पुरुष अ०माता पिता को स० शतपाक स० सहस्रपाक ति०तेलसे अ०मर्दनकरे सु०सुरभि ग०अष्टप्रकारकी गंध उ० उद्वर्तन करे ति० तीन पानी से म० स्नान कराव स० सर्वालंकार विभूषित क० कर म० मनोज्ञ था० उत्तम पाक सु० शुद्ध अ अठार प्रकार के वं० व्यंजनयुक्त भो० भोजन भो० जिमावे जा० जाव जीव पि पीठपे

मणुस लोग हव्वमागच्छेज्जा तं० अरहतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अर हृताण णाणुप्पयमहिमासु ॥ २२ ॥ तिण्ह दुप्पडियार समणाउसो तंजहा अम्मापि उणो भट्टिस्स धम्मायरियस्स सपाओत्रियण केइ पुरिसे अम्मापियर सयपागसहस्स पागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेत्ता सुरभिणा गंधट्टएण उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावेत्ता स व्वालंकारविभूसिय करेत्ता मणुन्न थालीपागसुद्ध अट्ठारस वंजणाउल भोअणं भोआ-

देवताओं मनुष्य लोक में आते हैं ॥ २२ ॥ तीन पुरुषों का प्रत्युपकार करने में नहीं आता है माता पिता का, भरण पोषण करनेवाला स्वामी का और धर्माचार्य का कोई पुरुष सदैव प्रातःकाल में अपने माता पिता को शतपाक, सहस्रपाक तेल से मर्दन कर सुगंधित द्रव्यों का लेप कर और तीन प्रकार का

सि॰ कदाचित् प॰ होजाय वे॰ तोभी व॰ उन अ॰ मातापिता का दु॰ दुष्कर प्रत्युपकार भ॰ होवे अ॰ अथवा से॰ वह त॰ उनका अ॰ मातापिता को के॰ केवलि प॰ प्ररूपा ध॰ धर्म को आ॰ विस्तारयुक्त प॰ प्रगटकर पं॰ प्ररूपकर ठा॰ स्थापन करता भ॰ होवे ते॰ इस से त॰ उन अ॰ मातापिता का सु॰ सुप्रत्युपकार भ॰ होवे स॰ आयुष्मन् श्रमण के कोई म॰ धनिक द॰ दरिद्री को स॰ बराबर बनावे त॰ तब से॰ वह द॰ दरिद्री स॰ बराबर होता प॰ फिर पु॰ पूर्वोपार्जित वि॰ विपुल भोग स॰ समृद्धि से॰

घेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवर्डिं सिया ते परिवहेज्जा तेणावि तस्स अम्मापिउस्स दुप्पडियारं भवइ अहेण से त अम्मापियरं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स अम्मापिउस्स सुप्पडियारं भवइ ॥ समणाउसो केइ महच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा तएण से दरिद्दे समुक्किट्ठसमाणे पच्छा पुरंचणं विउलभोग

पानी से स्नान कराकर, बहु मूल्य वस्त्राभूषणों से उन के शरीर को भूषित करे पश्चात् उत्तम प्रकारका पकाहुवा भोजन, अठारह प्रकारके शाक आदि जैसी रुचि होवे वैसा भोजन करावे और जीवन पर्यंत अपनी पीठपर उठावे इतना करने पर भी वह पुरुष मातापिताका ऋण मुक्त नहीं हो सकता है परंतु जो वह पुत्र अपने मातपिता को केवलिभाषित धर्म समझावे और उस के भेद भेदान्तर कहकर उस को धर्म में स्थिर करे तो वह मातापिता का प्रत्युपकार कर सकता है कोई धनिक किसी दरिद्री को द्रव्य देकर धनवान बनावे

मागमा हुवा वि० विचरे त० तब से० वह म० धनिक अ० अन्यदा क० कदापि द० दरीद्री हु० होमाव त० उस द० दरिद्री की अं० पास ह० शीघ्र आ० आवे त० तब से० वह द० दरिद्री त० उस भ० स्वामी को स० सर्वस्व द० देता से० उस से त० उनका दु० दुष्कर प्रतिकार भ० होवे अ० अथवा तं० उन भ० धनिक को क० केवलि प० प्ररूपा ध० धर्म को आ० विस्तारयुक्त प० प्रगटकर ठा० स्थापनकर्ता भ० होवे ते० इस से त० उस भ० धनिक का सु० सुप्रतिकार भ० होवे के० कोई त० तथारूप स० श्रमण मा०

समिद्ध समण्णागएयावि विहरेज्जा तएण से महच्चे अन्नया कयाइ दरिद्दी हुएसमाणे तस्स दरिद्दस्स अंतियं हव्वमागच्छेज्जा तएण से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वसवि दल यमाणे तेणावि तस्स दुप्पडियार भवइ अहेणं से तं भट्टिं केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पडियार भवइ ॥ केइ तहारूव

और वह दरिद्री धन प्राप्त किये बाद उत्तम प्रकारके भोग भोगता हुवा रहे अब वह भर्त्ता कर्म्मोदय से दरिद्री निर्धन बन जावे और अपना बनायाहुवा धनवान की पास आवे उस समय वह यदि सब द्रव्य धन को देवे और अपनी पास कुच्छ भी रखे नहीं तो भी वह ऋण मुक्त नहीं होता है परंतु केवलि भाषित धर्म समझा कर उस में स्थिर करे तो वह उस से ऋण मुक्त होता है कोई पुरुष किसी मुद्राधारी साधु के मुखसे आर्य धर्म का एक पदमात्र श्रवण कर, उस की रुचिकर आयुष्य पूर्ण हुवे बाद देवलोक में जाकर देवता हुवा

ब्राह्मण की अं० समीप ए० एक भी आ० आर्य धर्म को सो० सुनकर नि० नमस्कारकर का० काल के अवसर में का० काल करके अ० अन्य दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न होवे त० तब से० वह दे० देव तं० उस ध० धर्माचार्य को दु० दुर्भिक्षदेशसे सु० सुभिक्षदेश में सा० लेआवे क० अटवी में से णि० वसति में सा० लेआवे दी० बहुत काल के रो०रोगसे अ० मास वि० दूरकरे तं० उससे भी त० उस ध० धर्माचार्य का दु० दुष्कर प्रतिकार भ० होवे अ० अथवा से०वह तं० उस ध०धर्माचार्य को के० केवली प० प्ररूपा ध० धर्म से भ० भ्रष्ट होवे को भु० वारवार के० केवली प० प्ररूपा ध०

समणस्सवा माहणस्स वा अतिय मेगमवि आरियं धम्म सोच्चा निसम्म का लमासे कालकिच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने तएणसे देवे त धम्मायरियं दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्खदेसं साहरेज्जा कंताराओ वा णिक्कतार करेज्जा दीह कालिएणं वा रोआतंकेण अभिभूय समाण विमोएज्जा तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दु प्पडियार भवइ अहेणं से त धम्मायरिय केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भट्ठ समाणं

और अपना धर्माचार्य का प्रत्युपकार करने के लिये दुष्काल पड़ा होवे और आहार पानी जहां कठिनता से मिलते होवे वैसे क्षेत्र में से अच्छेक्षेत्रमें लाकर रखे, जंगल में हावे तो वसति में लाकररखें, शरीरमें भयंकर रोगों उत्पन्न हुवे होवें तो उस का निवारन करें इतना करनेपर भी वह धर्माचार्य का ऋणसे मुक्त नहीं होसके

धम से आ० विस्तारयुक्त जा० यावत् ठा० स्थापन करके भ० होवे ते० तब त० उस ध० धर्माचार्य का मु० सुप्रतिकार भ० होवे ॥ २३ ॥ ति० तीनस्थान से स० युक्त अ० अनगार अ० अनादि अ० अनंत दी० दीर्घ चा० चारगति सं० संसार अटवी को वि उल्लंघनकरे त० वह ज० जैसे अ नियाणा रहित दि० समदृष्टियुक्त जो० योगउपधान ॥ २४ ॥ ति० तीनप्रकार की ओ अवसर्पिणी प० प्ररूपी सं० यह उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ए० ऐसे छ० छहकाल भा० कहना जा० यावत् दु० दुषम दुषमा ति

भुजोवि केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता जाव ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स धम्मा यरिस्स सुप्पडियारं भवइ ॥ २३ ॥ तिहिं ठाणेहिं सपन्ने अणगारे अणाइयं अणवदग्ग दीहमद्धं चाउरंतससारकंतार वितिवएज्जा तजहा अणियाणयाए दिट्ठि संपन्नयाए जोग वाहियाए ॥ २४ ॥ तिविहा ओसप्पिणी प० त० उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना एवं छप्पि य समाओ भाणियव्वाओ जाव दुसमदुसमा तिविहा ओसप्पिणी प० त० उक्कोसा

परंतु यदि धर्माचार्य धर्म से पतित होता होवे तो उन का धर्म समझा कर धर्म में स्थिर करे तो वह ऋणमुक्त होता है ॥ २३ ॥ अनेक प्रकार की धर्म करणी करके ऋद्धि का नियाणा नहीं करनेवाले, शत्रुमित्र पर समदृष्टि रखनेवाले, और योग उपधान तप करनेवाले साधु अनादि अनंत मनुष्यादि चतुर्गतिक संसार रूप अटवि उल्लंघन करते हैं ॥२४॥ तीन प्रकारकी अवसर्पिणी कही उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य पहिला सुखमा सुखमी आरा तथा दूसरा सुखम सो उत्कृष्ट अवसर्पिणी काल, तीसरा चौथा मध्यम और पांचवा

मज्झिमा जहन्ना एव छप्पिय समाओ भाणियव्वाओ जाव सुसमसुसमा ॥ २५ ॥ तिहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा त• आहारज्जिमाणेवा पोग्गले चलेज्जा विउव्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा ठाणाओठाण सकामेज्जमाणेवा पोग्गले चलेज्जा ॥ २६ ॥ तिविहा उवही पण्णत्ता तजहा कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभडमत्तोवही एव असुर

तीनप्रकार की उ० उत्सर्पिणी प० प्ररूपी उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ए० ऐसे छ० छकाल भा० कहना जा० यावत् सु० सुषम सुषमा ॥ २५ ॥ ति० तीनस्थान से अ० अच्छिन्न पो० पुद्गल च० चले आ० आहार करते पो० पुद्गल च० चल वि० विकुर्वणा करते पो० पुद्गल च० चले ठा० स्थान से ठा० स्थान में सं० संक्रमते पो० पुद्गल च० चले ॥ २६ ॥ ति० तीनप्रकार की उ० उपाधि प० प्ररूपी त० यह ज० जैसे क० कर्म उपाधि स० शरीर उपाधि बा० बाह्य भं० भंडोपकरण उपाधि ए० ऐसे अ०

छठा जघन्य ऐसे ही उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य से उत्सर्पिणीकाल का भेद पहिला दुखमादुखमी और दूसरा दुखमी ऐसे दो जघन्य काल तीसरा दुसमा दुखमी और चौथा सुखमा दुखमी सो मध्यम काल और पांचवा सुखमी तथा छठा सुखमा सुखमी सो उत्कृष्ट काल ॥ २५ ॥ तीन प्रकार से शस्त्रादि शस्त्रों से बिना छेदायें पुद्गल चलते हैं जीव आहारपने पुद्गल को ग्रहण करे तब देवता मनुष्य वैक्रेय करे तब और इत्यादि पुद्गलों को एक स्थान से अन्य स्थान रखे तब चलते हैं ॥ २६ ॥ भगवन्तने तीन प्रकारकी

असुर कुमार को भा॰ कहना ए॰ ऐसे ए॰ एकेन्द्रिय ने॰ नारकी को व॰ वर्जकर जा॰ यावत् वे॰ वैमानिक का अ॰ अथवा ति॰ तीनप्रकार की उ॰ उपाधि स॰ सचित्त अ॰ अचित्त मी॰ मिश्र ए॰ एसे ने॰ नारकी को नि॰ मरेव जा॰यावत् वे॰वैमानिक को ति॰तीनप्रकार का प॰परिग्रह क॰कर्म परिग्रह स॰ शरीर परिग्रह बा॰ बाह्य भं॰ भंडोपकरण परिग्रह ए॰ एसे अ॰ असुर कुमार को ए॰ ऐसे ए॰ एकेन्द्रिय ने॰ नारकी को व॰ वर्जकर जा॰ यावत वे॰ वैमानिक को अ॰ अथवा ति॰ तीनप्रकार का प॰ परिग्रह स॰

कुमाराणं भाणियव्व एवं एगिंदिय नेरइय वज्ज जाव वेमाणियाणं । अहवा तिविहा उवही प॰त॰ सचित्त अचित्ते मीसए । एवं नेरइयाणं निरंतर जाव वेमाणियाणं । तिविहे परिग्गहे प॰ त॰ कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिर भंडमत्तपरिग्गहे । एवं असुरकुमाराणं एवं एगिंदिय नेरइयवज्ज जाव वेमाणियाणं ॥ अहवा तिविहे परिग्ग

उपाधि और तीन प्रकारका परिग्रह फरमाया है आठ कर्म रूप उपाधि, पांच शरीर रूप, और बाहिर के भर उपकरणादिक. उन का संग्रह सो उपाधि और उस में ममत्व सो परिग्रह यह नरक व एकेन्द्रिय को छोर कर अन्य सब दंडकों में पाता हैं (नरक में और एकेन्द्रिय में शरीर है परंतु उपकरण न होने से इस में नहीं गिनेगये हैं) और भी तीन प्रकारकी उपाधि और तीन प्रकारका परिग्रह सचित्त, अचित्त

सचित्त अ॰अचित्त मी॰मिश्र ए॰ऐसे णे॰नारकीको नि॰निरंतर जा॰यावत् वे॰वैमानिकको ॥२७॥ ति॰तीन प्रकार का प॰प्रणिधान म॰मनप्रणिधान व॰वचन प्रणिधान का॰कायप्रणिधान जा॰यावत् वे॰वैमानिकको सं॰साधुको ति॰तीनप्रकार का सु॰सुप्रणिधान म॰मनसुप्रणिधान व॰ वचन सुप्रणिधान का॰कायसुप्रणिधान ति॰तीनप्रकार का दु॰ दुष्प्रणिधान म॰ मनदुष्प्रणिधान व॰ वचन दुष्प्रणिधान का॰ कायदुष्प्रणिधान ए॰ एसे

हैं प॰ तं॰ सच्चित्ते अच्चित्ते मीसए एवं णेरइयाणं निरंतर जाव वेमाणियाणं ॥२७॥ तिविहे पणिहाणे प॰ तं॰ मणपणिहाणे वयपणिहाणे कायपणिहाणे एवं पचेंदियाणं जाव वेमाणियाणं तिविहे सुप्पणिहाणे प॰ तं॰ मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे प॰ तं॰ मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे। तिविहे दुप्पणिहाणे प॰ तं॰ मणदुप्पणिहाणे वय

और मिश्र इन का संग्रह सो उपाधि और ममत्व सो परिग्रह ये तीनों उपाधि चौबिस दंडकों में पाती हैं ॥ २७ ॥ भगवन्तने तीन प्रकार के प्रणिधान फरमाये हैं मन प्रणिधान, वचन प्रणिधान और काया का प्रणिधान. ये तीनों प्रणिधान पंचेन्द्रिय को यावत् वैमानिक को होते हैं तीन प्रकार के सुप्रणिधान होते हैं मन सुप्रणिधान, मन में अच्छा मन, वचन सुप्रणिधान-सत्य वचन और कायसुप्रणिधान सो काया से पाप नहीं करना ये तीन चारित्रिय पुरुष को होते हैं तीन दुष्प्रणिधान मन दुष्प्रणिधान, खराब मन

१ मन प्रमुख की एकाग्रता करना सो प्रणिधान.

प० पंचेन्द्रिय जा० यावत् वे वैमानिक ॥ २८ ॥ ति० तीनप्रकार की जो० योनि प० प्ररूपी सी० शीत ऊष्ण सी० शीतोष्ण ए० ऐसे ए० एकेन्द्रिय को वि० विकलेन्द्रिय ते० तेउकाय व० वर्जकर स० समूर्च्छिम पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यच योनिवाला स० समूर्च्छिम म० मनुष्यको ति० तीनप्रकार की योनि स० सचित्त अ० अचित्त मी० मिश्र ए० एकेन्द्रिय वि० विकलेन्द्रिय सं० समूर्च्छिम प० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यचयोनि वाले को स० समूर्च्छिम म० मनुष्य को ति० तीनप्रकारकी योनि स० संवृत वि० विवृत स० संवृतविवृत ति०

दुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे एवं पचेंदियाणं जाव वेमाणियाणं ॥ २८ ॥ तिविहा जोणी पण्णत्ता तंजहा सीआ उसिणा सीओसिणा । एवं एगिंदियाणं विगलेंदियाणं तेउकाइयवज्जाणं समुच्छिमपचेंदियतिरिक्खजोणियाणं समुच्छिममणुस्साणय तिविहा जोणी प० तं० सचित्ता अचित्ता मीसिया एवं एगिंदियाणं विगलेंदियाणं

वचन दुष्प्रणिधान असत्य वचन और काया दुष्प्रणिधान सो काया से पाप करना ये तीनों पंचेन्द्रिय यावत् वैमानिक में होवे ॥ २८ ॥ भगवतने संसारी जीवों उत्पन्न होने की तीन योनि बतलाई हैं शीत, ऊष्ण और शीतोष्ण यह तीनों योनियों तेउकाय छोड कर चारों स्थावरों में, तीन विकलेन्द्रिय में, समूर्च्छिम तिर्यच पंचेन्द्रिय में और समूर्च्छिम मनुष्य को होती हैं (प्रथम से तीसरी नरक में एक शीत योनि, चौथी पांचवी में शीत और ऊष्ण छट्ठी सातवी नरक में मात्र ऊष्ण योनि सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यच पंचेन्द्रिय में और देवता को एक मिश्र योनी और तेउकाय को ऊष्ण) और भी तीन प्रकारकी योनि

तीन प्रकार की योनि कु० कुम्मुन्नया सं० संखावर्त्ता व० वंशीपत्ता कु० कुम्मुन्नया योनि उ० उत्तम पुरुष की मा० माता को कु० कुम्मुन्नया योनि में ति० तीन प्रकार के उ० उत्तम पुरुष ग० गर्भ में व० आवे हैं अ० अरिहंत च० चक्रवर्ति ब० बलदेव वासुदेव स० संखावर्त्ता योनि इ० स्त्री रत्न को स० संखावर्त्ता योनि में ब० बहुत जी०

संमुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणियाण समुच्छिम मणुस्साणय ॥ तिविहा जोणी प० तं० संवुडा वियडा संवुडवियडा ॥ तिविहा जोणी प० तं० कुम्मुन्नया संखावत्ता वंसीवत्तिया कुम्मुन्नयाण जोणी उत्तमपुरिसमाऊण कुम्मुन्नयाण जोणिए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमति तंजहा अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा संखावत्ताण जोणी इत्थि

सचित्त अचित्त और मिश्र, पांच स्थावर, तीन विगलेन्द्रिय समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय और समूर्च्छिम मनुष्य को तीनों योनियों देवता और नारकी को अचित्त और संज्ञी मनुष्य व संज्ञी तिर्यंच को मिश्र योनि और भी तीन योनि कहते हैं संवृत-संकुचित ढकी हुई योनि, विवृत—पसरी हुई या उघाडी और संवृतविवृत सो कुच्छ ढकी हुई कुच्छ उघाडी या कुच्छ सकडी कुच्छ पसरी नारकी देवता और पांच स्थावर को संवृत योनि विकलेन्द्रिय, असंज्ञी मनुष्य और असंज्ञी तिर्यंच को विवृत और संज्ञी मनुष्य और संज्ञी तिर्यंच को संवृत विवृत और भी तीन प्रकार की योनि कही है कूर्म्मोन्नता, शंखावर्त्ता और वंशीपत्ता कूर्म्मोन्नता योनि

जीव यो पुरुष व० आते हैं वि० व्युत्क्रमते हैं च० चवते हैं उ० उपजते हैं णो० नहीं णि० उत्पन्न होते हैं व० वशीपत्ता योनि वि० पृथक् ज० मनों को व० वशीपत्ता को योनि में व० बहुत पि पृथक् ज० जन ग गर्भ में व० आते हैं ॥ २२ ॥ ति० तीन प्रकार की त० तृण वनस्पति काय सं० संख्याता जीव की अ० असंख्याता जीव की अ० अनन्ता जीवकी ॥ १ ॥ ज० जम्बूद्वीप का भा० भरत क्षेत्र में स०

परयणस्स सस्सावत्ताएण जोणीए बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमति विउक्कमति चयंति उववज्जंति नोचेवण णिप्फज्जति । वसीपत्ताण जोणी पिहुजणस्स वसीवत्तियाएण जोणी ए बहवे पिहुजणे गब्भंव क्कमति ॥२९ ॥ तिविहा तणवणस्सइ काइया प० तं० स खेज्जजीविया असंखेज्जजीविया अणंतजीविया ॥ ३० ॥ जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे

उत्तम पुरुषों की माता को होती है इस में तीन प्रकार के उत्तम पुरुष उत्पन्न होते हैं १ तीर्थंकर, चक्रवर्ती और बलदेववासुदेव संखावर्ता चक्रवर्ती के स्त्री रत्न (श्री देवी) को होती है उस में अनेक पुद्गल व जीवों उत्पन्न होते हैं, और नष्ट होजाते हैं परन्तु निपजते नहीं हैं वशीपत्ता सब सामान्य मनुष्यों की माता को होती है उस में गर्भस्थ बहुत जीव उत्पन्न होते हैं ॥ २९ ॥ तीन प्रकार की वनस्पति संख्याते जीव जिस में उत्पन्न होवे सो, असंख्याते जीव उत्पन्न होवे सो और अनंत जीव उत्पन्न होवे सो ॥ ३० ॥

तीन ति० तीर्थ मा० मागध व० वरदाम प० प्रभास ए० ऐरवत क्षेत्र में जं० जम्बूद्वीप के म० महाविदेह क्षेत्र में ए० एकेक च० चक्रवर्ति आदि वि० विजय में त० तीन ति० तीर्थ मा० मागध व० वरदाम प० प्रभास ए० ऐसे धा० धातकी खंड में पु०पूर्वार्ध प०पश्चिमार्ध में पु०पुष्करार्ध द्वीप के पु० पूर्वार्ध प०पश्चिमार्ध में ॥ १७ ज० जम्बूद्वीप के भ० भरत क्षेत्र में ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु० सुषमकाल ति तीन कोडाकोडी सागरोपम का० काल हो० या० ए० ऐसे ओ० अवसर्पिणी में ण० विशेष आ० आगामिक

तओ तित्था प० तं० मागहे वरदामे पभासे एव एरवएवि । जंबूदीवे दीवे महाविदेहवासे एगमेगे चक्कवट्टिविजए तओ तित्था प० त० मागहे वरदामे पभासे । एव धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि पच्चात्थिमद्धेवि पुक्खरवरदीवड्ढे पुरच्छिमद्धेवि पच्चात्थिमद्धे वि ॥ २१ ॥ जंबूदीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए तिन्निसागरोवमकोडाकोडीओ कालो हुत्था । एव ओसप्पिणीए णवर प० । आगमे

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र ऐरवत क्षेत्र में, महाविदेह क्षेत्र के प्रत्येक चक्रवर्ति विजय में ऐसे ही धातकी खंड के पूर्व पश्चिम के भरत ऐरवत क्षेत्र में, महाविदेह क्षेत्र के प्रत्येक चक्रवर्तादि विजय में अलग २ और ऐसे ही पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व पश्चिम के भरत ऐरवत क्षेत्र में और महाविदेह क्षेत्र के प्रत्येक विजय में मागध, वरदाम और प्रभास ये तीन तीर्थ हैं ॥ २१ ॥ जम्बूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्र में वैसे ही धातकी

ो में भ० होगा ए० ऐसे धा०धातकी खंड में पु०पूर्वार्ध में प० पश्चिमार्ध में ए० ऐसे पु० अर्ध
ं पु० पूर्वार्ध में प० पश्चिमार्ध में का० काल भा० कहना ॥ ३२ ॥ ज० जंबूद्वीप के भ०
क्षेत्र में ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु०सुषमसुषमा का० काल में म०मनुष्य ति० तीन गाउ
ऊंचपने ति० तीन पल्योपम प० उत्कृष्ट आयुष्य पा० पाला ए० ऐसे इ० इस ओ०
आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में ज० जंबूद्वीप के दे० देवकुरु उत्तरकुरुक्षेत्र में म० मनुष्य

उस्साप्पिणीए भविस्सइ ॥ एवं धाइयसंडे पुरात्थिमद्धेवि पच्चात्थिमद्धेवि । एवं
रवीवड्ढे पुरात्थिमद्धे पच्चात्थिमद्धेवि कालो भाणियव्वो ॥ ३२ ॥ जम्बूद्दीवे दी
रवएसु वासेसु तीयाए उस्साप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया तिन्नि गा-
उइं उच्चत्तेण तिन्निपलिओवमाइं परमाउ पालइत्था एवं इमीसे ओसाप्पिणीए
साए उस्साप्पिणीए ॥ जम्बूद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया तिन्नि गाउआ

र्ध के पूर्व पश्चिम भरत ऐरवत में अतीत कालकी उत्सर्पिणी, वर्तमान की अवसर्पिणी और
ालकी उत्सर्पिणी के सुषम नामक आरा तीन कोडाकोड सागरोपम का है ॥ ३२ ॥
भरत व ऐरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी, वर्तमान अवसर्पिणी और आगामिक उत्सर्पिणी के

ति० तीन गाउ उ० ऊंचे उ० ऊंसपन्न ।प० तीन पल्योपम प० उत्कृष्ट आयुष्य पा० पालते हैं ए० एसे जा० यावत् पु० अर्ध पुष्कर द्वीप के प० पश्चिमार्ध में ॥ ११ ॥ ज० जम्बूद्वीप के भ० भरत ऐरवत क्षेत्र में ए० एकेक ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी में ध० तीन वंश उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्न होंगे अ० अरिहंत वंश च० चक्रवर्ति वंश द० दशार वंश ए० ऐसे जा० यावत् पु० अर्ध पुष्कर के प० पश्चिमार्ध में जं० जम्बूद्वीप के भ० भरत ऐरवत क्षेत्र में ए० एकेक ओ० अवसर्पिणी उ० उत्स

इं उड्ढं उच्चत्तेणं प० तिन्निपलिओवमाइं परमाउं पालयंति । एवं जाव पुक्खरवरदी-वड्ढ पच्चत्थिमद्धे ॥ १२ ॥ जंबूदीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणी उस्सप्पिणीए तओ वंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा तं० अरहंतवंसे चक्कवट्टिवंसे दसारवंसे । एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धे ॥ जंबूदीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणीउस्सप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा

ऐसे ही देवकुरु उत्तरकुरु में मनुष्य का तीन कोस का शरीर और उत्कृष्ट तीन पल्योपम का आयुष्य ऐसे ही धातकी खंड और पुष्करार्धद्वीप के पूर्व पश्चिम भाग के देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रों के संबंध में मानना ॥ ११ ॥ जम्बूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्र में, धातकी खंड और पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व पश्चिम भरत ऐरवत क्षेत्र में अतीत, अनागत काल की उत्सर्पिणी व वर्तमान काल की अवसर्पिणी तीन वंशों की उत्पत्ति होती है अरि

... उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्न होंगे अ० अरिहंत
दिणी में त० तीन उ० उत्तम पुरुष व० उत्पन्न हुवे उ०
च० चक्रवर्ति ब० बलदेव वासुदेव ए० ऐसे जा० यावत् पु० पुष्करार्ध द्वीप के प० पश्चिमार्ध में त० तीन
म० यथा मायुष्य पा० पालते हैं अ० अरिहंत च० चक्रवर्ति ब० बलदेव वासुदेव त० तीन म० मध्यम मायुष्य
पा० पालते हैं अ० अरिहंत च० चक्रवर्ति ब० बलदेव वासुदेव ॥ २४ ॥ बा० बादर तेऊकाया की उ०
उत्कृष्ट ति० तीन ग० अहोरात्रि की ठि० स्थिति बा० बादर वायुकाया की उ० उत्कृष्ट ति० तीन हजार

उप्पज्जतिवा उप्पज्जिस्सतिवा तं० अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा । एवं जाव पु
क्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ॥ तओ अहाउय पालेंति तं० अरहंता चक्कवट्टी बलदेव
वासुदेवा तओ मज्झिममाउय पालयंति तंजहा अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा
॥२४॥ बायरतेउकाइयाण उक्कोसेण तिन्निराइंदियाइं ठिई प० । बायरवाउकाइयाण
उक्कोसेण तिन्निवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ॥ २५ ॥ अहभंते सालीण वीहीण गोधू

देव का वंश, चक्रवर्ती का वंश और दशारका वंश (बलदेव और वासुदेव का वंश) तीन उत्तम पुरुष
उत्पन्न होते हैं अरिहंत, चक्रवर्ती और बलदेव वासुदेव उक्त तीनों पूर्ण और मध्यम (छद्मावस्था बिना
का) आयुष्य पालते हैं ॥ २४ ॥ बादर तेऊकाय की उत्कृष्ट तीन अहोरात्रि की और बादर वायुकाया
की उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष की स्थिति कही है ॥ २५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! शालि व्रीहि, गेहूं, जव,

११ का १८० १स्यात प० मरूपा ॥ ३८ ॥ अ० अहो भगवन् । सा० शाल वी० व्रीहि गो० गेहूं ज० यव अ० जवजव ए० इन ध० धान्य को को० कोठे में रखे प० पाला में रखे मं० मांचेपर रखे मा माल्मपर रखे ओ० मथकर लि० लीपकर लं० लंछनांकित मु० मुद्रा कर पि० ढककर के० कितना काल जो० योनि सं० रहती है ज० जघन्य अं० अन्तर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट ति० तीन संवत्सर ते० इस उपरांत जो० योनि प० मिलायमान होती है ते० इस उपरांत जो० योनि प०परिध्वंस पाती है ते० उपरांत वि०

माण जवाण जवजवाणं एएसिण धन्नाणं कोट्ठाउत्ताण पल्लाउत्ताण मंचाउत्ताणं मा लाउत्ताण ओलित्ताण लित्ताण लंछियाण मुद्दियाण पिहियाण केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ? जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिन्निसंवच्छराइ तेणपर जोणी पमिलायइ तेणपरं जोणी पविद्धंसइ तेणपरं जोणी विद्धंसइ तेणपर बीए अबीए भवइ तेणपर जोणी वोच्छेदे प० ॥३९॥ दोचाएण सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण तिन्निसागरोवमाइ ठिई प० । त

जवजव इन अनाजों को कोठे में, कोठी में, पाले में, घरघर में, मेंढी में इत्यादि स्थानों में रखकर चारों तरफ लींप, उस को अच्छी तरह मजबूत बना कर यत्नापूर्वक रखे तो कितने दिन तक वे योनि सहित रह सकते हैं ? जघन्य अंतरमुहूर्त उत्कृष्ट तीन वर्ष. तीन वर्ष पीछे योनि म्लान हो जाती है, बीज

विनाश पाती है वे० इस उपरांत बी० बीज म० अबीज भ० होता ते० इस उपरांत जो० योनि वो० विच्छेद होवे ॥ १९ ॥ दो० दूसरी स० शर्करप्रभा पु० नरक में ने० नारकी की उ० उत्कृष्ट ति० तीन सागरोपम ठि० स्थिति त० तीसरा वा० वालुप्रभानरक में ज० जघन्य ने० नारकी की ति० तीन सागरोपम ठि० स्थिति पं० पांचवी धू० धूम्रप्रभा नरक में ति० तीन लाख नरकावास ति० तीन नारकी में ने० नारकी को उ० उष्ण वेदना प० प्ररूपी प० पहिली दो० दूसरी त० तीसरी ति० तीन नरक में ने० नारकी उ० उष्णवेदना प० अनुभवते वि० विचरते हैं तं० वह प० पहली दो० दूसरी त० तीसरी ॥ १७ ॥ त० तीन लो० लोक स० समपक्ष प० देखाते अ० अप्रतिष्ठान नरक ज० जम्बूद्वीप स० सर्वार्थ

वाएण वालुयप्पभाए पुढवीए जहन्नेण णेरइयाण तिन्निसागरोवमाइं ठिई प० पच माएण धूमप्पभाए पुढवीए तिन्निनिरयावास सयसहस्सा प० तिसुण पुढवीसु णेरइया णं उसिणवेयणा प० तं० पढमाए दोच्चाए तच्चाए। तिसुणं पुढवीसु णेरइया उसिण वेयण पच्चणुभवमाणा विहरंति त० पढमाए दोच्चाए तच्चाए ॥ ३७ ॥ तओ लोगे

अचीत होजाते हैं और उत्पन्न होने की शक्ति रहित होते हैं ॥ १९ ॥ दूसरी शर्कर प्रभा पृथ्वी में नरक के नेरीयों की स्थिति उत्कृष्ट तीन सागरोपम की है और वालुक प्रभा के नेरियों की जघन्य स्थिति तीन सागरोपम की है पांचवी धूम्रप्रभा पृथ्वी में तीन लाख नरकावास रहे हुवे हैं पहिली, दूसरी और तीसरी नरक में उष्ण वेदना है और यहां के नेरीयों भी उष्ण वेदना वेदते हुवे विचरते हैं ॥ १० ॥ एकके ऊपर

सिद्धविमानव० गीर्म लोक में स० सरिखे स० ऽ९८स स० समतिदिक्० सीमंत नरक वास स० समयक्षेत्र ई० ईषत् प्राग्भार पृथ्वी ॥ १८ ॥ त० तीन समुद्र प० स्वभाव से उ० उदक रस का० कालोदधि पु० पुष्करो दधि स० स्वयंभूरमण समुद्र त० तीन समुद्र ब० बहुत म० मच्छ क० कच्छ से भा० भरे हुवे ल० लवण समुद्र का० कालोदधि स० स्वयंभूरमण समुद्र ॥ १९ ॥ त० तीन लो० लोक में णि० निःशील णि० व्रत

समासपक्खि सपडिदिसिं प० त० अप्पइट्ठाणे णरए जम्बूदीवे दीवे सव्वट्ठसिद्धे महावि माणे ॥ तओ लोगे समासपक्खि सपडिदिसिं प० त० सीमंतए णरए समयखेत्ते ईसिं पब्भारापुढवी ॥ ३८ ॥ तओ समुद्दा पगईए उदगरसेण प० तं० कालोदे पुक्खरो दे सयभुरमणे तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा प० त लवणे कालोदे सयंभु रमणे ॥ ३९ ॥ तओ लोगे णिस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा णिपच्चक्खाणपो-

एक और परस्पर समतुल्य एक लक्ष योजन की लम्बाई चौडाइवाले तीन स्थान भगवंतने फरमाये हैं १ सातवी नरक का अप्रतिष्ठान नरकावासा, २ जम्बू द्वीप और ३ सर्वार्थ सिद्ध विमान ऐसे ही और भी तीन स्थान बरोबर पैंतालीस लक्ष योजन के कहे हैं १ पहिली नरक का सीमंत नामक नरकावासा २ समय क्षेत्र सो अढाइ द्वीप ३ इषत् प्राग्भार पृथ्वी नामक सिद्ध शिला ॥ १८ ॥ तीन समुद्र के पानी का स्व माद है जैसे १ कालोदधि २ पुष्कर और स्वयंभूरमण ऐसे ही तीन समुद्र में

तिं० तीन प्रकार का [illegible] प्ररुपा णा० नामेंद्र ठ० स्थापना इन्द्र द० द्रव्येंद्र ति० तीन प्रकारका लोक प० पारिम लोक ति० तीन प्रकारका लोक उ० उर्ध्वलो प्रकारका लोक णा० ज्ञान लोक द० दर्शन लोक च० चारित्र लोक ति० तीन प्रकारका लोक उ० उर्ध्वलो क अ० अधोलोक ति० तिर्यग् लोक ॥ १ ॥ च० चमरेंद्र की अ० असुरेन्द्र की अ० असुरकुमार राजाकी

तिविहे लोगे पन्नत्ते तजहा णामलोगे ठवणलोगे दव्वलोगे तिविहे लोगे प० तं० णा-
णलोगे दंसणलोगे चरित्तलोगे । तिविहे लोगे प० त० उड्ढलोगे अहोलोगे तिरियलो
गे ॥ १ ॥ चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तं०

और रात्रि के प्रथम और अन्तिम प्रहर में पठन कियाजाता है ॥ ८२ ॥ यह तीसरा ठाणा का पारम्भ

*

*

उद्देशा पूर्ण हुवा

भगवंतने तीन प्रकारके लोक कहे हैं पचदह रज्ज्वात्मक सो नाम लोक, उस की स्थापना करना सो स्थापना लोक, और पंचास्तिकाय के पिण्डरूप सो द्रव्य लोक और भी तीन प्रकार के लोक कहे हैं केवल ज्ञान आदि ज्ञान लोक, सम्यक्त्वादि दर्शन लोक, सामायिकादि चारित्र लोक और भी तीन लोक देश उना सातराजु प्रमाण ऊर्ध्व लोक, देशउणा सात राजु प्रमाण अधोलोग, और अठारहसो योजन प्रमाण का तिर्च्छा लोक ॥ १ ॥ भगवंतने सब इन्द्रों की तीन २ परिषदायें कही हैं आभ्यंतर परिषदा

स० तीन प० परिषदा स० समिता च०चंडा जा० माया अ०आभ्यंतर की स० समिता म० मध्यकी च० चंडा बा०बाह्यजा०जाया च०चमरेंद्रकी अ०असुरकुमारेन्द्रके अ०असुरकुमार राजाके सा० सामानिक दे० देवताको स० तीन प० परिषदा प० मरूपी स० समिता ज० जैसे च० चमरेन्द्र की ए० ऐसे ता० त्रायस्त्रिंशक लो० लोकपालकी तु० तुबा तु० तुडिया प० पत्या ए० ऐसे अ० अग्रमहिषी ध० धरणेन्द्र की जा० यावत् अ० अग्रमहिषी की प धरणेन्द्र की सा० सामानिक ता० त्रायस्त्रिंशक की स० समिता च० चंडा जा०

समिया चंडा जाया अब्भतरिया समिया मज्झामिया चंडा बाहिरया जाया । चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सामाणियाणं देवाणं तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तं० स मिया जहेव चमरस्स । एवं तायत्तीसगाणवि लोगपालाणं तुंबा तुडिया पव्वा । एवं अग्गमहिसीणवि ॥ बलस्सवि एवं चेव जाव अग्गमहिसीणं । धरणस्सय सामाणिय

इस परिषदावाले कार्य प्रयोजन से बुलाने से आवे मध्यम परिषदा-इस परिषदावाले बोलाये आवे और विना बोलाये भी आवे बाह्य परिषदावाले विना बोलाये आवे इस में से असुरकुमार के चमरेन्द्र की उक्त तीन परिषदा आभ्यंतरका नाम समिता, मध्यमका नाम चंडा, और बाह्यका नाम जाया और चमरेन्द्र के सामानिक देवताओं को भी तीन परिषदा कही समिता, चंडा, और जाया और त्रायस्त्रिंश देवताओं को भी उक्त तीन परिषदायें हैं, चमरेंद्र के लोकपाल को तीन परिषदा कही आभ्यंतर तुम्बा, मध्यम

गाथा लो० लोकपालकी अ० अग्रमहिषी की ई० ईशा तु० तुडिया द० दढरथा ज० जैसे ध० धरणेन्द्रकी त० तैसे से० शेष भ० भवनपतिकी का० काल की पि० पिशाचेन्द्र के पि० पिशाच र० राजाकी स ती न प० परिषदा प० मरूपी ई० ईशा तु० तुडिया द० दढरथा ए० ऐसे सा० सामानिक अ० अग्रमहिषीकी ए० एसे जा० यावत् गी० गीतरति गी० गीतयशकी च० चन्द्र की जो० ज्योतिष के इन्द्र की जो० ज्योतिषी

तायत्तीसगाणच समिया चंडा जाया । लोगपालाणं अग्गमहिसीणं ईसा तुडिया द ढरहा जहा धरणस्स तहा सेसाणं भवणवासीणं ॥ कालस्सणं पिसाइंदस्स पिसायर न्नो तओ परिसाओ पन्नत्ताओ त० इसा तुडिया दढरहा । एवं सामाणिय अग्गमहि सीणवि एवं जाव गीयरइ गीयजसाणं चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो तओ परि साओ पन्नत्ताओ त० तुंबा तुडिया पव्वा । एवं सामाणिय अग्गमहिसीणं एवं सूरस्स

तुडिया और दढरथा ऐसे ही अग्रमहिषी को भी उक्त तीनों परिषदाओं जानना धरणेन्द्र व उन के सामानिक, और त्रायस्त्रिंशक को समिया, चंडा, और जाया ये तीन परिषदा हैं और उन के लोकपाल तथा अग्र महिषी को भी तुम्बा, तुडिया और मत्या ये तीन परिषदाओं जानना धरणेन्द्र, सामानिक और त्रायस्त्रिंश को समियादि तीन परिषदा, उन के लोकपाल और अग्रमहिषी का ईसा, तुडिया और दढरथा ये तीन परिषदाओं हैं. ऐसे ही शेष सब भवनपति का अधिकार जानना व्यंतर के पिशाच जाति के राजा

र० राजाकी त० तीन प० परिषदा प०मरूपी तु० तुंबा तु० तुडिया प० पत्या ए० ऐसे सा०सामानिक अ० अग्रमहिषी की ए०ऐसे सू०सूर्यकी म० शक्रेन्द्र की दे० देवेन्द्रकी त०तीन प०परिषदा प० मरूपी स०समिता च० चंडा जा० जाया ज० जैसे च० चमरेन्द्र की ए० ऐसे जा० यावत् अ० अग्र महिषी की ए० ऐसे जा० यावत् अ० अच्युत के लो० लोकपाल की ॥ २ ॥ त० तीन जा० प्रहर प० प्रथम प्रहर म० मध्यम प्रहर प० पिछला प्रहर ति० तीन जा० प्रहर में आ० आत्मा के० केवलि प० मरूपा ध० धर्म को

त्ति सक्कस्सण देविंदस्सरन्नो तओ परिसाओ पन्नत्ताओ त० समिया चंडा जाया। जहा चमरस्स एवं जाव अग्गमहिसीणं एवं जाव अच्चुयस्स लोगपालाणं ॥ २ ॥ तओ जामा प० त० पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे तिहिं जामेहिं आया केवलि

कालेन्द्र आदि सोलह जाति के बत्तीस इन्द्र उन के सामानिक यावत् अग्रमहिषीओं को ईसा, तुडिया और दढरथा नाम की तीन परिषदाओं हैं ज्योतिष के चंद्र और सूर्य, उन के सामानिक यावत् अग्रमहिषी को तीन परिषदाओं तुम्बा, तुडिया और पत्या शक्रेन्द्र, ईशानेन्द्र यावत् अच्युतेन्द्र, उन के सामानिक यावत् लोकपाल को तीन परिषदा समिता, चंडा और जाया ॥ २ ॥ भगवंतने दिन रात्रि के तीन याम

---

१ दिन या रात्रि का चार प्रहर होता है परंतु प्रातः, मध्याह्न और संध्या ऐसी तीन की विवक्षा करने की होने से तीन ही गीने गये है

स० प्राप्तकरे स० सुनने को त० वह ज० जैसे प० प्रथम प्रहर में म० मध्यम प्रहर में प० पिछला प्रहर में प० ऐसे जा० यावत् के० केवल ज्ञान उ० प्राप्त करे प० प्रथम प्रहर में म० मध्यम प्रहर में प० पिछला प्रहर में त० तीन वय प प्रथम वय म० मध्यम वय प० पिछली वय ति० तीन वय में आ० आत्मा के केवलि प० प्ररूपा ध धर्म को ल० प्राप्त करे स० सुनने को प० प्रथम वय में म० मध्यम वय में प० पिछली वय में ए० यह ग० अधिकार ण० जानना जा० यावत् के० केवल ज्ञान ॥ ३ ॥ ति० तीन प्रकार

फ्लत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए तजहा पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे एव जाव केवलनाण उप्पाडेज्जा पढम जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे ॥ तओ वया प० त० पढमे वए मज्झिमे वए पच्छिमे वए तिहिं वएहिं आया केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सव णयाए त० पढमे वए मज्झिमे वए पच्छिमे वए। एसोचेव गमो पेयव्वो जाव केवलनाण ॥ ३ ॥ तिविहा बोही प० त० णाण बोही दसण बोही चरित्त बोही । तिविहा बुद्धा

(प्रहर) कहे हैं प्रथम प्रहर, दूसरा प्रहर और छेला प्रहर. इन तीन प्रहर में जीव केवली भाषित धर्म श्रवण कर प्राप्त कर सकता है यावत केवल ज्ञान प्राप्त कर सकता है ऐसे बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था में केवली भाषित धर्म श्रवण कर प्राप्त कर सकता है यावत् केवलज्ञान उत्पन्न हो सकता है ॥ ३ ॥ तीन प्रकारकी बोधि भगवंतने कही ज्ञान बोधि, दर्शन बोधि और चारित्र बोधि. बोधि सहित

की बो० बोधि णा० ज्ञान बोधि द० दर्शन बोधि च चारित्र बोधि ति० तीन प्रकार बु० बुद्ध णा० ज्ञान बुद्ध द० दर्शन बुद्ध च० चारित्र बुद्ध ए० एसे मो०मोह मू०मूढ ॥४॥ ति० तीन प्रकार की प० प्रवर्ज्या इ० यह लोक प्रतिबन्ध प० पर लोक प्रतिबन्ध दु० उभय लोक प्रतिबन्ध ति० तीन प्रकार की प० प्रवर्ज्या पु० प्रथम प्रतिबन्ध म० पीछे प्रतिबन्ध दु० उभय प्रतिबन्ध ति० तीन प्रकार की प प्रवर्ज्या तु० दुःख

प० तं० नाणबुद्धा दसणबुद्धा चरित्तबुद्धा । एव मोहे मूढा ॥ ४ ॥ तिविहा पव्वज्जा प० तं० इहलोगपडिबद्धा, परलोगपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा । तिविहापव्वज्जा पण्णत्ता तंजहा पुरओपडिबद्धा, मग्गओपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा, । तिविहापव्वज्जा प० तं०

पुरुष सो बुद्ध उस के तीन भेद ज्ञान बुद्ध, दर्शन बुद्ध और चारित्र बुद्ध बोधि रहित पुरुष सो मूढ उस के भी तीन भेद जानना ॥४॥ जीवों तीन कारनसे दीक्षा लेकर साधु बनते हैं १ इस लोक के सुखकी वाञ्छा से, अर्थात् कुटुम्ब वगैरह की चिन्ता से दूर रहे, इच्छित वस्तु भोगवकर सुख पाऊंगा इत्यादि विचार से दीक्षा लेवे सो इस लोक प्रतिबद्ध दीक्षा, २ परलोक में देवता होऊंगा ऐसे विचारों से दीक्षा लेवे सो परलोक प्रतिबद्ध, ३ इस लोक में और परलोक में सुखी होऊंगा इस विचार से दीक्षा लेना सो दोनों लोक प्रतिबद्ध और भी दीक्षा तीन प्रकार की दीक्षा लेकर शिष्यादि के मोह में बंधा रहे सो पूर्व प्रतिबंध, दीक्षा लेकर स्वजनादि में स्नेह अपना छेद करे सो पश्चात्प्रतिबन्ध, और दोनों में बन्धे सो

स० पासकरे स० सुनने को त० यह म० जैसे प० प्रथम प्रहर में म० मध्यम प्रहर में प० पिछला प्रहर में ए० ऐसे जा० यावत् के० केवल ज्ञान उ० प्राप्त करे प० प्रथम प्रहर में म० मध्यम प्रहर में प० पिछला प्रहर में त० तीन वय प प्रथम वय म० मध्यम वय प० पिछली वय ति० तीन वय में आ० आत्मा के केवलि प० प्ररूपा ध० धर्म को ल० प्राप्त करे स सुनने को प० प्रथम वय में म० मध्यम वय में प० पिछली वय में ए० यह ग० अधिकार णे० जानना जा० यावत् के० केवल ज्ञान ॥ २ ॥ ति० तीन प्रकार

पन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए तंजहा पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे एवं जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे ॥ तओ वया प० त० पढमे वए मज्झिमे वए पच्छिमे वए तिहिं वएहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए त० पढमे वए मज्झिमे वए पच्छिमे वए। एसोचेव गमो णेयव्वो जाव केवलनाणं ॥ २ ॥ तिविहा बोही प० त० णाण बोही दंसण बोही चरित्त बोही । तिविहा बुद्धा

(प्रहर) कहे हैं प्रथम प्रहर, दूसरा प्रहर और छेल्ला प्रहर. इन तीन प्रहर में जीव केवली भाषित धर्म श्रवण कर प्राप्त कर सकता है यावत केवल ज्ञान प्राप्त कर सकता है ऐसे बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था में केवली भाषित धर्म श्रवण कर प्राप्त कर सकता है यावत् केवलज्ञान उत्पन्न हो सकता है ॥ २ ॥ तीन प्रकारकी बोधि भगवंतने कही ज्ञान बोधि, दर्शन बोधि और चारित्र बोधि बोधि सहित

की बो० बोधि णा० ज्ञान बोधि दं० दर्शन बोधि च० चारित्र बोधि ति० तीन प्रकार बु० बुद्ध णा० ज्ञान बुद्ध दं० दर्शन बुद्ध च० चारित्र बुद्ध ए० ऐसे मो०मोह मू०मूढ ॥४॥ ति० तीन प्रकार की प० प्रवज्या इ० यह लोक प्रतिबन्ध प० पर लोक प्रतिबन्ध दु० उभय लोक प्रतिबन्ध ति० तीन प्रकार की प० प्रवज्या पु० प्रथम प्रतिबन्ध प० पीछे प्रतिबन्ध दु० उभय प्रतिबन्ध ति० तीन प्रकार की प० प्रवज्या तु० तुरस

प० तं० नाणबुद्धा दसणबुद्धा चरित्तबुद्धा। एव मोहे मूढा ॥ ४ ॥ तिविहा पव्वज्जा प० तं० इहलोगपडिबद्धा, परलोगपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा। तिविहापव्वज्जा पण्णत्ता तंजहा पुरओपडिबद्धा, मग्गओपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा,। तिविहापव्वज्जा प० तं०

पुरुष सो बुद्ध उस के तीन भेद ज्ञान बुद्ध, दर्शन बुद्ध और चारित्र बुद्ध बोधि रहित पुरुष सो मूढ उस के भी तीन भेद जानना ॥४॥ जीवों तीन कारनसे दीक्षा लेकर साधु बनते हैं १ इस लोक के सुखकी वांच्छा से, अर्थात् कुटुम्ब वगैरह की चिन्ता से दूर रहे, इच्छित वस्त्र भोगवकर सुख पावूंगा इत्यादि विचार से दीक्षा लेवे सो इस लोक प्रतिबद्ध दीक्षा, २ परलोक में देवता होवूंगा ऐसे विचारों से दीक्षा लेवे सो परलोक प्रतिबद्ध, ३ इस लोक में और परलोक में सुखी होवूगा इस विचार से दीक्षा लेना सो दोनों लोक प्रतिबद्ध और भी दीक्षा तीन प्रकार की दीक्षा लेकर शिष्यादि के मोह में बंधा रहे सो पूर्व प्रतिबंध, दीक्षा लेकर स्वजनादि में स्नेह अथवा छेद करे सो पश्चात्प्रतिबन्ध, और दोनों में बन्धे सो

से ग्रहण करे पु० सत्कारके लिये ग्रहण करे बु०बोध से ग्रहण करे ति०तीन प्रकार की प० प्रवर्ज्या उ० उप पात होने से अ०उपदेश होनेसे स०संकेत होनेसे ॥८॥ त०तीन नियंठा णो०सज्ञा रहित उ०वर्णवे पु०पुलाक नि० निर्ग्रंथ सि० स्नातक त० तीन नि० नियंठा स० संज्ञा णो० नो संज्ञा प० प्ररूपा प० बकुस प० प्रति

तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, सुयावइत्ता। तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता तं०उवायपव्वज्जा, अक्खा यपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा ॥ ९ ॥ तओ णियठा णोसण्णोवउत्ता प० तं० पुलाए, णि यंठे, सिणाए तओ नियंठा सण्णणोसण्णोवउत्ता प० तं बउसे, पडिसेवणा कुसीले,

सवण प्रतिबन्ध और भी तीन प्रकार की दीक्षा शारीरिक मानसिक दुःख देकर दीक्षा देवे, जैसे मेतार्य को देवने पीडा उत्पन्न करके दीक्षा ग्रहण कराई, पूना महत्व बतलाकर दीक्षा देवे, और धर्म का स्वरूप समझाकर दीक्षा देवे जैसे गौतम स्वामीने हाली को समझाकर दीक्षा दिलाइ, और भी तीन प्रकारकी दीक्षा कही १ गुरु की सेवा प्रवर्ज्या अर्थात् भव में दीक्षा अंगीकार करूंगा तब गुरु की सेवा आदि करूंगा २ धर्म देशना देकर प्रवर्ज्या लेना जैसे फल्गुरक्षितने कुटुम्ब को धर्म देशना देकर दीक्षा ली, और ३ संकेत प्रवर्ज्या—जब तुम दीक्षा लेवोगे तब मैं भी दीक्षा लेऊंगा ॥ ९ ॥ मोहनीय कर्म की ग्रन्थि को छेदनेवाले निर्ग्रंथ कहलाते हैं तीन निर्ग्रंथ सज्ञा रहित कहे गये हैं पुलाक लब्धिवन्त सो भगत को भस्म करने की शक्ति होने पर भी लब्धि न फोरवे मोह का उपशम या क्षय किया होवे सो निर्ग्रंथ

सेवना क० कषाय कुशील ॥ ६ ॥ त०तीन से०महाव्रत आरोपन भूमि उ० उत्कृष्ट म०मध्यम ज०जघन्य उ० उत्कृष्ट छ० छमास म० मध्यम च० चार मास ज० जघन्य स० सात रा० अहो रात्रि ॥ ७ ॥ त० तीन थे०स्थविर भूमि प०मरूपी जा०जाति स्थविर सु०सूत्र स्थविर प०पर्याय स्थविर स०साठ वर्ष जा०जन्म स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ जा० जाति स्थविर ठा० ठाणांग स० समवायांग ध० धारन करने वाला स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ सु० सूत्र स्थविर वी० बीस वर्ष प० प्रवर्ज्या वाला स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ प० प्रवर्ज्या स्थविर

कसायकुसीले ॥ ६ ॥ तओसेहभूमीओ प० तं० उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा उक्को सा छम्मासा, मज्झिमा चउमासा, जहण्णासत्तराइंदिया ॥७॥ तओथेरभूमीओ पण्णत्ताओ तं० जाइथेरे सुयथेरे परियायथेरे । सट्ठिवासजाए समणे निग्गंथे जाइथेरे ठाणसमवा

और घाति कर्म के क्षय से शुद्ध ज्ञान प्राप्त करे सो स्नातक तीन निर्ग्रंथ संज्ञा सहित होवे हैं बकुश-शरीर व उपकरण की शोभा करने से चारित्र मलिन करे, मूलगुण में दोष लगावे सो प्रति सेवना, और कुत्सित आचार पाले सो कषाय कुशील ॥ ६ ॥ भगवंत फरमाते हैं कि दीक्षा दीये बाद महाव्रत आरोपन की तीन भूमिका फरमाई-उत्कृष्ट छमास, मध्यम चार मास, और जघन्य सात रात्रि में महाव्रत की आरोपना करना ॥ ७ ॥ स्थविरभूमि (अवस्था) तीन प्रकारकी कही जाति स्थविर, श्रुत स्थविर, और पर्याय स्थविर, साठवर्ष की वयवाले श्रमण जाति स्थविर, ठाणांग, समवायांग सूत्र को यथार्थ धारण करनेवाले

से ग्रहण करे पु० सत्कारके लिये ग्रहण करे पु०बोध से ग्रहण करे ति तीन प्रकार की प० प्रवर्ज्या उ०उप पात दान से अ०उपदेश होनेसे स०संकेत होनेसे ॥५॥ त तीन नियंठा णो०संज्ञा रहित प०परूपे पु०पुलाक णि० निर्ग्रंथ सि० स्नातक त० तीन णि० नियंठा स० संज्ञा णो० नो संज्ञा प० परूपा प० बकुस प० प्रति

तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, बुयावइत्ता। तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता तं०उवायपव्वज्जा, अक्खा यपव्वज्जा, सगारपव्वज्जा ॥ ५ ॥ तओ णियंठा णोसण्णोवउत्ता प० तं० पुलाए, णि यंठे, सिणाए तओ नियंठा सण्णणोसण्णोवउत्ता प० त बउसे, पडिसेवणा कुसीले,

उभय प्रतिबन्ध. और भी तीन प्रकार की दीक्षा शारीरिक मानसिक दुःख देकर दीक्षा देवे, जैसे मेतार्य को देवने पीडा उत्पन्न करके दीक्षा ग्रहण कराई, पूजा महत्व बतलाकर दीक्षा देवे, और धर्म का स्वरूप समझाकर दीक्षा देवे जैसे गौतम स्वामीने हाली को समझाकर दीक्षा दिलाइ, और भी तीन प्रकारकी दीक्षा कही १ गुरु की सेवा प्रवर्ज्या अर्थात् अब मैं दीक्षा अंगीकार करूंगा अब गुरु की सेवा आदि करूंगा २ धर्म देशना देकर प्रवर्ज्या लेना जैसे फल्गुरक्षितने कुटुम्ब को धर्म देशना देकर दीक्षा ली, और ३ संकेत प्रवर्ज्या-जब तुम दीक्षा लेवोगे तब मैं भी दीक्षा लेऊंगा ॥ ५ ॥ मोहनीय कर्म की ग्रन्थि को छेदनेवाले निर्ग्रंथ कहेजाते हैं तीन निर्ग्रंथ संज्ञा रहित कहे गये हैं पुलाक लब्धिवन्त सो जगत को भस्म करने की शक्ति होने पर भी लब्धि न फोरवे मोह का उपशम या क्षय किया होवे सो निर्ग्रंथ

होवे ए० एगे जा० जाऊगा ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे त० तीन पुरुष भास प० मरुपी ण० नहीं मा० भाऊगा ए० कितनेक सु० सुमन होवे ए० ऐसे आ० आकर ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे ए० भासा हुं ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे ए० आऊगा ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे ए० ऐसे ए० इस भ० अभिमापसे ग० जानेको अ० नहीं जानेको भा० आयाहुवा स० निश्चय अ० नहीं आया हुवा चि० खडा रहा हुवा अ० नहीं खडारहुवा णि० बैठू णो० नहीं ह० मारकर अ० नहीं मारकर छि० छेदकर अ० विमार्येद

भवइ(२)तओ पुरिस जाया पण्णत्ता तजहा अणागताणामेगे सुमणे भवइ (२) तओ पुरिस जाया प० त० ण जामि एगे सुमणे भवइ (२) तओ पुरिस जाया प० त० ण जाइस्सामि एगे सुमणे भवइ (२) एवं आगताणामेगे सुमणे भवइ एमि एगे सुमणे भवइ एस्सामि एगे सुमणे भवइ(२)एवं एएण अभिलावेण गताय अगताय। आगत्ता खलु तहा अणागता ॥ चिट्ठित्तम चिट्ठित्ता। णिसिइत्तावेव नोचेव ॥१॥ हंताय अ

दुर्मन नहीं होवे १ कितनेक किसी स्थान जाने को चिन्तातुर बन करके सुमन होवे, दुर्मन होवे और सुमन दुर्मन नहीं होवे कितनेक किसी स्थान नहीं जाते सुमन होवे दुमन होवे या सुमन दुर्मन नहीं होवे और उस स्थानक में मैं नहीं जाऊंगा ऐसी चिन्तवना करते हुवे सुमन होते हैं २ कितनेक उस स्थान में नहीं जाना ऐसी चिन्तवना करते सुमन १ होते हैं यह छ आलापक जाने पर कोई ऐसे ही आगे छ आला

यथरेण समणे निग्गथे सुयथेरे । वीसवास परियाएण समणे निग्गंथेपरियायथेरे ॥८॥ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता तं० सुमणे दुम्मणे णो सुमणे नो दुम्मणे । तओ पुरिसजाया प० तं० गताणामेगे सुमणे भवइ गताणामेगे दुम्मणे भवइ गताणामेगे णोसुमणे णो दुम्मणे भवइ ॥ तओ पुरिसजाया प० तं० जामिएगे सुमणे भवइ जामिएगे दुम्मणे भवइ जामिएगे णो सुमणे णो दुम्मणे भवइ। एवं जाइस्सामि एगे सुमणे

सूत्र स्थविर और बीस वरस दीक्षा पालनेवाले पर्याय स्थविर ॥ ८ ॥ तीन प्रकारके मनुष्यों कहे अच्छे मन व बुरे मनवाले और अच्छा या बुरा मन जिन को नहीं है ऐसे मध्यस्थ भाववाले कितनेक मनुष्य किसी स्थान में जाकर हर्षित होवे हैं, कितनेक दुर्मनवाले होवे हैं और कितनेक हर्षवन्त भी होवे नहीं और दुर्मनवाले भी होवे नहीं कितनेक मनुष्यों किसी स्थान जाते सुमन होवे, दुर्मन होवे और सुमन

॥ ८ ॥ त० तीन पुरुषजात प० प्ररूपी सु० सुमन दु० दुर्मन णो० नो सुमनदुर्मन त० तीन पुरुष जात गं० जाकर ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे है गं० जाकर ए० कितनेक दु० दुर्मन भ० होवे गं० जाकर ए० कितनेक णो० नो सुमनदुर्मन भ० होवे त० तीन पुरुष जात जा० जाते ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे जा० जाते ए० कितनेक दु० दुर्मन भ० होवे जा० जाते ए० कितनेक णो० नोसुमनदुर्मन भ०

होवे ए० एमे मा० आऊगा ए० कितनेक सु० सुमन म० होवे त० तीन पुरुष जात प० मरूपी ण० नहीं
ना० जाऊगा ए० कितनेक सु० सुमन होवे ए० ऐसे आ० आकर ए० कितनेक सु० सुमन म० होवे
ए० आता हुं ए० कितनेक सु० सुमन म० होवे ए० आऊगा ए० कितनेक सु० सुमन म० होवे ए० ऐसे ए०
इस अ० अभिलापसे ग० जानेको अ० नहीं जानेको आ० आयाहुवा त० निश्चय अ० नहीं आया हुवा चि० खड़ा
रहा हुवा अ० नहीं खड़ाहुवा नि० बैठू णो० नहीं ह० मारकर अ० नहीं मारकर छि० छेदकर अ० विमाछेद

भवइ(३)तओ पुरिस जाया पण्णत्ता तजहा अणागंताणामगे सुमणे भवइ (३) तओ
पुरिस जाया प० तं० ण जामि एगे सुमणे भवइ (३) तओ पुरिस जाया प० त० ण
जाइस्सामि एगे सुमणे भवइ (३) एवं आगताणामेगे सुमणे भवइ एमि एगे सुमणे
भवइ एस्सामि एगे सुमणे भवइ(३)एव एएण अभिलावेण गताय अगताय। आगता
खलु तहा अणागता ॥ चिट्ठित्तम चिट्ठित्ता। णिसिइत्ताचेव नोचेव ॥१॥ हंताय अ

दुर्मन नहीं होवे १ कितनेक किसी स्थान जाने को चिन्तावन मन करके सुमन होवे, दुर्मन होवे और सुमन
दुर्मन नहीं होवे कितनेक किसी स्थान नहीं जावे सुमन होवे दुर्मन होवे या सुमन दुर्मन नहीं होवे और
उस स्थानक में मैं नहीं जाऊंगा ऐसी चिन्तवना करते हुवे सुमन होवे हैं १ कितनेक उस स्थान में नहीं
जाना ऐसी चिन्तवना करते सुमन १ होवे हैं यह छ आलापक जाने पर कहे ऐसे ही आगे छ आला

कु० फाडकर अ० बिना फाडकर गा० बोलकर णो० नहीं द० देकर म० बिना दिये मु० खाकर म० बिना खाये स० मिलने से म बिना मिले पि० पिने से णो० नहीं सु० सोने से भ० बिना सोये जु० करकर म० बिना करे ज० जीतकर अ० बिना जीतकर प० पराजय कर णो० नहीं प० शब्द रू० रूप गं० गंध र० रस फा स्पर्श त० तैसे ठा० स्थान नि० कुशील नि० निन्दनीक प० प्रशस्त सी० शीलवंतको ए०ऐ

हंताय । छिंदित्ता खलुतहा अछिंदित्ता वुच्चिचा अवुचित्ता । भासित्ता चेव णा चेव ॥ २ ॥ दच्चाय अदच्चाय । भुजित्ता खलुतहा अभुजित्ता ॥ लभित्ताय अलंभित्ता । पिवइत्ता चेव नोचेव॥३॥सुइत्ता अतुइत्ता जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता जयित्ताय अ जयित्ताय । पराजिणित्ताचेव नोचेव ॥ ४ ॥ सद्दा रूवा गंधा । रसाय फासा तहेव ठाणाय । निस्सीलस्स गरहिया । पसत्था पुण सीलवंतस्स ॥ ५ ॥ एवमेक्केके तिन्नि

एक कहते हैं जैसे २ आने के तीन और नहीं आने के तीन, ३ खडे रहने के तीन और नहीं खडे रहने के तीन, ४ बैठने के तीन और नहीं बैठने के तीन, ५ मारने के तीन और नहीं मारने के तीन, ६ छेदन करन के तीन और नहीं छेदन करने के तीन, ७ कहने पर और नहीं कहने पर, ८ बोलने पर और नहीं र ९ ने पर नहीं न पर १० खाने पर नहीं खाने पर ११ मिलने पर नहीं रे र १२

मे ए० एकेक ति० तीनतीन आ० आलापक मा० कहना स० शब्द सु० सुनकर ए० कितनेक सु० सुमन म० होवे ए० ऐसे सु० सुनता हूं सु० सुनूंगा ए० एसे म० विना सुनकर ए कितनेक सु० सुमन म० होवे न० नहीं सुनता हूं ए कितनेक न० नहीं सुनूंगा ए० ऐसे रू० रूप ग० गंध र० रस फा स्पर्श ए० एकेक में छ०छ आ० आलापक मा०कहना ॥२॥ ठ० तीन स्थान णि०शील रहित के णि० व्रत रहित के नि० निर्गुणी के णि० दयारहित के णि० प्रत्याख्यान पोषध उपवास रहितके ग० निन्दीक भ० होते हैं

तिन्निओ आलावगा भाणियव्वा ॥ सद्दं सुणेत्ताणामेगे सुमणे भवइ (३) एवं सुणेमिति (३) सुणेस्सामिति एवं असुणेत्ताणामेगे सुमणे भवइ (३) नसुणेमि एगे नसुणेस्सामिति (३) एवं रूवाइं गधाइं रसाइं फासाइं इक्केके छच्छ आलावगा भाणियव्वा ॥ १ ॥ तओ ठाणा णिस्सीलस्स णिव्वयस्स निग्गुणस्स णिम्मेरस्स णिप चक्खाणपोसहोववासस्स गरहिया भवंति तं० अस्सिं लोगे गरहिए भवइ उववाए ग

पर ११ सोने पर, नहीं सोने पर १४ लडने पर, नहीं लडने पर १० जीतने पर, नहीं जीतने पर १६ पराजय करने पर, नहीं पराजय करने पर १७ शब्दपर १८ रूपपर १९ गंध पर २० रस पर २१ स्पर्श पर २२ मकान पर बगैरह स्थानकों पर छ छ आलापक कहना शब्द, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के अतीत अनागत और वर्तमान काल आश्रित सुमन, दुर्मन और मध्यस्थ मन होवे ॥ १ ॥ शील रहित, प्राणाति पातविरमणादि मूलगुण उत्तर गुण रहित, कुलकी मर्यादा रहित, तथा पोरसी, उपवास प्रमुख प्रत्याख्यान

मु० करकर भ० विना करकर भा० मोलकर णो० नहीं द० देकर भ० विना दिये भु० साकर भ० विना खाये भ० भिग्ने से भ० विना भिले पि० पिने से णो० नहीं सु० सोने से भ० विना सोये जु० करकर भ० विना मद न जीतकर भ० विना जीतकर प० पराजय कर णो० नहीं स० शब्द रू० रूप गं० गंध र० रस फा० स्पर्श त० तैसे ठा० स्थान नि० कुशील नि० निन्दनीक प० प्रशस्य सी० शीलवंतको ए०ऐ

हंताय । छिंदित्ता खलुतहा अछिंदित्ता तुचित्ता अतुचित्ता । मासित्ता चेव णा चेव ॥ २ ॥ दच्चाय अदच्चाय । भुजित्ता खलुतहा अभुंजित्ता ॥ लभित्ताय अलभित्ता । पिबइत्ता चेव नोचेव॥३॥सुइत्ता असुइत्ता जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता जयित्ताय अजयित्ताय । पराजिणित्ताचेव नोचेव ॥ ४ ॥ सद्दा रूवा गधा । रसाय फासा तहेव ठाणाय । निस्सीलस्स गरहिया । पसत्था पुण सील्वतस्स ॥ ५ ॥ एवमेकेक्के सिभि

एक करते हैं जैसे २ आने के तीन और नहीं आने के तीन, ३ खडे रहने के तीन और नहीं खडे रहने के तीन, ४ बैठने के तीन और नहीं बैठने के तीन, ५ मारने के तीन और नहीं मारने के तीन, ६ छेदन करने के तीन और नहा छेदन करने के तीन, ७ कहने पर और नहीं कहने पर, ८ बोलने पर और नहीं बोलने पर, ९देने पर नहीं देन पर, १०खाने पर नहीं खाने पर, ११ मिलने पर नहीं मिलने पर, १२ पीने

पर्याप्ता म अपर्याप्ता णो० नो पर्याप्ता अपर्याप्ता प० परत्त स० समदृष्टि प० परत्त प० अपरत्त सु० सूक्ष्म स० संज्ञी भ० भव्य ॥ ११ ॥ ति० तीन प्रकार से लो० लोकप्रतिष्ठित आ० आकाशप्रतिष्ठित वायु वा वायु प्रतिष्ठित उ० पानी उ० पानी प्रतिष्ठित पु० पृथ्वी त० तीन दिशाओ उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति० तिर्यक् ति० तीन दिशा में जी० जीवकी ग० गति प० प्रवर्तती है उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति० तिर्यग् दिशामें ए० ऐसे आ०

मिच्छदिट्ठी, सम्ममिच्छदिट्ठी ॥ अहवा तिविहा सव्वजीवा प० तं० पज्जत्तगा, अपज्जत्तगा, नोपज्जत्तगा ॥ एवं सम्मदिट्ठि, परित्ता, पज्जत्तग, सुहुम, सन्नि, भवि, काय ॥ ११ ॥ तिविहा लोगट्ठिई प० तं० आगासइट्ठिए वाए, वायपइट्ठियाइउदही, उदहिपइट्ठिया पुढवी ॥ तओ दिसाओ प० त० उड्ढा, अहो, तिरिया । तिहिं दिसाहिं जीवाणं गई

पुरुष और नपुंसक और भी सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि; और भी पर्याप्ता, अपर्याप्ता, और नो पर्याप्ता नो अपर्याप्ता, परत, अपरत, नो परत नो अपरत; सूक्ष्म, बादर, नो सूक्ष्म नो बादर; संज्ञी, असंज्ञी, नो संज्ञी नो असंज्ञी; और भव्य, अभव्य, और नो भव्य नो अभव्य ॥ ११ ॥ लोक की स्थिति तीन प्रकारसे कही है आकाश के आधार पर वायु, वायु के आधार पर उदधि और उदधि के आधार पर पृथ्वी (सात तमतमादि) ऊर्ध्व अधो और तिर्यक् दिशा में जीवों मरकर जाते हैं, इन तीनों

भागमि प० उपजना आ०आहारस्ना वु० वृद्धिपाना णि० हीन होना ग० गतिपर्याय स० समुद्घात का कालसंयोग दं० दर्शनाभिगम णा० ज्ञानाभिगम जी जीवाभिगम ति० तीन दिशामें जी० जीवको अ० अजीवाभिगम उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति० तिर्यक् दिशामें पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनि वाले को ए० ऐसे म० मनुष्य को ॥१२॥ ति० तीनप्रकार का त०त्रस प्राणी ते० तेउकाय वा० वायुकाय उ० औदारिक त्रसप्राणी

पन्नत्ताइं तं० उड्ढाए अहोए तिरियाए। एवं आगई वक्कंती, आहारे, वुड्ढी णिवुड्ढी, गइपरियाए समुग्घाए कालसंजोगे दंसणाभिगमे णाणाभिगमे जीवाभिगमे ॥ तिहिं दिसाहिं जीवाणं अजीवाभिगमे प० तं० उड्ढाए अहोए तिरियाए एवं पचेंदियतिरिक्खजोणियाणं ॥ एवं मणुस्साणवि ॥१२॥ तिविहा तसापाणा प० तं० तेउकाइया वाउकाइया उराला तसापाणा तिविहा थावरा प० तं० पुढविकाइया आउकाइया वण

दिशाओं से जीव आते हैं, तीनों दिशाओं में उत्पन्न होते हैं, आहार लेते हैं, शरीर बढता है, क्षीण होता है, हलन चलन होता है, समुद्घात करते हैं, मरणादि काल आता है, सम्यक्त्व की प्राप्ति करते हैं, ज्ञान की प्राप्ति होती है, जीवों का अभिगम होता है, और इन तीनों दिशाओं में रहे हुवे मनुष्य व तिर्यंचपंचेंद्रिय को जीवादि पदार्थ का अभिगम होता है ॥ १२ ॥ तीन प्रकारके त्रस प्राणी कहे (-गमनागमन धर्मवाले सो त्रस) अग्निकाय, वायुकाय और औदारिक द्वीन्द्रियादिक ऐसे ही स्थिरता की अपेक्षा से तीन स्थावर

नि० नीनमकार का था० स्थावर पु० पृथ्वीकाय आ० अपकाय व० वनस्पतिकाय ॥ १३ ॥ त० तीन अ० अछेद्य स० समय प० प्रदेश प० परमाणु ए० एसे अ० भेदाते नहीं अ० जलेनहीं अ० अग्राह्य अ० मर्धरहित अ० अमध्य अ० अप्रदेशी त० तीन अ० अविभागी स० समय प० प्रदेश प० परमाणु ॥ १४ ॥ अ० आर्य स० श्रमण भ० भगवान म० महावीर गो० गौतमादि स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ को आ० आमंत्रणाकर ए० ऐसा व० बोले कि० कौनसा भ० भय प० प्राणि को स० श्रमण आ० आयुष्यमन् गो०

स्सइकाइया ॥ १३ ॥ तओ अच्छेज्जा प० तं० समए पएस परमाणु ॥ एवं अभेज्जा अडज्झा अगिज्झा अणद्धा अमज्झा अपएसा । तओ अविभाइया प० त० समए पए से परमाणु ॥ १४ ॥ अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाई समणे निग्गंथे आमं तित्ता एवं वयासी किंभयापाणा समणाउसो? गोयमाई समणा णिग्गंथा समणं भगवं

काया कही पृथ्वी काया, अपकाया, और वनस्पति काया ॥ १३ ॥ समय, प्रदेश और परमाणु ये तीनों खड्ग या तलवारादि से नहीं छेदाते हैं, नहीं भेदाते हैं नहीं जलते हैं, इत्यादिकों से नहीं ग्रहण कीये जाते हैं, तीन विभाग नहीं हो सकते हैं, और अवयव रहित होने से अप्रदेशी कहे गये हैं वैसे समय, प्रदेश और परमाणु ये तीनों विभाग रहित हैं ॥ १४ ॥ श्रमण भगवन्त श्री महावीर देवने गौतम स्वामी आदि सब साधु निर्ग्रंथों को बोलाकर पूछा कि अहो आर्यों ! जीव को किस का भय है ? भगवन्त का ऐसा

गोतमादि म० श्रमण नि० निर्ग्रंथ भ० भगवान म० महावीर की उ० पास आये उ० आकर व० वंदते हैं न० नमस्कार करते हैं वं० वंदकर न० नमस्कार कर ए० ऐसे व० बोले णो० नहीं ख० निश्चय व० हम दे० देवानुप्रिय ए० इसका अर्थ जा० जानते हैं, पा० देखते हैं तं० वह जैसे ज० यद्यपि दे० देवानुप्रिय ए० इसअर्थ नो० नहीं गि० ग्लानित होवे ए० कहनेका तं० उसको इ० इच्छते हैं दे० देवानुप्रिय की अं० पास ए० इसअर्थ को जा० जानने को अ० आर्य स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर गो० गौतमादि

महावीरं उवसंकमंति उवसंकमित्ता वंदति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी णो खलु वयं देवाणुप्पिया एयमट्ठं जाणामोवा पासामोवा तं जइ णं देवाणुप्पिया एयमट्ठं नो गिलायंति परिकहेत्तए तमिच्छामोणं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं जाणित्तए • अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाई समणे निग्गंथे आमंतित्ता एवं वयासी दुक्ख-

वचन सुनकर गौतम स्वामी आदि सब साधुओं भगवंत की पास सविनय वंदना नमस्कारकर कहने लगे कि अहो भगवन्! हम इस के यथातथ्य अर्थ को नहीं जानते हैं और नहीं देखते हैं इसलिये अहो पूज्य भगवन्त! आपको इस का अर्थ प्रकाशने में किसी प्रकारका खेद न होता होवे तो हम इस का अर्थ सुनना चाहते हैं, तब भगवंत फरमाने लगे कि अहो आर्यो! जीवों को मरणादि दुःख से भय है अहो पूज्य! ऐसा दुःख कैसे उत्पन्न होता है? भगवन्तने उत्तर दिया कि ऐसा दुःख जीवने प्रमादसे उत्पन्न किया है

म० श्रमण नि० निग्रन्थ को आ० आमंत्रणकर ए० ऐसा व० बोले दु० दुःखमय पा० प्राणी को स० आयुष्यमान् से० वह भ० भगवान् दु० दुःख के० किसने क० कीया जी० जीवने क० कीया प० प्रमाद से से० वह दुःख क० कैसे वे० वेदते हैं अ० अप्रमाद से ॥ १८ ॥ अ० अन्य तीर्थिक भ० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं ए० ऐसा भा० बोलते हैं ए० ऐसा प० प्ररूपते हैं क० कौनसी स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ कि० क्रिया क० करते हैं त० तहां जा० जो क० की क० करते हैं णो० नहीं

मयापाणा समणाउसो सेणं भंते दुक्खे केण कडे? जीवेण कडे पमाएणं सेणं भंते दुक्खे कहं वेइज्जति? अप्पमाएणं ॥ १५॥ अण्णउत्थियाणं भंते एवं माइक्खइ एवं भासेइ एवं परूवेइ कहण्णं समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जति तत्थ जासा कडा कज्जइ णो तं पुच्छंति, तत्थ जासा कडा नो कज्जइ णो तं पुच्छंति, तत्थ जासा अकडा नो कज्जइ

तब श्रमण भगवंत को पूछा कि अहो पूज्य ! वह दुःख कैसे दूर हो सके ? हे गौतम ! प्रमादका त्याग कर कर्म क्षय करने से ॥ १८ ॥ श्री गौतम स्वामी पूछते हैं कि अहो भगवन् ! अन्य मतावलम्बियों ऐसा कहते हैं प्रकट करते हैं, प्ररूपते हैं कि श्रमण निर्ग्रंथ को किये हुवे कर्म कैसे दुःख रूप होते हैं ? इसपर चार भंग कहते हैं १ जो कर्म पहिले किये उस का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं इसलिये न लगे, २ जो कर्म पहिले किया वर्तमान में नहीं करे वह भी नहीं लगे ३ जो क्रिया भी नहीं और करते भी नहीं वह न लगे,

तं० उस पु० स्पर्शते हैं त० तहां मा० ओ क० की णो० नहीं क० करते हैं णो नहीं त० उसे पु० स्पर्शते हैं जा० जो म० की नहीं णो० नहीं क० करते हैं णो० नहीं त० उसे पु० पूछते हैं त० तहां आ० जो अ० कीनहीं क० करते हैं तं० उसे पु० स्पर्शते हैं से० उनको प० ऐसा व० कहना सि० होवे अ० नहीं कीया दुःख अ० नहीं स्पर्शदुःख अ० अक्रियमान कृतदुःख अ० नहीं किया अ० नहीं कीया पा० प्राणी भू० भूत जी० जीव स० सत्व वे वेदना वे० वेदते हैं सि० ऐसा व० कहना जे० जो ते० उसका, ए० ऐसा आ० कहे ते० वह मि० मिथ्या अ० मैं पु फीर आ० कहता हूं ए०

णो त पुच्छंति, तत्थ जासा अकडा कज्जइ त पुच्छति से एव वत्तव्व सिया आकिवं दुक्ख अफुस दुक्ख अकज्जमाणकडं दुक्ख अकट्टु अकट्टु पाणाभूया जीवा सत्ता वेयण वेयंति त्तिवत्तव्व जे ते एव माहिंसु ते मिच्छा अह पुण एव माइक्खामि, एवं भासामि एव पन्नवेमि, एव परूवेमि किच्च दुक्ख फुसदुक्खं किज्जमाण कडं दुक्ख कट्टु

(जो क्रिया नहीं है और करते हैं) सो कर्म लगता है वे ऐसा कहते हैं कि जो न किया न स्पर्शा, अक्रिय न किया और दुःख नहीं करके प्राणभूत जीव सत्वों वेदना का दुःख अनुभवते हैं तब भगवंत फरमाते हैं कि जो अकृत कर्म भोगते हैं ऐसा जो अन्य मतियों का कथन है सो मिथ्या है इस बात को मैं इस प्रकार कहता हूं प्रगट करता हूं प्ररूपता हूं, कि जो अनागत काल में किये वे उस कर्म से

एसा भा० बोलनाहुं ए० ऐसा प० मगट करता है प० मरूपता है कि०कीयाहुवा दुःख फु० स्पर्श दुःख कि० किया हुवा कृतदुःख क० किया हुवा क० कियाहुवा पा० माणी भू० भूत जी जीव स० सत्व वे० वेदना व० वेदते हैं त्ति ऐसा व० कहना सि० होवे ॥ १८ ॥

×

ती० तीनस्थान से मा० मायावी मा० माया क० करके णो० नहीं आ० आलोवे णो० नहीं प०

कट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयण वेयतित्ति वत्तव्वसिया ॥१८॥ इति तइअठाणस्स बीओद्देसो सम्मत्तो ॥

*　　　　*

तिहिं ठाणेहिं मायी माय कट्टु णो आलोएज्जा णो पडिक्कमेज्जा णो णिंदेज्जा णोगरहेज्जा णोविउट्टेज्जा णोविसोहेज्जा णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा णो अहारिहं पायच्छित्त तओ

स्पर्शा, प्रभा, वर्तमान में करता है जो कर्म गतकाल में किये हुवे हैं वैसे दुःख रूप कर्म करके माणभूत जीव सत्व शुभाशुभ कर्म के फलरूप वेदना का अनुभव करते हैं ऐसा कहना ॥ १८ ॥ यह तीसरे ठाणांग सूत्र के तीसरे ठाणे का दूसरा उद्देशा समाप्त हुवा

\+

तीन कारण से जीव माया करके गुरु की साक्षी से मायश्चित्त करे नहीं, आत्मा की साक्षी से निन्दे नहीं, गर्हा करे नहीं, अब आगे पाप करूं नहीं इसतरह अतिचार विशुद्ध करे नहीं, और यथायोग्य

मतिक्रम णा० नहीं णि निन्दे णो० नहीं ग० गर्हाकरे णो०नहीं वि०निवृत होवे णो०नहीं वि०विशुद्ध होवे णो० नहीं अ० नहीं करन को अ० सावधान होवे णो० नहीं अ यथातथ्य पा० प्रायश्चित त० तपकर्म प० अंगीकार करे तं० यह अ० कीया अ० मैंने क० करताहूं क० करूंगा ति० उनिस्थान से मा० माया वी मा माया क० करके णा० नहीं आ आलोचे णो नहीं प० प्रतिक्रमणकरे मा० पाखत णो० नहीं प० दूरकरे अ० अपकीर्ति मे० मेरी सि० होवे अ० अवर्णवाद मे० मेरा सि होवे अ० अविनय मे० मेरा

कम्म पडिक्कमिज्जा तं० अकरिंसुवाहं करेमिवाहं करिस्सामिवाहं । तिहिं ठाणेहिं मा यी माय कट्टु णो आलोएज्जा णो पडिकमेज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा त०अकित्ती वा मे सिया अवण्णेवा मे सिया अविणयेवा मे सिया तिहिं ठाणेहिं मायी माय कट्टु णो आलोएज्जा

प्रायश्चित्त की विशुद्धि के लिये तपकर्म अंगीकार करे नहीं-१ मैंने यह कार्य किया अब मैं इस की कैसे निन्दा करूं, मेरी जगत् में अपकीर्ति होवे २ यह कार्य मैं कर रहा हूं, इस को मैं कैसे खराब बतलाऊं, और ऐसा काय मुझ करने का है इसलिये कैसे मैं उस की निन्दा करूं या प्रायश्चित्त अंगीकार करूं और भी माया कपट के तीन कारण बतलाते हैं-१ यदि मैं पाप को प्रकाश में लाऊंगा तो मेरी अपकीर्ति होगी, २ लोकों मेरे अवर्णवाद बोलेंगे निन्दा करेंगे और ३ यहां मेरा अविनय होगा और भी तीन

मि॰ होवे ति॰ तीनस्थान मे मा॰ मायावी मा॰ माया क॰ करके णो॰ नहीं आ॰ आलोवे आ पावत प॰ दूरकरे कि॰ कीर्ति मे॰ मेरी प॰ हीनहोगी ज॰ जस मे॰ मेरा प॰ हीनहोगा पू॰ पूजासत्कार प॰ हीनहोगा ति॰ तीनस्थान से मा॰ मायावी मा॰ माया क॰ करके आ॰ आलोवे प प्रतिक्रमे नि॰ निन्दे मा॰ पावत् प॰ दूरकरे मा॰ मायावी की अ॰ इसलोक में ग॰ गर्हा भ॰ होती है उ॰ उपपात स्थान में ग॰ गर्हा भ॰ होती है आ॰ आत्मा की ग॰ गर्हा भ॰ होती है ति॰ तीनस्थान से मा॰ मायावी

जाव णो पडिक्कमेज्जा त॰ कित्ती वा मे परिहाइस्सइ जसो वा मे परिहाइस्सइ पूयासक्कारे वा मे परिहाइस्सइ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा निंदेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तजहा मायिस्सणं अस्सिं लोगे गरहिए भवइ उववाए गरहिए भवइ आ

कारण जो मेरी कीर्ति का विस्तार हो रहा है उस में हानि होगी, २ यश में और पूजा सत्कार में हानि होगी उक्त तीनों माया कपट की तीन कारण से गुरु की साक्षी मे आलोचना करते हैं, निन्दते हैं यावत उस का त्याग करते हैं १ यदि मैं पाप कर गुप्त रखूंगा परंतु वैसा पाप गुप्त नहीं रहेगा, और प्रगट हुवे बाद लोगों में बड़ी निन्दा होगी इसलिये नहीं छुपाते हैं, २ पापशल्य से मेरा मृत्यु होगा तो मैं यहांसे मरकर नरकादिकमें उत्पन्न होवूंगा और ३ आगामिक कालमें भी पापकरनेवाले की निन्दा

मा० माया क० करके आ० आलोवे मा० यावत् प० दूरकरे अ० मायागीलकी अ० इसलोकमें प० प्रशंसा भ० होती है उ० उपपात स्थान में प० प्रशंसा भ० होती है आ० आत्माकी प० प्रशंसा भ० होता है ति० तीनस्थान से मा० मायावी मा० माया क० करके आ० आलोवे जा० यावत प० दूरकरे णा० ज्ञानार्थ द० दर्शनार्थ च० चारित्रार्थ ॥ १ ॥ त० तीन पु० पुरुष जात प० प्ररूपी सु० सूत्रज्ञानके धारक अ०

पाइ गरहिया भवइ । तिहिं ठाणेहिं मायी माय कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा त० अमायिस्सण अस्सिं लोगे पसत्थे भवइ उववाए पसत्थे भवइ आयाई पसत्थे भवइ तिहिं ठाणेहिं मायी माय कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा त० णाणट्ठयाए दंसणट्ठयाए चरित्तट्ठयाए ॥ १ ॥ तओ पुरिसजाया प० त० सुत्तधरे अत्थधरे तदुभयधरे

होती है और भी माया कपट की आलोचना करने का तीन कारण बताते हैं १ इस लोक में प्रशंसा होती है धन्य है कि जन्म सुधार लिया २ जिनाज्ञा का आराधक बनने से इन्द्र सामानिक आदि देवता ओं की पद्वी पाकर उत्पन्न होते हैं, और ३ वहां से चवकर भी शुभगति में उत्पन्न होते हैं और भी तीन प्रकार बताते हैं १ ज्ञान के लिए आलोचना करे तो ज्ञान प्राप्ति होवे, २ दर्शन के लिये आलोचना करनेसे दर्शन प्राप्ति होवे और चारित्र के लिये आलोचना करे तो चारित्र की प्राप्ति होवे ॥ १ ॥ इस जगत में

अर्थ धारन करनवाले उ० दोनोंधरने वाले ॥२॥ क० कल्पता है नि साधु को नि०साध्वी को त० तीनजात के व वस्त्र धा० धारण करने को प० पहिनने को जं० ऊनके भं० रेशम के खो० कपास के क० कल्पता है नि० साधु को नि० साध्वी का त तीनप्रकार के पा० पात्र धा रखनेको प० भोगवनेको अ० तुम्बी के पात्र दा० लकड के पात्र म० मिट्टिके पात्र ति० तीनकारण से व० वस्त्र ध० धारणकरे हि० लज्जासे दु० दुर्गछा से प० परिषह सहने केलिये ॥ १ ॥ ती० तीन आ० आत्मरक्षा ध० धर्मोपदेश से प० प्रेरणा स

॥ २ ॥ कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा तओ वत्थाइ धारित्तिएवा परिहारित्तिए वा त० जंगिए भंगिए खोमिए कप्पइ निग्गथाण वा निग्गथीण वा तओ पायाई धारित्तिए वा परिहारित्तिए वा त० लाउयपाएवा दारुपाएवा मट्टियापाएवा तिहिं ठाणेहिं वत्थं धरेज्जा तं० हिरियत्तिय दुगंछावत्तिय परीसहवत्तियं ॥ ३ ॥ तओ आयरक्खा प०

तीन ज्ञानी पुरुष कहे सूत्र को धारण करनेवाले, अर्थ को धारन करनेवाले और सूत्र अर्थ दोनों को धारन करनेवाले ॥ २ ॥ साधु साध्वी का तीन प्रकार के वस्त्र धारन करना, रखना, तथा उपभोग में लेना कल्पता है, १ ऊन के कम्बलादि, रेशम के शणादि, और कपास क साधु साध्वी को तीन जात का पात्र रखना कल्पता है, तुम्बीपात्र, काष्टपात्र और मिट्टी का पात्र साधु तीन कारण से वस्त्रों रखते हैं नग्न रहने से लज्जा उत्पन्न होवे इसलिये, जिन प्रवचनकी निन्दा होवे इसलिये, और दंश मच्छरादि का परिसह निवार ने को ॥ ३ ॥ तीन आत्मरक्षक बोल कहे १ कोई अकार्य में प्रवर्तता होवे वा उसे धर्मोपदेश देकर कहे

प० मेरुआकर तु० नृप सि० होवे उ० उठकर आ० आत्मा प० एकान्त में अ० जावे ॥४॥ नि निर्ग्रंथ को गि० ग्लानी वाला क करूपता है त० तीन दि अचित्त द० दाति प० लेने को उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ॥ ५ ॥ ति० तीनस्थान से स श्रमण नि० निर्ग्रंथ को सा० स्वधर्मी को स० संभोगीक वि० विसंभोगी क० करता हुवा ण० नहीं अ० उल्घन करता है स० एकदा द देखकर स० श्रावक

...त० धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता भवइ तुसिणीए वा सिया उट्ठित्तु वा आया क्कमेज्जा ॥ ४ ॥ निग्गंथस्सण गिलायमाणस्स कप्पति तओ वियडदत्तीओ हेत्तए तं० उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना ॥ ५ ॥ तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे संभोइय समोइय निसमोइयं करेमाणे णाइक्कमइ त० सड्ढ वा दट्टु सड्डिय

...स को ऐसा अकार्य करना योग्य नहीं है इस तरह समझाकर उस को अकार्य से दूर करे देने मे जो समझे नहीं वा उस की उपेक्षा कर मौन रहे और ३ उस को अटकाने को समर्थ न ...वे तो आप वहां से अन्यत्र चलाजावे ॥ ४ ॥ जो साधु तृषा परिषह को सहन करने में असमर्थ होवे तो उसको अचित्त पानी की तीन प्रकारकी दाति कही है १ द्राक्षादिक का धोवनसो उत्कृष्ट दाति, तक कांजी आदि सो मध्यम दाति और उष्ण पानी सो जघन्य दाति अथवा बहुत पानी सो उत्कृष्ट, कम्पा नी सो मध्यम और एकही धार पीकर तृष्णा समावे सो जघन्य दाति ॥ ५ ॥ अपने स्वधर्मि साधुओं

नि॰मूनकर त॰तीसरीवार मो॰ मृषा भा॰ मायश्चितदेता है च॰ चौथीवार मो॰ नहीं भा॰ मायश्चितदेता है ॥ ६ ॥ ति॰ तीनमकार की अ॰ आज्ञा आ॰ आचार्य की उ॰ उपाध्याय की ग॰ गणिकी ति॰ तीन

स्स वा निसम्मतच्चमोस आउट्टइ चउत्थ नो आउट्टइ ॥ ६ ॥ तिविहा अणुन्ना प॰ त॰ आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणित्ताए तिविहा समणुन्ना प॰ त॰ आयरियत्ताए

में से किसीने पाप कर्म सेवन किया होवे और पूछने पर ना कहे या असत्य बोले तो उस का निर्णय कर योग्य मायश्चित देकर शुद्ध करे, फिर एसा कार्य करे तो भी उस को मायश्चित देकर शुद्ध करे और तीसरी वक्त भी ऐसा करे तो उसे सभा में मायश्चित देकर साथ आहार पानी करे परंतु जो चौथी वक्त फीर पापस्थान का सेवन करे तो उस को मायश्चित देना नहीं परंतु संघ बाहिर करना ऐसा करनेवाले तीर्थंकरों की आज्ञा के उल्लंघन करनेवाले नहीं हैं ॥ ६ ॥ तीन मकार की अनुज्ञा-अधिकार देना कहा जो जाति कुल, बलादि गुण संपन्न अष्ट सम्पदा सहित होवे इस को पद्वी देना १ आचार सहित का आचार्य पद्वी देना, सूत्रार्थ के ज्ञाता होवे और जिस की पास शिष्य वर्ग पठनादि क्रिया करते होवे उन को उपाध्याय, और साधु समुदाय के स्वामी को गणी इसी मकारसे जो सर्वोत्कृष्ट गुण के धारक होवे उन को तीनों पद्वियों देना और आचार्य की आज्ञा से अन्य अधिक

प्रकार की अ० विशेष मनुज्ञा आ० आचार्य की उ० उपाध्याय की ग गणिकी ए ऐसे उ० उपसं पदा ए० एसे पि० छोडना ॥ ७ ॥ ति० तीनप्रकार का व वचन त० तद्वचन त० तद् न्यवचन णा० नावचन ति० तीनप्रकार का अ अवचन प० प्ररूपा णो० नोतद्वचन णो० नोतदन्यवचन अ० अवचन ति तीनमन त० तमन त० तदन्यमन णो० नोअमन ति० तीनअमन णा० नोतन्मन णा० नोतदन्यमन अ० अमन ॥ ८ ॥ ति० तीनकारण से अ० अल्पवृष्टि मि० होवे ते०

उवज्झायत्ताए गणित्ताए । एवं उवसंपयत्ता एवं विजहण्णा ॥ ७ ॥ तिविहे वयणे प० तं० तव्वयणे तदन्नवयणे णोअवयणे । तिविहे अवयण प० त० णो तव्वयणे णो तदन्नवयणे अवयणे ॥ तिविहे मणे प० त० तमणे तयन्नमणे णोअमणे तिविहे अमणे प० त० णोतमणे णो तयन्नमणे अमणे ॥ ८ ॥ तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया

ज्ञानी आचार्य को ज्ञानादिक के लिये पदा देना सो उपसंपदा पढ़ी वैसे ही उपाध्याय गणि को भी जानना यदि आचार्य अपने आचार अनुसार न चले तो उस को छोड कर अन्य आचार्य बनाना ॥ ७ ॥ भगवन्तने तीन प्रकार के वचन कहे १ घट को घट कहना सो तद्वचन २ घट मे अन्य पट कहना सो तदन्यवचन और ३ निरर्थक वचन सो नोअवचन. तीन प्रकार के अवचन, घट को घट नहीं कहना सो नातद्वचन, घट को पट कहे या घट को घट कहे परंतु यथास्थित कहे नहीं सो नोअन्यवचन और निरर्थक वचन सो अवचन ऐसे ही मन और अमन के तीन २ भेद जानना ॥ ८ ॥ किसी प्रदेश में कम

उसमें दे० देशमें प० प्रदेशमें णो० नहीं म० बहुत उ० उदक जो० योनिवाले जी० जीव पो० पुद्गल उ० उदकपने व० आते हैं वि० व्युत्क्रमते हैं च० चवते हैं उ० उपजते हैं दे० देव ना० नाग ज० यक्ष णो० नहीं स० सम्यक् आ० आराधिक भ० होवे त० वहां स० उपस्थित उ० उदक पो० पुद्गल का

तं० तेसिं च णं देससित्रा पएसासि वा णो बहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयति उववज्जति देवा नागा जक्खा णो स म्ममाराहिया भवंति तत्थ समुट्ठियं उदगपोग्गल परिणय वासिउकाम अन्नदेसं साहरंति अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठिय परिणय वासिउकाम वाउकाए विहुणेइ इ च्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाये सिया ॥ तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिया तंज हा तेसिं च णं देसंसि वा पएसासि वा बहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ता ए वक्कमंति विउक्कमंति चयति उववज्जति देवा नागा भूया जक्खा सम्ममाराहिया

वृष्टि या अवृष्टि होवे उस क तीन भेद १ वहां पर बहुत पानी के जीव अप्कायपने उत्पन्न नहीं हुवे होवे या चवते न होवे २ देव, नाग, यक्षादि देवताओं को सम्यक प्रकारसे आराधे न होवे जिस से व रुष्ट होकर उस देश मे बरसने योग्य पानी के जीवों को अन्य स्थान लेजावे या ३ बहुत पानी पडने जैसे बद्दलों हुवे होवे परंतु वायुकी आवश्यता होनेसे वृष्टि होवे नहीं तीन कारन से बहुत वृष्टि होवे १ पानी के जीव अप्काय

प० परिणत वा० वृष्टि के वक्त अ० अन्यक्षेत्र में सा सहरते हैं भा० आभ व० बद्दल स० उत्पन्न हुवे प० परिणमे वा० वर्षाके वक्त वा० वायु वि० चलता है इ इन ति० तीन ठा० कारण से अ० अल्पवृष्टि सि० होवे ति० तीनकारण से म० महावृष्टि सि० होवे पूर्वोक्त ॥ ९ ॥ ति० तीनस्थान से अ० तुरत के उ० उत्पन्न दे० देव दे० देवलोक से इ० इच्छे मा० मनुष्य लोक में ह शीघ्र आ आने

भवंति अन्नत्थ समुट्ठियउदगपोग्गल परिणय वासिउकाम तं देस साहरति अब्भव इल्गा च ण समुट्ठियपरिणय वासिउकाम णो वाउआओ विहुणाति इच्चेएहिं तिहिं ठाणहिं महावुट्ठिकाए सिया ॥ १ ॥ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने दवे देवलोगेसु इच्छे ज्जा माणुस लोग हव्वमागाच्छित्तए णोचेवण सचाएइ हव्वमागाच्छित्तए त० अहुणोव

योनि में बहुत उत्पन्न हुवे होवे, पकते होवे २ देव, नाग, यक्षादि की सम्यक् प्रकारसे आराधना की होवे जिस से अन्य स्थान भी वर्षा योग्य पुद्गलों होवे तो भी उस को उसी क्षेत्र में ले आवे ३ वर्षा के बरस हुवे, बरसन लगे उस को वायु नाश न करे तो ॥ ९ ॥ तत्काल के उत्पन्न हुवे देवताओं अपने पूर्व परि चित मनुष्यों को मिलने के लिये मनुष्य लोक में आने की इच्छा करे परंतु आसके नहीं उस के तीन कारण हैं, १ उस तत्काल उत्पन्न हुवा देवता को दिव्य काम भोगों की प्राप्ति होने से उस में मूर्च्छित,

का णो॰ नहीं स॰ समर्थ है ह॰ शीघ्र आ॰ आने को भ॰ तुरत का उ॰ उत्पन्न दे॰ देव दे॰ देवलोक में दि॰ दिव्य का॰ काम भोग में मु॰ मुर्च्छित गि॰ गृद्ध ग॰ बन्धा भ॰ मास म॰ मनुष्य के का॰ काम भोग को णो॰ नहीं आ॰ आदर करे णो॰ नहीं प॰ अच्छाजाने णो॰ नहीं भ॰ अर्थ बं॰ बंधे णो॰ नहीं नि॰ नियाणा प॰करे णो॰ नहीं ठि॰ स्थिति प॰कल्पकरे भ॰तुरत के उ॰उत्पन्न देव दे॰देवलोक में दि॰ दिव्य का॰ काम भोग में मु॰ मुर्च्छित गि॰ गृद्ध ग॰ बन्धा म॰ मास त॰ उसका म॰ मनुष्य से पे॰

घन्नदेवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने से ण माणुस्सए कामभोगे णो आढाइ णो परियाणाइ णो अट्ठं बंधइ णो णियाणं गरेइ णो ठिइप्पकप्पेपकरेइ अहुणोववन्नेदेवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गाढिए अज्झोववन्ने तस्सण माणुस्सए पेमे वोच्छिन्ने दिव्वे संकंते भवइ अ

गृद्ध, अतृप्त और विषय स्नेह के बंधन से बंधाया हुवा उस में आसक्त बनकरके मनुष्य के कामभोगों का आदर करे नहीं, परन्तु रूप भी उन को माने नहीं उस का नियाणा करे नहीं, और वे यह कामभोग मुझे बहुत काम्तक रहे ऐसा विचार भी करे नहीं, २ तत्काल का उत्पन्न हुवा देवता दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित, गृद्ध, अतृप्त और स्नेह बंधन से बंधाया हुवा होने से मनुष्य का प्रेम टूटता है और देवता का प्रेम बढता है ३ तत्काल का उत्पन्न हुवा देवता दिव्य कामभोग में मूर्च्छित यावत् स्नेह बंधन से बंधाये

प्रेमका वा० विच्छेद होवे दि० तुम दि० देवता का सं० संबंध न होवे अ० तुरत का उ० उत्पन्नदेव देव दे० देवलोक में दि० दिव्य का० काम भोग में मु० मूर्च्छित गा० प्राप्त अ० प्राप्त त० उसको ए० ऐसा भ० होवे इ० अभी ग० जाऊं मु० मुहूर्त में ग० आऊं ते० इतना वक्त में अ० अल्पायुषी म० मनुष्य का० काल धर्म को सं० प्राप्त भ० होते हैं इ० इन ति० तीनस्थान से अ० तुरत का उ० उत्पन्नदेव दे० देवलोक में इ० इच्छे मा० मनुष्यलोक में इ० शीघ्र आ० आनेको नो० नहीं सं० समर्थ होवे इ० शीघ्र आ० आने को

हुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने तस्सण मेवं भवइ इयण्हिं गच्छं मुहुत्तं गच्छं तेणं कालेणं मप्पाउया माणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए नोचेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने

उस का ऐसा विचार होवे कि मैं दो घडी पीछे आऊं इस तरह विचार करते और नाटक देखते दो हजार वर्ष व्यतीत होजावे और इतना अल्प काल में मनुष्य भी यहां से मरकर अन्य स्थान उत्पन्न होजावे इसलिये आसके नहीं तीन कारण से तत्काल के उत्पन्न हुवे देवताओं मनुष्य लोक में आने को समर्थ होते हैं १ तत्काल का उत्पन्न हुवा देवता दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित न होवे, अनित्य जानकर अगृद्ध, अनासक्त रहे और ऐसा जाने कि मनुष्य भव में मुझे उपदेश के देनेवाले आचार्य, उपाध्याय, धर्म के प्रवर्तक,

ति॰ तीनस्थान से अ॰ तुरत का उ॰ उत्पन्नदेव दे॰ देवलोक में इ॰ इच्छे मा॰ मनुष्य लोक में इ॰ शीघ्र आ॰ आनेको अ॰ तुरत का उ॰ उत्पन्नदेव दे॰ देवलोक के दि॰ दिव्य का॰ काम भोग में अ॰ अमूर्च्छित अ॰ अगृद्ध अ॰ अबन्धा अ॰ अप्राप्त त॰ उसको ए॰ ऐसा अ॰ होवे अ॰ है म॰ मेरा म॰ मनुष्य भव का आ॰ आचार्य उ॰ उपाध्याय प॰ प्रवर्तक थे॰ स्थविर ग॰ गणि ग॰ गणधर ग॰ गणावच्छेदक जे॰ जिसका प॰ प्रभाव से म॰ मुझ इ॰ यह रूप दि॰ दिव्य दे॰ देवऋद्धि दि॰ दिव्य दे॰ देवद्युति दि॰

दव्व देवलोएसु इच्छेज्जा माणुस्सलोग हव्वमागच्छित्ता त॰ अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने तस्सण मेव भवइ अत्थिण मम माणुस्सए भवे आयरिएइवा उवज्झाएइवा पवत्तेइवा थेरेइवा गणीइवा गणहरेइवा गणावच्छेएइ वा जेसिं पभावेणं मएइमा एया रूवा दिव्वा देवड्ढी दिव्वादेवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए तंगच्छामि ण त भगवंते वंदामि णमंसा

स्थविर, गणी, गणधर, गणावच्छेदक वगैरह अपने शिष्यादि सह विचर रहे हैं उन के प्रभाव से ही इस प्रकारकी प्रत्यक्ष देवता की ऋद्धि, दीव्य कान्ति, और देव प्रभाव मैंने प्राप्त कीया इसलिये मनुष्य लोक में जाऊं और वंदना नमस्कार करूं, सत्कार देऊं, सन्मान देऊं, कल्याण मंगल के करनेवाले ज्ञानवंत भगवन्त की मैं पूजा करूं इस विचार से देवता यहां मनुष्य लोक में आवे २ नवीन उत्पन्न देवता दीव्य

प्रेमका भा० विच्छेद होवे वि० छुट दि० देवता का स संबंध भ० होवे अ० तुरत का उ उत्पन्नदेव देव दे० देवलोक में दि० दिव्य का० काम भोग में मु० मुर्च्छित जा० यावत् अ० प्राप्त त० उसको ए० ऐसा भ० होवे इ० अभी ग० जाऊ मु० मुहूर्त में ग० जाऊ ते० इतना वक्त में अ० अल्पायुषी म० मनुष्य का० काल धर्म को सं० प्राप्त भ० होते हैं इ० इन ति० तीनस्थान से अ० तुरत का उ० उत्पन्नदेव दे० देवलोक में इ० इच्छे मा० मनुष्यलोक में इ० शीघ्र आ० आनेको नो० नहीं स० समर्थ होवे इ० शीघ्र आ० आने को

हुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने तस्सण मेव भवइ इयण्हि गच्छ मुहुत्त गच्छ तेणं कालेण मप्पाउया माणुस्सा कालधम्मुणा स जुत्ता भवइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुस्स लो गं हव्वमागच्छित्तए नोचेवण संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने

उस का ऐसा विचार होवे कि मैं दो घडी पीछे आऊं इस तरह विचार करते और नाटक देखते दो हजार वर्ष व्यतीत होजावे और इतना अल्प काल में मनुष्य भी यहां से मरकर अन्य स्थान उत्पन्न होजावे इसलिये आसक्त नहीं तीन कारण से तत्काल के उत्पन्न हुवे देवताओं मनुष्य लोक में आने को समर्थ होते हैं १ तत्काल का उत्पन्न हुवा देवता दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित न होवे, अनित्य जानकर अगृद्ध, अनासक्त होवे और ऐसा माने कि मनुष्य भव में मुझे उपदेश के देनेवाले आचार्य, उपाध्याय, धर्म के प्रवर्तक,

भ० भगवान् को व० वंदताहू न० नमस्कार करताहू जा० यावत् प० पूजताहू भ० गुरत का स० उत्सभरेव द० देवलाक में आ० यावत् अ अमात त० उसको भ० होवे भ० रे म० परा मनुष्य भव के मा० माता जा० यावत् सु० पुत्रवधू तं उनको ग० जाऊं ते० उनकी भ० समीप पा० मगटहोऊं पा बतलाउं ता० उनको ए० यारूप दि० दिव्य दे० पूर्ववत् ॥१०॥ त० तीनस्थान स दे० देव पी० मार्थे मा० मनुष्यभव आ० मार्यक्षेत्र में ज० जन्म सु० उत्तम कुलमें प० उत्पत्ति ॥ ११ ॥ ति० तीनस्थान मे दे० देव प० सतत होवे अ० अहो म० मेरा सं० है व० बल वी०

भवे मायाछ्या जाव सुण्हाइवा त गच्छामि ण तेसि मत्तिय पाउब्भवामि पासतु तामे इम म्यारूवं दिव्व देवढ्ढिं दिव्व देवजुइ दिव्व देवाणुभाव लद्ध पत्त अभिसमण्णागय इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए सचारित्तए हव्वमागच्छित्तए ॥ १० ॥ तओ ठाणाहिं देवे पीहेज्जा त० माणुस्सग भव आरिएखेत्ते जम्म सुकुलपच्चायाइ ॥ ११ ॥ तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा त० अ

वगैरह हैं उन की पास में जाऊं और वहां मगट होकर बतलाउं कि ऐसा स्वरूप की दीव्य ऋद्धि, दीव्य शरीर, कान्ति और दीव्य देवानुभाव मास हुवे हैं इन तीन कारनों से देवता मनुष्य लोक में आने को समर्थ होवे ॥ १० ॥ देवता भी तीन वस्तु माप्त करने की इच्छा करते हैं १ मनुष्य जन्म, आर्य क्षेत्र, और उत्तम कुल में जन्म ॥ ११ ॥ देवलोक के देवता तीन कारण से पश्चाताप करते हैं १ अहो मैं बल,

दिव्य दे० देवानुभाव स० मीले प० प्राप्त हुवे अ० सन्मुख हुवे त० उनको ग० जाताहूं त० उन भ० भगवान् को वं० वांदताहूं ण० नमस्कार करताहूं स० सत्कार करताहूं स० सन्मान देताहूं क० कल्याणकारी म० मंगलीक दे० धर्मभन्त चे० ज्ञानवन्त प० पूजताहूं अ० तुरत का उ० उत्पन्न दे० देवलोक में दि० दिव्य का० काम भोग से अ० अमूर्च्छित जा० यावत् अ० अमाप्त त० उसको ए० ऐसा भ० होवे मा० मनुष्य भव में णा० ज्ञानी त० तपस्वी अ० अतिदुष्करदुष्कर क्रियावन्त तं० उनको ग० जाऊं

मि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगलं देवय चेइय पज्जुवासेमि अहुणोववन्नेदेवे देव लोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने तस्सण एव भवइ एस ण माणुस्सए भवे णाणीइवा तवस्सीइवा अइदुक्करदुक्कर कारगे तं गच्छामि ण भगवंते वंदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने तस्सण मेव भवइ अत्थिण मम माणुस्सए

काम्भोगादिक में अमूर्च्छित यावत् अनासक्त बनकर ऐसा विचार करे कि इस मनुष्य भव में महा ज्ञानी, महा तपस्वी, अति दुष्कर करणी को करनेवाले हैं इसलिये मैं उन को वंदने को, नमस्कार करने को यावत् पूजने को मनुष्य लोक में जाऊं. १ नविन उत्पन्न हुवा देवता दीव्य कामभोगों में अमूर्च्छित यावत् अनासक्त बनकर के ऐसा विचार करे कि मनुष्य भव में मेरे माता पिता की पुत्र पुत्रवधू, भगिनी

म० भगवान् को वं० वंदताहूं ण० नमस्कार करवाहूं जा० यावत् प० पूजवाहूं अ० तुरत का उ० उत्पन्नदेव दे० देवलोक में जा० यावत् अ अमात त० उसको भ० होवे अ० है म० मेरा मनुष्य भव के मा० माता जा० यावत् सु० पुत्रवधू तं उनको ग० जाऊं ते० उनकी अ० समीप पा० प्रगटहोऊं पा बतलाउं ता० उनको ए० यहरूप दि० दिव्य दे० पूर्ववत् ॥१०॥ त० तीनस्थान स दे० देव पी० मार्थ मा० मनुष्यभव आ आर्यक्षेत्र में ज० जन्म सु० उत्तम कुलमें प० उत्पत्ति ॥ ११ ॥ ति० तीनस्थान से दे० देव प० संतप्त होवे अ० अहो म० मेरा मं० है ब० बल वी०

भवे मायाइत्ता जाव सुण्हाइत्ता स गच्छामि णं तेसि मतिय पाउब्भवामि पासतु तामे इम एयारूवं दिव्व देवड्ढिं दिव्व देवजुइं दिव्व देवाणुभाव लद्ध पत्त अभिसमण्णागय इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुस लोग हव्वमागच्छित्तए संचाएत्तिए हव्वमागच्छित्तए ॥ १० ॥ तओ ठाणाहिं देवे पीहेज्जा त० माणुस्सग भव आरिएखेत्ते जम्म सुकुलपच्चायाइं ॥ ११ ॥ तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा तं० अ

वगैरह हैं उन की पास में जाऊं और वहां प्रगट होकर बतलाउं कि ऐसा स्वरूप की दीव्य ऋद्धि, दीव्य शरीर, कान्ति और दीव्य देवानुभाव प्राप्त हुवे हैं इन तीन कारनों से देवता मनुष्य लोक में आने को समर्थ होवे ॥ १० ॥ देवता भी तीन वस्तु प्राप्त करने की इच्छा करते हैं १ मनुष्य जन्म, आर्य क्षेत्र, और उत्तम कुल में जन्म ॥ ११ ॥ देवलोक के देवता तीन कारण से पश्चाताप करते हैं १ अहो मेरे में बल,

वीर्य पु० पुरुषात्कारपराक्रम खे०क्षेमवन्त सु० सुभिक्षमें आ०आचार्य उ०उपाध्याय से वि०विद्यमान क०शरीर युक्त णो०नहीं ब०बहुश्रुत भ परा अ०अहो म मेरा इ०पर लोक प०प्रतिबन्ध प०परलोक प०परांगमुख वि० विषयतृष्णा से णा० नहीं दी० दीर्घकाल सा० साधुपना अ० पाला अ० अहो म० मेरी इ० ऋद्धि र० रस सा० साता गु० बहुत भो० भोगसग में णो० नहीं वि विशुद्ध च० चारित्र फा०स्पर्श किया ॥ १२ ॥ इ० इन ति० तीनस्थान स द० देव चे० चवूंगा इ० ऐसा जा० जाने वि० विमान सा०

होण मए सते यल सते वीरिए सते पुरिसक्कारपरक्कमे खेमसि सुभिक्खासि आयरिय-उयज्झाएहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेण णोबहुएसुए अहीए अहोण मए इहलोग पडिबद्धे-णं परलोगपरंमुहेणं विसयतिसिएण णो दीहे सामन्नपरियाए अणुपालिए । अहोण मए इड्डिरससाय गुरुएण भोगाससगिद्धेण णोविसुद्धे चरित्ते फासिए ॥ १२ ॥ इच्चे

वीर्य, पुरुषाकार पराक्रम व दृढ शरीर को धारन करनेवाला होकर वैसे ही सर्वथा क्षेम कुशलवन्त बनकर, सुख से आहारादिक प्राप्त कर और आचार्य उपाध्याय का संसर्ग होने पर भी मैंने बहुत शास्त्राभ्यास किया नहीं २ अहो इस लोक पर्वधि विषयादिक के प्रतिबंध से अमृतपने परलोक से पराङ्मुख रह कर विषय तृष्णा से बहुत कालतक संयम नहीं पाल सका ३ अहो ऋद्धि, रस और साता गर्व में भोग की आशा में रह कर शुद्ध चारित्र पाला नहीं ॥ १० ॥ तीन कारण से देवता जाने कि मैं यहां से चवूंगा

आभरण नि० निस्तेज पा० देखकर क० कल्पवृक्ष को मि म्लान पा० देखकर अ० अपना ते० तेज प हीण मा० मानकर इ इन ति० तीनस्थान से दे० देव को उ० उद्वेग आ आवे अ० अहो म० मेरा ए० एरूप दि० दिव्य दे० देवऋद्धि दि० दिव्य दे० देवद्युति दि० दिव्य दे० देवानुभाव प० प्राप्त ल० मीलीहुई अ० आहुई से च चवन भ० होगा अ अहो म० मुझे मा० माता का रुधिर पि० पिताका

एहिं तिहिं ठाणेहिं देव चइस्सामीति जाणइ विमाणाभरणाइ णिप्पभाइ पासित्ता कप्परुक्खग मिलायमाणं पासित्ता, अप्पणो तेयलेस्स परिहायमाण जाणित्ता, इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा तं• अहोण मए इमाओ एयारूवाओ दिव्वाओ देवड्ढीओ दिव्वाओ देवजुईओ, दिव्वाओ देवाणुभावाओ पत्ताओ लद्धाओ अभिसमण्णागयाओ चवियव्वं भविस्सइ। अहोण मए माउओयं पिउसुक्क त तदुभयसिट्ठ तप्पढमयाएआहारो

१ अपने विमान आभरणको कान्ति रहित देख कर, २ कल्पवृक्ष को म्लान देख कर ३ और अपनी तेजो लेश्या (शरीर दीप्ति) हीन देख कर इन तीन कारणों से देवता अपना चवन जानते हैं और चवन नजीक आया जानकर वे देवताओं तीन कारण से पश्चात्ताप करते हैं १ अहो यह दीव्य देवता की ऋद्धि द्युति, और प्रभाव में पाया हुआ हूं इन सब को छोड कर यहां से चवना पडेगा २ यहां उत्पन्न होते

पाडे के सं० सठान से सं० रहेहुवे दु० दोबाजु प० रहाहुवा ए० एक तरफ वे० वेदिका प० रहीहुई ति० तीनद्वार त० तहां चे० जो च० चौरस वि० विमान ते० वे अ० असाडाके स० सठान से सं० रहे हुवे म० सब दिशा में वे० वेदिका प० रहीहुई च० चारद्वार प० मरूपा ति० तीन प्रतिष्ठित वि० विमान प० घनोदधि प्रतिष्ठित घ० घनवात प्रतिष्ठित च आकाश प्रतिष्ठित ति० तीनप्रकार के वि० विमान

सठाण संठिया सव्वओ समता पागारपरिक्खित्ता एगदुवारा प० । तत्थण जे ते त सन्निमाणा ते सिंघाडगसठाणसठिया दुहओ पागारपरिक्खित्ता एगओ वेइया परिक्खित्ता तिदुवारा प० । तत्थण जे ते चउरंसविमाणा तेणं अक्खाडगसठाणसंठिया सव्वओ समता वेइया परिक्खित्ता, चउदुवारा पन्नत्ता॥ तिपइट्ठिया विमाणा प० त० घणोदहिपइट्ठिया, घणवायपइट्ठिया, उवासंतरपइट्ठिया । तिविहा विमाणा प० त०

लोक के विमानों घनोदधि के आधार से रहे हुवे हैं, तीसरा चौथा देवलोक के विमानों घनवात के आधार से रहे हैं, पांचवा, छट्ठा, सातवा और आठवा देवलोक के विमानों घनोदधि घनवात के आधार से और नवमा, दशवा, इग्यारवा और बारवा देवलोक के यावत् सर्वार्थसिद्ध के विमानों आकाश के आधार से रहे हैं और भी तीन प्रकार के विमान कहे हैं देवताओं को सदैव रहने केलिये शाश्वते विमानों जो हैं सो अवस्थित, २ परिचारणा करने के लिये जो विमानों बनावे सो वैक्रेय और प्रयोजन

अ० अवस्थित दे० देवरूप व माने मानेके ॥ १८ ॥ ति० तीनप्रकार के ने० नारकी स० सम दृष्टि मि०मिथ्यादृष्टि स सममिथ्यादृष्टि ए० ऐसे वि० विकलेन्द्रिय व०वर्जकर जा०यावत् वे० वैमानिक त०तीन दुर्गति प० प्ररूपी ने० नरक की दुर्गति ति० तिर्यंच योनिकी दुर्गति म० मनुष्य की दुर्गति त० तीन सु० सुगति सि० सिद्धि सुगति दे० देवता की सुगति म० मनुष्य की सुगति त० तीनदुर्गतिवाले ने० नारकी दु० दुर्गतिवाले ति०तिर्यंच दु० दुर्गतिवाले म० मनुष्य दु० दुर्गतिवाले त० तीन सु० सद्गतिवाले

अवीडिया, वेउव्विया, परिजाणिया ॥ १७॥ तिविहा णेरइया प० तं० सम्मादिट्ठी,मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी। एव विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं॥ तओ दुग्गईओ पण्णत्ताओ तं० णेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणियदुग्गई, मणुस्सदुग्गई । तओ सुग्गईओ प० तं० सिद्धि सोग्गई, देवसोग्गई, मणुस्ससोग्गई ॥ तओ दुग्गया प० तं० णेरइयदुग्गया तिरि क्खजोणियदुग्गया, मणुस्सदुग्गया । तओ सुग्गया प० तं० सिद्धसुग्गया, देवसुग्गया

से आने जाने को जो विमान बनावे सो परियान ॥ १४ ॥ पांच स्थावर में मिथ्या दृष्टि और तीन विकलेन्द्रिय में समदृष्टि मिथ्या दृष्टि है इन दो को छोड कर अन्य सब दंडकों में तीन दृष्टि समदृष्टि, मिथ्या दृष्टि और मिश्र दृष्टि यह तीन दृष्टिवाले जीवों हैं भगवंतने नरक, तिर्यंच और पांचस्थावरादि मनुष्य की दुर्गति कही है सिद्धगति, देवगति और उत्तम मनुष्यगति य तीन सुगति कही

मि० मिथ्यादृष्टि मु० अच्छीगति वाले दे० देव सु० अच्छीगति वाले म० मनुष्य सु० अच्छीगति वाले ॥ १८ ॥ च० चोथभक्त वाले भि० साधु को क० कल्पता है तीन पा० पानी प० लेने को उ० ओसामन सं० संसेदिम चा० भात का धोवन छ० छठभक्त वाले भि० साधु को क० कल्पता है त० तीन पानी प० लेने को ति० तिलकाधोवण तु० तुसकाधोवण ज० जवकाधोवण अ० अष्टमभक्त वाले भि० साधु को क०

मणुस्ससुग्गया ॥ १५ ॥ चउत्थभत्तियस्सणं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाई पडिगाहित्तए तं० उस्सेइमे, संसेइमे चाउलधोवणे । छट्ठभत्तियस्सणं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाई पडिगाहित्तए, तंजहा—तिलोदए, तुसोदए, जवोदए, ॥ अट्ठमभत्तियस्सणं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए तं जहा आयामए, सोवी

वैसे ही तीन दुर्गतिवाले और तीन सुगतिवाले जीवों मानना ॥ १८ ॥ चोथ भक्त करनेवाले साधु को तीन प्रकार के पानी कल्पते हैं १ आटादि मसुल का धोवन, २ शाकभाजी बाफकर जो पानी निकाले सो संसेदिम और ३ चांवल का धोवन षष्ठ भक्त आहार करनेवाले साधु को तीन प्रकार का पानी कल्पता है १ तील का धोवन, २ तुस का धोवन और ३ यव का धोवन अष्ठ भक्त आहार करनेवाले साधु को

[1] पारने में एक भक्त, धारन में एक भक्त और उपवास के दो भक्त ऐसे चार भक्तका त्याग करने वाले को चोथ भक्त कहते हैं

कल्पता है ध० तीन पानी प० लेने को आ० आछ सो० आयकाशपन सु० शुद्ध गरम पानी ॥ १६ ॥ ति० तीनप्रकार का उ० अभिग्रह फ० फलित आहारदेवे सु० शुद्ध आहार देवे से० भरे हाथसेदेवे ति० तीनप्रकार के ओ० अभिग्रह उ० स्वाकादे भ० दूसरेकादे अ० मुखमें डालता है ॥ १७ ॥ ति० तीन

रए, सुद्धवियडे ॥ १६ ॥ तिविहे उग्गहडे प० तं० फलिहउवहडे, सुद्धोवहडे, संसट्ठोवहडे। तिविहे आगहिए प० त० ज च ओगिण्हइ जंचसाहरइ जंचआसगंसि पक्खिवइ॥ १७॥ तिविहाओ मोयरियाओ प० त० उवकरणोमोयरिया, भत्तपाणो मोयरिया, भावोमोयरिया।

तीन तरह का पानी कल्पता है छाछ की आछ, कांजी का पानी और उष्ण जल ॥ १६ ॥ भगवंत फरमाते हैं कि साधु आहार ग्रहण करने को तीन प्रकार के अभिग्रह धारन करते हैं अपने खाने का तैयार हुवा भोजन थाली आदि में ग्रहण किया इतने में साधु आये वह आहार महोरा देवे तो लेवूं, २ बिना भरे हाथ से देवे तो लेवूं, ३ भोगवने के द्रव्य से हाथ भरे होवे तो लेवूं और भी तीन प्रकारका अभिग्रह गृहस्थने भोगवने को आहार लिया उस में से लेवूं, गृहस्थने अन्य को देने के लिये निकाला उस में का कुच्छ भी हिस्सा मुझे देवे तो ग्रहण करूं, और गृहस्थ भोजन करने बैठा उस में से एक ग्रास ग्रहण किया होवे वैसा आहार देवे तो ग्रहण करूं ॥ १७ ॥ भगवन्तने ऊनोदरी तप तीन प्रकार के कहे १ वस्त्र पात्र रखना सो उपकरण ऊनोदरी, २ बत्तीस कवल में से कुच्छ कम आहार लेना सो आहार ऊनो

प्रकार की मो० ऊनोदरी उ० उपकरण ऊनोदरी भ० भक्तपान ऊनोदरी भा० भावऊनोदरी उ० उपकरण उनोदरी ति० तीनप्रकार की ए० एक वस्त्र ए० एकपात्र चि संयमी को उ० उपाधि सा० रखे ॥१८॥ त० तीन ठा० स्थान णि० साधु णि० साध्वी को अ० अहित कर्ता अ० असुख कर्ता अ० अक्षेमकर्ता अ० अकल्याणकर्ता अ० अननुगामी भ० होवे कू० आर्तरुदन क० कर कर शब्द अ० खराब ध्यान करना त० तीन ठा० स्थान णि० साधु को नि० साध्वी को हि० हित सु० सुख क० क्षमा णि० अकल्याणकर्ता अ० अनुगामी

उवगरणोमोयरिया तिविहा प० तं० एगेवत्थे एगेपाये, चियत्तोवाहिसाइज्जणया ॥ १८ ॥ तओ ठाणा णिग्गंथाणं वा णिग्गंथीण वा अहियाए असुहाए अक्खमाए अणिस्सेयसाए, अणाणुगामियत्ताए भवइ तं० कूअणया, कक्करणया, अवज्झाणया। तओ ठाणा निग्गंथाणं वा णिग्गंथीणवा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए अणु-

दरी २ क्रोधादि कषाय पतला सो भाव ऊणोदरी उस में से उपकरण उणोदरी के तीन भेद एक ही वस्त्र रक्खे, एक पात्र रक्खे और चाहिये जितना उपकरण रक्खे ॥ १८ ॥ आर्तस्वर से रुदन करना, कुरकुराट करना—यह खराब—अमुक खराब ऐसा बोलना और खराब ध्यान करना ये तीन स्थान साधु को अहित के कर्ता है, और सुख, क्षमा, और मोक्ष को नहीं करनेवाले, तथा संसारको पार नहीं करनेवाले हैं इनसे ही आर्तस्वर से रुदन नहीं करना, कुरकुराट नहीं करना और खराब ध्यान नहीं रखना ये तीनों

म० हास अ० रुदन नकरे भ० कर कर भ्रमनकरे अ० अच्छा ध्यान धरना ॥ १९ ॥ त० तीनशल्य प० प्ररूपा मा० माया शल्य णि० निदान शल्य मि० मिथ्यादर्शन शल्य ॥ २० ॥ ति० तीनस्थान से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ सं० संक्षिप्त वि० विपुल ते० तेजुलेश्यावाला भ० होवे आ० आतापना लेनेसे खं० क्षमा करने से अ० आत्मा को त० तपकर्म से ॥ २१ ॥ ते० तीनमास की भि० साधु प्रतिमा प० अंगीकार

गामियत्ताए भवइ तं० अकूयणया, अकक्करणया, अणवज्झाणया ॥ १९ ॥ तओ सल्ला प० तं० मायासल्ले, णियाणसल्ले, मिच्छादंसणसल्ले ॥ २० ॥ तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संखित्त विउल तेउलेस्से भवइ तं० आयावणयाए, खंतिखमाए, अप्पा परोणं तवोकम्मेण ॥ २१ ॥ तेमासियण्ण भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स क-

स्थान साधु को दोनों भव में हित और सुख के कर्त्ता, क्षमा और मोक्ष को करनेवाले और संसार को पार करनेवाले हैं ॥ १९ ॥ भगवन्तने तीन प्रकार के शल्य कहे हैं माया शल्य, निदान शल्य, और मिथ्यादर्शन शल्य ॥ २० ॥ साधु निर्ग्रंथ शीत ताप आदि आतापना शरीर को देते हैं, अतीव कष्ट प्राप्त होने पर तथा उस को निवारने को समर्थ होने पर भी सहन करते हैं, और षष्ठअष्टमादि तप करके पारने में भी रूक्ष युक्त आहार लेते हैं उन साधुओं को उक्त तीन गुणों से तेजु लेश्या की प्राप्ति होती है उस शक्ति से अनेक देशों जलकर भस्म होजाते हैं ॥ २१ ॥ साधुओं की द्वादश प्रतिमाओं

करव भ० साधु को क० कल्पता है त० तीनदाति भो० भोजन की प० लेनेका त० तीन पा पानी का प० एकरात्रिकी भि० भिक्षुप्रतिमा को स० पालन नहीं करता भ० साधु को इ० यह त० तीनस्थान भ० अहित कर्ता भ० अशुभ कर्ता भ० अक्षम कर्ता अ० अकल्याण कर्ता भ० अननुगामी भ० होवे उ० उन्माद भ० प्राप्त करे दी० दीर्घकाल रो० रोगातंक पा० उत्पन्न होवे के० केवलि प० प्ररूपा ध० धर्म से भं० भ्रष्टहोवे ए० एकरात्रि की भि० भिक्षुप्रतिमा स० अच्छी तरह पालता भ० अनगार को त०तीनस्थान

ण्पति तओ दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्तए तओ पाणगस्स । एकराइयं भिक्खुपडिमं असम्ममणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहियाए, असुभाए, अखमाए, अणिस्सेयसाए, अणाणुगामियत्ताए भवति तं० उम्माय वा लभेज्जा, दीहकालियं वा रोयातंकं पाउणेज्जा, केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । एगराइयण्णं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स तओ ठाणा हियाए सुभाए खमाए णिस्सेयसाए, अणुगा

में तीसरी प्रतिमा तीन मास तक आचरने की है उस में तीन दात आहार की और तीन दात पानी की लेना कल्पता है. एक रात्रि की भिक्षु प्रतिमा सम्यक् प्रकारसे नहीं पालनेवाले को तीन स्थान हित, सुख, समा, श्रय और मोक्षको नहीं करनेवाले होवे जैसे कि चित्त विभ्रम होवे, बहुत कालके कुष्टादि रोगों की उत्पत्ति होवे, और केवलि भाषित धर्मसे भ्रष्ट होवे उसी प्रतिमा को सम्यक् प्रकार से पालते और देवादिक के

रि हितकर्ता सु० शुभकर्ता क० क्षेमकर्ता णि० कल्याण कर्ता अ० अनुगामी भ० होवे ओ० अव धिज्ञान स० उत्पन्न होवे म० मनःपर्यव ज्ञान स० उत्पन्न होवे के० केवल ज्ञान स० उत्पन्न होवे ॥ २२ ॥ ज० जम्बूद्वीप में त० तीन क० कर्म भूमि भ० भरत ए० ऐरवत म० महाविदेह ए० ऐसे धा० धातकी खंड द्वीप के पु० पूर्वार्ध में जा० यावत् पु० पुष्करार्धद्वीप के प० पश्चिमार्ध में ॥ २३ ॥ ति० तीन दं० दर्शन स० सम्यक् दर्शन मि० मिथ्यादर्शन स० समामिथ्या दर्शन ति० तीनप्रकार की रु० रुचि स० सम्यक्

मियत्ताए भवति ते० ओहिणाणेवासे समुपज्जेज्जा, मणपज्जवणाणे वास समुपज्जेज्जा केवलणाणेवासे समुपज्जेज्जा ॥ २२ ॥ जम्बुद्दीवे दीवे तओ कम्मभूमीओ प० तं० भर- हे एरवए, महाविदेहे । एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्छि- मद्धे ॥ २३ ॥ तिविहे दसणे प० सम्मदंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छदंसणे। तिविहा रुइ प० तं० सम्मरुई, मिच्छरुई, सम्मामिच्छरुई । तिविहेपओग प० त० सम्मपओगे

उपसर्ग सहन करते तीन स्थानक हित के लिये, सुख, क्षमा, श्रेय और मोक्ष के लिये होवे जैसे कि: अवधिज्ञान उत्पन्न होवे, मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न होवे, और केवल ज्ञान उत्पन्न होवे ॥ २२ ॥ जम्बूद्वीप में, धातकी खण्ड के पूर्व पश्चिम में और पुष्करार्ध की पूर्व पश्चिम में कर्मभूमि मनुष्यों के तीन २ क्षेत्र हैं भरत, ऐरवत और महाविदेह ॥ २३ ॥ तीन प्रकार के दर्शन कहे हैं—सम्यग् दर्शन जो सब तत्त्व को जानना अवस्य

रुचि मि० मिथ्यारुचि स० समामिथ्यारुचि ति० तीनप्रकारका प० प्रयोग स सम्यक् प्रयोग मि० मिथ्या प्रयोग स० सम मिथ्याप्रयोग ॥२५॥ ति० तीनप्रकार का व० व्यवसाय ध धर्मव्यवसाय अ० अधर्मव्यवसाय ध० धर्माधर्म व्यव साय अ० अथवा ति० तीनप्रकार का व० व्यवसाय प० प्रत्यक्ष प० प्रत्यय अ० अनुगामिक अ० अथवा ति० तीन प्रकारका व० व्यवसाय इ इसलोक संबंधि प० परलोक संबंधि इ० इस लोक परलोक संबंधि इ० पहलोक व० व्यवसाय

मिच्छपओगे, सम्मामिच्छपओगे ॥ २४ ॥ तिविहे ववसाये प० त० धम्मिएववसाये अहम्मिएववसाये, धम्मियाधम्मिएववसाये । अहवा तिविहे ववसाये प० तं० पच्च-क्खे, पच्चइए, अणुगामिए । अहवातिविहेववसाये प० त० इहलोइए, परलोइए, इहलोयपरलोइए । इहलोइए ववसाये तिविहे प० त० लोइए, वेइए, सामइए । लोइ-

की श्रद्धा करना सो मिथ्या दर्शन और समामिथ्या दर्शन अर्थात् शुद्धाशुद्ध दोनों तीन प्रकार की रुचि सम्यग् रुचि, मिथ्यात्व रुचि और मिश्र रुचि मन का व्यापार सो प्रयोग सम्यक् प्रयोग, मिथ्यात्व प्रयोग और मिश्र प्रयोग ॥ २५ ॥ कार्य सिद्धि के लिये क्रिया करना सो व्यापार धर्म व्यापार साधु का आचार अधर्म व्यापार असंयति का और धर्माधर्म व्यापार सो देशविरति श्रावक का और भी तीन प्रकार का व्यापार प्रत्यक्ष सो अवधि मनःपर्यव केवल रूप प्रत्यय सो इन्द्रिय ज्ञान रूप और अनुगामिक व्यापार सो अनुमान से जानना जैसे धूम्रानुसार अग्नि जानना और भी व्यापार तीन प्रकार के इस

ति० तीनप्रकार का लो० लौकिक वे० वैदिक स० सामायिक लो० लौकिक व्यवसाय ति० तीनप्रकार का अ० अर्थ ध० धर्म का० काम वे० वैदिक व्यवसाय ति० तीनप्रकार का रि० ऋग्वेद ज० यजुर्वेद सा० सामवेद सा० सामायिक व० व्यवसाय ति० तीनप्रकार का णा० ज्ञान द०दर्शन च० चारित्र ॥२८॥ ति० तीनप्रकार की अ० अर्थ योनि सा० साम दा० दाम भे० भेद ॥ २९ ॥ ति० तीनप्रकार के पो०

ववसाये तिविहे प० तं० अत्थे धम्मे कामे । वेइए ववसाये तिविहे प० तं० रिउव्वे ए, जजुव्वेए, सामवेए, ॥ सामइए ववसाये तिविहे प० तं० णाणे, दंसणे चरित्ते ॥ २८ ॥ तिविहा अत्थजोणी प० तं० सामे दामे भेए ॥ २९ ॥ तिविहा पोग्गला

लोक संबंधि, परलोक संबंधि और इस लोक परलोक दोनों लोक संबंधि इस लोक संबंधि व्यापार तीन प्रकार के १ लौकिक व्यवहार रखना २ वेदाश्रित सो वैदिक और ३ सामायिकसो सिद्धांताश्रित धर्म क्रिया लौकिक व्यवसाय के तीन भेद अर्थ व्यवसाय, द्रव्य की उपार्जना करना धर्म व्यवसाय धर्म करना और काम व्यवसाय सो विषय वैदिक व्यवसाय तीन प्रकार के ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद सामायिक व्यापार तीन प्रकार का ज्ञान, दर्शन और चारित्र ॥ २८ ॥ तीन प्रकार की अर्थ योनि कही प्रिय वचन बोलना सो साम रखना सो दाम और भेद पारना सो भेद ॥ २९ ॥ तीन प्रकार के

प्रयोग प० प्रयोग परिणत मी० मिश्रपरिणत वी० विससा परिणत ॥ २७ ॥ ति० तीन प० प्रतिष्ठित ण० नरक पु० पृथ्वी प्रतिष्ठित ण० नरक आ० आकाश प्रतिष्ठित आ० आत्म प्रतिष्ठित णे० नैगम स० संग्रह व० व्यवहार को पु० पृथ्वी प्रतिष्ठित उ० ऋजुसूत्र से आ० आकाश प्रतिष्ठित ति० तीन स० शब्दनय से आ० आत्म प्रतिष्ठित ॥ २८ ॥ ति० तीनप्रकार का मि० मिथ्यात्व अ० अक्रिया अ० अविनय अ० अ

प० त० पओगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ॥ २७ ॥ तिपइट्ठिया णरगा प० तं० पुढविपइट्ठिया णरगा आगासपइट्ठिया, आयपइट्ठिया ॥ णेगम संगह ववहाराणं पुढविपइट्ठिया, उज्जुसुयस्स आगासपइट्ठिया, तिण्हं सद्दणयाणं आयपइट्ठिया ॥ २८ ॥ तिविहे मिच्छत्ते प० त० अकिरिया, अविणए, अण्णाणे ।

प्रयोग परिणत सो जीव के व्यापार से बने वस्त्रादि मिश्र परिणत कुच्छ प्रयोग से कुच्छ स्वभाव से और विससा परिणत सो स्वभाव से बने जैसे इन्द्र धनुष्य ॥२७॥ तीन वस्तु के आधार से नरक बतलाए हैं नैगम और संग्रह, व्यवहार नयवाले पृथ्वी के आधार से नरक है ऐसा मानते हैं ऋजु सूत्र नयवाले आकाश के आधार से नरक है ऐसा मानते हैं और शब्द तथा समभिरूढ नयवाले आत्मा के आधार से ही नरक है ऐसा मानते हैं ॥ २८ ॥ तीन प्रकार के मिथ्यात्व कहे मिथ्यात्वी की क्रिया सो

ज्ञान भ० अक्रिया ति० तीनप्रकार की प० प्रयोगक्रिया स० समुदानीक्रिया अ अज्ञानक्रिया प०प्रयोग क्रिया ति० तीनप्रकार की म० मनप्रयोगक्रिया व० वचन प्रयोगक्रिया का० काय प्रयोगक्रिया स० समु दानीक्रिया ति० तीनप्रकार की अ० अनंतर समुदानीक्रिया प० परंपरा समुदानीक्रिया उ० उभय स०समु

अकिरिया, तिविहा प० त० पओगाकिरिया, समुदाणकिरिया, अन्नाणकिरिया । पओ गकिरिया तिविहा प० तं० मणपओगकिरिया, वयपओगकिरिया, कायपओगकिरिया, समुदाणकिरिया तिविहा प० त० अणंतरसमुदाणकिरिया, परंपरसमुदाणकिरिया, तदुभयसमुदाणकिरिया । अण्णाणकिरिया तिविहा प० त० मइअन्नाणकिरिया,

अक्रिया, मिथ्यात्वी का निश्चय सो अक्रिया और मिथ्यात्वी का ज्ञान सो अज्ञान इस में से अक्रिया तीन प्रकार की मन वचन और काया के योगों से कर्म बंध करना सो प्रयोग क्रिया और किये हुवे कर्मों को अच्छी तरह अंगीकार करना सो समुदानी क्रिया और अज्ञान से कर्मबंधे सो अज्ञान क्रिया प्रयोग क्रिया तीन प्रकार की—मन प्रयोग, वचन प्रयोग और काया प्रयोग समुदानी क्रिया तीन प्रकार की प्रथम समय की क्रिया सो अनंतर सामुदानिक क्रिया क्रिया किये को तीन समय होगये होवे सो परंपरा सामुदानिक क्रिया और अनंतर तथा परंपरा से क्रिया होवे सो अनंतरपरंपरा सामुदानिक क्रिया तीसरी अज्ञान क्रिया के तीन भेद मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और विभंग अज्ञानकी क्रिया आभिनि

दानीकिया अ० अज्ञान क्रिया ति० तीनप्रकार की म० मतिअज्ञानक्रिया सु० श्रुतअज्ञानक्रिया वि० विभंग
अज्ञानक्रिया अ० अविनय ति० तीनप्रकार का दे० देशत्यागी नि० निरावलम्बी णा० ज्ञान रागद्वेष अ०
अज्ञान ति० तीनप्रकार का दे० देशअज्ञान स० सर्वअज्ञान भा० भाव अज्ञान ॥ २९ ॥ ति० तीनप्रकार
का ध० धर्म सु० सूत्रधर्म च० चारित्र धर्म अ० अस्तिकाय धर्म ति० तीनप्रकार का उ० उपक्रम ध०

सुयअन्नाणकिरिया, विभंगअन्नाणकिरिया । अविणये तिविहे प० त० देसच्चाइ, णि
रालंबणया, णाणपेज्जदोसे । अन्नाणे तिविहे प० त० देसअण्णाणे, सव्वअण्णाणे,
भावअण्णाणे ॥ २९ ॥ तिविहे धम्मे प० तं० सुयधम्मे, चरित्तधम्मे, अत्थिकाय
धम्मे । तिविहे उवक्कमे प० तं० धम्मिए उवक्कमे, अहम्मिए उवक्कमे, धम्मिया

मिथ्यात्व के तीन भेद देश का त्याग कर वन में या विदेश में परिभ्रमण करे, सब कुटुम्ब का त्याग कर
निरालम्बी बने और राग द्वेषादि अनेक दोषों से अपनी आत्मा को मलिन करे अज्ञान मिथ्यात्व तीन
प्रकार के—देश से न जाने सो देश अज्ञान, सर्वथा न जाने सो सर्व अज्ञान और द्रव्य से जाने परन्तु
पर्याय से न जाने सो भाव अज्ञान ॥ २९ ॥ भगवंतने धर्म के तीन प्रकार फरमाये हैं सिद्धांत का श्रवण
करना सो श्रुत धर्म, पंचमहाव्रत और दश प्रकार का यति धर्म सो चारित्र धर्म और धर्मास्ति कायादिक द्रव्य
का स्वभाव सो अस्तिकाय धर्म तीन प्रकार के उपक्रम (उद्यम) कहते हैं धर्म करना, चारित्र पालना सो

धर्मका उपक्रम अ० अधर्मका उपक्रम ध० धर्माधर्मका उपक्रम अ० अथवा ति० तीनप्रकार का उ० उपक्रम आ० आत्मोपक्रम प० परोपक्रम त० तदुभयोपक्रम ए० ऐसे वे० वैयावृत्य अ० अनुग्रह अ० धर्मशिक्षण उ० उपालंभ ए० ऐसे इ० एक के में ति० तीन तीन आ० आलापक ज० जैसे उ० उपक्रम ॥ १० ॥ ति०

धम्मिए उवक्कमे ॥ अहवा तिविहे उवक्कमे प० त० आयोवक्कमे, परोवक्कमे, तदुभयोवक्कमे । एवं वेयावच्चे, अणुग्गहे, अणुसिट्ठि, उवालंभे, एवमिक्किके तिन्नि २ आलावगा जहेव उवक्कमे॥१०॥ तिविहा कहा प० तं० अत्थकहा, धम्मकहा,

धर्म का उपक्रम, पापरंभ करना सो अधर्म का उपक्रम और देशव्रती श्रावक का उपक्रम सो धर्माधर्म उपक्रम और भी तीन प्रकार के उपक्रम—आत्मा को अनुकूल उपसर्ग होने पर शील रक्षा के लिये वेहानसादि मरण करना सो आत्मोपक्रम, परके लिये मरना सो परोपक्रम और उभय के लिये उपक्रम सो उभयोपक्रम. ऐसे ही तीनों उपक्रम वैयावृत्य में जानना स्वत के लिये आहार लेने को जाना, अन्य को आहारादि लाकर देना, अपनेको और अन्य को आहारादि लाकर देना ज्ञानादि उपकार में भी तीन भेद आप ज्ञानादिक के लिये अभ्यास करे, व अन्य को करावे, स्वतः करे अन्य की पास करावे धर्म की शिक्षा में उक्त तीनों भेद अपनी आत्मा को शिक्षा देवे अन्य की आत्मा को शिक्षा देवे और अपनी तथा अन्य की आत्मा को शिक्षा देवे उपालंभ में भी तीन भेद अपनी आत्मा को उपालंभ देना, अन्य की आत्मा को उपालंभ देना तथा अपनी व अन्य की आत्मा को उपालंभ देना ॥ १० ॥

तीनकथा अ० अर्थकथा ध० धर्मकथा का० कामकथा ति० तीन अ० विनिश्चय अ० धनका ध० धर्म का का० काम का ॥ ३१ ॥ त तथारूप भं० भगवन् स० श्रमण का मा० माहण को पु० पूजते की किं० क्या फ० फल पु० पूजन से स० श्रवण फल से० उसको भ० भगवन् स० श्रवण से किं० क्या फ० फल णा० ज्ञानफल से० उसको भ० भगवन णा० ज्ञान से किं० क्या फ० फल वि० विज्ञानफल ए० ऐसे

कामकहा । तिविहा विणिच्छिए प० तं० अत्थविणिच्छिए, धम्मविणिच्छिए, कामविणिच्छिए ॥ ३१ ॥ तहारूवाणं भंते समणं, वा माहणं वा, पज्जुवासेमाणस्स किं फले ? पज्जुवासणया सवणफले । सेणं भंते सवणे किंफले ? णाणफले, । सेणं भंते णाणे किंफले ? विण्णाणफले। एवमेव अभिलावेण इमा गाहा अणुगन्तव्वा—सवणे

तीन प्रकार की कथा धन की कथा सो अर्थ कथा, दान शीलादिक की कथा सो धर्म कथा और कामशास्त्र की कथा सो काम कथा ऐसे ही अर्थ विनिश्चय, धर्म विनिश्चय और काम विनिश्चय के तीन २ भेद जानना ॥ ३१ ॥ श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो पूज्य ! तथाभूत साधु पुरुषों की पर्युपासना करने से क्या फल होता है ? भगवन्त फरमाते हैं कि हे गौतम ! श्रवण फल होवे श्रवण से क्या होवे ? ज्ञान प्राप्ति ज्ञान प्राप्ति से क्या होवे ? विज्ञान प्राप्ति विज्ञान से ? प्रशस्त त्याग रूप प्रत्याख्यान प्रत्याख्यान से आस्रव निवृत्ति सो संयम संयम से भगवान की आज्ञा का आराधकपना आज्ञा आराधकपना से

अ० अभिलाप से इ० यह गा० गाथा से अ० जानना स० श्रवण णा० ज्ञान वि० विज्ञान प० प्रत्याख्यान स० संयम अ० अनाश्रव त० तप वो० बोध अ० अक्रिया णि० निर्वाण जा० यावत् से उसको भं० भगवन् अ० अक्रिया से किं० क्याफल णि० निर्वाण फल से० उसको भ० भगवान् णि० निर्वाण से किं० क्या फ० फल सि० सिद्धिगमन प० पर्युपासनाका फ०फल प०प्ररूपा स०आयुष्यन् श्रमण ॥ १२ ॥ प० प्रतिमा प० संपन्न अ० साधु को क कल्पता है त० तीन उ० उपाश्रय प० प्रतिलेखना तं० वह

णाणेय विण्णाणे,पच्चक्खाणे य संजमे ॥ अणण्हवे तवे चेव। वोदाणे अकिरिया णिव्वा णे (१) जाव सेण भंते अकिरिया किंफला ? णिव्वाणफला, सेण भंते णिव्वाणे किंफले ? सिद्धिगइगमणपज्जवसाणफले पण्णत्ते समाणाउसो ! ॥ २२ ॥ *

पडिमा पडिवन्नस्सण अणगारस्स कप्पति तओ उवस्सग्गपडिलेहित्तए, तं० अहे आगमण

तपश्चरण तपश्चरण से बोध बीज सम्यक्त्व की प्राप्ति बोध बीज से क्रिया रहित होना क्रिया रहित होने से निर्वाण प्राप्ति निर्वाण प्राप्ति मे क्या लाभ ? अहो गौतम ! सर्व कार्य की सिद्धि हो मुक्ति के अनंत अव्याबाध सुख की प्राप्ति होती है यह तीसरा ठाणा का तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा

जो साधु बारह परिमा में से किसी भी परिमा के धारक होते हैं उन साधुको अपने लिये रहने को तीन प्रकार के उपाश्रय को देख कर याचना करनी कल्पती है किसी गृहस्थ के लिये मकान, घर आदि

म० अथ आ० आने जाने वाले का गि० गृह में वि० वृत गृह में रु० वृक्षकेतलगृह में ए० ऐसे अ० आज्ञा ले उ० ग्रहणकरे प० प्रतिमा प० सपन्न अ० साधु को क० कल्पता है त० तीन स० संथारा प० मातिके स्तना पु० पृथ्वीशिला क०काष्ठशिला सं० घासका ए० ऐसे अ० आज्ञासे उ० ग्रहणकरे ॥ १ ॥ ति० तीन का० काल ती० अतीत प० वर्तमान अ० अनागत ति० तीनप्रकार का स० समय ती० अतीत प० वर्तमान

गिहसिंवा, अहेवियडगिहसिंवा, अहेरुक्खमूलगिहसिंवा । एवं मणुण्णवेत्तए, उवाइणि त्तए ॥ पडिमापडिवन्नस्सणं अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगापडिलेहित्तए त० पुढ-विसिला, कट्ठसिला, अहासंथडमेव । एवमणुन्नावित्तए उवाइणित्तए ॥ १ ॥ तिविहे काले प० त० तीते, पडुप्पन्ने, अणागए । तिविहे समए प० त० तीते,

बनाया होवे तो उस के एक कोने की याचना करे, अथवा खुला मकान में एक कोना ढकाहुवा होवे तो उस की अथवा वृक्ष मूल में गृह बना हुवा होवे तो या वृक्ष की नीचे गृहस्थ की आज्ञा लेकर वहां रहना कल्प प्रतिमा अंगीकार करनेवाले साधु को तीन प्रकार के संथारे देखना कल्पे पृथ्वी की शीला, काष्ट की शीला और तृणादिक का संथारा इन तीनों की प्राप्ति होवे तो आज्ञा मांग कर ग्रहण करे ॥ १ ॥ तीन प्रकारका काल कहा अतीत, वर्तमान और अनागत समय तीन प्रकारके अतीत, वर्तमान और

अ० अनागत ए० एसे आ० आवलीका आ०श्वासोश्वास पा०प्राणु थो०थोम ल० लव मु० मुहूर्त अ०अहोरात्रि जा० यावत् वा० लक्षवर्ष पु० पूर्वांग पु० पूर्व जा० यावत् ओ० अवसर्पिणी ति० तीनप्रकार का पु० पुद्गल परावर्तन ती० अतीत प० वर्तमान अ० अनागत ॥ २ ॥ ति० तीनप्रकार का व० वचन ए० एक वचन दु० द्विवचन ब० बहुवचन अ० अथवा ति० तीनप्रकार का व० वचन इ० स्त्रीवचन पु० पुरुष वचन ण०

पडुप्पन्ने, अणागए । एवं आवलिया, आणापाणू, थोवे, लवे, मुहुत्ते, अहोरत्ते, जाव वाससयसहस्से, पुव्वंगे, पुव्वे, जाव ओसप्पिणी ॥ तिविहे पोग्गलपरियट्टे पं० तं० तीते पडुप्पन्ने, अणागए ॥ २ ॥ तिविहे वयणे प० त० एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे अहवा तिविहे वयणे प० त० इत्थिवयणे, पुम्मवयण, णपुंसगवयणे । अहवा तिवि

अनागत ऐसे ही आवलिका, आणा (श्वासोश्वास) प्राणु, थोम, लव, मुहूर्त, अहोरात्रि, सो वर्ष, पूर्वांग, पूर्व यावत् अवसर्पिणी के अतीत, अनागत और वर्तमान ऐसे तीन २ भेद जानना वैसे ही तीन प्रकार के पुद्गल परावर्तन जानना ॥ २ ॥ तीन प्रकार के वचन एक वचन-एक की विवक्षा की जावे जैसे घट, पट वगैरह द्विवचन दो की विवक्षा की जावे जैसे दो घट, पट, बहुवचन बहुत की विवक्षा की जावे जैसे बहुत घट, पट वगैरह और भी वचन के तीन भेद, स्त्री वचन नदी, नारी वगैरह, पुरुष वचन आम्र, घट, पट वगैरह, और नपुंसक वचन कुसुम पत्रम् पाम्य वगैरह और भी तीन प्रकार का

* हिन्दि भाषा में नपुंसक वचन का अभाव है परंतु प्राकृत भाषा में तीनों वचन रहे हुवे हैं

नपुंसक वचन अ॰ अथवा ति॰ तीनवचन ती अतीत वचन प॰ वर्तमान वचन अ॰ अनागत वचन ॥३॥ ति॰ तीनप्रकार की प॰ प्ररूपणा णा॰ ज्ञान प्ररूपणा दं॰ दर्शन प्ररूपणा च॰ चारित्र प्ररूपणा ति॰ तीनप्रकार का स॰ सम्यक् णा॰ ज्ञानसम्यक् दं॰ दर्शन सम्यक् च॰ चारित्र सम्यक् ॥४॥ ति॰ तीनप्रकार का उ॰ उपघात उ॰ उद्गमनोपघात उ॰ उत्पादनोपघात ए॰ एषणोपघात ए॰ ऐसे ति॰ तीनप्रकार की आ॰ आराधना णा॰ ज्ञानाराधना द॰ दर्शनाराधना च॰ चारित्रार्द्द ॥५॥

तिविहे वयणे प॰ तं॰ तीतवयणे, पडुप्पन्नवयणे अणागयवयणे, ॥३॥ तिविहा पन्नवणा प॰ तं॰ णाणपन्नवणा, दंसणपन्नवणा, चरित्तपन्नवणा । तिविहे सम्मे प॰ तं॰ णाणसम्मे दंसणसम्मे चरित्तसम्मे॥४॥ तिविहे उवघाए प॰ तं॰ उग्गमोवघाए उप्पायणोवघाए, एसणोवघाए । एव विसोही ॥५॥ तिविहा आराहणा प॰ तं॰

वचन अतीत कालका वचन जैसे किया, वर्तमान काल का वचन जैसे करता हूं और भविष्य काल का वचन जैसे करूंगा ॥३॥ तीन प्रकार की प्ररूपना कही है ज्ञान प्ररूपना, दर्शन प्ररूपना और चारित्र प्ररूपना तीन प्रकारका सम्यक् ज्ञान सम्यक्, दर्शन सम्यक्, और चारित्र सम्यक् ॥४॥ भगवतने तीन प्रकार के आहारादि भोगवने से संयम का उपघात फरमाया आधा कर्मादि सोलह दोष गृहस्थ की ... आदि कर्मादि सोलह दोष साधु की तरफ से लगे सो उत्पादनोपघात और

रिआराधना णा० ज्ञानाराधना ति० तीनप्रकार की उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ए० ऐसे द० दर्शनाराधना च० चारित्राराधना ति० तीनप्रकार की सं० संक्लिष्ट की णा० ज्ञान संक्लिष्ट द० दर्शन संक्लेश च० चारित्र संक्लिष्ट ए० एसे अ० असंक्लिष्ट ए० ऐसे अ० अतिक्रम व० व्यतिक्रम अ० अ

णाणाराहणा, दसणाराहणा, चरित्ताराहणा, । णाणाराहणा तिविहा प० त० उक्कोसा, मज्झिमा जहन्ना। एवं दंसणाराहणावि। चरित्ताराहणावि। तिविहे संकिलेसे प० त० णाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चरित्तसंकिलेसे। एव असंकिलेसेवि। एव अइक्कमेवि। वइक्कमेवि अइयारेवि अणा

चंकारे दश दोष गृहस्थ और साधु दोनों की तरफ से लगे सो ऐषणोपघात दोष; इन तीनों प्रकारके दोषों को टालकर आहारादि ग्रहण करे सो तीन विशुद्धि फरमाइ ॥ ५ ॥ अतिचार रहित पालना सो आराधना उस के तीन भेद, ज्ञान आराधना काल आविनय के आठ अतिचार को दूर कर ज्ञान पढना सो, दर्शन आराधना निस्संकिय निकंखियादि आठ अतिचार रहित सम्यक्त्व पालना सो और चारित्र आराधना पांच सुमिति तीन गुप्ति पालना सो उस में ज्ञान आराधना के तीन भेद उत्कृष्ट मध्यम और जघन्य ऐसे ही दर्शन और चारित्र आराधना के भी उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य ऐसे तीन २ भेद जानना संक्लेश तीन प्रकार के ज्ञान संक्लेश ज्ञान प्राप्त करते क्लेश पावे, दर्शन संक्लेश श्रद्धा प्राप्त करे नहीं और चारित्र संक्लेश सो चारित्र पालते क्लेशित होवे ऐसे ही असंक्लेश के भी तीन भेद जानना और ऐसे ही

आ० यावत् प दूरकरे तं० यह णा० ज्ञान अतिक्रम को दं० दर्शन अतिक्रम को च० चारित्र अतिक्रम को ए० ऐसे व० व्यतिक्रम अ० अतिचार अ० अनाचार को ॥ ६ ॥ ति० तीनप्रकार का पा० प्रायश्चित आ० आलोचना प० प्रतिक्रमना उ० उभय ॥ ७ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की

यारेत्ति ॥ तिण्हमइक्कमाणं आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहिज्जा, जाव पडिवज्जेज्जा तं० णाणाइक्कमस्स, दंसणाइक्कमस्स चरित्ताइक्कमस्स । एवं वइक्कमाणं, अइयाराणं, अणाया राणं ॥ ६ ॥ तिविहे पायच्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभया रिहे ॥ ७ ॥ जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तओ अकम्मभूमीओ प० तं०

ज्ञान दर्शन चारित्र में दोष लगाना इच्छे सो अतिक्रम, दोष लगाने को जावे सो व्यतिक्रम, दोष स्वीकारे सो अतिचार और दोष लगाना सो अनाचार उक्त रीतियों से ज्ञान, दर्शन और चारित्र में अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार लगा होवे जिस की आलोचना करे, अब ऐसे कार्यों को नहीं करूंगा, यों प्रतिक्रमे, पूर्व कृतकर्मों की आत्मा की साक्षि से निंदा करे गुरु की साक्षी से गर्हा करे यावत् उस का योग्य प्रायश्चित अंगीकार करके शुद्ध होवे ॥ ६ ॥ प्रायश्चित के तीन भेद आलोचना, प्रतिक्रमना और दोनों करना ॥ ७ ॥ जम्बू द्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में तीन अकर्मभूमि कही हेमवय, हरिवर्ष

दा० दक्षिण दिशामें त० तीन अ० अकर्मभूमि प० प्ररूपी है हेमवय ह० हरीवास दे० देवकुरु ज० जंबूद्वीप के मं० मन्दरपर्वत की उ० उत्तरदिशा में त० तीन अ० अकर्मभूमि उ० उत्तरकुरु र० रम्यकवास ए० एरनवय जं० जंबूद्वीप के म० मेरुपर्वत की दा० दक्षिणदिशामें त० तीनक्षेत्र भ० भरत हे० हेमवय ह० हरिवास जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की उ० उत्तरदिशामें त० तीनक्षेत्र र० रम्यकवास ह० एरनवय ए० एरवत जं० जंबूद्वीप के मं० मन्दरपर्वत की दा० दक्षिणदिशा में त० तीन वा० वर्षधर पर्वत चु० चूलहिमवन्त पर्वत म० महाहिमवन्त णि० निषद जं० जंबूद्वीप के म० मेरुपर्वत की उ० उत्तर दिशामें त० ती० तीन वा०

हेमवए हरिवासे देवकुरा। जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण तओ अकम्मभूमीओ प० त० उत्तरकुरा, रम्मगवासे, एरन्नवए। जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तओ वासा प० त० भरहे, हेमवए, हरिवासे जंबूमंदरस्स उत्तरेण तओ वासा प० त० रम्मगवासे, एरन्नवए, एरवए॥ जंबूमंदरस्स दाहिणेण तओ वासहरपव्वया प० त० चुल्लहिमवंत, महाहिमवंते, णिसढे। जंबूमंदरस्स उत्तरेण तओ

और देवकुरु जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर दिशा में भी तीन अकर्म भूमि के क्षेत्रों हैं; उत्तरकुरु, रम्यक वर्ष और एरणवय जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण में तीन क्षेत्र भरत, हेमवंत और हरिवर्ष और उत्तर दिशा में रम्यकवर्ष, एरणवय और एरवत जम्बूद्वीप के मेरु की दक्षिण में तीन वर्षधर पर्वत चूलहिमवंत,

वर्षधर पर्वत नी० नीलवन्त रू० रूपि सि० सिखरी जं० जंबूद्वीप के म० मेरुपर्वत की दा० दक्षिण दिशा में त० तीन म०महाद्रह प०पद्मद्रह म० महापद्मद्रह ति०तिगिच्छद्रह त०तहां त० तीन दे०देवता म०महाऋद्धि वाले जा० यावत् प० पल्योपम ठि० स्थितिवाले प० रहते हैं सि० श्रीदेवी हि० ह्रीदेवी धी० धृतिदेवी ए० ऐसे उ० उत्तर में ण० विशेष के० केसरीद्रह म० महापुंडरीकद्रह पों० पुंडरीकद्रह दे० देवता कि० कीर्ति बु० बुद्धि ल० लक्ष्मी जं० जंबूद्वीप के मे० मेरुपर्वत की दा० दक्षिणदिशा में चु० चूलहिमवंत वा०

वासहरपव्वया प० तं० णीलवंते, रुप्पी, सिहरी । जंबूमंदरस्स दाहिणेणं तओ महादहा प० तं० पउमद्दहे, महापउमद्दहे, तिगिच्छिद्दहे । तत्थणं तओ देवयाओ महिड्डियाओ जाव पलीओवमट्ठिईयाओ परिवसंति तं० सिरी, हिरी, धीई । एवं उत्त रेणवि णवरं—केसरिद्दहे, महापोंडरीयद्दहे, पोंडरीयद्दहे। देवयाओ कित्ती, बुद्धी, लच्छी

जंबूमंदरस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ पउमद्दहाओ महाद्दहाओ

महाहिमवंत और निषध, और उत्तर में तीन वर्षधर पर्वत नीलवंत रूपि और शिखरी जम्बू द्वीप के मेरु की दक्षिण में तीन महाद्रह पद्म द्रह, महापद्मद्रह और तिगिच्छद्रह और वहां पर पल्योपम की स्थितिवाले और बड़ी ऋद्धिवाले तीन देवताओं रहते हैं श्री ह्री और धृति ऐसे ही उत्तर दिशामें केसरीद्रह, महा पुंडरी कद्रह और पुंडरीकद्रह और उनके देवता कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी जम्बूद्वीप के मेरुपर्वतकी दक्षिण दिशामें

पुष्करार्धद्वीप के प० पश्चिमार्ध में त० वैसा वि० विशेष रहित भा० कहना ॥ ८ ॥ ति० तीनस्थान से दे० देशसे पु० पृथ्वी च० चले तं० वह अ० जैसे अ० नीचे इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के उ० उदारिक पुद्गल वि० चले व सब ते० वे उ० उदारिक पो० पुद्गल वि० चलते दे० देश से पु० पृथ्वी च० चले म० महोरग म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महेश इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में अ० नीचे उ० जाना वि० जाना क० करते दे० देश पु० पृथ्वीका च० चले णा० नागकुमार सु० सुवर्णकुमार का० स० संग्राम व० होते दे० देश से पु० पृथ्वी च० चले इ० इन ति० तीनस्थान से के० संपूर्ण पु० पृथ्वी च० चले अ० नीचे

सर्वं माणियव्वं॥८॥ तिहिं ठाणेहिं देसेहिं पुढवी चलेज्जा तंजहा—अहेणमिमीसे, रयणप्प भाए पुढवीए उराला पोग्गला णिवलेज्जा, तएणंते उराला पोग्गला णिवत्तमाणा देस पु ढवीए चलेज्जा। महोरए वा महिड्ढिए जाव महेसक्खे इमीसे रयणप्पभाए पुढवी ए अहे उमज्जणिमज्जियं करेमाणे देसं पुढवीए चलेज्जा। णागसुवन्नाणवा संगामं

यावत् अंतर नदियों तक सब कहना ॥ ८ ॥ भगवंतने से देश पृथ्वी चलने का तीन कारण फरमाया है १ नीचे रत्नप्रभा पृथ्वी में उदारिक पुद्गलों स्वभाव से चलते हैं इस तरह पुद्गलों चलते पृथ्वी देश से चलती है २ कोई महर्द्धिक या बहुत सुख का धारी महोरग व्यंतर वगैरह अभिमानसे रत्नप्रभा पृथ्वी में जावे आवे, नीकलते पृथ्वी चले ३ और नाग कुमार, सुवर्ण कुमार आदि देवताओं का परस्पर युद्ध होने से

इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीके घ० घनवात गु० गुंजायमान होवे त० तब से० वह घ० घनवात गु० गुंजायमान होने से घ० घनोदधिको ए० उन्मत्त करे त० तब से० वह घ० घनोदधि ए० उन्मत्त होवे के० संपूर्ण पु० पृथ्वीको चा० चलावे दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महेश त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को इ० ऋद्धि जु० युति ज० यश ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कारपराक्रम उ० देखाते के० संपूर्ण पु० पृथ्वीको चा० चलावे दे० देव अ० असुर का स० संग्राम व० होवे के० संपूर्ण पु० पृथ्वी च० चले

सि वट्टमाणंसि देसं पुढवीए चलेज्जा ॥ इच्चेएहिं तिहिंठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा

त० अहेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए गुप्पेज्जा, तएणं से घणवाए गुप्पिए० समाणे घणोदहि मेएज्जा, तएणं से घणोदहीए एइएसमाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा। देवे वा महिड्डिए जाव महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स माहणस्स वा इड्ढिं जुतिं जस बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं पुढविं चालेज्जा। देवासुर

देश से पृथ्वी चले. तीन प्रकार से सर्वथा पृथ्वी चलती है १ रत्नप्रभा पृथ्वी घनवात और घनोदधि के आधार से रही है जब घनवात गुंजायमान होता है तब उस से घनोदधि कंपता है और उस से सर्व पृथ्वी कम्पित होती है कोई महाऋद्धिवाले देव तथाभूत श्रमण माहण को अपनी ऋद्धि, बल, वीर्य, यश, पुरुषाकार पराक्रम बताने को पृथ्वी चलाने तो सम्पूर्ण पृथ्वी चलती है तथा वैमानिक देव और असुर

सगामसि या वट्टमाणसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा, इच्चएहिं तिहिं ॥ १ ॥ तिवि हा देवा किव्विसिया प० तं• तिपलिओवमट्ठिईया, तिसागरोवमट्ठिईया, तेरससागरो वमट्ठिईया ॥ कहिण्ण भंते तिपलिओवमट्ठिइया देवा किव्विसिया परिवसति ? उप्पि जोइसियाण हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थणं तिपलिओवमट्ठिईया देवा किव्वि सिया परिवसति । कहिण्णं भंते तिसागरोवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसति ?

इनतीन से ॥ १ ॥ ति तीनप्रकार का दे• देव कि० किल्विपि ति० तीन पल्योपम ठि० स्थितिवाले ति तीनसागरोपम ठि० स्थितिवाले ते० तेरह सागरोपम ठि० स्थितिवाले क० कहां भं० भगवन् ति० तीन पल्योपम ठि स्थितिवाले दे० किल्विपि देव प० रहते हैं उ० ऊपर जो ज्योतिषी की हि नीचे सो० सौधर्म इ० ईशान कल्पके ए० यहां ति० तीनपल्योपम ठि० स्थितिवाले दे० किल्विपिदेव प० रहते हैं क० कहां भ० भगवन् ति० तीनसागरोपम ठि• स्थितिवाले दे० किल्विपिदेव प० रहते हैं उ० ऊपर

कुमार को परस्पर युद्ध होवे तब भी सम्पूर्ण पृथ्वी चलती है ॥ १ ॥ तीन प्रकार से किल्विपी देव कहे तीन पल्योपम की स्थितिवाले, तीन सागरोपम की स्थितिवाले और तेरह सागरोपम की स्थितिवाले अहो पूज्य ! तीन पल्योपम की स्थितिवाले किल्विपी कहां रहते हैं ? अहो शिष्य ! ये ज्योतिषी से ऊंचे और नीचे ईशान देवलोक की नीचे रहते हैं तीन सागरोपम की स्थितिवाले किल्विपी सौधर्म ईशान

सो० सौधर्म ई० ईशान कल्पकी हे० नीचे स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र कल्प के ए० यहां ति० तीनसाग
रोपम ठि० स्थितिवाले दे० किल्विपि देव प० रहते हैं क० कहां भ भगवन् ते० तेरह सा० सागरोपम की
ठि० स्थितिवाले दे० किल्विपिदेव प० रहते हैं उ उपर ब० ब्रह्मदेवलोक की हि० नीचे लं० लंतकदेव
लोक की ए० यहां ते० तेरह सागरोपम की ठि० स्थितिवाले दे० किल्विपिदेव प० रहते हैं ॥ १० ॥ स०
शक्रेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजाकी बा० बाह्यपरिषदा के दे० देवकी ति तीनपल्योपम की ठि० स्थिति

उप्पिं सोहम्मीसाणाण कप्पाणं, हेट्ठिं सणकुमारमाहिंदकप्पेसु एत्थण तिसायरोवम
ट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति । कहिण्णं भंते तेरससागरोवमट्ठिइया देवा कि
व्विसिया परिवसति ? उप्पिं बम्भलोयस्स कप्पस्स हिट्ठिं लंतगे कप्पे एत्थण तेरससा
गरोवमट्ठिइया देवा किव्विसिया परिवसति ॥ १० ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो
बाहिरपरिसाए देवाण तिण्णिपलिओवमाई ठिई प० । सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो अ

सनत्कुमार व माहेन्द्र देवलोक की नीचे रहते हैं, तेरह सागरोपम की स्थितिवाले किल्विपी ब्रह्मदेवलोक
से उपर और लंतकदेवलोक की नीचे रहते हैं ॥ १० ॥ शक्रेन्द्र की बाहिर की परिषदा के देवताओं की
स्थिति तीन पल्योपम की कही और उस की आभ्यंतर परिषदा की देवियों की तथा ईशानेन्द्र की बा

प० धरेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की अ० आभ्यन्तर प० परिषदाके दे० देवीकी ति० तीनपल्योपम की ठि० स्थिति ई० ईशानेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की बा० बाह्य प परिषदा की दे० देवीकी ति० तीन प० पल्योपम की ठि स्थिति ॥ ११ ॥ ति० तीनप्रायश्चित पा० ज्ञान प्रायश्चित दं० दर्शन प्रायश्चित च० चारित्र प्रायश्चित त० तीन अ० अनुघातिम ह० हस्तकर्म क० करता मे० मैथुन से० सेवता रा रात्रि भोजन भु० भोगवता त० तीन पा० पारांचिक दु० दुष्टपारांचिक प० प्रमाद पारांचिक अ० अन्योन्य क०

ब्भितरपरिसाए देवीण तिण्णिपलिओवमाइं ठिई प० ईसाणस्सण देविंदस्स देवरण्णो बाहिरए परिसाए देवीण तिण्णिपलिओवमाई ठिई प० ॥ ११ ॥ तिविहे पायच्छित्ते प० त० णाणपायच्छित्ते, दंसणपायच्छित्ते, चरित्तपायच्छित्ते। तओ अणुग्घाइमा प० त० हत्थ कम्म करेमाणे, मेहुणं सेवमाणे, राईभोयण भुंजमाणे । तओ पारंचिया

[बाह्]िर की परिषदा की देवियों की तीन पल्योपम की स्थिति कही है ॥ ११ ॥ भगवंतने प्रायश्चित के तीन भेद कहे हैं ज्ञान प्रायश्चित-ज्ञान में दोष लगे उस का, दर्शनप्रायश्चित-दर्शन में दोष लगे उस का, और चारित्र प्रायश्चित चारित्र में दोष लगे उस का तीन अनुघातिमे साधु कहे १ हस्तकर्म करनेवाले, २ मैथुन सेवनेवाले और ३ रात्रि भोजन करनेवाले. तीन पारांचिके १ अत्यंत क्रोधी अधम गुरु के

१ प्रायश्चित तप जिस को नहीं होसके सो २ तप से पापका निवारन होवे ऐसा उसका प्रायश्चित

करता पारांचिक त० तीन अ० अनवस्थित सा० स्वधर्मी की ते चोरी क० करते अ अन्यधर्मी का ते० चोरी क० करत ह० धपड द० मारते त० तीनको णो० नहीं क० कल्पता है प० प्रवर्जादेने को पं पंडग वा० रोगिष्ट की० नपुंसक ए० ऐसे मुं० मुण्डना सि० शिक्षादेना उ०सावधान करना सं० संभोग करना

प० त० दुट्टे पारंचिए, पमत्ते पारंचिए, अण्णमण्ण करेमाणे पारंचिए । तओ अणव ट्ठुया प० तं० साहम्मियाण तेण करेमाणे, अण्णधम्मियाण तेण करेमाणे, हत्यताल दलयमाणे । तओ णो कप्पति पव्वावित्तए तं० पंडए, वाइए, कीवे । एवं मुंडावेत्तए,

आत्मा का घातक, अथवा साध्वी की साथ मैथुन की वांच्छा करनेवाले को, २ बहुत प्रमादी, स्त्यानगृद्धि निद्रावाले या प्रमाद से पंचेन्द्रिय की घात करनेवाले को ३ परस्पर मैथुन क्रिया व चुम्बनादि करने वाले को तीन को अनवस्थाप्य नवमां प्रायश्चित आता है परस्पर साधु की उपधि, भंडोपकरण और शिष्यादिक की चोरी करनेवाले को, अन्यदर्शनी के भंडोपकरण की चोरी करनेवाले का, चपेटादि से ताडना करनेवाले को तीन को दीक्षा देना नहीं कल्पता है वैसे ही लोच करना, आचारादिक सि खाना, उपाधि आहारका संभोग करना, साथ रहना, बैठना उठना नहीं कल्पता है १ जन्म नपुंसक को. व्याधिग्रस्त मनुष्य को अर्थात वायु से जिस का शरीर बहुत स्थूल बना होवे, उठ बैठ नहीं

सं० सागरस्वना ॥ १२ ॥ त० तीन अ० वांचनादेने अयोग्य अ० अविनया वि० विगयगृद्ध अ० अव्यवसित पा०प्राभृत त० तीनको क० कल्पता है वा० वांचनीदेना वि० विनयी अ० विगय में अनासक्त वि० व्यवसित पा०प्राभृत ॥१३॥ त० तीन दु०दुर्लभ बोधि दु० दुष्ट मू० मूढ वु० व्युद्ग्राहीत त०तीन सु०

सिक्खावेत्तए, उवट्ठावेत्तए, संभुजित्तए, संवासित्तए, ॥ १२ ॥ तओ अवायणिज्जा प० तं० अविणीए, विगइपडिबद्धे, अविओसिय पाहुडे । तओ कप्पंति वाइत्तए तं० विणीए, अविगइपडिबद्धे, विओसिय पाहुडे ॥ १३ ॥ तओ दुसण्णप्पा प० तं०

करसकता होवे वैसे को तथा क्लीव का इत्यादि को दीक्षा देना वगैरह करना नहीं कल्पता है ॥१२॥ भगवत फरमाते हैं कि तीन पुरुष वाचना को अयोग्य हैं १ गुरु की आज्ञा नहीं माननेवाला अविनीत, २ रसगृद्धि पुरुष और ३ अत्यंत क्रोधी उक्त तीनों को दिया हुवा श्रुत निष्फल होता है तीन पुरुषों को शास्त्र की वांचना देनी गुरु का विनय करनेवालेको रसगृद्धि नहीं बननेवालेको, और सब को प्रियकारी

१ क्लीव (नपुंसक) के चार भेद१ दृष्टि नपुंसक-वस्त्र रहित स्त्री को देखकर वीर्यपात जिस का होवे सो; २ शब्द नपुंसक सुरतशब्द सुनकर वीर्यपात जिस को होवे सो, आदिग्ध क्लीव और निमंत्रणा क्लीव स्त्री स एकान्त में बोलाया हुवा वीर्य स्खलन होवे सो

सुन्भ बोधि अ० अदुष्ट अ० अमूढ अ० अवुग्ग्राही ॥ १४ ॥ तीन म० मंडलाकार प० पर्वत मा मानुषोत्तर कुं० कुंडलवर रु० रुचक त० तीन म० बडे से बडे जं० जंबूद्वीप का म० मेरु पर्वत म० पर्वत में स० स्वयंभूरमण समुद्र स० समुद्र में बं० ब्रह्मदेवलोक क० देवलोक में ॥ १५ ॥ ति० तीनकल्पस्थिति सा० सामा

दुट्ठे, मूढे, वुग्गाहिए । तओ सुसन्नप्पा प० त० अदुट्ठे, अमूढे, अवुग्गाहिए ॥१४॥
तओ मंडलियपव्वया प० त० माणुसुत्तरे, कुंडलवरे, रुयगवरे । तओ महइ महालया
प० त० जंबुद्दीवदीवे मंदरे, मंदरेसु, सयंभुरमणसमुद्दे समुद्देसु, बंभलोए कप्पे कप्पेसु
॥ १५ ॥ तिविहा कप्पट्ठिई प० त० सामाइय कप्पट्ठिई, छेओवट्ठावणिय कप्पट्ठिई,

वमन बोलनेवाले, और क्षमावन्त इन तीन को सूत्र की वाचना देना कल्पता है ॥ १३ ॥ तीन पुरुषों को समझाना बहुत मुश्किल होता है २ दुष्ट तत्त्व प्ररूपक के द्वेषी, २ मूढ गुणदोष के अजान, ३ और व्युद्ग्राहित सो कुगुरुओं का भरमाया हुवा तीन मनुष्यों को समझाना सुलभ है अदुष्ट सो द्वेष रहित, अमूढ तत्त्व जाननेवाले और अन्य धर्मावलम्बियों से नहीं भ्रमित कीया हुवा ॥ १४ ॥ तीन पर्वत गोल मंडलाकार है मानुषोत्तर पर्वत पुष्करार्ध द्वीप की चारो तरफ रहा हुवा है, कुंडल पर्वत सासवा कुंडलद्वीप में रहाहुवा है और तेरवा रुचक द्वीप में रहाहुवा रुचक पर्वत है तीन बडे मालय कहे हैं जम्बूद्वीप का मेरु पर्वत सब पर्वतों में बडा कहा, असंख्याते समुद्र में छेल्ला स्वयंभूरमण समुद्र सब से बडा और सब

यिक कल्पस्थिति छे० छेदोपस्थापनिक कल्पस्थिति णि० निर्विश्राम कल्पस्थिति अ० अथवा ति० तीन प्रकार की क० कल्पस्थिति णि० निर्विष्ट कल्पस्थिति जि० जिनकल्पस्थिति थ० स्थविर कल्प स्थिति ॥ १६ ॥ ण नारकी को त० तीन शरीर वे० वैक्रेय ते० तेजस क० कामाण अ० असुरकुमार का त० तीन शरीर ए० ऐसे स० सर्व देवताको व तीन शरीर आ उदारिक ते० तेजस क० कामाण

णिव्विसमाण कप्पट्ठिइ । अहवा तिविहा कप्पट्ठिइ प० त० णिव्विट्ठ कप्पट्ठिइ, जिण कप्पट्ठिइ, थेर कप्पट्ठिइ ॥ १६ ॥ णेरइयाण तओ सरीरगा प० त० वेउव्विए तेयए कम्मए । असुरकुमाराण तओ सरीरगा एवं चेव सव्वेसिं देवाण । पुढविकाइयाण,

देवलोक में पांचवा ब्रह्मदेवलोक कहा ॥ १५ ॥ तीन प्रकार की कल्पस्थिति कही सामायिक चारित्र में आत्मा की स्थिरता सो सामायिक चारित्र की स्थिति, ऐसे ही छेदोपस्थापनीय चारित्र की स्थिति यह प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर में होता है और निर्विश्रम स्थिति सो नव साधुओं का परिहार विशुद्ध चारि त्र और भी तीन प्रकार की कल्पस्थिति १ निर्विष्ट कल्पस्थिति सो परिहार विशुद्ध चारित्र, जिनकल्प स्थिति और स्थविर कल्पस्थिति ॥ १६ ॥ नारकी में तीन शरीर कहे वैक्रेय तेजस और कार्माण ऐसे ही तीन शरीर सब देवताओं को होता है वायु काय में उदारिक वैक्रेय, और कार्माण इसलिये वायु

ए० ऐसे वा० वायु काय व० वर्जकर जा० यावत् प चौरिन्द्रिय ॥ १७ ॥ गु० गुरुमत्यय त० तीन मत्यनीक आ० आचार्य मत्यनीक उ० उपाध्याय मत्यनीक थे० स्थविर मत्यनीक ग० गतिमत्यय त० तीन मत्यनीक इ० इहलोक मत्यनीक प० परलोक मत्यनीक दु उभयलोक मत्यनीक स० समुह मत्यय त० तीन म० तीन मत्यनीक कु कुलमत्यनीक ग० गणमत्यनीक स० संघमत्यनीक अ० अनुकपा मत्यय त० तीन

तओ सरीरगा प० तं० ओरालिए तेयए कम्मए । एवं वाउकाइयवज्जाणं जाव चउ रिंदियाणं ॥ १७ ॥ गुरु पडुच्च तओ पडिणीया प० तं० आयरियपडिणीए, उव ज्झायपडिणीए, थेरपडिणीए । गइ पडुच्च तओ पडिणीया प० तं० इहलोयपडिणीए, परलोय पडिणीए, दुहओलोयपडिणीए । समूहं पडुच्च तओ पडिणीया प० त० कुल

काय को छोडकर चार स्थावर तीन विगलेन्द्रिय में उदारिक तेजस् और कार्माण (तिर्यच पंचेन्द्रिय में चार और मनुष्य में पांच शरीर होने से यहां नहीं ग्रहण किये गये हैं) ॥ १७ ॥ मत्यनीक वैरी को कहते हैं उस के तीन भेदों अपेक्षा से श्री भगवंतने फरमाये हैं गुरु आश्रय से तीन मत्यनीक पंचाचार के पालक, और धर्मके दाता आचार्यकी निन्दा करे, सूत्र ज्ञान के दाता उपाध्यायकी निन्दा करे और दीक्षा, श्रुत और वय एसे तीनों प्रकार के स्थविरों की निन्दा करे, गति के संबंध में तीन मत्यनीक अज्ञान तप करके शरीर को कष्ट देवे, पंचाग्नि तापे सो इहलोक मत्यनीक, विषय कषाय में रक्त रहे सो परलोक

प्रत्यनीक त० तपस्वी गि० ग्लानी की स० शिष्यकी भा० भावप्रत्यय त० तीन प्रत्यनीक णा० ज्ञान प्रत्यनीक दं० दर्शन प्रत्यनीक च० चारित्र प्रत्यनीक सु० सूत्रप्रत्यय त० तीन प्रत्यनीक सु० सूत्रप्रत्यनीक अ० अर्थप्रत्यनीक त० उभय प्रत्यनीक ॥ १८ ॥ त० तीन पिता के अंग अ० इसी भ इसीमिमा के०

पडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए। अणुकंप पडुच्च तओ पडिणीया प० त० तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए। भाव पडुच्च तओ पडिणीया प० तं० णाणपडिणीए, दंसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए। सुय पडुच्च तओ पडिणीया प० त० सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए, ॥ १८ ॥ तओपितियंगा प० त०

प्रत्यनीक और उभय लोक का स्वराब करे सो दोनों लोक प्रत्यनीक बहुत जनों का एकत्रित होना सो समूह उस के तीन प्रत्यनीक एक आचार्य के अनेक शिष्यों में से किसी छोटे शिष्य की निन्दा करे, सो कुल प्रत्यनीक, अपनी संप्रदाय के अनेक साधुओं उन की निन्दा करे सो गण प्रत्यनीक और साधु साध्वी श्रावक, श्राविका की इन चारों तीर्थ की निन्दा करे सो संघ प्रत्यनीक अनुकम्पा के संबंधमें तीन; तपस्वीकी निन्दा करे, रोगी की निन्दा करे, और नव दीक्षितकी निन्दा करे भाव प्रत्यनीक के तीन भेद १ उत्सूत्र की प्ररूपणा सो ज्ञान प्रत्यनीक २ दर्शन प्रत्यनीक सो धर्म करते हुवे शंकालावे और ३ संयम में दोष लगावे सो चारित्र प्रत्यनीक सूत्र के संबंध में तीन प्रत्यनीक सूत्रप्रत्यनीक अर्थ प्रत्यनीक और

कच मे० मूछ रो० रोम न० नख त० तीन मा० माता के अंग मं० मांस सो० रुधिर म० मस्तककीभेजी ॥ १७ ॥ ति० तीनस्थान से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान भ० होवे क० कब अ० मैं अ० अल्प ब० बहुत सु० सूत्र अ० पढूंगा क० कब अ० मैं ए० एकल विहारी प्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरुंगा क० कब अ० मैं अ० अपच्छिम म० मरणांतिक सं० संलेखणा झू० झूसणा झू० झूसकर भ० भक्तपानी का प०प्रत्याख्यान कर पा० पादोपगमन का० काल को अ० नहीं वांछता वि०

अट्ठी, अट्ठिमिंजा, केसमंसरोमनहे । तओ माउयगा प० तं० मंसे सोणिए, मत्थु लिंगे ॥ १९ ॥ तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तं० कयाण अहं अप्पंवा, बहुंवा सुय अहिज्जिस्सामि । कयाण मह मेक्कल्लविहारपडिम उवसपज्जित्ताणं विहरिस्सामि । कयाण मह मपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणा झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि॥ एवं

सूत्र भय दोनों प्रत्यनीक ॥ १८ ॥ पिता के तीन अंग भगवंतन फरमाये हैं अस्थि सो हड्डी, हड्डी की मिंजी, और बाल, दाढी, मूछ, रोम व नख वैसे ही माता के तीन अंग कहे हैं मांस, लोही और मस्तक की नीचे की भेजी ॥ १९ ॥ तीन प्रकार से साधु महा निर्जरा या पर्यवसान करता है कब मैं अल्प या बहुत शास्त्रों का अभ्यास करूं, कब मैं एकलविहारी की प्रतिमा अंगीकार करूं, और कब मैं मरणान्तिक संले-

विचरता ए० ऐसे स० मनसे स० वचनसे स० कायासे पा० प्रगटकरता हुआ नि० निर्ग्रंथ को म० महानिर्जरा म० महा पर्यवसान म० होवे ॥२०॥ ति तीनस्थान से स० श्रावक को म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान म० होवे क कब अ मैं अ० थोडा ब बहुत प० परिग्रह प० त्यजूंगा क० कब अ० मैं मुं० मुंडित भ० होकर अ० गृह से अ० अनगारपना की प० प्रवज्या स्वीकारूंगा क० कब अ० अपच्छिम म० मरणांतिक सं० संलेख

समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे निग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ २० ॥ तिहिं ठाणेहिं समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तं० कयाणं अहं अप्पंवा, बहुअंवा परिग्गहं परिच्चइस्सामि कयाणं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ

सना करके, कषायोंको पतली बना करके, भक्त पान का प्रत्याख्यान करके, और पादोपगमन अनशन करके काल को नहीं वांछता हुआ विचरु. इस तरह मन, वचन और काया से चिन्तवना करता हुवा महा निर्जरा ६ ॥ २० ॥ श्रावक तीन मनोरथ चिन्तवता हुवे महा निर्जरा करे पहिले मनोरथ में श्रावक ऐसा विचार करे कि १ कब मैं थोडा या बहुत परिग्रह का सर्वथा त्याग करूंगा वह दिन मेरा कल्याण का होगा २ कब मैं द्रव्य से मस्तक और भाव से मन मुंडकर साधुपना अंगीकार करूंगा और जिस दिन साधुपना अंगीकार करूंगा वह दिन मेरा कल्याण का होगा और ३ कब मैं मरण के अन्त में कषायों को पतली

णा झू॰ झूसणा झू॰ झूसकर भ॰ भक्तपान प॰ प्रत्याख्यान कर पा॰ पादोपगमन का॰ कालको अ॰ नहीं वांछता वि॰ विचरूंगा ए ऐसे स॰ मनसे स॰ वचन से स॰ काया से जा॰ जागता स॰ भ॰ नहीं वांछता वि॰ विचरूंगा ए ऐसे स॰ मनसे स॰ वचन से स॰ काया से जा॰ जागता स॰ श्रावक को म॰ महानिर्जरा म॰ महापर्यवसान म॰ होवे ॥२१॥ ति॰ तीनप्रकार का पो॰ पुद्गल प॰ प्रति घाति प॰ परमाणु पुद्गल प परमाणु पुद्गलको प॰ पाकर प॰ प्रतिघातपावे लु॰ रूक्षपनासे प॰ प्रतिघात पावे लो॰ लोकान्त मे प॰ प्रतिघात पावे ॥ २२ ॥ ति॰ तीन प्रकार का च॰ चक्षु ए॰ एकचक्षु दि॰ दोचक्षु ति॰

अणगारियं पव्वयिस्सामि कयाणं अपच्छिममारणंतिय संलेहणाझूसणा झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिसए पाओवगए कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि एवं समणसा सवयसा सकायसा जागरमाणे समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ॥ २१॥ तिविहे पोग्गलपडिघाए प॰ तं परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलेपप्पपडिहंमेज्जा लुक्खत्ताएवा पडिहंमेज्जा, लोगंतेवा पडिहंमेज्जा ॥ २२ ॥ तिविहे चक्खू प॰ तं॰

करके भक्त प्रत्याख्यान को अंगीकार करूं, और मरण को नहीं वांच्छता हुवा विचरूं जिस दिन ऐसा करूंगा उस दिन मेरा कल्याण होगा ॥ २१ ॥ चलते हुवे पुद्गल की तीन प्रकार से स्खलना होती है एक परमाणु दूसरे परमाणु से प्रतिघात पाकर स्खलना पावे २ रूक्षपना से परमाणु पुद्गल आगे चलसके नहीं, और ३ लोक के अन्त में गये हुवे परमाणु धर्मास्तिकाया का अभाव से आगे नहीं जासकने से

रिपरूंगा ए०एम म०मनसे स०वचनसे स०कायासे पा०मगन्करखाहुआ नि०निर्ग्रंथ को म०महानिर्भरा म०महा पर्यवसान भ० होवे ॥२०॥ ति० तीनस्थान से स० श्रावक का म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान भ० होवे क० कब म ४ म० थोडा ब० बहुत प० परिग्रह प० त्यजूंगा क० कब अ० मैं मुं० मुंडित भ० होकर भ० गृह मे अ० अनगारपना की प० प्रवर्ज्या लऊंगा क० कब अ० अपश्चिम म० मरणांतिक सं० संलेखण

समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाण निग्गथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ २० ॥ तिहिं ठाणेहिं समणोवासए महानिज्जर महापज्जवसाण भवइ त० कयाण महमप्पंवा, बहुअंवा परिग्गह परिचइस्सामि कयाण अह मुंडे भवित्ता अगाराओ

मना करके, कषायोंको पतली बना करके, भक्त पान का प्रत्याख्यान करके, और पादोपगमन अनशन करके कालको नहीं वांच्छता हुआ विचरूं. इस तरह मन, वचन और काया से चिन्तवना करता हुआ महा निर्जरा करे ॥ २० ॥ श्रावक तीन मनोरथ चिन्तवत हुवे महा निर्भरा करे पहिले मनोरथ में श्रावक ऐसा विचार करे कि १ कब मैं थोडा या बहुत परिग्रह का सर्वथा त्याग करूंगा वह दिन मेरा कल्याण का होगा २ कब मैं द्रव्य से मस्तक और भाव से मन मुंडकर साधुपना अंगीकार करूंगा और जिस दिन साधुपना अंगीकार करूंगा वह दिन मेरा कल्याण का होगा और ३ कब मैं मरण के समय में कषायों को पतली

णा झू० झूसणा झू० झूसकर भ० भक्तपान प० प्रत्याख्यान कर पा० पादोपगमन का० कालको अ० नहीं वांछता वि० विचरूंगा ए ऐसे स० मनसे व० वचन से स० काया से जा० जागता स० श्रावक को म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान भ० होवे ॥२१॥ ति० तीनप्रकार का पो० पुद्गल प० प्रति घात पावे प० परमाणु पुद्गल प० परमाणु पुद्गलको प० मासकर प० प्रतिघातपावे लु० रुक्षपनासे प० प्रतिघात पावे लो० लोकान्त से प० प्रतिघात पावे ॥ २२ ॥ ति० तीन प्रकार का च० चक्षु ए० एकचक्षु वि० दोचक्षु ति०

अणगारियं पव्वयिस्सामि कयाणं अपच्छिममारणंतिय संलेहणाझूसणा झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि एवं समणसा सवयसा सकायसा जागरमाणे समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ॥२१॥ तिविह पोग्गलपडिघाए प० त परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलंपप्पपडिहमेज्जा लुक्खत्ताएवा पडिहंमज्जा, लोगंतेवा पडिहमेज्जा ॥ २२ ॥ तिविहे चक्खू प० तं०

करके भक्त प्रत्याख्यान को अंगीकार करूं और मरण को नहीं वांछता हुवा विचरूं जिस दिन ऐसा करूंगा उस दिन मेरा कल्याण होगा ॥ २१ ॥ चलते हुवे पुद्गल की तीन प्रकार से स्खलना होती है एक परमाणु दूसरे परमाणु से प्रतिघात पाकर स्खलना पावे २ रुक्षपना से परमाणु पुद्गल आगे चलसके नहीं. और ३ लोक के अन्त में गये हुवे पुद्गलों धर्मास्तिकाया का अभाव से आगे नहीं जासकने से

तीन नगु छ० छद्मस्थ म० मनुष्य को ए० एकचक्षु दे० देवता को बि० दोचक्षु त० तथारूप स० श्रमण को मा० माहण को उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दं० दर्शनवाले को ति० तीनचक्षु व० कहना सि० होवे ॥ २१ ॥ ति० तीनप्रकार का अ० अभिसमागम उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति० तिर्यक ज० जब त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को अ० उत्कृष्ट णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता है से० तब प० प्रथम समय में उ० ऊर्ध्व अ० देखे त० पीछे ति० तिर्यक् त० उसके पीछे अ० अधो अ० अधो लोक में दु० दुरभिगम स० भा

एगचक्खू, बिचक्खू तिचक्खू । छउमत्थेण मणुस्से एगचक्खू, देवे बिचक्खू, तहा रूवे समणेवा माहणेवा उप्पन्नणाणदंसणधरे सेण तिचक्खुत्ति वत्तव्वंसिया ॥ २३ ॥ तिविहे अभिसमागमे प० तं० उड्ढं अहं तिरियं । जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा, अइसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जइ सेणं तप्पढमयाए उड्ढमभिसमेइ, तओ तिरि

स्सकना पावे ॥ २२ ॥ तीन प्रकार की चक्षु श्री भगवंतने फरमाइ एक आंख, दो आंख और तीन आंख. श्रुत ज्ञान रहित छद्मस्थ मनुष्य को द्रव्य नेत्र होने से एक चक्षु देवता को दो चक्षु एक द्रव्य चक्षु और दूसरा श्रुत अवधि, तथाभूत श्रमण माहण कि जो ज्ञान दर्शन के धरनेवाले हैं उन को तीन [illegible] ज्ञान और परम अवधि ज्ञान ॥ २१ ॥ अभिसमागम-(वस्तु को सम्यक्

पुष्मन् श्रमण ॥ २८ ॥ ति० तीनप्रकार की इ० ऋद्धि दे० देवकीऋद्धि रा० राजकी ऋद्धि ग० गणि की ऋद्धि दे० देवकी ऋद्धि ति तीनप्रकार की वि० विमानकी ऋद्धि वि० विकुर्वणा की ऋद्धि प० परि चारणाकी ऋद्धि अ० अथवा दे० देवकी ऋद्धि ति० तीनप्रकार की स० सचित्त अ० अचित्त मी० मिश्र रा० राजाकी ऋद्धि ति तीनप्रकार की र० राजाके प्रवेश की ऋद्धि र० राजा के निकलने की ऋद्धि

य तओ पच्छा अहे अहोलोगेणं दुरभिगमे प० समणाउसो ॥ २९ ॥ तिविहा इड्ढी

प० तं० देविड्ढी, राइड्ढी, गणिड्ढी । देविड्ढी तिविहा प० तं० विमाणिड्ढी विगुव्विणि

ड्ढी, परियारणिड्ढी । अहवा देविड्ढी तिविहा प० तं० सचित्ता, अचित्ता, मीसिया ॥

मानना) के तीन भेद यथाभूत श्रमण व माहणको जब उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन की प्राप्ति होती है तब प्रारंभ में वे ऊर्ध्व लोक देखते हैं फीर तिर्च्छा लोक और बाद में अधो लोक देखते हैं परंतु अधो लोक देखना बहुत कठिन है क्यों कि वह लोक महा अंधकारमय है ॥ २८ ॥ तीन प्रकारकी ऋद्धि कही देवता की ऋद्धि, राजा की ऋद्धि और आचार्य की ऋद्धि देवता की ऋद्धि तीन प्रकार की विमान की ऋद्धि, वैक्रेय बनाने की ऋद्धि और देवांगनासे भोग भोगवने की ऋद्धि, अथवा देवता की ऋद्धि तीन प्रकार की

---

१ यहां पर उत्कृष्ट ज्ञान परम अवधि ज्ञान को लेना परंतु केवल ज्ञान लेना नहीं क्यों कि केवली तो एक समय में तीनों लोक को जानते हैं और देखते हैं

र० राजाकी ब० सेना बा० वाहन को० कोष को० भंडारऋद्धि अ० अथवा रा० राजऋद्धि ति० तीनप्रकार की स० सचित्त अ० अचित्त मी० मिश्र ग० गणिकी ऋद्धि ति० तीनप्रकार की णा० ज्ञानकी ऋद्धि दं० दर्शन की ऋद्धि च० चारित्र की ऋद्धि अथवा ग० गणिकी ऋद्धि ति० तीनप्रकार की

राइड्ढी तिविहा प० त० रण्णो अइयाणिड्ढी रण्णो णिज्जाणिड्ढी, रण्णोबलवाहण कोसकोट्ठागारिड्ढी । अहवा राइड्ढी तिविहा प० तं० सचित्ता अचित्ता मीसिया ॥ गणिड्ढी तिविहा प० तं० णाणिड्ढी, दंसणिड्ढी, चरित्तिड्ढी । अहवा गणिड्ढी तिविहा

सचित्त ऋद्धि सो अपना शरीर अथवा सामानिक, आत्मरक्षक और परिषदा आदि के देवताओं अचित्त ऋद्धि सो वस्त्राभरण और मिश्र ऋद्धि सो सचित्त अचित्त दोनों मिश्र राजा की ऋद्धि तीन प्रकार की राजा नगर में प्रवेश करे तब नगर में अणगार उत्सव होवे सो अतियान ऋद्धि, राजा नगर बाहिर नीकले तब हाथी घोडा आदि की ऋद्धि होवे सो निर्याण ऋद्धि और राजा को हाथी घोडा, रथ, पैदल, पालखी कोष भंडारकी ऋद्धि सो कोष्टागार ऋद्धि, और भी तीन प्रकार की ऋद्धि सामंत, राणियों प्रमुख सचित्त ऋद्धि, रत्न सुवर्णादि अचित्त ऋद्धि और सचित्त अचित्त दोनों मिली हुइ सो मिश्र ऋद्धि आचार्य की ऋद्धि तीन प्रकारकी द्वादशांग के पारगामी सो ज्ञान ऋद्धि, सम्यक्त्व की निर्मलता सो दर्शन ऋद्धि और चारित्र की विशुद्धता सो चारित्र ऋद्धि और भी आचार्य की ऋद्धि तीन प्रकारकी शिष्य

म० सचित्त म० अचित्त मी० मिश्र ॥ २५ ॥ त० तीन गा० गर्व इ ऋद्धिगर्व र रसगर्व सा० सातागर्व ति० तीनकरण ध० धर्म का करण अ० अधर्म करण ध० धर्माधर्म करण ॥ २६ ॥ ति० तीनप्रकार का भ० भगवानने ध० धर्म प० प्ररूपा सु० सूत्रपढना सु० अच्छा ध्यान धरना सु० तपश्चर्या करना ज० जब सु० अच्छापढा भ० होवे त० तो सु० अच्छा ध्यान भ० होवे ज० जब सु० अच्छा ध्यान भ० होवे

प० तं० सचित्ता, अचित्ता, मीसिया ॥ २५ ॥ तओ गारवा प० तं० इड्ढीगारवे, रसगारवे, सातागारवे । तिविहे करणे प० तं० धम्मिए करणे, अधम्मिए करणे, धम्मियाधम्मिए करणे ॥ २६ ॥ तिविहे भगवया धम्मे प० तं० सुअहिज्झिए, सुज्झाइए, सुतवस्सिए । जया सुअहिज्झियं भवइ, तदा सुज्झाइय भवइ, जया सुज्झाइय

रिक की ऋद्धि सो सचित्त ऋद्धि, वस्त्रपात्रादिक की ऋद्धि सो अचित्त ऋद्धि, और दोनों मिली हुई सो मिश्र ऋद्धि ॥ २५ ॥ तीन प्रकार का गर्व ऋद्धि का गर्व, रस का गर्व और साता का गर्व तीन प्रकार के करण साधुओं कि क्रिया सो धर्म करण, मिथ्यात्वी की क्रिया सो अधर्म करण और श्रावक की क्रिया सो धर्माधर्म करण ॥ २६ ॥ भगवतने तीन प्रकार का धर्म फरमाया गुरु आदि सूज्ञिओं का विनय करके शास्त्रार्थ धारण करे सो सुभाषीत, शंकादि दोष रहित शास्त्राभ्यास करे सो सुध्यानी और इस लोक व पर लोक की वांच्छा रहित धर्म करे सो सुतप धर्म जो सुशास्त्रों का यथातथ्यपने अभ्यास करेगा वह शुभ

न० ना मृ० अच्छा तपस्वी भ० होवे से० यह सु अच्छाप्से मु० मच्छाध्यान ध्यावे सु० अच्छी तपस्याकरे मु० अच्छा ज्ञाने से भ० भगवानने ध० धर्म प० प्ररूपा ॥ २७ ॥ ति० तीनप्रकार की वा० निवृत्ति जा० जानकर अ अजानकर वि० शंकाकर ए० ऐसे अ० कषाय की व० वर्जना व विषय व० वर्जना ॥२८॥ ति० तीन प्रकारका अं० अन्त प०प्ररूपा लो०लोकका अन्त वे०वेदका अन्त स० शास्त्र का अंत ॥ २९ ॥

भवइ तया सुतवास्सिय भवइ । स सुअहिज्जिए, सुज्झाइए, सुतवस्सिए, सुयक्खाएणं भगवया धम्मे पण्णत्ते ॥ २७ ॥ तिविहा वावत्ती प० तं० जाणू अजाणू वितिगिच्छा । एवमज्झोववज्जणा परियावज्जणा ॥२८॥ तिविहे अते पण्णत्ते तजहा लोगते, वेयंते, समयंते ॥२९॥ तओ जिणा प० त० ओहिनाणजिणे, मणपज्जवनाणजिणे, केवलनाणजिणे तओ केवली प० त० ओहिनाण केवली मणपज्जवनाण केवली केवलनाण केवली तओ अरहा पण्णत्ता त० ओहिनाणअरहा, मणपज्जवनाणअरहा केवलनाणअरहा

ध्यान धर सकेगा और शुभ ध्यान में रमण करनेवाला शुद्ध तपश्चरण कर सकेगा यों अनुक्रम से धर्म साधन करना अच्छा है परंतु सम्यग् ज्ञान बिना ध्यान तप मिथ्या है ॥ २७ ॥ तीन प्रकारकी व्यावृत्ति (हिंसादिक से निवृत्ति) कही हिंसा के फल को जानकर हिंसा से निवर्ते, बिना जाने अज्ञानपने से छोडे या हिंसादिक में पाप है या नहीं ऐसी शंका जानकर छोडे इसी तरह तीन प्रकार से कषाय और इन्द्रियों से निवर्ते ॥ २८ ॥ तीन वस्तु का अन्त कहा है पंचदश राजु का जो लोक है उस का अंत, चारों वेदों के तत्वों जानने से उस का अंत, और शास्त्रों का रहस्य जानने से शास्त्रों का अंत ॥ २९ ॥

त० तीन जि० जिन ओ० अवधिज्ञानी जिन म० मनःपर्यव ज्ञानी जिन के० केवल ज्ञानी जिन त० तीन केवली ओ० अवधिज्ञानी केवली म० मनःपर्यव ज्ञानी केवली के० केवल ज्ञानी केवली त० तीन अ० अरि हंत ओ० अवधिज्ञानी अरिहंत म० मनःपर्यव ज्ञानी अरिहंत के० केवल ज्ञानी अरिहंत ॥ १० ॥ त० तीन ले० लेश्या दु० दुरभिगंधी क० कृष्ण लेश्या नी० नील लेश्या का० कापुत लेश्या त० तीन ले० लेश्या सु० सुरभिगंधी ते० तेजु प० पद्म सु० शुक्ललेश्या ए० ऐसे ति० तीन दु० दुर्गतिलेजाने वाली ति० तीन

॥ १० ॥ तओ लेस्साओ दुब्भिगंधाओ प० तं० कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा तओ लस्साओ सुब्भिगंधाओ प० तं० तेउ पम्हा सुक्कलेस्सा । एवं तिदुग्गइगामि णीओ, तिसुगइगामिणीओ । तओ संकिलिट्ठाओ, असंकिलिट्ठाओ, अमणुन्नाओ,

तीन प्रकार के जिन कहे हैं अवधि ज्ञानी जिन, मनःपर्यव ज्ञानी जिन, और केवल ज्ञानी जिन तीन प्रकार के केवली, अवधि ज्ञानी केवली, मनःपर्यव ज्ञानी केवली और केवल ज्ञानी केवली तीन अरिहंत अवधि ज्ञानी अरिहंत, मनःपर्यव ज्ञानी अरिहंत और केवल ज्ञानी अरिहंत ॥ १० ॥ कृष्ण, नील और कापुत ये तीन लेश्याओं की गंध खराब है और तेजु, पद्म और शुक्ल लेश्याओं की गंध अच्छी है ऐसे ही तीन दुर्गतिमें लेजानेवाली और तीन सुगतिमें लेजानेवाली, तीन संक्लिष्ट और तीन असंक्लिष्ट, तीन अमनोज्ञ, तीन

सु० अच्छीगति में लेजाने वाली स० तीन सं० सराव अ० अच्छी अ० अमनोज्ञ मु० मनोज्ञ अ० अवि शुद्ध वि० विशुद्ध अ०अप्रशस्त प०प्रशस्त सी० शीत लु०रूक्ष सि०स्निग्ध उ०उष्ण॥२१॥ ति०तीनप्रकारका म० मरण बा० बालमरण प० पंडित मरण बा० बाल पंडित मरण बा० बालमरण ति० तीनप्रकार का ठि० स्थित लेशी स० संक्लिष्टलेशी प० पर्यवजात लेशी पं० पंडित मरण ति० तीनप्रकार का ठि० स्थित लेशी अ० असंक्लिष्ट लेशी प० पर्यवजात लेशी बा० बालपंडित मरण ति० तीनप्रकार का ठि० स्थितलेशी

सुमणुन्नाओ अविसुद्धाओ,विसुद्धाओ । अप्पसत्थाओ,पसत्थाओ,सीअलुक्खाओ सीणिद्धु-ण्हाओ॥२१॥ तिविहे मरणे प० तं० बालमरणे, पंडियमरणे,बालपंडियमरणे। बालमरणे तिविहे प०त० ठिअलेस्से,संकिलिट्ठलेस्से,पज्जवजातलेस्से। पंडियमरणे तिविहे प०तं० ठिअलेस्सेअसंकिलिट्ठलेस्से,पज्जवजातलेस्से।बालपंडियमरणेतिविहेप०तं०ठिअलेस्से अस

मनोज्ञ, तीन अशुभ और तीन शुभ तीन, अप्रशस्त और तीन प्रशस्त वैसे ही तीन शीत और रूक्ष, स्निग्ध और उष्ण है ॥ २१ ॥ तीन प्रकारके मरण अज्ञानी का मरण सो बाल मरण, ज्ञानी का मरण सो पंडित मरण और श्रावकों का मरण सो बालपंडित मरण बाल मरण के तीन भेद जिस लेश्या में मरण होवे उसी लेश्या में उत्पन्न होवे सो स्थित लेश्यावाले, खराब लेश्या में मरकर अन्य विशेष खराब लेश्या में जावे सो संक्लिष्ट लेश्यावाले और धर्म में से अधर्म में और अधर्म में से शुभ में जावे बाद आगे

अ० असंक्लिष्टलेशी अ० अपयत्नमातलेशी ॥ ३२ ॥ त० तीन ठा० स्थान अ० अव्यवसित को अ० अहितकता अ० अशुभकता अ० अक्षेमकर्ता अ० अनिस्तारकता अ० अननुगामि भ० होवे से० वह मु मुंड भ० होकर अ० अगार मे अ० अनगार को प० प्रव्रजित होवे णि० निर्ग्रंथ के पा० प्रवचन में स० शंकित क कांक्षित वि० विचिगिच्छावाले भे० भेद स० प्राप्त क० कालुष्य स० प्राप्त णि० निर्ग्रंथ का पा० प्रवचन

किलिट्ठलेस्से, अपज्जवजातलेस्से । ॥ ३२ ॥ तओठाणा अव्ववसिअस्स आहियाए, असुभाए, अखमाए, आणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति तं० सेण मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, णिग्गंथे पावयणे संकिए कंखिए, वितिगिच्छिए, भेद समावन्ने, कलुससमावन्ने, णिग्गथं पावयण णो सद्दहइ णो पत्तियइ णो रोएइ, तंपरी सहाअभिजुजिय अभिजुजिय अभिभवंति नो से परीसहे अभिजुजिय अभिजुजिय अभिभवइ

सो पयत्नमात लेश्यावाले कहेजाते हैं जैसे बाल मरण का कहा वैसे ही पंडित मरण व बाल पंडित मरण का कहना विशेष इतना कि ये दोनों लेश्यावाले अच्छी लेश्या में उत्पन्न होते हैं ॥ ३२ ॥ साधु निर्ग्रंथ तीन स्थानको पर्योषित नहीं रखने से आत्मा का अहित करते हैं, सुख का नाश करते हैं क्षमाका नाश करते हैं, उन का निस्तार नहीं होता है और मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते हैं उन तीनों स्थानक के नाम. १ साधु बनकर निर्ग्रंथ के प्रवचन में शंका लावे, अन्य मत की वांच्छा करे, शास्त्र पठन के फल में संदेह लावे आत्मा में भेद भाव रखे, कालुष्यता रक्खे, शास्त्र के वचनों श्रद्धे नहीं, प्रतीते नहीं, रुचे नहीं

सु० मच्छीगति में लेजाने वाली त० तीन सं० खराब म० मच्छी अ० अमनोज्ञ मु० मनोज्ञ अ० अवि शुद्ध वि० विशुद्ध अ० अमशस्त प० प्रशस्त सी० शीत लु० रुक्ष सि० स्निग्ध उ० ऊष्ण ॥ २१ ॥ ति० तीनप्रकारका म० मरण बा० बालमरण प० पंडित मरण बा० बाल पंडित मरण बा० बालमरण ति० तीनप्रकार का ठि० स्थित लेशी स० संक्लिष्टलेशी प० पर्यवजात लेशी प० पंडित मरण ति० तीनप्रकार का ठि० स्थित लेशी अ० असंक्लिष्ट लेशी प० पर्यवजात लेशी बा० बालपंडित मरण ति० तीनप्रकार का ठि० स्थितलेशी

सुमणुन्नाओ अविसुद्धाओ,विसुद्धाओ। अप्पसत्थाओ,पसत्थाओ,सीअलुक्खाओ सिणिद्धु-ण्हाओ॥ २१॥ तिविहे मरणे प० तं० बालमरणे, पंडियमरणे,बालपंडियमरणे। बालमरणे तिविहे प० त० ठिअलेस्से,संकिलिट्ठलेस्से,पज्जवजातलेस्से। पंडियमरणे तिविहे प० त० ठिअलेस्सेअसंकिलिट्ठलेस्से,पज्जवजातलेस्से।बालपंडियमरणेतिविहेप० तं० ठिअलेस्से अस

मनोज्ञ, तीन अशुभ और तीन शुभ तीन, अप्रशस्त और तीन प्रशस्त वैसे ही तीन शीत और रुक्ष, स्निग्ध और ऊष्ण है ॥ २१ ॥ तीन प्रकारके मरण अज्ञानी का मरण सो बाल मरण, ज्ञानी का मरण सो पंडित मरण और श्रावकों का मरण सो बालपंडित मरण बाल मरण के तीन भेद जिस लेश्या में मरण होवे उसी लेश्या में उत्पन्न होवे सो स्थित लेश्यावाले, खराब लेश्या में मरकर अन्य विशेष खराब लेश्या में जावे सो संक्लिष्ट लेश्यावाले और ...

यावत् नो० नहीं प० परिषहके अ० सहन करके भ० पराभव करे से० वह मुं० मुंड भ० होकर अ० अगार से अ० अनगार को प० प्रव्रजित होकर छ० छजीवनिकाय को जा० यावत् अ० पराभव करे त० तीन ठा० स्थान व० व्यवस्थित को हि० हितकर्ता जा० यावत् अ० अनुगामिक भ० होवे से० वह मुं० मुंड भ०

जाव णो कलुस समावण्णे णिग्गथं पावयण सद्दहइ पत्तियइ रोएइ से परीसहे अभिजु जिय २ अभिभवइ। णो तं परीसहा अभिजुजिय २ अभिभवंति। सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पचहिं महव्वएहिं णिस्संकिए जाव परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवइ णो तं परिस्सहा अभिजुजिय २ अभिभवंति। सेण मुंडे

अनुक्रम से मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं उन तीन स्थानों के नाम साधु बनकर निर्ग्रंथ के प्रवचन में किसी प्रकार की शंका न रखे, अन्यमत की आकांक्षा न करे और शास्त्र पठन के फल में किसी प्रकार का संदेह न रखे, भेद भाव बील्कुल रखे नहीं, कालुष्यपना मिटावे, जिन वचन की प्रतीति, रुचि करे, परिषह प्राप्त हुवे उन के सन्मुख रहकर सहन करे २ पंचमहाव्रत जो साधु का धर्म है उन में शंका न लावे, अन्य मतावलम्बीयों के व्रतों को आचरने की अभिलाषा भी करे नहीं, महाव्रत के फल में संदेह न लावे, उत्साह पूर्वक उस को पाले, और परिषह आने पर समभाव से सहन करे परंतु किंचिन्मात्र दोष लगावे नहीं ३ षट्काया के जीवों के अस्तित्व में शंका लावे नहीं, अन्य की श्रद्धा करे नहीं और

का णो॰ नहीं स॰ श्रद्धाकरे णा॰ नहीं प॰ प्रतीतकरे णो नहीं रो॰ रुचे त॰ उस प॰ परिषह अ॰ उत्पन्न हुवे म॰ पराभवकरे णो॰ नहीं से॰ उस प॰ परिषह अ॰ उत्पन्न हुवे अ॰ पराभवकरे से॰ वह मु॰ मुंड भ॰ होकर अ॰ अगार से अ॰ अनगार को प॰ प्रव्रजित होकर प॰ पंच म॰ महाव्रत में ने॰ शंकित मा॰ मान्न् क॰ कालुष्य स॰ मास पं॰ पंच म॰ महाव्रत णो॰ नहीं स॰ श्रद्धाकरे जा॰

सेणं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, पचहिं महव्वएहिं सकिए जाव कलुससमावण्णे, पचमहव्वयाइं णो सद्दहइ जाव नो से परीसहे अभिजुजिय२ अभि भवइ । सेण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं जाव अभिभवइ ॥ तओ ठाणा ववसिअस्स हियाए जावाणुगामियत्ताए भवति त॰ सेण मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, णिग्गथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए

परिषह सन्मुख हो सके नहीं, और परिषह से शिथिल बने तो आत्मा का नुकसान करे २ साधु बन कर के पंचमहाव्रत रूप साधु धर्म में शंका लावे, अन्य के धर्मों आचरने की इच्छा करे, महाव्रतों पालते हुए मन में संदेह उत्पन्न होवे यावत् परिषह से शिथिल बने तो आत्मा का नुकसान करे ३ साधु बनकर के षट्काया के जीवों के विषय में शंका लावे, यावत् परिषह से शिथिल बने तो आत्मा का नुकसान करे और तीनों स्थानों अच्छी तरह स्थान में साधु बनकर आत्मा को हित सुख और सुख की प्राप्ति ...

तीन क० कर्म जु० साथ खि० क्षयकरते हैं णा० ज्ञानावर्णीय द० दर्शनावर्णिय अं० अंतराय ॥ २६ ॥ अ० अभिजित् ण० नक्षत्र के ति० तीनतारे ए० ऐसे स० श्रवण के अ० आश्वनी भ० भरणीके म० मृगसर के पू० पुष्य क जे० ज्येष्ठाके ॥ २७ ॥ ध० धर्मनाथ अ० अरिहंत से सं० शान्तिनाथ अ० अरिहंत ति० तीन सागरोपमका ति० तीन च० चारभागके प० पल्योपमके ऊ० ऊना वी० व्यतीत हुवे स० उत्पन्न हुवे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरके जा० यावत् त० तीन पु० पुरुषयुग से जु० युगांतकर भूमि म० मल्लीनाथ अ० अरिहंत ति०

तओ कम्मसा जुगव खिज्जति त णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्ज, अतरायं ॥२६॥ अभिई णक्खत्ते तितारे, पन्नत्ते, एवं सवणे, अस्सिणी, भरणी, मगसिरे, पूसे जेट्ठा ॥ २७ ॥ धम्माओण अरहाओ संती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भागं प लिओवमऊणएहिं वीइक्कतेहिं समुप्पन्न। समणस्सणं भगवओ महावीरस्स जाव त

रस्था छाव देव और विग्रह गति करके फीर उत स्थान में उत्पन्न होवे तो तीन समय लगते हैं ॥ २५ ॥ क्षीण मोहनीयवाले अरिहंत एक साथ ही तीन कर्मों की प्रकृति क्षय करते हैं ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय ॥ २६ ॥ अभिजित्, श्रवण, अश्विनी, भरणी, मृगसर, पूष्य और जेष्ठा नक्षत्र के तीन २ तारे कहे हैं ॥ २७ ॥ पन्नरहवे धर्म नाथ तीर्थंकर मोक्ष में गये बाद तीन सागरोपम में से एक पल्योपम का चतुर्थ भाग चौथा भाग कमी इतना काल गये बाद सोलवे तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ हुवे

ग्रंकर अ॰ आगार से॰ अ॰ अनगार को प॰ प्रव्रजित होकर णि॰ निर्ग्रंथ के पा॰ प्रवचन में णि॰ निःशं
कित नि॰ निःकांक्षीत मा॰ यावत् णो॰ नहीं क॰ कामुष्य पूर्ववत् ॥ ११ ॥ ए॰ एकेक पु॰ पृथ्वी ति॰
तीन व॰ वलयसे स॰ सारोंबाजु स॰ परिक्षित त॰ वह घ॰ घनोदधिवलयसे घ॰ घनवात वलयसे त॰
तनवात वलयसे ॥ १४ ॥ ने॰ नारकी उ॰ उत्कृष्ट ति॰ तीन समय में वि॰ विग्रहगति से उ॰ उपजते हैं
ए॰ एकेन्द्रिय व॰ वर्जकर जा॰ यावत वे॰ वैमानिक ॥ २५ ॥ खी॰ क्षीण मोहिनी के अ॰ अरिहंत त॰

भविचा अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं णिस्संकिए जाव परि
स्सहे आभिजुंजिय २ आभिभवइ णो तं परिस्सहा आभिजुंजिय २ आभिभवंति ॥२३॥
एगमेगाणं पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता तंजहा–घणोदहिव
लएणं, घणवायवलएणं, तणवायवलएणं ॥ २४ ॥ णेरइयाणं उक्कोसेणं तिसमइएणं
विग्गहेण उववज्जंति–एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥२५॥ खीणमोहस्सणं अरहओ

उनकी रक्षा करनेके कस्में संदेह लावे नहीं परिषह उत्पन्न होनेपर उस धर्मसे कदापि चलित होवे नहीं यों
तीन प्रकार से व्यवस्थित रहने से आत्मा को सुख की प्राप्ति होती है॥ २३ ॥एक २ पृथ्वी की चारों तरफ
तीन २ वलय कोटे घनोदधि, घनवात और तनवात का वलय॥२४॥एकेन्द्रिय छोडकर अन्य सब स्थानक
मे जीवों मरकर उत्कृष्ट तीन समय में दूसरी गति में [illegible]

॥ १८ ॥ त० तीन गे० ग्रैवेयक विमान के प० पायडे हि० नीचे के गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पायडे म० मध्यके गे० ग्रिवेक वि० विमान के प पायडे उ ऊपर के गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पायडे हि० नीचे के गे० ग्रिवेक वि०' विमानके प०पायडे ति०तीन प्रकार के हि०नीचले के नीचले गे ग्रिवेक वि० विमान के प० पायडे हे नीचे के म० मध्य गे० ग्रिवेक वि० विमानके प पायडे हे नीचले के उ०ऊपर के गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पायडे म मध्य गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पायड ति तीन प्रकार के म० मध्यके हे० नीचले गे० ग्रिवेक वि०विमान के प०पायडे म०मध्यम के मध्यम गे० ग्रिवेक वि०

संती, कुथू अरो ॥ १८ ॥ तओ गविज्जविमाणपत्थडा प० त० हिट्ठिमगेविज्ज विमाणपत्थडे, मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे, हिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे प० त० हिट्ठिम हिट्ठिम गेविज्जविमाणपत्थडे हिट्ठिम मज्झिम गेविज्ज विमाण पत्थडे, हिट्ठिम उवरिम गेविज्ज विमाण पत्थडे। मज्झिम गेविज्ज विमाण पत्थडे तिविहे प० त० मज्झिम हिट्ठिम गेविज्ज विमाण पत्थडे

अरनाथ स्वामी ये तीनों तीर्थंकर चक्रवर्ती की पद्वी पाये ॥ १८ ॥ सुप्रतिष्ठित पुरुषाकार लोक में जो नव विमानों हैं उस को नव ग्रैवेयक कहते हैं उस में तीन २ विमानों की तीन त्रिक है नीचे की त्रिक के तीन विमान १ नीचे का भद्र, २ बीचका सुभद्र और उपर का सुजात; बीच की त्रिक में तीन विमान

तीन स शत पु पुरुषसाथ मुं० मुण्डहुवे जा० यावत् प० प्रव्रजित हुवे ए० ऐसे पा पार्श्वनाथ स० श्रमण म० भगवान् म० महावीर के ति० तीनसो चो चौदपूर्वके धारक अ० जिन नहीं जि० जिनसरिखे स० सर्व अक्षरक स सन्नीपात के जान जि जिनसमान अ० यथातथ्य पा० प्ररूपक उ० उत्कृष्ट चो चौदपूर्व धारक हो० थे त० तीन ति तीर्थंकर च० चक्रवर्ति हो० थे स० शान्तिनाथ कुं० कुंथुनाथ अ० अरनाथ

याओ पुरिसजुगाओ जुगंतकडभूमी, मल्लीण अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवेत्ता जाव पव्वइए, एव पासेवि। समणस्सण भगवओ महावीरस्स तिन्निसया चोदसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसकासाण सव्वक्खरसन्निवाइण जिणोइव अवितह वागरमाणाण उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया होत्था । तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था, त०

श्री महावीर स्वामी पीछे श्री गौतम स्वामी, श्री सुधर्मा स्वामी, और श्री जम्बू स्वामी ये तीन पुरुषों युगन्त कर्ता हुवे अर्थात मोक्ष में पधारे बाद में मोक्ष जाने का बंध हुवा उन्नीसवे तीर्थंकर श्री मल्लीनाथजी और तेवीसवे तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजीने तीन सो २ पुरुष सहित दीक्षा अंगीकार की श्री महावीर स्वामी को तीर्थंकर नहीं परन्तु तीर्थंकर सरिखे, सर्व अक्षरों के सन्निपात उत्पत्ति के जाननेवाले, तीर्थंकर समान उत्तर देनेवाले तीन सो चौदहपूर्वधारी साधु थे श्री शान्तिनाथ स्वामी श्री कुंथुनाथ स्वामी और

॥ ३८ ॥ त० तीन गे० ग्रैवेयक विमान के प० पायडे हि० नीचे के गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पायडे म० मध्यके गे० ग्रिवेक वि० विमान के प पायडे उ ऊपर के गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पायडे हि० नीचे के गे० ग्रिवेक वि०' विमानके प०पायडे ति०तीन मकार के हि०नीचले के नीचले गे०ग्रिवेक वि० विमान के प० पायडे हे नीचे के म० मध्य गे० ग्रिवेक वि० विमानके प० पायडे हे नीचले के उ०ऊपर के गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पायडे म० मध्य गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पायडे ति तीन मकार के म० मध्यके हे० नीचले गे० ग्रिवेक वि०विमान के प०पायडे म०मध्यम के मध्यम गे० ग्रिवेक वि०

सती, कुंथू अरो ॥ ३८ ॥ तआ गवेज्जविमाणपत्थडा प० त० हिट्ठिमगेविज्ज विमाणपत्थडे, मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे, हिट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे प० तं० हिट्ठिम हिट्ठिम गेविज्जविमाणपत्थडे हिट्ठिम मज्झिम गेविज्ज विमाण पत्थडे, हिट्ठिम उवरिम गेविज्ज विमाण पत्थडे । मज्झिम गेविज्ज विमाण पत्थडे तिविहे प० त० मज्झिम हिट्ठिम गेविज्ज विमाण पत्थडे

अरनाथ स्वामी ये तीनों तीर्थंकर चक्रवर्ती की पद्वी पाये ॥ ३८ ॥ सुप्रतिष्ठित पुरुषाकार लोक में जो नव विमानों हैं उस को नव ग्रैवेयक कहते हैं उस में तीन २ विमानों की तीन त्रिक है नीचे की त्रिक के तीन विमान १ नीचे का भद्र, २ बीचका सुभद्र और ऊपर का सुजात; बीच की त्रिक में तीन विमान

विमानके प० पाथडे म०मध्य के उ०ऊपके ग०ग्रिवेक वि० विमान के प पाथड उ० उपर क ग० ग्रिवक वि० विमान के प० पाथडे ति० तीनप्रकार उ० ऊपके के हे० नीचले गे० ग्रिवक वि० विमान के प० पाथड उ० उपर के म० मध्यम गे० ग्रिवेक वि०विमान के प०पाथडे उ० उपके के उ०उपले गे०ग्रिवेक वि०विमान के प० पाथडे ॥ २९ ॥ जी० जीव के ति० तीनस्थान णि० निवर्तिक पा० पुद्गल पा० पापकर्मपने चि० चूने चि० चूनते हैं चि० चूनेंगे इ० स्त्रीपने पु० पुरुषपने ण० नपुंसकपने ए० ऐसे चि० चय किया उ०

मज्झिम मज्झिम गेविज्ज विमाण पत्थडे मज्झिम उवरिम गेविज्ज विमाण पत्थडे,
उवरिम गेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे प० त० उवरिमहिट्ठिम गेविज्जविमाणपत्थडे,
उवरिम मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे ॥ २९ ॥
जीवाणं तिट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणितिवा चिणिस्संतिवा

१ नीचे का सुदर्शन, २ बीच का सुप्रबुद्ध और उपर का प्रियदर्शन उपर की त्रिक में तीन विमान उपर का आमोदनीयक, सविभद्र और यशोधर ॥ २९ ॥ जीवने स्त्री वेद, पुरुष वेद और नपुंसक वेद यों तीन वेद के पुद्गल अतीत काल में ग्रहण किये, वर्तमान में कर रहे हैं और अनागत में करेंगे वैसे ही चय, उपचय, बंध, उदीरणा और निर्जरा अतीत काल में की वर्तमानमें कर रहे हैं और भविष्य काल में करेंगे

उपचय पं० चेय उ०उदीरना वे०वेदना त० तथा णि० निर्जरा ॥ ८ ॥ ति० तीनप्रदेशी खं० स्कन्ध अ० अनंत प० प्ररूपे ए० ऐसे जा० यावत् ति० तीन गुण लु० रुक्ष पो० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे ॥४१॥

त० जहा । इत्थीणिव्वत्तिए पुरिसणिव्वत्तिए णपुंसगणिव्वत्तिए एवं चिणउवचिण यधउदीरवेय तहणिज्जराचेव ॥ ४० ॥ तिपएसियाखंधा । अणंता पण्णत्ता एव जाव तिगुणलुक्खपोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥४१॥ तिट्ठाणं सम्मत्तं

॥ ४० ॥ तीन प्रदेशी स्कन्ध अनंते कहे हैं ऐसे ही तीन गुणरुक्ष पुद्गल अनंते प्ररूप हैं ॥४१॥ तीसरा ठाणा का चौथा उद्देशा और तीसरा ठाणा समाप्त हुवा

स० चार अं० अंतक्रिया प० मरूपी त० मह त० तहां ख० निश्चय इ० यह प० प्रथम अं० अंतक्रिया अ० अल्पकर्म प० आयाहुवा भ० होवे से० वह मु० मुंडित भ० होकर अ० अगार से अ० अनगार को प० प्रवर्जित होवे सं० बहुत संयमी सं० बहुत संवरी स० बहुतसमाधिवाला लू० रूक्ष ती० पारगामी उ० तपसे दु० दुःख क० क्षयकरनेवाला त० तपस्वी त० उसको णो० नहीं त० तथाप्रकार का त० तप भ० होवे णो० नहीं त० तथाप्रकार वे० वेदना भ० होवे त० तथाप्रकारका पु० पुरुष जात दी० दीर्घ प० पर्यायसे सि० सिद्धहोवे बु० बुझे मु० मुक्त होवे

चत्तारिअंतकिरियाओ प० त० तत्थखलु इमा पढमा अंतकिरिया अप्पकम्मपच्चायाए यावि भवइ, सेण मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए संजमबहुले, संवरबहुले समाहि बहुलेलूहे तीरट्ठी उवहाणव दुक्खक्खवे तवस्सी तस्सण णोतहप्पगारेतवे भवइ णो तहप्पगारा वेयणाभवइ, तहप्पगारे पुरिसजाए दीहेणं परियाएण सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ परिणिव्वाइ, सव्व

श्री भगवतने चार अन्तक्रिया (मोक्ष जाने की क्रिया) कही १ अल्प कर्मवाला जीव मनुष्य भव में आकर मोक्ष में जाता है, वह अल्प कर्मी जीव गृहस्थपने का त्याग करके साधुपना अंगीकार करता हुवा संयम, संवर, और समाधि सहित विचरे और स्नेह का त्याग कर संसार के पार की वांच्छा सहित योग उपधानादिककी तपश्चर्या करताहुवा और दुःखदाई कर्मोंका क्षय करता हुवा विचरे वैसे तपस्वीको कर्म कम होने से बहुत तप नहीं करना पडता है वैसे ही वेदना भी बहुत नहीं होती है वैसे पुरुषों दीर्घ कालतक

प० निर्वाण होवे स० सर्वदुःख का० अं० अंतकरे ज० जैसे से० वह भ० भरतराजा चा० चार गति को म० चक्रवर्ति प० प्रथम अं० अन्तक्रिया अ० अब दो० दूसरी अं० अंतक्रिया म० महाकर्म प० आयायुक्त भ० होवे से० वह मुं० मुंडित भ० होकर अ० अगार से अ० अनगार को प० प्रव्रजित होवे स० बहुसंयमी सं० बहुसंवरी जा० यावत् उ० तप से दु० दुःख क० क्षयकरे त० तपस्वी त० उसको त० तथा प्रकार का त० तप भ० होवे त० तथा प्रकार की वे० वेदना भ० होवे त० तथा प्रकार का पु० पुरुष जात नि०

दुक्खाण मंतंकरेइ जहा से भरहे राया चाउरत चक्कवट्टी पढमा अंतकिरिया ॥ अहा-वरे दोच्चा अंतकिरिया महाकम्मपच्चाएयावि भवइ सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगा-रियं पव्वइए संजमबहुले, संवरबहुले जाव उवहाणव दुक्खक्खवे तवस्सी तस्सणं तहप्पगारे तवे भवइ, तहप्पगारा वेयणा भवइ तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेण परियाए

दीक्षा पालकर सिद्ध होते हैं, सब भाव को जानते हैं, सब कर्मों का क्षय करते हैं और सब शरीर संबंधि दुःख का क्षय करते हैं यथादृष्टांत जैसे भरत चक्रवर्ति ने पूर्व के भव में ५०० साधु की वैयावृत्य से बहु कर्मी बन करके विमान में उत्पन्न हुवे और वहां से चवकर चक्रवर्ती हुवे, चक्रवर्ती पद भोगवकर आरिसा भवन में केवली बनकर लक्ष पूर्व की दीक्षा पालकर मोक्ष में गये यह प्रथम अंतक्रिया दूसरी अंत क्रिया बहुत कर्मी जीव की कही कोई जीव गृहस्थपना छोड कर दीक्षा लेकर संयम संवर की वृद्धि

निरुद्ध प० पर्याय मे सि० सिद्ध होवे जा० यावत अं० अंतकरे ज० जैसे स० वह ग० गजसुकुमार अ० अनगार दो० दूसरी अं० अंतक्रिया अ० अब त० तीसरी अं० अंतक्रिया म० महाकर्म प० आयाहुवा भ० होवे से० वह मु० मुंडित भ० होकर अ० अगार से अ० अनगार को प० प्रवर्जित होवे ज० जैसे दो० दूसरी ण० विशेष दी० दीर्घ प० पर्याय से सि० सिद्ध होवे जा० यावत स० सर्व दु० दुःख को अं० अंतकरे ज० जैसे स० सनत्कुमार चा०

मणे सिज्झइ जाव अंतकरेइ जहा से गजसूमाले अणगारे, दोच्चा अंतकिरिया। अहावरे तच्चा अंतकिरिया महाकम्मपच्चाएयावि भवइ, सेण मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए जहा दोच्चा, णवर दीहेण परियाएण सिज्झइ जाव सव्वदुक्खाणं मंत करेइ, जहासे सणकुमारे राया चाउरंत चक्कवट्टी तच्चा अंतकिरिया। अहावरा

करे उपधान युक्त तप कर तो उस को बहुत वेदना भी होवे और इस तरह करनेवाला पुरुष थोडा काल ही साधुपना पालकर तुरत ही सिद्ध होवे यावत सब दुःख का अंत करे यथादृष्टांत जैसे कृष्ण वासुदेव के लघु भ्राता गजसुकुमाल अनगारने श्री नेमीश्वरकी पास दीक्षा धारन कर तुरत स्मशानमें कायो त्सर्ग किया सोमल ससुरने शिर पे अंगार भरे बहुत वेदना सहन करनी पडी और शीघ्र ही मोक्ष में गये २ तीसरी, बहुत कर्मों के बन्धसे होवे उस का सब अधिकार दूसरी जैसे किया जैसे करना विशेष इतना

पारगति को प० चक्रवर्ति त० तीसरी अं० अन्तक्रिया भ० अथ च० चोथी अं० अंतक्रिया अ० अल्प कर्म प० प्रत्यायुवा भ० होवे से० वह मु० मुंडित भ० होकर जा० यावत् प० प्रवर्जित होवे सं० बहुसंयमी ना० यावत् त० उसको णो० नहीं त० तथा प्रकार का त० तप भ० होवे नो० नहीं त० तथा प्रकार की वे० वेदना भ० होवे त० तथा प्रकार का पु० पुरुष जात नि० निरुद्ध प० पर्याय से सि० सिद्ध होवे जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख का अं० अंतकरे ज० जैसे सा० वह म० मरुदेवा भ० भगवती च० चोथी अं०

चउत्था अंतकिरिया अप्पकम्मपच्चाएयावि भवइ, सेणं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए संजमबहुले जाव तस्सणं णो तहप्पगारे तवे भवइ नो तहप्पगारा वेयणा भवइ, तहप्प गारे पुरिसजाए निरुद्धेणं परियाएणं सिज्झइ जाव सव्वदुक्खाणं मंतं करेइ जहा सा

ही बहुत कालतक संयम पालकर सिद्ध होवे यावत् सब दुःखों का अंत कर सनत्कुमार चक्रवर्तीवत् सात सो वर्ष पर्यंत शरीर में कुष्ट रोग रहा और एक लक्ष वर्ष पर्यंत दीक्षा पालकर मोक्ष पधारे अब चोथी अंत क्रिया कहते हैं यह क्रिया अल्प कर्मवाले को होती है वह दीक्षा लेकर संयमपना पाले परंतु उनको उक्त प्रकार का तप नहीं करना पडता है और थोडे समय में ही सिद्ध होजाते हैं मरुदेवा मातावत् प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की माता को विना तप किये हाथी के होदे पर केवल ज्ञान प्राप्त हुवा और

अंतक्रिया ॥१॥ च० चार रु० वृक्ष उ० ऊंचे ए० कितनेक उ० ऊंचे उ० ऊंचे ए० कितनेक प० नीचे प० नीचे ए० कितनेक उ० ऊंचे प० नीचे ए० कितनेक प० नीचे प० ऐसे च० चार पु० पुरुषजात उ० ऊंचे ए० कितनेक उ० ऊंचे त० तैसे जा० यावत् प० नीचे ए० कितनक प० नीचे च० चार रु० वृक्ष उ० ऊंचे ए० कितनेक उ० ऊंचे प० परिणत उ० ऊंचे ए० कितनेक प० नीचे प० परिनत प० नीचे ए० कितनेक उ० ऊंचे प० परिनत प० नीचे ए० कितनेक प० नीचे प० परिणत ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात उ० ऊंचे ए० कितनेक उ०

मरुदेवा भगवई । चउत्था अंतकिरिया ॥ १ ॥ चत्तारि रुक्खा प० त० उन्नएणाम मेगेउन्नए, उन्नए णाममेगेपणए, पणएणाममेगेउन्नए, पणएणाममेगेपणए । एवमेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० उन्नएणाममेगेउन्नए, तहेव जाव पणएणाममेगेपणए । चत्तारि रुक्खा प० तं० उन्नएणाममेगेउन्नएपरिणए, उन्नए नाम मेगेपणए परिणए, पणए नामएगे उन्नए परिणए, पणएणामंएगे पणएपरिणए ।

आयुष्य पूर्ण करके मोक्ष पधारे यह चौथी अंत क्रिया ॥ १ ॥ भगवंतने चार प्रकार के वृक्ष कहे हैं एक वृक्ष द्रव्य से उत्तम और भाव से भी उत्तम चंदनादि एक द्रव्य से उत्तम और जाति से नीच सो निम्बादि और एक द्रव्य से नीचा और भाव से उत्तम सो एरंडादि एक द्रव्य से भी नीचा और भाव से भी नीचा बेल प्रमुख वृक्ष की तरह पुरुष की भी चार जाति कही एक पुरुष द्रव्य से उत्तम और भाव से भी उत्तम सो साधु श्रावक एक पुरुष द्रव्य से ऊंच और भाव से नीच म्लेच्छ राजादिक एक

ऊच प० परिनत च० चारभंग च० चार रु० वृक्ष उ० ऊंच ए कितनेक उ० ऊंचे रू० रूप त० तैसे प० चारभांगा ए० वैसे च० चार पु० पुरुष भाव उ० ऊंचे च० चार पु० पुरुष भाव ध० ऊंचे ए० कित-

एवमेव चत्तारिपुरिसजाया प० तं० उन्नए णाममेगेउन्नए परिणए चउभगो। चत्ता-
रिरुक्खा प० त० उन्नए णाममेगेउन्नए रूवे, तहेव चउभंगो। एवमेव चत्तारिपुरि-
सजाया प० त० उन्नएणाम ४ । चत्तारिपुरिसजाया प० त० उन्नए णाममेगे उ-

पुरुष द्रव्य से नीच और भाव से नीच चांडालादि और एक पुरुष द्रव्य से नीच और भाव से ऊंच सो नीच जाति का धर्म में प्रवर्ता हुवा पुरुष और चार प्रकारके वृक्ष रस आश्रित कहते हैं एक वृक्ष द्रव्य से उत्तम और रस से भी उत्तम आम्रादि एक द्रव्य से ऊंचा और रस से नीचा निम्बादि एक द्रव्य से नीचा और रस से नीचा अर्कादि और द्रव्य से नीचा और रस से ऊंचा द्राक्षादि इसी दृष्टांत से चार पुरुष की जाति कही एक पुरुष द्रव्य से ऊंचा भाव से भी ऊंचा राजादि दीक्षा लेकर ज्ञानी बने सो, एक पुरुष द्रव्य से उत्तम और भाव से नीच कुकर्म करनेवाले राजादि, एक पुरुष द्रव्य से नीच और भाव मे भी नीच म्लेच्छादि एक पुरुष द्रव्य से नीच और भाव से ऊंच सो कनिष्ट जातिवाला ज्ञानादि गुण संपन्न बने सो और भी चार प्रकारके वृक्ष रूप आश्रित कहे, एक वृक्ष द्रव्य से और रूप से ऊंच आम्रादि, एक वृक्ष द्रव्य से ऊच रूप से हीन ताडादि एक द्रव्य से हीन और रूप से हीन केरादि

नेक र० रूपे म० मनवाले उ० ऊंचे ए० ऐसे स संकल्प प० प्रज्ञा दि० दृष्टि सी० शीलाचार व० व्यव-हार प० पराक्रम में ए० कितनेक पु० पुरुष जात प० प्रतिपक्ष ण० नहीं हैं ॥ २ ॥ च० चार रु० वृक्ष

भएमणे, उच्च० । एवं संकप्पे, पन्ने, दिट्ठी, सीलाचारे ववहारे, परक्कमे एगे पुरिसजाए पडिवक्खो णत्थि ॥ २ ॥ चत्तारिरुक्खा प० त० उज्जुणाममेगेउज्जु, उज्जुणाममेगे

और एक द्रव्य से नीचा और रूप से ऊंचा गुलाबादि ऐसे ही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं एक द्रव्य से ऊंच कुल का और रूप से सुंदराकार एक पुरुष द्रव्य से ऊंच कुल का रूप से कुरूप एक पुरुष द्रव्य से भी नीच और रूप में भी कुरूप और एक पुरुष द्रव्य से हीन और रूप से अच्छा यह गृहस्थ आश्रि कहा अब साधु के संबंध में ही यह दृष्टांत कहते हैं एक साधु का भेष भी अच्छा और आचार भी अच्छा गौतम स्वामीवत् एक साधु का भेष अच्छा परंतु आचार खराब निन्हवादि एक साधु का भेष भी खराब और आचार भी खराब पाखंडी और एक साधु का भेष खराब और आचार अच्छा अम्बड तापसादि चार भांगे विचार पर उतारना एक का विचार अच्छा और कर्तव्य भी अच्छा वगैरह चार भांगे प्रज्ञा के सुबुद्धि और अच्छे कर्तव्य करनेवाले, दृष्टि पर चार भांगे सम्यग् दृष्टि सम्यगाचारी सीलाचारके चार भंगे आचार और विचार दोनों अच्छे, व्यवहार पर के चार भांगे व्यवहार शुद्ध और निश्चय शुद्ध, पराक्रम पर चार भांगाओं अच्छे कार्य में पराक्रम फोडनेवाले और खराब कार्य में पराक्रम फोडनेवाले

उ० ऋजु प० कितनेक उ० ऋजु प० कितनेक वं० वांके च० चारभांगा ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात उ० ऋजु प० कितनेक उ० ऋजु ए ऐसे भ जैसे उ० ऊंचे प० नीचे ग० जानना त० तैसे उ० ऋजु वं० वांके में मा० कहना जा० यावत् प० पराक्रम ॥ १ ॥ प० प्रतिमा प० युक्त अ० साधु को क० कल्पता है च० चार भा० भाषा भा० बोलने को जा० यावनी पु० पूछनी

थके, चउभगो। एवमेव चत्तारिपुरिसजाया प० त०। उज्जुणाम एगेउज्जु ४ एव जहा उन्नयपणएहिं गमो तहा उज्जुवकेहिं वि भाणियव्वो, जाव परक्कमे, ॥ ३ ॥ पडिमापडिवन्नस्सण अणगारस्स कप्पति चत्तारिभासाओ भासित्तए त० जायणी,

ये सब भांगाओं भिन्न २ पुरुष के संबंध में कहना ॥ २ ॥ श्री भगवंतने चार प्रकार के वृक्ष फरमाये १ एक वृक्ष द्रव्य से सरल और भाव से भी सरल अर्थात् उचित फल देनेवाले २ एक वृक्ष द्रव्य से सरल और भाव से वक्र विपरीत फल देनेवाले ३ एक द्रव्य से वक्र और भावसे भी वक्र और एक द्रव्य से वक्र और भाव से सरल ऐसे ही १ एक पुरुष जाति का ऊंचा और स्वभाव का सरल २ एक पुरुष जाति का ऊंचा और स्वभाव का खराब ३ एक जाति का हीन और स्वभाव का भी हीन और ४ एक पुरुष जाति का हीन और स्वभाव का सरल ऐसे ही सब ऋजु और वक्र के चारों भांगे पराक्रम तक कह देना ॥ ३ ॥ पडिमा धारी साधु को चार प्रकार की भाषा बोलना कल्पता है १ याचनी भाषा

अ० आज्ञा कहिये पु० पूछन वाले को वा० उत्तरदेने केलिये च० चार भा० भाषा जात स० स सत्य ए० एक भा० भाषा जात बी० दूसरी मो० मृषा त० तीसरी स० सत्य मृषा च० चौथी अ० व्यवहार ॥ ६ ॥ च० चार व०वस्त्र सु०शुद्ध ए०कितनेक सु०शुद्ध सु०शुद्ध ए०कितनेक अ०अशुद्ध अ०

पुच्छणी, अणुन्नवणी, पुट्ठस्स वागरणी। चत्तारिभासजाया प०त०सच्चमेग भासजायं बीइयं मोस तइयं सच्चामोस, चउत्थं असच्चमोस ॥६॥ चत्तारिवत्था प०त०सुद्धेणामं एगेसुद्धे, सुद्धेणाम एगेअसुद्धे, असुद्धेनाम एगेसुद्धे असुद्धे णाममेगे असुद्धे । एवमेव चत्तारि

हारि ग्रहण करने को गृहस्थके घरा आना होवे तब वाले कि इसमें से मुझे कुच्छ देओगे २ पुच्छनी सो किसी से मार्ग का पूछना या गुरु से सूत्रार्थ का पूछना ३ अणुन्नवणी सो अवग्रह की आज्ञा देना ४ कोई अर्थादि पूछे जिस का उत्तर देना सो पुट्ठ व्याकरण भाषा के मुख्य चार भेद कहे हैं १ सत्य भाषा, २ मृषा भाषा, ३ सत्य मृषा और ४ व्यवहार भाषा ॥ ४ ॥ चार प्रकारके वस्त्र १ शुद्ध तंतु से बना हुआ और मल रहित, २ एक शुद्ध तंतु से बना हुआ परंतु मलिन ३ एक अशुद्ध तंतु से बना हुआ और मलिन ४ एक अशुद्ध तंतु से बना हुआ परंतु धुपकर स्वच्छ बना हुआ वैसे ही चारों भांगाओं पुरुष पर उतारना १ शुद्ध जाति में उत्पन्न हुवे और शीलाचार पालनेवाले, शुद्ध जाति में उत्पन्न हुवे और कुशील सेवने

प० चार को० कुंपल अं० आंबे के प० फलकी को० कुंपल ता० तालके प० फलकी को कुंपल व० बेल के •प फलकी को० कुंपल मिं० मेंढे के वि० शृंग के को० कुंपल पूर्ववत् ॥ ९ ॥ च० चार घु० घुण प० कहे त० त्वचाखाने वाले छ० छालखाने वाले क० काष्टखाने वाले सा० सारखाने वाले ए० एसे च० चार भि० भिक्षाचर त० त्वचाखाने वाले समान जा० यावत् सा० सारखाने वाले समान त० त्वचाखाने

कोरवे एव मेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० अबपलबकोरवसमाणे, तालपलबकोरव-समाणे वल्लिपलब कोरव समाणे मिंढविसाण कोरव समाणे ॥ १० ॥ चत्तारि घुणा प० त० तयक्खाए छल्लिखाए, कट्ठखाए, सारखाए । एवमेव चत्तारि भिक्खाया प० त० तयक्खाय समाणे, जाव सारखाय समाणे तयक्खाय समाणस्स-

प्रकारकी कुंपल फरमाई १ आम्बा की कुंपल, २ ताल वृक्ष की कुंपल, ३ बेल के फल की कुंपल, ४ और बकरे के शृंग समान वनस्पति की कुंपल एसे ही चार प्रकारके पुरुष फरमाये आम्र फल समान अर्थात् जिस की सेवा करने से उचित काल में फल मिले, २ ताड के कुंपल समान जिस की सेवा करने से सेवक को कष्ट मिले, ३ जो पुरुष कष्ट बिना सेवक को बहुत धनादि देवे सो बेल समान कुम्पल समान ४ जिस पुरुष की सेवा करने से मिष्ट वचन बोले परंतु कुच्छ भी देवे नहीं सो मिंढ विषाण कुम्पल समान ॥ १० ॥ चार प्रकारके घुण (काष्ट के कीडे) कहे हैं एक बाहिर की त्वचा खानेवाला,

वाले स० समान भि० भिक्षाचर को सा० सारखाने वाले समान त० तप प० प्ररूपा सा० सारखान वाले स० समान भि० भिक्षाचर को त० तवाखाने वाले स० समान त० तप प० प्ररूपा छ० छालखाने वाले स० समान भि० भिक्षाचर को क० काष्टखाने वाले समान त तप प प्ररूपा क० काष्टखाने वाले समान भि० भिक्षाचर को छ० छालखाने वाले स समान त० तप प० प्ररूपा ॥ ११ ॥ च० चार प्रकार की

प भिक्खागस्स सारखायसमाणे तवे पन्नत्ते सारखायसमाणस्सणं भिक्खागस्स तय-क्खायसमाणे तवे पन्नत्ते छल्लिखाय समाणस्सणं भिक्खागस्स कट्ठखायसमाणे तवे पन्नत्ते कट्ठखाय समाणस्सण भिक्खागस्स छल्लिखाय समाणे तवे पण्णत्ते ॥ ११ ॥

एक छाल खानेवाला, एक काष्ट खानेवाला, और एक सार खानेवाला इसी तरह चार भिक्षाचर कहे हैं, एक भिक्षु आयंबिल प्रमुख तप करनेवाला और जो आहार मिले उस से संतोष माननेवाला साधु त्वचा खानेवाला घुण सरिखा मानना, अल्पाहारी भिक्षुक छाल खानेवाला घुण समान है, नीवि प्रमुख आहार करनेवाला साधु काष्ट खानेवाला घुण समान है, सब विगय का त्याग करनेवाला साधु सार खा नेवाला घुण समान है, प्रथम भेदवाले साधु का प्रधान तप दूसरा भेदवाले का अप्रधान तप, तीसरे का प्रधान और चौथे का भी प्रधान ॥ ११ ॥ भगवंतने चार प्रकार की गुच्छ वनस्पति कही भेद कुमार आदि

अशुद्ध ए० कितनेक सु० शुद्ध अ० अशुद्ध ए० कितनेक अ० अशुद्ध ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात सु शुद्ध ए० कितनेक सु० शुद्ध च० चारभांगा ए० ऐसे प० परिनतरूपमें व वतस० समविपस॥५॥ च० चार पु० पुरुषजात सु० शुद्ध ए० कितनक सु० शुद्धमनवाले च० चारभांगा ए० एसे सं० संकल्प में जा यावत् प० पराक्रम में ॥ ६ ॥ च० चार सु० पुत्र अ० अतिजात अ० अनुजात अ० अपजात कु० कुलांगार ॥ ७ ॥ च० चार

पुरिसजाया प० तं० सुद्धेणामं एगेसुद्धे चउभंगो । एव परिणयरूवे वत्था सपडिव क्खा ॥ ५ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० त० सुद्धेणाम एगे सुद्धमणे चउभंगो । एव सकप्पे जाव परक्कमे ॥ ६ ॥ चत्तारिसुया प० तं० अइजाए, अणुजाए, अवजाए, कुलिंगाले ॥ ७ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सच्चेणाम एगेसच्चे सच्चे णाममेगे

वाले, ३ अशुद्ध जाति में उत्पन्न हुवे और कुशील सेवनेवाले तथा ४ अशुद्ध जाति में उत्पन्न हुवे शीलाचार पालनेवाल इस तरह रस रूप के दृष्टांत वृक्ष के आश्रि कहना ॥ ५ ॥ चार प्रकार के पुरुष फरमाये शुद्ध जाति और शुद्धमन, शुद्धजाति अशुद्ध मन अशुद्ध जाति शुद्ध मन, अशुद्ध जाति अशुद्ध मन ऐसेही संकल्पसे लगाकर पराक्रमतक सब भांगाओं अलग२ कहना ॥६॥ भगवन्त चार प्रकारके सुत (पुत्र) कहे १ अति जात सो पिता की अपेक्षा से संपदा में अधिक होवे भरत की जैसे, २ अनुजात पिता जैसी ऋद्धि समृद्धिवाला, कौणिकवत ३ अपजात सो पिता की सम्पदा से हीन उदयन का पुत्र अभीचकुमार और ४ कुलांगार सो दुर्योधन जैसा ॥ ७ ॥ चार प्रकार की पुरुष जाति कही १ एक पुरुष सत्य प्रतिज्ञा का पालने

पु०पुरुष जात स०मत्य ए०कितनेक स० सचे स०सचे ए०कितनेक अ० झुठे ए० ऐसे प०परिनत जा०यावत प० परक्रम में ॥ ८ ॥ च० चार व० वस्त्र सु०शुद्ध कितनेक सु शुद्ध सु० शुद्ध ए० कितनेक अ०अशुद्ध च० चारभांगा ए० ऐसे च० चार पु पुरुष जात सु० पवित्र ए० कितनेक सु० पवित्र च० चारभांगा ए० ऐसे ज० जैसे सु० शुद्ध वस्त्र में क० कहा त० तैसे सु० पवित्र का जा० यावत् प०पराक्रम में ॥९॥

असचे (४) एवं परिणए जाव परक्कमे ॥ ८ ॥ चत्तारि वत्था प० त० सुद्दणा मएगेसुई, सुद्दणाम एगे असुई चउभंगो । एवमेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० सुई णामं एगेसुई,चउभगो । एवं जहेव सुद्धेण वत्थेणं भणियं तहेव सुद्दणावि जाव परक्कमे ॥९॥चत्तारि कोरवा,प० त० अम्बपलम्बकोरवे तालपलम्ब कोरवे वल्लिपलम्ब कोरवे,मिंढविसाण

वाला अर्थात् द्रव्य से सचा और भाव से भी सचा सत्य संयम का पालनेवाला २ द्रव्य से सत्य और भाव से असत्य ३ द्रव्य से असत्य और भाव से सत्य ४ द्रव्य से असत्य और भाव से भी असत्य ये चार भांगाओं मन, दृष्टि, शील, व्यवहार, और पराक्रमतक सब कहदेना ॥ ८ ॥ चार प्रकार के वस्त्र कहे हैं एक वस्त्र द्रव्य से शुद्ध और भाव से भी शुद्ध एक द्रव्य से पवित्र और भाव से मलिन यों चार भांगा वस्त्र पर कहना वैसे ही चारों भांगाओं पुरुष पर उतारना एक पुरुष शरीर से पवित्र और भाव से पवित्र ऐसे सब भांगाओं वस्त्र जैसे कहना यावत् पराक्रमतक सब भांगाओं जानना ॥ ९ ॥ चार

त० तृण वनस्पति का० काया प० प्ररूपी अ० अग्रबीज मू० मूलबीज पो० पर्वबीज ख० स्कन्धबीज ॥१२॥
च० चार ठा० स्थान स अ० तुरत का उ० उत्पन्न णे नारकी णि० नरक में से इ० इच्छे मा०मनुष्य
लोक में ह० शीघ्र आ० आने का णो० नहीं सं समर्थ होवे ह० शीघ्र आ० आने को अ० तुरत का उ०
उत्पन्न णे० नारकी णि० नरक में से स० उत्पन्न हुई वे वेदना वे वेदते इ इच्छे मा० मनुष्यलोकमें ह०
शीघ्र आ०आनेको णो०नहीं स०समर्थ होवे ह०शीघ्र आ०आनेको अ०तुरतका उ०उत्पन्न णे०नारकी णि०नरकमें
णि० नरक पाल से मु० वारवार अ० महार पडने से इ इच्छे मा० मनुष्य लोक में ह० शीघ्र आ० आने
को ना० नहीं स० समर्थ होवे ह० शीघ्र आ० आने को अ० तुरत उ० उत्पन्न णे० नारकी णि०नरकका

चउव्विहा तणवणस्सइ काइया पण्णत्ता त० अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खधबी
या ॥ १२ ॥ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगसि इच्छेज्जा माणुसलोग
हव्वमागच्छित्तए णो चेवण सचाएइ हव्वमागच्छित्तए । अहुणोववन्नेणेरइए णिरयलो
गसि समुब्भुयं वेयण वेयमाणे इच्छेज्जा माणुसलोगं हव्वमागच्छित्तए णोचेवण सचाएइ
हव्वमागच्छित्तए । अहुणोववन्ने णेरइए णिरय लोगसिणिरयपालेहिं भुज्जो २ अहिट्ठि-

अग्रबीज, कंदादि मूल सो मूलबीज, इक्षु आदि गांठ मो पर्व बीज और वृक्ष की डाली में जो उत्पन्न
होवे सो स्कन्ध बीज ॥ १२ ॥ नरक के जीव मनुष्य लोक में आने की इच्छा करे परंतु चार कारनसे

वेदनीय क० कर्म अ० विनाशय हुवे अ०विनाशवेदे अ०विनानिर्जरे इ० इच्छे णो० नहीं सं० समर्थ होवे ह० एवं नि० नरक का आ० आयुष्य कर्म अ० विनाशय हुवे जा०यावत् णो० नहीं सं० समर्थ होवे इ० शीघ्र आ० आने को इ० इन चे०चार ठा० स्थान से अ० तुरत का उ० उत्पन्न णे० नारकी जा० यावत् णो नहीं स० समर्थ होवे ह० शीघ्र आ० आने को ॥ ११ ॥ कं० कल्पता है णि० साध्वी को च० चार

उमाणे इच्छेज्जा माणुसलोग हव्वमागच्छित्तए नो चेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ अहुणोववन्ने णेरइए णिरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छेज्जा नो चेवणं संचाएइ। एवं निरइयाउयंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जाव नो चेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए । इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने णेरइए जाव णो-चेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ १२ ॥ कप्पंति णिग्गंथीण चत्तारि संघाडी

भासके नहीं १ नरककी अति वेदना भोगवते,२ परमाधामी के मार से,३ नरककी वेदना भोगवने के कर्म पूरे नहीं हुवे होवे जिस से ४ नरक का जो आयुष्य बन्धा है उस का क्षय नहीं होने से ॥ ११ ॥ साध्वी को चार प्रकारकी साडी पहिनना कल्पता है दो हाथ के विस्तारवाली, एक तीन हाथ के विस्तार वाली, दो और चार हाथ के विस्तारवाली एक उस में से दो हाथ वाली

मं॰ सारी पा॰परिनने को प॰ ओढने को प एक दु॰ दोहाथकी वि॰ विस्तार की दो॰ दो ति॰ तीन हाथ वि विस्तार वाली ए॰ एक च॰ चारहाथ वि॰ विस्तार की ॥ १४ ॥ च॰ चार ज्झा ध्यान म॰ आर्तध्यान रो॰ रौद्रध्यान ध॰ धर्मध्यान सु॰ शुक्लध्यान अ॰ आर्तध्यान च॰ चार प्रकार का म॰ अमनोज्ञ स॰ संयोग स॰ प्राप्त हुवे त॰ उसका वि वियोग स होवे स॰ मनोगत म॰ होने म॰ मनोज्ञ स॰ संयोग स॰ प्राप्त हुवे त॰ उसका अ॰ अवियोग स॰ होवे स मनोगत

ओ धारित्तए वा परिहरित्तए वा त॰ एग दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थ वित्थाराओ एगं चउहत्थवित्थारं ॥ १४ ॥ चत्तारिज्झाणा प॰ तं॰ अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे । अट्टे झाणे चउव्विहे प॰ तं॰ अमणुन्नसंपओग संपउत्ते त स्स विप्पओगसातिसमण्णागए यावि भवइ, मणुन्नसंपओग संपउत्ते तस्सअविप्पओग

दो जिस में से एक गोचरी जाते और दूसरी स्थंडिल जाते और एक चार हाथवाली समोसरण में जाते परिने ॥ १४ ॥ भगवंतने चार प्रकार के ध्यान कहे हैं १ चिन्ता से मुहूर्तमात्र मन स्थिर करे सो आर्त ध्यान, २ हिंसादि क्रिया सहित ध्यान सो रौद्र ध्यान ३ श्रुत चारित्र सहित सो धर्म ध्यान और ४ अष्ट कर्म को खोपना सो शुक्ल ध्यान इस में से आर्त ध्यान के चार भेद १ अमनोज्ञ [अप्रिय] वस्तु की प्राप्ति हुए और उस के लिये चिन्ता करे कि इस का शीघ्र मेरा नाश होवो २ मनोज्ञ [प्रिय] शब्दादि

म०होवे मा०रोगकासंयोग सं०प्राप्त होवे त०उसका वि०वियोग स०होते स०मनोगत भ०होवे प०भोगता हुवा का०काम भोग सं० संयोग से० प्राप्त होते त०उसको अ० अवियोग स० होते स० मनोगतभ०होवे अ०आ आर्तध्यान के च० चार ल० लक्षण कं० आक्रंद करना सो० शोक करना ति० रोना प० परितापनिया रो० रौद्रध्यान च० चार प्रकार का हिं० हिंसानुबंधी मो० मृषानुबंधी त० स्तेनानुबंधी स० सरक्षणानुबंधी रो० रौद्रध्यान के च० चारलक्षण भो० ऊष्णदोष ब बहुल दोष अ० अज्ञान दोष अ० आमरणांत दोष

सति समण्णागए यावि भवइ आतंकसंपओग संपउत्ते तस्स विप्पओगसति समण्णागए यावि भवइ,परिझुसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसति समण्णागए यावि भवइ । अट्टस्सणं झाणस्स चत्तारि लक्खणा प० तं० कंदणया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया रोद्दे झाणे चउव्विहे प० त० हिंसाणुबंधि,

वस्तु की प्राप्ति हुइ और उस के लिये विचार करे इस का वियोग मुझ कदापि होवो नहीं २ आतंकरोग का संयोग होते उस का नाश की चिन्तवना करे अर्थात् यह रोग कब मीटेगा भोगवे हुवे काम भोगों का आरमान चिन्तवे इस ध्यान के चार लक्षण १ आक्रन्द शब्द करके रोने से, दीनता से शोच करने से, अश्रु गिराने से वारंवार दुःख का कथन करने से दूसरा रौद्र ध्यान उस के चार भेद १ जीव वधकी चिन्तवना करनी सो हिंसानुबंधी २ मृषा बोलना सो मृषानुबंधी [illegible]

प० धर्मध्यान च० चार प्रकार का प० चार प०प्रतिहार प० प्ररूपे आ० आज्ञा विजय अ० अपाय विजय वि० विपाक विजय सं० संठाण विजय ध धर्मध्यान के च० चार ल० लक्षण आ० आज्ञारुचि णि नि सर्गरुचि सु० सूत्ररुचि अ० अनगाररुचि ध० धर्मध्यान के च० चार आ० आलंबन वा० वांचना प०

मोसाणुबंधि, तेणाणुबंधि, संरक्खणाणुबंधि । रोहस्सणं झाणस्स चत्तारि लक्खणा प० तं० ओसन्नदोसे, बहुलदोसे अन्नाणदोसे, आमरणातदोसे (२) धम्मेज्झाणे चउव्विहे चउपडोयारे प० तं० आणाविजए,अवायविजए, विवागविजए, संठाणविजए

रत्तनी सो स्तनानुबन्धी और धनादिक रखने को बुरा चिन्तवना सो सारक्षणानुबन्धी इस के चार लक्षण हिंसादिक में आसक्तपना, हिंसादिक में बहुत आसक्तपना अज्ञानपना में धर्मबुद्धि से हिंसा करे, और मरणांत तक पश्चाताप करने की हिंसा में प्रवर्ते धर्मध्यान के चार भेद जिन भगवान् की आज्ञा का सत्य मानके चिन्तवन करना सो आज्ञा विजय, रागद्वेषसे जीव को कष्ट होने की चिन्तवना सो अपाय विजय, शुभाशुभकर्मसे शुभाशुभ फलकी प्राप्ति होने कीचिन्तवना सो विपाक विजय और लोकके संठाणकी चिन्तवना करनी सो संठाण विजय इस के चार लक्षण जिन प्रवचन में रुचि होना सो आज्ञा रुचि, स्वभाव से धर्म की रुचि होवे सो निसर्ग रुचि, सूत्र सुनने की रुचि होना सो सूत्र रुचि और द्वादशांग का पठन करना जानना सो अणगार रुचि धर्म ध्यान करनेवाले को चार अवलम्बन सूत्र अर्थ को वाचना, पुन

पूछना प॰फेरना अ॰विचारना ध॰धर्मध्यान के च॰चार अ॰अनुप्रेक्षा ए॰ एकत्वानुप्रेक्षा अ॰ अनित्यानुप्रेक्षा अ॰असरणानुप्रेक्षा सं॰ संसारानुप्रेक्षा सु॰ शुक्लध्यान च॰चार प्रकार का च॰चार सविचार पु॰पृथक् वितर्क स विचारी ए॰ एकत्वावितर्क अविचारी सु॰ सूक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति सु॰ सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाति सु॰शुक्लध्यान

धम्मस्सणं झाणस्स चत्तारिलक्खणा प॰ तं॰ आणारुई, णिसग्गरुई, सुत्तरुई, ओगाढरुई । धम्मस्सणं झाणस्स चत्तारि आलंबणा प॰ तं॰ वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा । धम्मस्सणं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ प॰ तं॰ एगा णुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा, संसाराणुप्पेहा, सुक्कज्झाणे चउव्विहे चउप्पडो

ना सुनाना सो वांचना उस में संदेह होने पर आचार्यादिक से पृच्छा करना सो पुछना, निर्णय वाला ज्ञान की वारंवार चिन्तवना करनी सो पर्यटना और चिन्तवना करते सूत्रार्थ को धार करना सो अनुप्रेक्षा धर्म ध्यान की चार अनुप्रेक्षा में अकेला हूं मेरा कोई नहीं है ऐसी एकाकी भावना भावे सो एकानुप्रेक्षा, धन संपदादि सब अनित्य है ऐसा चिन्तवना सो अनित्यानुप्रेक्षा, संसार में जन्म, मरण, व्याधि वेदनादि समय में जीव को जिन प्रवचन विना अन्य का शरण नहीं है सो असरणानुप्रेक्षा, संसार में जीव परिभ्रमण करते पातकी भार्या भार्या की माता या बहिन वगैरह परस्पर संबन्ध होते हैं सो संसारानुप्रेक्षा शुक्ल ध्यान के चार भेद एक ही द्रव्य की पृथग् भाव से चिन्तवना करनी सो पृथक् वितर्क सविचारी, एक ही द्रव्य को अभेद भाव से चिन्तवे सो एकत्व वितर्क अविचारी, सूक्ष्मक्रिया अर्थात् मात्र ईर्यापथिक

के च० चार ल० लक्षण अ० व्यथारहित अ० निर्मोही वि० विवेक वि० व्युत्सर्ग सु० शुक्ल ध्यान के च० चार आ० आलंबन खं० क्षमा मो० मुक्ति मा० मृदुता अ० सरलपना सु० शुक्लध्यान के च० चार अ० अनुप्रेक्षा प० प्ररूपी अ० अनंतवत्तियानुप्रेक्षा वि० विपरीणामअनुप्रेक्षा अशुभानुप्रेक्षा अ० अपायानु

योर प०त० पुहत्तवियक्केसवियारी, एगत्तवियक्केअवियारी, सुहुमकिरिएअणियट्टी, समुच्छिण्ण किरिए अपडिवाई। सुक्कस्सणं झाणस्स चत्तारि लक्खणा प० त० अव्वहे, असम्मोहे, विवेग, विउस्सग्गे। सुक्कस्सणं झाणस्स चत्तारि आलंबणा प० त० खंती मोत्ती मद्दवे अज्जवे सुक्कस्सण

क्रियासे अनिवृत्ति सो सूक्ष्म किरिया अनियट्टी और सब क्रिया रहित शैलेशीपने चौदह वे गुणस्थान में पीछा पडे नहीं सो अप्रतिपाति यह चार भेद शुक्ल ध्यान के कहे अब इस के लक्षण कहते हैं सब प्रकार की व्यथा पीडा रहित सो अव्यह, सब मोह रहित बनना सो असम्मोह, शरीर से आत्मा भिन्न है ऐसा विचार करना सो विवेक, और निःसंगपने शरीर का त्याग करना सो व्युत्सर्ग चार अवलम्बन क्षमावना सो क्षमा, निर्ममत्व पना सो मुक्ति, मृदुता रखना सो मार्दव और सरलपना सो आर्जव शुक्ल ध्यान की चार अनुप्रेक्षा इस संसार में जीवने अनंत वार परिभ्रमण किया सो अनंतवत्तियानुप्रेक्षा, इस जगत् में सब वस्तु अशाश्वती है शुभ की अशुभ होती है और अशुभ की शुभ होती है सो विपरिणामानुप्रेक्षा इस संसार को धिक्क है क्यों कि जिस रूप का अभिमान जो कोई करता है वही यहां पर कीडा होता है

मसा ॥ १२ ॥ च चार प्रकार की दे० देवता की ठि० स्थिति दे० देवता प० कितनेक द देव स्नातक प० कितनेक द० देव पु० पुरोहित प० कितनेक दे देवप्रज्वलन प० कितनेक ॥ १६ ॥ च० चार प्रकार का स० निवास दे० देव प० कितनेक दे० देवीकी स० साथ स० सहवास को ग० जावे दे देव प० कितनेक छ० लघावान्मी स्त्री की स साथ सं० सहवास को ग० जावे छ० मनुष्य प० कितनेक दे० देवी की स० साथ सं० सहवास को जा०जावे छ० चमदीवाले प० कितनेक छ०मनुष्यणी की स०साथ स०

झाणस्सचचारिअणुप्पेहाओ प०त० अणतवत्तियाणुप्पेहा,विपरिणामाणुप्पेहा,असुभाणुप्पेहा अवायाणुप्पेहा॥१५॥ चउव्विहा देवाण ठिई प०त० देवेणामेगे,देवसिणाएणामेगे,देवपुरोहिए णामेगे,देवपज्जलणेणामेगे॥१६॥ चउव्विहे सवासे प०तं० देवेणामेगे देवीएसर्द्धिसवास ग च्छेज्जा,देवेणामेगे छवीए सार्द्धि सवास गच्छेज्जा, छवीणामेगे देवीए सार्द्धि सवास गच्छे-

ऐसी चिन्तवना सो अशुभानुप्रेक्षा, दुःख का मूल कारण कषायों हैं ऐसी चिन्तवना करना सो अपायानु प्रेक्षा ॥ १५ ॥ चार प्रकारसे मनुष्यवत् देवस्थिति कही है कितनेक देवताओं राजा तुल्य विमानों के मालिक होते हैं कितनेक देवताओं स्नातक प्रधान तुल्य होते हैं, कितनेक पुरोहित के कार्य करनेवाले होते हैं और कितनेक भाट चारन की तरह देवताओं के गुणग्राम करनेवाले होते हैं ॥ १६ ॥ चार प्रकार

परस्थान को ग० जावे ॥ १७ ॥ च० चार कपाय प० मरूपी को० क्रोधकपाय मा० मान कपाय मा० माया कपाय लो० लोभ कपाय ए० ऐसे ने० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानिक को च० चार प० प्रतिष्ठित को० क्रोध आ० आत्म प्रतिष्ठित प० परप्रतिष्ठित उ० उभयप्रतिष्ठित अ० अप्रतिष्ठित ए० ऐसे ने० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे मा० यावत् लो० लोभ वे० वैमानिक को च० चार स्थान

ज्जा, छत्रीणामेगे छत्रीएसर्द्धि सवासं गच्छेज्जा॥१७॥ चत्तारिकसाया प० त०कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए। एव नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं। चउपइट्ठिएकोहे प० त०आयपइट्ठिए परपइट्ठिए तदुभयपइट्ठिए अपइट्ठिए। एवंणेरइयाणजाववेमाणियाणं,एव

या तिर्यचणी की साथ संभोग करते हैं, कितनेक छत्री (चमरी) वाले मनुष्य और तिर्यच देवी की साथ भोग करते हैं और कितनेक मनुष्य तिर्यच मनुष्यणी तिर्यचणी की साथ भोग करते हैं ॥ १७ ॥ चार कपाय कही क्रोध कपाय, मान कपाय, माया कपाय, और लोभ कपाय यह चारों कपाय चौबिसही दंडक में पाती हैं चार स्थानक क्रोध कपाय को रहने के हैं आत्म प्रतिष्ठित क्रोध सो अपने गुन्हे से इस लोक और परलोक में कष्ट पावे, पर प्रतिष्ठित सो कठिन वचन सुनकर क्रोध उत्पन्न होवे, कुच्छ अन्य का आक्रोश और कुच्छ अपना गुन्हा से क्रोध उत्पन्न होने सो उभय प्रतिष्ठित, किसी का बिना गुन्हा क्रोध

स का० काश की उ०त्पत्ति सि० इस से० क्षेत्र प्रत्यय व० वस्तु प्रत्यय स० शरीर प्रत्यय उ० उपधि प्रत्यय ए० ऐसे ने० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे जा० यावत् लो लोभ वे० वैमानिक का च० चार प्रकार का को० क्रोध अ० अनंतानुबन्धी क्रोध अ० अप्रत्याख्यानी क्रोध प० प्रत्याख्याना वरण क्रोध सं० संज्वलन क्रोध ए० ऐसे ने० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे जा० यावत् लो लोभ वे० वैमानिक को च० चार प्रकार का को० क्रोध आ० आभोगनिवृत्तिक अ० अना

जाव लोभे वेमाणियाणं। चउहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्तिसिया तं० खेत्तं पडुच्च, वत्थु पडुच्च सरीर पडुच्च, उवहिं पडुच्च, । एव नेरइयाण जाव वेमाणियाण । एव जाव लोहे, वेमाणियाण चउव्विहे कोहे प० त० अणताणुबंधिकोहे,अपच्चक्खाणकोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, सजलणेकोहे, एव नेरइयाणं जाव वेमाणियाण । एव जाव लोभे वेमाणियाण

उत्पन्न होवे सो अप्रतिष्ठित इसी तरह मान, माया, और लोभ का सब दंडकों में जानना अब चार कारणों से चारों कषायों की उत्पत्ति होती है क्षेत्र आश्रि, वस्तु आश्रि, शरीर आश्रि और उपाधि आश्रि उक्त चारों कषायों के चार २ भेद कहे हैं चार प्रकार का क्रोध अनंतानुबन्धी क्रोध जावजीव तक रहे पत्थर की रेखा समान, अप्रत्याख्यानी क्रोध एक वर्ष तक रहे तालाब की तड जैसे, प्रत्याख्यानी क्रोध चार मास रहे और संज्वलन क्रोध पंद्रह दिन रहे वैसे ही मान माया और लोभ के चार २ भेद चौवीस ही

भोग निवृत्तिक उ० उपशांत अ० अनुपशांत ए० ऐसे ने० नारकी को जा यावत् वै वैमानिक को ए० ऐसे जा० यावत् लो० लोभ जा० यावत् वै० वैमानिक ॥ १८ ॥ जी जीवने च० चार स्थान से अ० आठकर्म प० प्रकृति चि० एकत्रकिये को० क्रोध से मा० मान से मा० माया से लो० लोभ से ए० ऐसे जा० यावत् वै० वैमानिक को ए० ऐसे चि० एकत्रकरते हैं ए० इन दंडकों में ए ऐसे चि० एकत्रित करेंगे ए० एमे ए० इससे ति० तीन दं० दंडक ए० ऐसे उ उपचयकिये उ० उपचय करते हैं उ० उपचय

चउव्विहे कोहे प० तं० आभोगनिव्वत्तिए, अणाभोगनिव्वत्तिए, उवसते, अणुवसते एव नेरइयाण जाव वेमाणियाण । एव जाव लोभे, जाव वेमाणियाण ॥ १८ ॥ जीवाण चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिंसु तं० कोहेणं, माणेण, मायाए, लोभेणं । एवं जाव वेमाणियाण । एवं चिणाति एसदंडओ, । एव चिणिस्संति एसदंडओ । एव मेएणं तिन्नि दंडगा ॥ एवं उवचिणिंसु, उवचिणाति, च उवचिणिस्सति । बंधिंसु ३ ।

दंडक में जानना और क्रोधादिक के चार ७ भेद क्रोधादिक के फल विपाक को जानता हुआ क्रोधादि करे सो आभोगनिवर्तिक क्रोधादिक फल को नहीं जानता हुआ क्रोधादि करे सो अनाभोगनिवर्तिक, क्रोधादि उदय नहीं आय सो उपशांत और उदय आय सो अनुपशान्त यह चोविस ही दंडक में जानना ॥ १८ ॥

करेंगे ब० बंधे उ० उदीरे वे० वेदे णि० निर्जरे णि० निर्जरते हैं णि० निर्जरेंगे जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे ए० एकेक प० पद में ति० तीन २ दं० दंडक भा० कहना जा० यावत् नि० निर्जरेंगे ॥१९॥ च० चार प० प्रतिमा स० समाधि प्रतिमा उ उपधान प्रतिमा वि० विवेक प्रतिमा वि० व्युत्सर्ग प्रतिमा

उदीरिंसु ३ । वेदेंसु ३ । णिज्जरेंसु णिज्जरिंति णिज्जरिस्सति । जाव वेमाणियाण मेव मेक्किके पदे तिन्नि २ दडगा भाणियव्वा, जाव निज्जरिस्सति ॥ १९ ॥ चत्ता रि पडिमाओ प० तं० समाधिपडिमा, उवहाणपडिमा, विवेगपडिमा, विउस्सग्गपडि मा । चत्तारिपडिमाओ प०त० भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वओभद्दा । चत्तारि पडि-

चौबीस ही दंडक के जीवोंने क्रोध, मान, माया और लोभ इन चारों कषायों से आठही कर्मों की प्रकृतिका चयन, विशेष संचय, बंध, वेदना, और निर्जरा की, करते हैं और करेंगे ॥ १९ ॥ भगवंतने साधुओं के लिये चार प्रकारकी प्रतिमा फरमाइ है. श्रुत चारित्र की समाधि अथवा चित्तस्वास्थ्य सो समाधि प्रतिमा, शास्त्रादि श्रवण के आदि अंत में अथवा किसी प्रकार का मांगलिक कार्य में जो तपविधि की जावे सो उपधान प्रतिमा, अशुद्ध भक्त पान, वस्त्र, पात्रादि ग्रहण किया जावे सो विवेक प्रतिमा और सब वस्तु से ममत्व का त्याग करके कायोत्सर्ग करना सो व्युत्सर्ग प्रतिमा, और भी चार प्रकार की प्रतिमा कही पूर्व २ दिशा में चार २ प्रहर कायोत्सर्ग करके रहे वैसे ही चारों दिशा में सोलह प्रहरतक कायोत्सर्ग

च० चार प० प्रतिमा भ० भद्रा सु० सुभद्रा म० महाभद्र स० सर्वतोभद्र च० चार प्रतिमा खु० छोटीमोक प्रतिमा म० बडीमोक प्रतिमा ज० यवमध्य प्रतिमा व० वज्रमध्य प्रतिमा ॥२०॥ च० चार अ० अस्तिकाय अ० अजीवकाय ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्तिकाय आ० आकाशास्तिकाय पो० पुद्गलास्तिकाय च० चार अ० अस्तिकाय अ० अरूपिकाय ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्तिकाय आ० आकाशास्तिकाय जी० जीवा

माओ प० तं० खुड्डियामोयपडिमा, महल्लियामोयपडिमा, जवमज्झा, वइरमज्झा, ॥ २० ॥ चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया प० त० धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए, चत्तारि अत्थिकाया अरूविकाया प० त० धम्मत्थि

करके पूर्ण करे सो भद्रा प्रतिमा, यह दो दिन में पूर्ण होती है सुभद्रा प्रतिमा भद्रा जैसे करना विशेष में कठिन आसन करना महाभद्रा प्रतिमावाला चारों दिशा में आठ २ प्रहर तक कायोत्सर्ग करे यह प्रतिमा चार दिन में पूर्ण होती है इसी तरह सर्वतो भद्र प्रतिमा जानना, और भी चार प्रकार की प्रतिमा छोटी मोक पडिमा सोलह भक्त में पूर्ण होवे, बडी मोक पडिमा अठारह भक्त में पूर्ण होवे, तीसरी यव मध्य चंद्र पडिमा और वज्र मध्य चंद्र पडिमा ॥ २० ॥ चार अजीव अस्तिकाय कही धर्मास्तिकाय चलन स्वभाव, अधर्मास्ति काय स्थिर स्वभाव, आकाशास्तिकाय अवकाशरूप और पुद्गलास्तिकाय रूपवर्णादि सहित चार अरूपी अस्तिकाय कही धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, और जीवास्ति

स्तिकाए ॥ २१ ॥ च० चार फ० फल आ० कच्चे प० कितनेक आ० कच्चेमीठे आ० कच्चे प० कितनेक प० पक्कमीठे प० पक्व प० कितनेक आ० कच्चेमीठे प० पक्व प० कितनेक प० पक्वमधुर ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात आ० कच्चे ए० कितनेक आ० कच्चे मधुरफल समान ॥२२॥ च० चार प्रकार का स० सत्य का० काया का सरल भा० भाषा का सरल भा० भाव का सरल अ० अ० अविसंवादयोगी च०

काए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए ॥ २१ ॥ चत्तारिफला प० त० आमेणाममेगेआममहुरे, आमेणामेगे पक्कमहुरे, पक्केणामेगे आममहुरे, पक्केणामेगे पक्कमहुरे । एवमेव चत्तारि पुरिसजाया प०तं०आमेणामेगे आममहुरफलसमाणे(४) ॥ २२ ॥ चउव्विहे सच्चे प० त० काउज्जुयया, भासुज्जुयया, भावुज्जुयया, अवि-

काय ॥ २१ ॥ चार प्रकार के फल कहे हैं एक फल कच्चा है परंतु कुच्छ मिष्ट, एक फल कच्चा परंतु पका जैसा मिष्ट है एक फल पका हुवा परंतु कुच्छ मधुर और एक फल पका हुवा और पके फल सरिखा मिष्ट ऐसे ही चार पुरुष की जाति कही एक की वय छोटी और अज्ञानी, एक वय में वृद्ध और अज्ञानी एक की वय छोटी और ज्ञानादि गुण युक्त और एक वय में वृद्ध और ज्ञान में भी वृद्ध ॥ २२ ॥ चार प्रकार का सत्य सो काया की सरलता, वचन की सरलता भाव की सरलता और अविसंवाद योग ऐसे

चार प्रकार की मो० मृषा का० काया का झूठ भा० भाषा का झूठ भा० भाव का झूठ वि० विसंवाद
योगी ॥ २१ ॥ च० चार प्रकार का प० प्रणिधान म मनप्रणिधान व० वचन प्रणिधान का कायप्रणि
धान उ० उपकरण प्रणिधान ए० ऐसे ने० नारकी को पं० पंचेन्द्रिय को जा० यावत् वे वैमानिक को
च० चार प्रकार का सु० सुप्रणिधान म० मनसुप्रणिधान जा० यावत उ० उपकरण सुप्रणिधान ए० ऐसे

संसायणाजोगे चउव्विहे मोसे प० तं० कायअणुज्जुयया, भासअणुज्जुयया, भावअ
णुज्जुयया, विसंवादणजोगे ॥ २३ ॥ चउव्विहे पणिहाणे प० तं० मणपणिहाणे,
वयपणिहाणे, कायपणिहाणे, उवगरणपणिहाणे । एवं नरइयाण पचेंदियाण जाव वेमा
णियाण । चउव्विहे सुप्पणिहाणे प० त० मणसुप्पणिहाणे, जाव उवगरणसुप्पणि

ही चार प्रकारका असत्य कहा है काया की वक्रता, भाषा की वक्रता, (भाव) मन की वक्रता, और वि
संवाद योग सो गवादिक को अन्यादि करे ऐसे सदा बोले ॥ २१ ॥ चार प्रकार के प्रणिधान (प्र
योग) मन प्रणिधान सो आर्त, रौद्र, धर्म ध्यानादि, वचन प्रणिधान सो सत्यासत्य का बोलना, काया प्र
णिधान सो पुण्य पाप का करना और वस्त्र पात्रादि मिलना सो उपकरण प्रणिधान यह चारों प्रणिधान
एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय को छोड कर अन्य सब दंडकों में पाते हैं इन को शुभ कार्य में प्रवर्तीने से
शुभ प्रणिधान कहा जाता है और अशुभ कार्य में प्रवर्तीने से अशुभ प्रणिधान कहा जाता है शुभ प्रणिधान

सं० संयमी म० मनुष्य को च० चार प्रकार का दु० दुःप्रणिधान म० मनदुःप्रणिधान जा० यावत् उ० उपकरण दुःप्रणिधान ए० ऐसे पं० पंचेन्द्रिय को जा० यावत् वे० वैमानिक को ॥ २४ ॥ च० चार पु० पुरुष का जा० आ० आपात भद्रक ए० कितनेक णो० नहीं सं० संवास भद्रक सं० संवास भ० भद्रक ए० कितनेक णो० नहीं आ० आपात भद्रक ए० कितनेक आ० आपात भद्रक सं० संवास भद्रक

हाणे एवं संजयमणुस्साणवि चउव्विहे दुप्पणिहाणे प० तं० मणदुप्पणिहाण, जाव उवगरण एवं पंचेंदियाण जाव वेमाणियाण ॥ २४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आवायभद्दए णामेगे णोसंवासभद्दए, संवासभद्दएणामेगे णोआवायभद्दए, एगेआवायभद्दएवि, संवासभद्दएवि, एगे णोआवायभद्दए णोसंवासभद्दए । चत्तारि पुरिसजाया प० तं०

मात्र संयमी को होता है और दुःप्रणिधान एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय को छोड कर अन्य सब दंडक में होता है ॥ २५ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ कितनेक पुरुष पहिले मिले जब अच्छी तरह बोलते हैं और सुखकारी बनते हैं परंतु सहवास में रहे पीछे अच्छे नहीं नीकलते हैं २ कितनेक पुरुष सहवास में अच्छे होते हैं परंतु पहिले मिलने में अच्छे नहीं नीकलते हैं ३ कितनेक पहिले मिलने में अच्छे नीकलते हैं वैसे ही सहवास में रहे पीछे भी अच्छे नीकलते हैं ४ कितनेक मिलने में भी अच्छे नहीं नीकलते हैं वैसे ही सहवास में भी अच्छे नहीं नीकलते हैं और भी पुरुष की चार जाती कहते हैं एक पुरुष अपना दोष

प० कितनेक णो० नहीं भा० आपात भद्रक णो० नहीं सं० संवास भद्रक च चार पु० पुरुष जात अ० अपना प० कितनेक व० वर्जने योग्य पा० देखते हैं णो० नहीं प० दूसरे का प० दूसरे का ए० कितनेक व० वर्जने योग्य पा० देखते हैं च० चार पु० पुरुष जात अ० अपना ए कितनेक व० वर्जने योग्य उ० उदीरते हैं णो० नहीं प० दूसरे का च० चार पु० पुरुष जात अ० अपना ए कितनेक व० वर्जने योग्य

अप्पणो णामेगे वज्जं पासइ णोपरस्स, परस्स णामेगे वज्ज पासइ ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० त० अप्पणो णामेगे वज्जं उदीरेंति णो परस्स ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० त० अप्पणो णामेगेवज्जं उवसामेइ णो परस्स ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० त०

ममुख देखे परंतु अन्य का देखे नहीं २ एक अन्य का दोष देखे परंतु अपना दोष नहीं देखे, ३ एक अपना दोष देखे वैसे ही अन्य का दोष देखे ४ एक अपना दोष भी देखे नहीं और अन्य का दोष भी देखे नहीं और भी चार प्रकार १ कितनेक पुरुष अपनी आत्मा का दोष प्रकाशते हैं परंतु अन्य की आत्मा का दोष नहीं प्रकाशते हैं २ कितनेक अपनी आत्मा के दोषों नहीं प्रकाशते हैं, परतु अन्य की आत्मा के दोषों प्रकाशते हैं ३ कितनेक अपनी आत्माके दोषों प्रकाशते हैं और अन्यके भी दोषों प्रकाशते ४ ४ कितनेक न तो अपने दोषों प्रकाशते हैं, और न अन्य के दोषों प्रकाशते हैं और भी चार जान १ कितनेक पुरुष अपनी आत्मा के दोषों उपशमावे परंतु अन्य के नहीं. २ कितनेक अपनी आत्माक

उ० उपशमाते हैं णो० नहीं प० दूसरे का च० चार पु० पुरुष जात अ० उठते हैं ए० कितनेक णो० नहीं अ उठाते हैं ए० ऐसे व० वांदते है ए० कितनेक णो० नहीं व० वंदवाते हैं ए० ऐसे स० सत्कारदेता है स० सन्मानदेता है पू पूजता है वा०वांचनी देता है प० पूछता है वा०उत्तर देता है च० चार पु० पुरुष जात सु० सूत्रमानने वाले ए कितनेक णो० नहीं अ० अर्थजानने वाले अ०

अब्भुट्ठेइणामेगे णोअब्भुट्ठावेइ ४ । एवं वदइ णामेगे णो वदावेइ ४ । एवं सक्कारेइ सम्माणेइ ४ । पूएइ, वाएइ, पडिपुच्छइ, पुच्छइ वागरेइ ४। चत्तारि पुरिस जाया प०तं० सुत्तधरे णामेगे णो अत्थधरे, अत्थधरेणामेगे णो सुत्तधरे, एगेसुत्तधरेवि अत्थधरेवि एगेनो

दोषों उपशमावे नहीं परंतु अन्य के उपशमावे ३ कितनेक अपनी आत्मा के दोष उपशमावे और अन्यकी आत्मा के भी दोषों उपशमावे ४ कितनेक अपनी आत्मा के दोषों उपशमावे नहीं वैसेही अन्यकी आत्माके दोषों उपशमावे नहीं और भी चारपुरुष १ कितनेक पुरुष ऐसे हैं की जो स्वयं खडे होते हैं परंतु अन्यको खडे नहीं करते हैं २ कितनेक स्वयं नहीं खडे होते हैं परंतु अन्य को खडे करते हैं ३ कितनेक स्वयं खडे होते हैं और अन्य को भी खडे करते हैं और कितनेक स्वयं खडे नहीं होते हैं और अन्य को भी खडे नहीं करते हैं ऐसे ही वंदना सत्कार, सन्मान, पूजा, वाचना, प्रश्न पूछना तथा प्रश्न का उत्तर देने के चार २ भांगाओं जानना १ कितनेक सूत्रधर हैं परंतु अर्थधर नहीं हैं २ कितनेक अर्थधर हैं परंतु

अर्थमानने वाले ए कितनेक णो० नहीं सु० सूत्रमानने वाले ए कितनेक सु० सूत्र मानने वाले अ० अर्थ मानने वाले ए० कितनेक णो० नहीं सु० सूत्र मानने वाले णो० नहीं अ० अर्थ मानने वाले ॥२५॥ च० चमर के अ० असुरेन्द्र के अ असुर कुमार राजा के च चार लो० लोकपाल सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ए० ऐसे ब० बलेन्द्र के सो० सोम ज यम वे० वैश्रमण व० वरुण ध धरणेन्द्र के का० कालपाल को० कोलपाल से० सेलपाल स० संखपाल भू० भूतानेन्द्र के का० कालपाल को०

सुत्तधरे णो अत्थधरे॥२५॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चत्तारि लोगपाला प० तं० सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे, एवं बलिस्सवि सोमे जमे वेसमणे वरुणे। धरणस्स कालवाले, कोलवाले, सेलवाले संखवाले, । भूताणंदस्स कालवाले, कोलवाले संखवाले, सेलवाले, । वेणुदेवस्स चित्ते विचित्ते चित्तपक्खे विचित्तपक्खे । वे

सूत्रधर नहीं हैं ३ कितनेक सूत्रधर हैं और अर्थधर भी हैं, और ४ कितनेक सूत्रधर भी नहीं हैं और अर्थधर भी नहीं हैं ॥२५॥ असुरकुमार के चमरेन्द्र को चार लोकपाल १ सोम, २ यम, ३ वरुण और ४ वैश्रमण, बलेन्द्र को चार लोकपाल सोम, यम, वैश्रमण और वरुण, धरणेन्द्र को चार लोकपाल कालपाल, कोलपाल, सेलपाल और संखपाल, भूतानेन्द्र को चार लोकपाल कालपाल कोलपाल संखपाल और सेलपाल वेणुदेव के चार लोकपाल चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष, विचित्रपक्ष वेणुदालि को चार लोकपाल चित्र, विचित्र, विचित्रपक्ष और

कोलपाल सं० संसपाल से० सलपाल वे वेणुदेव के चि० चित्र वि० विचित्र चि० चित्रपक्ष वि० विचित्र पक्ष व० वेणुदाल क नि चित्र वि० विचित्र वि० विचित्रपक्ष चि० चित्रपक्ष ह० हरिकांत के प० प्रभ सु० सुप्रभ प्र०प्रभकान्त सु०सुप्रभकान्त ह०हरिसिंहके प०प्रभ सु० सुप्रभ सु सुप्रभकान्त प०प्रभकान्त अ०अग्नि शीर्षके ते० तेउ ते० तेउसीह ते० तेउकान्त ते० तेउप्रभ अ अभिमानव के ते० तेउ ते०तेउसीह ते० तेउप्रभ ते तेउकान्त पु पूर्ण के रु रुय रु० रुयांस रु रुयकान्त रु० रुयप्रभ व० वशिष्ठ के रु० रुय

णुदालिस्स चित्ते विचित्ते, विचित्तपक्खे, चित्तपक्खे, । हरिकंतस्स पभे सुप्पभे पभकंते सुप्पभकंते । हरिसीहस्स, पभे सुप्पभे सुप्पभ कंते पभ कंते । अग्गिसीहस्स—तेऊ ते उसिहे, तेउकंते, तेउप्पभे । अभिमाणवस्स—तेऊ, तेउसिहे, तेउप्पभे, तेउ कंते । पुन्नस्स—रुए, रुयसे, रुयकंते, रुयप्पभे । वसिट्ठस्स रुए, रुयसे, रुय

चित्रपक्ष हरिकान्तको चार लोकपाल प्रभ, सुप्रभ, प्रभकान्त और सुप्रभकान्त हरिसिंह को चार प्रभ, सुप्रभ सुप्रभकान्त और प्रभकान्त अग्निशीर्ष के चार लोकपाल तेऊ, तेऊसिंह,तेऊकान्त और तेऊप्रभ अभिमानवको चार लोकपाल तेऊ, तेऊसिंह, तेऊप्रभ और तेऊकान्त पूर्ण इन्द्र को चार लोकपाल रुय, रुयंस, रुयकान्त, रुयप्रभ वशिष्ठ के चार लोकपाल रुय, रुयंस, रुयप्रभ और रुयकान्त जलकान्त के चार लोकपाल जल, जलरत, जलकान्त और जलप्रभ जलप्रभ के चार लोकपाल जल, जलरत, जलप्रभ और जलकान्त अमित

रू० रूपांश रू० रूपप्रभ रू० रूपकान्त ज जलकांत के ज० जल ज० जलरत ज० जलकांत ज० जलप्रभ ज० जलप्रभ के ज० जल ज० जलरत ज जलप्रभ ज० जलकांत अ० अमितगति के तु० त्वरितगति सि० सिप्रगति सिं० सिंहगति सी० सिंहविक्रमगति अ० अमितवाहन के तु० त्वरितगति क्षि० क्षिप्रगति सी० सिंहविक्रमगति सी० सिंहगति वे० वेलंब के का० काल म० महाकाल अ० अंजन रि० रिष्ट प० प्रभंजन के का० काल म० महाकाल रि० रिष्ट अ० अंजन घो० घोष के आ० आवर्त वि० वैयावर्त नं० नंदियावर्त म० महानंदियावर्त म० महाघोष के आ० आवर्त वि० वैयावर्त म० महानंदियावर्त नं० नंदियावर्त

प्पभे रूयकंते। जलकंतस्स—जले, जलरए, जलकंते, जलप्पभे,। जलप्पभस्स जले, जलरए, जलप्पभे, जलकंते। अमियगइस्स—तुरियगई, खिप्पगई, सिंहगई सीहविक्कमगई, अमियवाहणस्स तुरियगई खिप्पगई सीहविक्कमगई सीहगई। वलंबस्स—काले, महाकाले, अंजणे, रिट्ठे पभंजणस्स काले महाकाले रिट्ठे अंजणे। घोसस्स—आवत्ते वियावत्ते, णंदियावत्ते महाणंदियावत्ते। महाघोसस्स आवत्ते, वियावत्ते, महाणंदियाव

गत के चार लोकपाल त्वरितगति, क्षिप्रगति, सिंहगति, सिंहविक्रमगति, अमितवाहन के चार त्वरितगति, क्षिप्रगति, सिंहविक्रमगति और सिंहगति वेलंब के चार लोकपाल काल, महाकाल, अंजन और अरिष्ट प्रभंजन के चार लोकपाल, काल महाकाल, रिष्ट और अंजन घोष के चार लोकपाल आवर्त, वैयावर्त, नंदियावर्त, महा नंदियावर्त, महा घोष के चार लोकपाल आवर्त, वैयावर्त, महानंदियावर्त और नंदियावर्त यह भुवनपति के बीस इन्द्र के लोकपाल के नाम कहे शक्रेन्द्र के चार लोकपाल सोम, यम वरुण और

म० शक्रेन्द्र के सा० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ई० ईशानेन्द्र के सोम ज०यम वे० वैश्रमण व० वरुण ए ऐसे ए० एकान्तर जा० यावत् अ० अच्युत के ॥ २५ ॥ च० चार प्रकार का वा० वायु कुमार का० काल म० महाकाल वे० वेलंब प० प्रभंजन च० चार प्रकार के देव भ० भवनवासी वा०

चे, णादियाव्वे सक्कस्स—सोमेजमे, वरुणे, वेसमणे, ईसाणस्स सोमे जमे वेसमणे वरुणे। एव एगतरिया जाव अच्चुयस्स॥ २५॥चउव्विहा वायुकुमारा प०त० काले,महाकाले वेलबे, पंभजणे। चउव्विहा देवा प० त० भवणवासी, वाणमतरा, जोइसिया विमाणवासी

वैश्रमण ईशानेन्द्र के चार लोकपाल सोम, यम, वैश्रमण और वरुण ऐसे ही अच्युतकुमारेन्द्र तक सब इन्द्रों के चार २ लोकपाल जानना ॥ २५ ॥ चार प्रकार के वायुकुमार कहे हैं काल, महाकाल, वेलंब और प्रभंजन चार प्रकार के देव भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक ॥ २७ ॥ चार प्रकार के प्रमाण कहे हैं १ द्रव्य प्रमाण इस के दो भेद एक प्रदेश परमाणु से अनंत प्रदेश परमाणु तक का वर्त मान सो प्रदेश निष्पन्न द्रव्य प्रमाण और दूसरा भाग निष्पन्न द्रव्य प्रमाण इस के पांच भद १ धान्य का मान प्रतिकादि २ उन्मान तुलादि, ३ अनुमान इत्यादि, ४ गणित एक आदिक, ५ प्रतिमान गुंजाप्रमुखादि यह द्रव्यमान के भेद हुवे २ दूसरा क्षेत्र प्रमाण इस के दो भेद, १ प्रदेश निष्पन्न सो एक प्रदेश से लेकर असंख्यात प्रदेश तक जानना विभाग निष्पन्न सो अंगुलादिक, ३ कालप्रमाण

वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वि० विमानवासी ॥ २७ ॥ च० चार प्रकार का प० प्रमाण द० द्रव्य प्रमाण ख० क्षेत्र प्रमाण का० काल प्रमाण भा० भाव प्रमाण ॥ २८ ॥ च० चार दि० दिशा कुमारी म० महत्तरि पन्नी प० प्ररूपी रू० रूपा रू० रूपांसा सु० सुरूपा रू० रूपावती च० चार वि० विद्युत् कुमारी म० महत्तरिकाएं चि० चित्रा चि० चित्रकनका से० श्रेयांसा सो० सौदामिनी ॥ २९ ॥ स० शक्रेन्द्र दे०

॥ २७ ॥ चउव्विहे पमाणे प० तं० दव्वप्पमाणे, खेत्तप्पमाणे, कालप्पमाणे भावप्पमाणे ॥ २८ ॥ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं० रूवा, रूवंसा, सुरूवा रूवावई । चत्तारि विज्जुकुमारीमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं० चित्ता, चित्तकणगा, सेयसा, सोयामणी ॥ २९ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए

द्रव्य के दो भेद प्रदेश निष्पन्न सो एक आकाश प्रदेश अवगाह कर रहनेवाले पुद्गल की एक समय की स्थिति से लगाकर असंख्यात समय की स्थिति तक जानना और विभाग समय सो समय आवलिकादि ४ भाव प्रमाण सो गुणनय, संख्या, व भेद से भिन्न जीव को ज्ञानादिगुण, प्रत्यक्षादि प्रमाण, नैगमादि नय, और संख्या सो एकादि ॥ २८ ॥ रुचक द्वीप पे रहनेवाली रूपा, रूपांसा, सुरूपा और रूपावति यह चारों प्रधान दिशाकुमारी हैं जब तीर्थंकर का जन्म होता है तब वे वहां आती हैं और नाली छेद कर्म करती हैं वैसे ही रुचक द्वीप की विदिशाओं में रहनेवाली चित्रा, चित्रकनका, श्रेयांसा, और सौदामिनी

देवेन्द्र दे० देवराजा की म० मध्यम प० परिषदा के दे० देवता की च० चार प० पल्योपम की ठि०स्थिति ई० ईशानेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की म० मध्यम प० परिषदा की दे० देवी की च० चार प० पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ २० ॥ च० चार प्रकार का सं० संसार द० द्रव्य संसार खे० क्षेत्रसंसार का० कालसंसार भा० भाव संसार ॥ २१ ॥ च० चार प्रकार का दि० दृष्टिवाद प० परिकर्म सु० सूत्र पु०

सेयाण चत्तारिपलिओवमाइं ठिई प० ईसाणस्सण देविंदस्स देवरन्नो मज्झिम परिसाए देवीण चत्तारिपलिओवमाइं ठिई प० ॥ २० ॥ चउव्विहे संसारे प० तं० दव्वसंसारे, खेत्तसंसारे कालसंसारे भावसंसारे ॥ २१ ॥ चउव्विहे दिट्ठिवाए प० तं०

नामक चार विद्युत्कुमार हैं ये तीर्थंकरों के जन्म समयमें चारों दिशाओं में दीपक लेकरखडी रहतीहैं॥२९॥ शक्रेन्द्र की मध्यम परिषदाके देवताकी और ईशानेन्द्रकी मध्यम परिषदाके देवीकी चार पल्योपम की स्थिति कही है ॥ २० ॥ चार प्रकारसे संसार कहा है जीव पुद्गलोंका भ्रमण सो द्रव्य संसार, चउदह राजलोक प्रमाण सो क्षेत्र संसार, दिन रात्रि यावत् पल्योपम सागरोपम तक परिभ्रमण करना सो काल संसार, और भाव संसार सो औदायिकादि कर्म परिणाम ॥ २१ ॥ इस संसार का स्वरूप दृष्टिवाद में है इसलिये दृष्टिवाद का स्वरूप कहते हैं बारवा अंग दृष्टिवाद है उस के चार विभाग भगवंतने कहे हैं परिकर्म दृष्टिवाद में सूत्र ग्रहण करने की योग्यता की उत्पत्ति संबंधि अधिकार है सूत्र दृष्टिवाद में सर्व द्रव्य

पुव्वगत अ० अनुयोग० ॥ ३२ ॥ च० चार प्रकार का पा० मायश्चित णा० ज्ञान मायश्चित द० दर्शन मायश्चित च० चारित्र मायश्चित वि० व्यक्तकृत्य च० चार प्रकार का पा० मायश्चित प० प्रतिसेवना सं०

परिकम्मेसुत्ताइ पुव्वगए,अणुजोगे।३२।चउव्विहे पायच्छित्ते,प०तं०णाणपायच्छित्ते दसण पायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते वियत्तकिच्चे।चउव्विहे पायच्छित्ते प०त० पडिसेवणा पायच्छित्ते

पयाप, नयादिक का अधिकार है, ४ पूर्वगत दृष्टिवाद में चउदह पूर्व का समावेश होता है और अनुयोग दृष्टिवाद में चारों अनुयोग का कथन है ॥ ३२ ॥ चार प्रकारके मायश्चित कहे हैं १ ज्ञान मायश्चित सो ज्ञानाचार की आलोचना, दर्शन मायश्चित सो दर्शनाचार की आलोचना, चारित्र मायश्चित सो चारित्र की आलोचना, और चौथा व्यक्त कृत्य मायश्चित सो गीतार्थ की करनी सब पाप की शुद्धि करनेवाली है ऐसा जानना ओर भी चार प्रकार के मायश्चित १ जिस कर्तव्य को किया विना नहीं चलता है और उस कोही वारवार करना पडता है उस की आलोचना करके मायश्चित लेना सो प्रतिसेवना मायश्चित, शेय्यातर पिंड और आधा कर्मादि दोनों दोषों एकत्र होजाय उस का मायश्चित सो संयोजना मायश्चित एक मायश्चित लिया और उस में पाप कर्म किया फीर उस में मायश्चित लिया, जैसे पांच अहोरात्रिका मायश्चित का सेवन किया उस की शुद्धि करते फीर पचीस रात्रि के मायश्चित का सेवन किया, यों यावत् छ मासिक पर्यंत मायश्चित आवे सो आरोपना मायश्चित और पाप करके गुप्त रखा होवे फीर

तपोमना पा० मायश्चित आ० आलोचना प्रायश्चित प०परिकुचना प्रायश्चित ॥ ३३ ॥ च० चार प्रकार का काल प० प्रमाण काल य० आयुष्य निर्वृत्तिकाल म० मरण काल अ० अद्धाकाल ॥ ३४ ॥ च० चार प्रकार का पो० पुद्गल प० परिणाम व० वर्णपरिणाम गं० गंधपरिणाम र०रसपरिणाम फा० स्पर्श परिणाम ॥ ३५ ॥ भ० भारत ए० ऐरवत वा० क्षेत्र के पु० पहिले प० छेल्ले स० सर्वकर म०बीचके वा० बावीस अ०

संजोयणा पायच्छित्ते आरोवणा पायच्छित्ते, पलिउंचणा पायच्छित्ते ॥ ३३ ॥ चउ-व्विहे काले प० त० पमाणकाले, अहाउणिव्वत्तिकाले, मरणकाले अद्धाकाले॥३४॥ चउ व्विहे पोग्गलपरिणामे प० त० वन्नपरिणामे, गंधपरिणामे रसपरिणामे फासपरिणामे ।३५।

प्रगट हुवे बाद प्रायश्चित्त देवे सो परिकुंचना प्रायश्चित्त ॥ ३३ ॥ भगवंतने चार प्रकार के काल कहे हैं, १ समय, आवलिका, पूरब, सागरोपम, यावत् पुद्गल परावर्तन का काल को प्रमाण काल कहते हैं, २ चारों गति के जीवोंने जिस आयुष्य का बंध किया है उस का पूर्ण होना सो यथायुष्य निवृत्ति काल, आयुष्य का काल सो मरणकाल, और समयादि क्षेत्र कि जहां सूर्य के परिभ्रमण से समय, पक्ष, घटिकादि होवे सो अद्धाकाल ॥ ३४ ॥ भगवंतने पुद्गल परिणमने के चार भेद कहे हैं १ वर्ण परिणाम सो काला का पीला और पीला का काला २ गंध परिणाम सो सुगंधी का दुर्गंधि और दुर्गंधि का सुगंधी बने ३ ऐसे ही रस परिणमे सो रस परिणाम, और स्पर्श में परिणमे सो स्पर्श परिणाम

अरिहंत भ० भगवान् चा० चारव्रत प० प्ररूपते हैं स० सर्व पा० प्राणातिपात से वे० निवृत्ति ए० ऐसे मु० मृषावाद अ० अदत्तादान स० सर्व व० बहिर्द्धादान से नि० निवृत्ति स० सर्व म० महाविदेह में अ० अरिहंत भ० भगवान् चा० चारव्रत ध० धर्म प० प्ररूपते हैं स० सर्व पा० प्राणातिपात से वे० निवृत्ति जा० यावत् स० सर्व व० बहिर्द्धादान से वे० निवृत्ति ॥१६॥ च० चार दु० दुर्गति णे० नरक दुर्गति ति०

भरहेरवएसुणं वासेसु पुरिमपच्छिमवज्जा मज्झिमगा बावीस अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पन्नवितिं तं० सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं एवं मुसावायाओ, अदिन्नादाणाओ, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं॥ सव्वेसुणं महाविदेहेसु अरहंता भगवंता चाउज्जाम धम्म पन्नवयंति त० सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं जाव सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं ॥ १६ ॥ चत्तारिदुग्गईओ प० तं० णेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणियदुग्गई मणु

कहा अब जीव का परिणाम कहते हैं भरत और ऐरवत क्षेत्र में पहिले और छेले तीर्थंकर को छोडकर बीच के बाईस तीर्थंकर चार महाव्रत रूप धर्म प्ररूपते हैं १ सर्वथा प्रकार से प्राणातिपात से निवर्तना, सर्वथा प्रकारसे मृषावाद स निवर्तना, सर्वथा प्रकार से अदत्तादान से निवर्तना, और सर्वथा प्रकारसे सर्व बहिर्गण [मैथुन परिग्रह] से निवर्तना ऐसे ही महाविदेह के अरिहन्त तीर्थंकर उक्त चार महाव्रतरूप धर्म प्ररूपते हैं ॥ १६ ॥ चार दुर्गति कही नरक दुर्गति, तिर्यंच योनि की दुर्गति, मनुष्य की दुर्गति और

ति॰ तिर्यंचयोनि दुर्गति॰ म मनुष्यदुर्गति दे॰ देवदुर्गति च॰ चार सु॰ अच्छीगति सि॰ सिद्धिसुगति दे॰ देवसुगति म॰ मनुष्यसुगति सु॰ अच्छाकुल में उत्पत्ति ॥ ३७ ॥ प॰ प्रथम समय का जि॰ जिनको च॰ चार क॰ कर्म खी॰ क्षय भ॰ होवे तं॰ वह णा॰ ज्ञानावरणीय द॰ दर्शनावरणीय मो॰ मोहनिय अं॰ अंतराय उ॰ उत्पन्न णा॰ ज्ञान द॰ दर्शन ध॰ धारण करने वाले अ॰ अरिहंत जि॰ जिन के॰ केवली च॰ चार क॰ कर्म वे॰ वेदते हैं वे॰ वेदनीय आ॰ आयुष्य णा॰ नाम गो॰ गोत्र प॰ प्रथम समय का

स्सदुग्गई, देवदुग्गई। चत्तारि सोग्गईओ प॰ त॰ सिद्धिसोग्गई, देवसोग्गई मणुयसोग्गई, सुकुले पच्चायाई ॥ ३७ ॥ पढम समय जिणस्सणं चत्तारि कम्मं सा खीणा भवंति त॰ णाणावरणिज्जं, दरिसणावरणिज्जं, मोहणिज्जं, अंतराइय । उप्पन्नणाणदंसणधरेणं अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदेंति त॰ वेयणिज्जं,

देव की दुगति [किल्विषी देव की अपेक्षा से] ऐसे ही चार अच्छी गति कही सिद्ध की सुगति, मनुष्य सुगति, देव सुगति, और अच्छे कुल में उत्पन्न होना सो सुगति ॥ ३७ ॥ बारवे गुणस्थान में रहनेवाले साधु व्यवहार नय की अपेक्षा से ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय इन चारों कर्मों का क्षय करके केवल ज्ञान की प्राप्ति करते हैं केवल ज्ञान केवल दर्शन को धारण करनेवाले अरिहंत केवली

सिद्धका च० चार क० कर्म जु० साथ खि० क्षय होते हैं वे०| वेदनीय आ० आयुष्य णा० नाम गो० गोत्र
॥ ३८ ॥ च० चार ठा० स्थान से हा० हास्योत्पत्ति मि० होवे पा० देख के भा० बोलके सु० सूनके सं०

आउयं, णामं, गोयं । पढमसमयसिद्धस्सण चत्तारि कम्मसा जुगवं खिज्जंति
तं० वेयणिज्जं, आउय णाम, गोयं ॥ ३८ ॥ चउहिं ठाणेहिं हासुप्पात्तेसिया तं०
पासेत्ता, भासेत्ता, सुणेत्ता, संभरेत्ता ॥३९॥ चउव्विहे अंतरे प०त० कट्ठंतरे, पम्हंतरे,

वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र यह चार कर्म वेदते हैं और इन ही चारों कर्मों का क्षय होने से प्रथम समय के सिद्ध बनते हैं ॥ ३८ ॥ चार प्रकार से हास्य की उत्पत्ति होती है, भाण्डादिक की चेष्टा देखने से, विस्मयकारी वचन बोलने से, वैसे वचन श्रवण करने से, और वैसी भाव याद करने से ॥३९॥ भगवंतने दृष्टान्तरूप चार प्रकार का अंतर कहा काष्टान्तर सो काष्ट २ में अंतर एक काष्ट चदन और दूसरा काष्ट थोर, पक्षान्तर सो पांख २ में भिन्नता जैसे एक सुकुमाल, और एक कठीन लोहान्तर सो एक लोहा कठिन और एक नरम वैसे ही पत्थरान्तर पत्थर२ में भिन्नता एक चिन्तामणि रत्न और दूसरा कंकर ऐसे ही चार प्रकार के पुरुष और स्त्रियों कही हैं काष्टान्तर समान सो एक विशेष पदी योग्य और एक अयोग्य, पक्षान्तर समान स्त्री पुरुष सो एक का वचन सुकुमाल और एक का वचन कठिन,

याद करक ॥ ३९ ॥ च० चार प्रकार का अं० अंतर क० काष्ठान्तर प० पक्षान्तर लो० लोहान्तर प० पत्थरान्तर ए० एसे इ० स्त्री का पु० पुरुष का च० चार प्रकार का अं० अंतर क० काष्ट समान प० पक्ष समान लो० लोह समान प० पत्थर समान ॥ ४० ॥ च० चार भ० सेवक दि० दिवस मृत्यक ज० यात्रा मृत्यक उ० उच्चता मृत्यक क० कबाड मृत्यक ॥ ४१ ॥ च० चार पुरुषजात स० प्रगट प० सेवने वाले ए० कितनेक णो० नहीं प० गुप्त प० सेवने वाले प० गुप्त प० सेवन वाले ए० कितनेक णो नहीं

लोहंतरे, पत्थंतरे, । एवमेव इत्थीए वा, पुरिसस्सवा। चउव्विहे अंतरे प० त० कट्ठंतरत्थीस माणे । पम्हंतरसमाणे, लोहंतरसमाणे, पत्थंतरसमाणे ॥ ४० ॥ चत्तारि भयगा प० तं० दिवसभयए, जत्तामयए, उच्चत्तभयए कब्बाडभयए ॥ ४१ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० त० सपागडपडिसेवी णामेगे णो पच्छण्णपडिसेवी, पच्छण्णपडि-

लोहान्तर समान है। एक क्रोधी और एक स्नेह रहित, पत्थरांतर सो एक चिन्ता रहित, मनोरथ को पूर्ण करनेवाले, गुणवंत व वंदनीय और एक गुण रहित व अवंद्य ॥ ४० ॥ चार प्रकार के सेवक कहे दिन का सेवक सो पैसे देकर कार्य के लिये रखे, यात्रा सेवक सो देशान्तर जाते पैसे देकर रखे, उच्चता मृत्यक सो काम का अनुमान करके पैसे देकर कार्य करावे, और कबाडमृत्यक सो अमुक हाथ जमीन खोद देने अमुक पैसे मिलेंगे इस तरह कार्य करावे ॥ ४१ ॥ चार प्रकार के लोकोत्तर पुरुष कहे हैं १ गीतार्थ

मगट प० सेवने वाले ए० एक सं० मगट प० सेवने वाले प० गुप्त प० सेवने वाले ए एक णो० नहीं सं० मगट प० सेवने वाले णो० नहीं प० गुप्त प० सेवने वाले ॥ ४२ ॥ च० चमरेन्द्र अ० असुरेन्द्र का अ० असुर कुमार राजा के सो० सोमके म महाराजा की च० चार अ० अग्रमहिषी क० कनका क० कनकलता चि० चित्रगुप्ता व० वसुधरा ए एवं ज० यम की व० वरुण की वे० वैश्रमन की ब० बले न्द्र की ब० वैरोचन की सो० सोमराजा की च० चार अ अग्रमहिषी मि० मितगा सु सुभद्रा वि०

सेवी णामेगे णोसपागड पडिसेवी एके संपागड पडिसेवीवि पच्छण्णपडिसेवीवि, एगे णो सपागड पडिसेवी णोपच्छण्णपडिसेवी ॥ ४२ ॥ चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकुमार रन्नो सोमस्समहारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त० कणगा कणगलया, चित्तगुत्ता, वसुधरा। एवं जमस्स वरुणस्स वेसमणस्स। बलिस्सण वइरोयणिंदस्स वइरो- यणरण्णा सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० त० मित्तगा, सुभद्दा, वि-

साधु कारण विशेष अप्रच्छन्नपने अकल्पनीय भक्तादिक का सेवनकरे परंतु गुप्तपने सेवे नहीं, एक प्रच्छन्नपन पाप कर्म सेवे परतु प्रगट पाप न सेवे, एक प्रच्छन्नपने सेवे और अप्रच्छन्नपने भी सेवे और कोई गुणवंत साधु न तो अप्रच्छन्नपने पाप कर्म सेवे और न प्रच्छन्नपने पाप कर्म का सेवन करे ॥ ४२ ॥ असुरकुमार के राजा चमरेन्द्र के सोम नामक महाराजा को चार अग्रमहिषी कही, कनका, कनकलता, चित्रगुप्ता, और

गन ज० अग्नी ए एमे अ यमकी वे० वैश्रमन की व० वरुण की ध० धरणेन्द्र णा० नागकुमारेन्द्र की णा० नागकुमार राजा की का० काल की म० महाराजा की च० चार अ० अग्रमहिषी अ० अशोका वि० विमला सु० सुप्रभा सु० सुदर्शना ए० ऐसे जा यावत् सं० संखपाल के भू० भूतानन्द णा० नाग कुमारेन्द्र की णा० नागकुमार राजा की का० कालपाल की च० चार अ० अग्रमहिषी सु० सुनंदा सु० सु० सुभद्रा सु० सुजाया सु० सुमना ए० एसे जा० यावत् से० सेलवाल की ज० जैसे ध० धरणेन्द्र की प०

ज्जुया असणी। एवं जमस्स, वेसमणस्स, वरुणस्स। धरणस्सणं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालस्समहारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० त० असोगा विमला सुप्पभा सुदसणा। एवं जाव संखवालस्स। भूयाणदस्सणं णागकुमारिंदस्स णाग कुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० त० सुणंदा, सुभद्दा सुजाया, सुमणा। एवं जाव सेलवालस्स जहा धरणस्स। एवं सव्वेसिं दाहिणिद-

वसुंधरा ऐसे ही यम, वरुण और वैश्रमण की उक्त नामोंवाली चार अग्र महिषियों जानना उत्तर दिशि के चमेन्द्र देवता के सोम, यम वरुण और वैश्रमण इन चारों लोकपालों को चार २ अग्रमहिषियों कही मित्रगा, सुभद्रा, विद्युत और असनी धरणेन्द्र के कालपाल, कोलपाल, सेलपाल और संखपाल को चार अग्रमहिषियों कही अशोका, विमला, सुप्रभा, और सुदर्शना, और भूतानेन्द्र के कालपाल, कोलपाल

पो दा० दक्षिण के घो० लोकपाल की जा० यावत् घो० घोषकी म० जैसे मू० भूतानन्द का ए० ऐसे मा० यावत् म० महाघोष के लो० लोकपाल की का०काल के पि पिशाचेन्द्र के पि० पिशाच राजा की च० चार अ० अग्रमहिषी क० कमला क० कमलप्रभा उ० उत्पला सु० सुदर्शना ए० ऐसे म० महाकाल की सु० सुरूप की भू भूतेन्द्र की भू०भूतराजा की च० चार अ० अग्रमहिषी रू० रूपवती ब० बहुरूपा सु० सुरूपा सु० सुभगा ए ऐसे प० प्रतिरूप की पु० पूर्णभद्र की ज० यक्ष की य० यक्षराजा की च०

लोगपालाण जाव घोसस्स जहा भूयाणंदस्स एवं जाव महाघोसस्स लोगपालाण। कालस्सण पिसाइंदस्स पिसायरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० त० कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदसणा। एवं महाकालस्सवि। सुरूवस्सण भूइंदस्स भूयरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० त० रूववइ, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा। एवं पडिरूवस्सवि। पुण्णभदस्सण जक्खिंदस्स जक्खरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं०

शंखपाल, और नन्दपाल को चार अग्र महिषियों कही सुनंदा, सुभद्रा, सुजाता, और सुमना ऐसे ही दक्षिण दिशा व उत्तर दिशा के सब लोकपाल की सब अग्रमहिषियों जानना यह भुवनपति का अधिकार हुवा अब वाणव्यन्तर का अधिकार चलता है काल व महाकाल नामक पिशाचेन्द्र को चार अग्र महिषियों कमला, कमलप्रभा, उत्पला और सदर्शना सुरूप व प्रतिरूप नामक भूतेन्द्र को चार अग्रमहि-

चार अ० अग्रमहिषी पु० पूर्णा ब० बहुपुत्रिका उ० उत्तमा ता० तारका ए० ऐसे म० माणिभद्र की भी० भीम के र० राक्षस के र० राक्षस राजा के च० चार अ० अग्रमहिषी प० पद्मा व० वसुमति क० कनका र० रत्नप्रभा ए० ऐसे म० महाभीम की कि० किन्नर के कि० किन्नरेन्द्र की च० चार अ० अग्रमहिषी व० वडिंसा के० केतुमति र० रतिसेना र० रतिप्रभा ए० ऐसे कि० किंपुरुषेन्द्र की च० चार अ० अग्रमहिषी रो० रोहिणी ण० नवमिका हि० ह्री पु० पुष्पवती ए० ऐसे म० महापुरुष के अ० अतिकाय म० महोरग के

पुण्णा बहुपुत्तिया उत्तमा, तारगा। एवं माणिभद्दस्सवि। भीमस्सणं रक्खसिंदस्स रक्खसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० त० पउमा, वसुमई, कणगा, रयणप्पभा ॥ एवं महाभीमस्सवि। किन्नरस्सण किन्नरिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ प० त० वडिं सा, केउमई, रइसेणा रइप्पभा। एवं किंपुरिसस्सवि। सुपुरिसस्सण किंपुरिसिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ प० त० रोहिणी, णवमिया, हिरी, पुप्फवई। एवं महापुरि-

षियों रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा और सुभगा पूर्णभद्र और माणिभद्रको चार अग्रमहिषियों पूर्णा, बहुपुत्रिका उत्तमा और तारका भीम और महाभीम नामक राक्षसेन्द्र को चार महिषियों पद्मा, वसुमति, कनका और रत्नप्रभा किन्नर और किंपुरुष को चार अग्र महिषियों वडिंसा, केतुमती, रतिसेना और रतिप्रभा सु

प० चार म० अग्रमहिषी मु भुजगा भु० भुजगावती म० महाकच्छा फ० स्फुटा प० ऐसे म० महाकाय क गी० गीतरति क ग० गीतयशकी प० चार अ० अग्रमहिषी सु सुघोषा वि० विमला सु० सुस्वरा स० सरस्वती ए पूर्वे गी० गीतयश च० चंद्रके जो० ज्योतिषेन्द्र की जो० ज्योतिषी राजाकी च० चार अ० अग्रमहिषी चं० चंद्रप्रभा दो० ज्योत्स्नाभा अ० अर्चिमालिनी प० प्रभंकरा ए० ऐसे सू० सूर्यकी ण० विशेष सू० सूर्यप्रभा ज्यो० ज्योत्स्नाभा अ अर्चिमालिनी प० प्रभंकरा इं० इंगाल म० महाग्रह की प० चार अ० अग्रमहिषी

सरस्सति । अइकायस्स महोरगिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० भुयगा, भुयगवती महाकच्छा, फुडा । एवं महाकायस्सवि । गीयरइस्सणं गंधव्विंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० सुघोसा, विमला सुस्सरा, सरस्सई । एवं गीयजसस्सवि चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० चंदप्पभा, दोसिणाभा अच्चिमाली, पभंकरा एवं सूरस्सवि णवरं सूरप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली

भुजगा, भुजगावती, महाकच्छा और स्फुटा गीतरति और गीतयश को चार अग्र महिषियों सुघोषा, विमला सुस्वरा, और सरस्वती ज्योतिष के इन्द्र चंद्र को चार अग्र महिषियों चंद्रप्रभा, ज्योत्स्नाभा, अर्चिमाली, और प्रभंकरा एवं ही सूर्य का सूर्यप्रभा, ज्योत्स्नाभा, अर्चिमाली, और प्रभंकरा इंगाल (मंगल) नामक महाग्रह को चार अग्र महिषियों विजया, वैजयंती, जयंती, और अपराजिता ऐसे ही सब ८८ ग्रहों को

त्रि॰ विजया वि॰ विजयंति ज॰ जयंति अ॰ अपराजिता ए॰ ऐसे स॰ सर्व म॰ महाग्रहकी जा॰ यावत् मा॰ माव केतु स॰ शक्रेन्द्र की दे॰ देवेन्द्र दे॰ देवराजा की सो॰ सोम म॰ महाराजा की च॰ चार अ॰ अग्रमहिषी रो॰ रोहिणी म॰ मदना चि॰ चित्रा सा॰ श्यामा ए॰ ऐसे जा॰ यावत् वे॰ वैश्रमण की ई॰ ईशान के दे॰ देवेन्द्र की दे॰ देवराजा की सो॰ सोमराजा की च॰ चार अ॰ अग्रमहिषी प॰ प्ररूपी पु॰ पृथ्वी रा॰ रात्रि र॰ रजनी वि॰ विद्युत् ए॰ ऐसे जा॰ यावत् व॰ वरुण की ॥ ४३ ॥ च॰ चार गो॰ गोक्षीर की

पभंकरा । इगालस्सण महग्गहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ प॰ त॰ विजया, वेजयंती जयंती अपराजिया । एवं सव्वेसिं महग्गहाणं जाव भावकेउस्स । सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प॰ त॰ रोहिणी, मयणा, चित्ता सामा । एवं जाव वेसमणस्स ईसाणस्सण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्समहारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा पुढवी, राई, रयणी विज्जु। एवं जाव वरुणस्स॥४३॥

चार २ अग्र महिषियों जानना शक्रेन्द्र के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण लोकपाल को चार २ अग्र महिषियों रोहिणी, मदना, चित्रा, और श्यामा ईशानेन्द्र के सोम, यम, वैश्रमण और वरुण लोकपाल को चार अग्र महिषियों पृथ्वी, रात्रि रजनी, और विद्युत (आगे के विमानों में देवियों नहीं है) ॥ ४३ ॥

वि० विगय खी० दूध द० दधि स घृत न० मक्खन च० चार सि० स्निग्ध वि० विगय प प्ररूपी ते० तेल घ घृत व० चरबी ण० मक्खन च० चार म० महाविगय प प्ररूपी म० मधु म० मांस म० मद्य ण० मक्खन ॥ ८८ ॥ च० चार कू० कूटागार गु० गुप्त प० कितनेक गु० गुप्त गु० गुप्त ए० कितनेक अ० अगुप्त अ० अगुप्त ए० कितनेक गु० गुप्त अ अगुप्त ए० कितनेक अ० अगुप्त ए० ऐसे च चार पु पुरुषजात गु० गुप्त ए० कितनेक गु० गुप्त च० चार कू० कूटागार मा० शाला गु० गुप्त ए० कितनेक गु०

चत्तारि गोरसविगईओ प० त० खीरं, दहिं सप्पि, णवणीअ । चत्तारि सिणेहविगईओ पण्णत्ताओ तं० तेल्लं, घयं, वसा णवणीय । चत्तारि महाविगईओ पण्णत्ताओ तं० महुं, मंसं, मज्जं, णवणीयं ॥ ४४ ॥ चत्तारि कूडागारा प० त० गुत्तेणामेगे गुत्ते, गुत्तणामेगे अगुत्ते, अगुत्ते णामेगे गुत्ते, अगुत्ते णामेगे अगुत्ते । एवमेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गुत्तेणामेगेगुत्ते ४ । चत्तारि कूडागारसालाओ

चार प्रकार की गोरस (दूध से उत्पन्न होती) विगय कही दुध, दधि, घृत, और मक्खन चार प्रकारकी स्नेह विगय तेल, घृत, चरबी और मक्खन चार प्रकार की महाविगय कही मधु, मांस, मदिरा, और मक्खन ॥ ८८ ॥ चार प्रकार के कूटाकारवाले गृह कहे एक गृह भी गुप्त और द्वार भी गुप्त एक गृह गुप्त परंतु द्वार अगुप्त, एक अगुप्त गृह और गुप्त द्वार और एक अगुप्त गृह और अगुप्त द्वार ऐसे ही चार

गुप्त दु॰ द्वार गु॰ गुप्त र॰ कितनेक अ॰ अगुप्त दु॰ द्वार अ॰ अगुप्त ए॰ कितनेक गु॰ गुप्तद्वार अ॰ अगुप्त प कितनेक अ॰ अगुप्तद्वार ए॰ ऐसे च॰ चार इ॰ स्त्री गु॰ गुप्त ए॰ कितनेक गु॰ गुप्तेन्द्रिय गु॰ गुप्त प कितनेक अ॰ अगुप्तेन्द्रिय ॥ ८९ ॥ च॰ चार ओ॰ अवगाहना द द्रव्य अवगाहना खे॰ क्षेत्र

प॰ तं॰ गुत्ताणामेगा गुत्तदुवारा, गुत्ताणामेगा अगुत्तदुवारा, अगुत्ताणामेगा गुत्तदुवारा, अगुत्ताणामेगा अगुत्तदुवारा। एवामेव चत्तारित्थीओ प॰ तं॰ गुत्ताणामेगा गुत्तिंदिया, गुत्ताणामेगा अगुत्तिंदिया, ४ ॥ ४५ ॥ चउव्विहा—ओगाहणा प॰ तं॰

प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष वस्त्रादि से ढका हुवा और लज्जावंत, २ एक पुरुष वस्त्रादि से ढका हुवा परंतु लज्जा रहित, ३ एक पुरुष वस्त्रादि रहित परंतु लज्जावंत और ४ एक पुरुष वस्त्रादि रहित लज्जादि भी रहित उक्त कथनानुसार चार प्रकार की कूटागारशाला कही और ऐसे ही चार प्रकार की स्त्रियों १ एक स्त्री घर में ही रहती है और वस्त्रादि से ढकी हुइ है व सुशील है, २ एक स्त्री वस्त्रादि से ढकी हुइ है परंतु कुशील है यों चारों भांगाओं जानना ॥ ८९ ॥ चार प्रकार की अवगाहना द्रव्य अवगाहना सो द्रव्य से अनंत स्कंध शरीर है, क्षेत्रावगाहना क्षेत्र से असंख्यात प्रदेश अवगाहे हैं काल अवगाहना असंख्यात समय कि स्थितिवाली काया और भावावगाहना सो भाव से अनंत पर्याय

अवगाहना का० कालअवगाहना भा० भावअवगाहना ॥ ४६ ॥ च० चार प० प्रज्ञप्ति अं० अंग बा बाह्य प० प्ररूपी च० चन्द्रप्रज्ञप्ति सू० सूर्यप्रज्ञप्ति जं० जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति दी० द्वीपसागर प्रज्ञप्ति ॥ ४७ ॥
च०चार प०पडिसंलीनता को क्रोध पडिसंलीनता मा० मान पडिसंलीनता मा० माया पडिसंलीनता लो० लोभ पडिसलीनता च०चार अ०अपडिसंलीनता को०क्रोध अपडिसंलीनता जा० यावत् लो०लोभ अपडिसं-

दव्वोगाहणा, खेत्तोगाहणा कालोगाहणा, भावोगाहणा ॥ ४६ ॥ चत्तारि पण्णत्ती ओ अंगबाहिरियाओपण्णत्ताओ त० चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, जंबूद्दीवपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती ॥ ४७ ॥ इति चउट्ठाणस्स पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ *

चत्तारि पडिसंलीणा प०तं०कोह पडिसलीणे,माणपडिसलीणे मायापडिसलीण,लोभ पडि-

लीन ॥ ४८ ॥ चार प्रज्ञप्ति द्वादशांग अंग बाहिर हैं परंतु कालिक श्रुतरूप है चंद्र प्रज्ञप्ति में चंद्रमाकी वक्तव्यता कही है, सूर्य प्रज्ञप्ति में सूर्य की वक्तव्यता कही है, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में जम्बूद्वीप का अधिकार कहा है और द्वीप सागर प्रज्ञप्ति में द्वीप सागरका अधिकार कहा है ॥ ४७ ॥ यह चतुर्थ स्थानक का पहिला उद्देशा समाप्त हुवा * *

चार प्रकार की प्रतिसंलीनता (निग्रह करना) कही १ उत्पन्न हुवा क्रोध को क्षमा से निष्फल करे सो क्रोध प्रतिसंलीनता, २ उत्पन्न हुवा मान को विनय से निष्फल करे सो मान प्रतिसंलीनता, माया न

सीन च० चार प० परिसंलीनता म० मन पडिसंलीनता व०वचन पडिसंलीनता का० काया पडिसंलीनता इ० इन्द्रिय पडिसंलीनता च०चार अ०अपडिसंलीनता म०मन अपडिसंलीनता जा यावत् इ० इन्द्रिय अपडिस लीनता ॥ १ ॥ च०चार पु० पुरुषजात दी० दीन प० कितनेक दी० दीन दी० दीन प० कितनेक अ०

सलीणे। चत्तारि अपडिसलीणा प० त० कोह अपडिसलीणे, जाव लोभ अपडिसलीणे॥ चत्तारि पडिसलीणा प० त० मणपडिसलीणे, वइपडिसलीणे, कायपडिसलीणे, इंदियपडिस लीणे चत्तारि अपडिसलीणा प० त० मणअपडिसलीणे, जाव इंदियअपडिसलीणे ॥ १ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० त० दीणे णामेगे दीणे, दीणे णामेगे अदीणे

करे सो माया प्रतिसंलीनता और उदय आया हुवा लोभ का रुंधन करे सो लोभ प्रतिसंलीनता चार प्रकार की अप्रति संलीनता उत्पन्न हुवा क्रोध, मान, माया और लोभका निग्रह न करे और भी चार प्रकारकी प्रतिसंलीनता शुद्धमन से अशुद्ध मनका रुंधन करे, सो मन प्रतिसंलीनता, सत्य वचन बोले परंतु असत्य वचन न बोले सो वचन प्रतिसंलीनता, काया को पापकारी कार्य में प्रवर्तावे नहीं सो काया प्रति संलीनता, और इन्द्रिय का निग्रह करे सो इन्द्रिय प्रतिसंलीनता ऐसे ही चारों को पापकार्य में प्रवर्ताना सो चार प्रकार की अप्रतिसंलीनता जानना ॥१॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष प्रथम भी दीन

अदीन अ० अदीन ए० कितनेक दी० दीन अ० अदीन ए० कितनेक अ० अदीन म० मार पु० पुरुष गात दी० दीन ए० कितनेक भी दीन परिणत दी० दीन ए० कितनेक अ० अदीन परिणत अ० अदीन ए० कितनक दी० दीनपरिणत अ० अदीन ए० कितनेक अ अदीन परिणत च०

अदीणेणा मेगेदीणे, अदीणेणामेगे अदीणे। चत्तारि पुरिस जाया प० त० दीणे णामेगेदीण परिणए, दीण णामेगे अदीणपरिणए, अदीणे णामेगे दीणपरिणए अदीणे णामेगे अदीणपरिणए, । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० दीणे णामेगे दीणरूवे ४ । एव

और पीछे भी दीन २ एक पुरुष प्रथम दीन और फीर अदीन, ३ एक पुरुष प्रथम तो अदीन फीर दीन और ४ एक पुरुष पहिले भी अदीन था और फीर भी अदीन चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष शरीर का दीन और परिणामों का भी दीन, २ एक पुरुष शरीर का दीन परंतु परिणामों का अदीन, ३ एक पुरुष शरीर का अदीन और परिणामों का दीन और ४ एक पुरुष शरीर का अदीन और परिणामों का भी अदीन और भी चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष जातिका दीन और वस्त्रादि मलिन होने से रूपमें भी दीन, २ एक पुरुष जाति का दीन परंतु रूप का अदीन ३ एक पुरुष जाति का अदीन परंतु रूप का दीन और ४ एक पुरुष जाति का अदीन और रूप का भी अदीन पुरुष चार प्रकार के कहे हैं १ एक पुरुष जाति का दीन और मन का भी दीन (कृपण) २ एक पुरुष जाति का दरिद्री

चार पु० पुरुषजात दी० दीन ए० कितनेक दी० दीनरूप ए० ऐसे दी० दीनमन दी० दीनसंकल्प दी०

दीणमण दीणसंकप्पे दीणपण्ण दीणदिट्ठी दीणसीलायारे, दीणववहारे । चत्तारि

भाव म० का उदार १ एक पुरुष जाति का अदीन भाव मन का दीन और ४ एक जाति का अदीन और मन का भी अदीन और भी चार प्रकार के पुरुष १ एक पुरुष जाति का दीन और विचार का भी दीन, एक पुरुष जाति का दीन और विचार का अदीन ३ एक पुरुष जाति का अदीन और विचार का दीन और ४ एक जाति का अदीन और विचार का अदीन चार प्रकार के पुरुष १ शरीर का दीन विचार का दीन, २ एक शरीर का दीन और विचार का अदीन (उदार) ३ एक शरीर का अदीन और विचार का दीन और ४ एक शरीर का भी अदीन और विचार का भी अदीन, और भी चार प्रकार के पुरुष एक पुरुष शरीर का दीन और प्रज्ञा का दीन २ एक शरीर का दीन, और बुद्धिका प्रबल ३ एक शरीर का प्रबल और बुद्धिका दीन, और ४ एक शरीर का दीन और बुद्धिका भी दीन और चार प्रकार के पुरुष १ एक पुरुष शरीर का दीन और दृष्टि का भी दीन, एक पुरुष शरीर का अदीन और दृष्टि का दीन ३ एक पुरुष शरीर का दीन और दृष्टि का अदीन और ४ एक पुरुष शरीर का अदीन भार दृष्टि का भी अदीन भार भी चार प्रकार के पुरुष १ एक पुरुष शरीर का दीन और शील का भी दीन, २ एक पुरुष शरीर का अदीन भार शीलाचार का

दीनमणा दी० दीनदृष्टि दी० दीनशीलाचार दी० दीनव्यवहार च० चार पुरुष जात दी० दीन ए०
कितनेक दी० दीनपराक्रम श्री दीन ए० कितनेक अ० अदीन पराक्रम ए० एवं म० मनके च० चार भं० भांग भा०

पुरिसजाया प० त० दीणे णामेगे दीणपरक्कमे दीणे णामेगे अदीणपरक्कमे ४ । एवं
सव्वेसिं चउभंगा भाणियव्वा चत्तारि पुरिसजाया प० त० दीणे णामेगे दीणवित्ती ४।

दीन, १ एक पुरुष शरीर का दीन और शीलाचार का अदीन और ४ एक पुरुष शरीर का भी अदीन
और शीलाचारका भी अदीन और भी चार प्रकारके पुरुष १ एक पुरुष शरीर का दीन और व्यवहार
में भी दीन २ एक पुरुष शरीर का दीन और व्यवहार में अदीन (कुशल) ३ एक पुरुष शरीर का
अदीन और व्यवहार में दीन और ४ एक पुरुष शरीर का अदीन और व्यवहार का भी अदीन और
भी चार प्रकार के पुरुष कहे ४ १ एक पुरुष शरीर का दीन और पराक्रम का दीन, २ एक पुरुष श
रीर का अदीन और पराक्रम का दीन ३ एक पुरुष शरीर का दीन और पराक्रम का अदीन और
४ एक पुरुष शरीर का अदीन और पराक्रम का भी अदीन चार प्रकार के पुरुष १ एक पुरुष जाति
का दीन और आजीविका भी दीनता से करे, २ एक पुरुष जाति का श्रीमान परंतु आजीविका दीनता से
करे ३ एक पुरुष जाति का दीन और आजीविका श्रीमान जैसे करे और ४ एक पुरुष जाति का अदीन
और आजीविका भी अदीनता से करे और भी चार प्रकारके पुरुष १ एक दरिद्री और जाति का भी

करना ५ चार पुरुष गान भी दीन प० कितनेक दी० दीनवृत्ति प० ऐसे दी० दीनजाति दी दीनभासा दी दीनोपभामी च० चार पु० पुरुष जात दी० दीन प० कितनेक दी० दीनसेवी ए० ऐसे दी० दीन प० कितनेक दी दीन पर्याय ए० ऐसे दी दीन प० कितनेक दी० दीनपरिवार स० सर्व में च० चार

एव दीण जाई दीणमासी, दीणोमासी । चत्तारि पुरिसजाया प० त० दीणे णामेगे दीणसेवी ४ । एव दीणे णामगे दीणपरियाए । एव दीणे णामेगे दीण परिवाले ४ । सव्वत्थ चउभगो ॥ २ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० त० अज्जेणामेगेअज्जे, ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तअज्जेणामेगे अज्जपरिणए ४ । एवं अज्जरूवे ४ । अज्जमणे ४ ।

दरिद्री, २ एक दरिद्री और जाति का उत्तम ३ एक धनवंत और जाति का हीन और ४ एक धनवंत और जाति का भी उत्तम और भी चार प्रकारके पुरुष १ एक देखने में दीन और बोलने में भी दीन, २ एक देखने में दीन और बोलन में शूरवीर ३ एक देखने में अदीन और बोलने में दीन और ४ एक देखने में अदीन और बोलने में भी अदीन और भी चार प्रकार के पुरुष एक पुरुष दीन और दीनता से याचना करे यों चारों भांगाओं करना चार प्रकारके पुरुष एक स्वयं दरिद्री और सेवक भी दरिद्री ऐसे चार भांगे करना और भी चार प्रकार के पुरुष एक स्वयं दीन और उन की पर्याय [दीक्षा] भी दीन ऐसे चार भांगाओं करना और भी चार प्रकार के पुरुष एक स्वयं दीन और उन का परिवार भी दीन

अ० गाना ॥ १ ॥ च० चार पु० पुरुष जात अ० आर्य ए० कितनेक अ० आर्य च० चार पु० पुरुष जात अ० आर्य ए० कितनेक अ० आर्य परिणत ए० एसे अ० आर्यरूप अ० आर्यमन अ० आर्य संकल्प अ० आर्य प्रज्ञा अ० आर्य दृष्टि अ० आर्य शीलाचार अ० आर्यव्यवहार अ० आर्य पराक्रम अ० आर्यवृत्ति अ० आर्यजाति अ० आर्य भासी आ० आर्योपभासी अ० आर्यसेवी ए० ऐसे अ० आर्य पर्याय

अज्जसकप्प ४ । अज्जपण्णे ४ । अज्जदिट्ठी ४ । अज्जसीलायारे, ४ । अज्जववहारे ४ । अज्जपरक्कम ४ । अज्जवित्ती ४ । अज्जजाई ४ । अज्जभासी ४ । अज्जओभासी, ४ । अज्जसेवी ४ । एवं अज्जपरियाए ४ । अज्जपरियाले, । एवं सत्तरस आलावगा

१ एक स्वयं हीन और परिवार भी हीन इस तरह हीन शब्द पर १७ चौभंगियों से कर्मों की विचित्रता बतलाई है ॥ २ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ आर्य क्षेत्र में उत्पन्न हुवे सो आर्य और आर्य धर्म आचारनेवाले, २ आर्य क्षेत्र में उत्पन्न हुवे और अनार्य धर्म आचारनेवाले ३ अनार्य क्षेत्र में उत्पन्न हुवे और आर्य धर्म आचारनेवाले और ४ अनार्य क्षेत्र में उत्पन्न हुवे और अनार्य धर्म आचारनेवाले (२) एक स्वयं आर्य और स्वभाव भी आर्य के चार भांगे (३) १ एक का रूप आर्य और स्वयं भी आर्य,

---

१ आर्य के नव भेद हैं १ जाति आर्य, २ क्षेत्र आर्य, ३ कुल आर्य, ४ शिल्प आर्य, ५ कर्म आर्य ६ भाषा आर्य ७ ज्ञान आर्य, ८ दर्शन आर्य और ९ चारित्र आर्य

श्री० आर्यपरिवार ए० एसे से० सत्तरह आ० आलापक म० जैसे दी० दान में म० कहा त० तैसे अ० आर्य में भी कहना च० चार पु० पुरुष जात अ० आर्य ए० कितनेक अ० आर्य भाव अ० आर्य ए० कितनेक अ० अनार्य भाव अ० अनार्य ए० कितनेक अ० आर्य भाव अ० अनार्य ए० कित

जहा दीणेण भणिया तहा अज्जेणवि भाणियव्वा । चत्तारि पुरिसजाया प० त० अज्जेणामेगे अज्जभावे अज्जणामेगे अणज्जभावे, अणज्जणामेगे अज्जभावे, अणज्जेणामेगे अणज्जभावे ॥ ३ ॥ चत्तारि उसभा प० त० जाइसंपन्ने, कुलसंपन्ने, बलसंपन्ने, रूव-

एक का रूप आर्य और स्वयं अनार्य, ३ एक का रूप अनार्य और स्वयं आर्य ४ एक का रूप अनार्य और स्वयं भी अनार्य (४) एक स्वयं अनार्य और मन भी अनार्य (५) स्वयं आर्य और सकल्प भी आर्य (६) स्वयं आर्य और बुद्धि भी आर्य (७) स्वयं आर्य और दृष्टि भी आर्य इसपर चार भांगे (८) आर्य शीलाचार पर चार भांग (९) आर्य व्यवहार पर चार भांग (१०) आर्य पराक्रम पर चार भांगे, (११) आर्य वृत्ति पर चार भांगे (१२) आर्य जाति के चार भांग (१३) आर्य भाषी के चार भांगे (१४) आर्य ममामी के चार भांगे (१५) आर्य सेवी के चार [१६] आर्य पर्याय के चार भांगे [१७] आर्य परिवार के चार इस तरह सत्तरह आलापक दीन जैसे कहना अब चार प्रकार के पुरुष कहते हैं १ एक स्वाभाविक से आर्य और आर्य भाव सहित २ एक स्वाभाविक से आर्य और अनार्य भाव

नेक भ अनार्य भाव॥३॥ च० चार उ० वृषभ जा०जातिसंपन्न कु०कुलसंपन्न ब०बलसंपन्न रू० रूपसंपन्न
ए० एवं च० चार पु० पुरुष जात जा० जातिसंपन्न कु० कुलसंपन्न ब० बलसंपन्न रू० रूपसंपन्न
म गा नाम ना जातिसंपन्न ण० कितनेक णो० नहीं कु कुलसंपन्न कु० कुलसंपन्न ए० कित

संपन्न । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने, कुलसपन्ने बलसंपन्ने,
रूवसंपन्न । चत्तारि उसभा प० तं० जाइ सपन्नेणाममेगे णो कुलसपन्ने, कुलसप
न्नेणामेगे णो जाइ सपन्ने एगे कुल सपण्णेवि जाइ सपण्णेवि, एगे णो जाइ
सपन्ने नोकुलसंपन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० जाइ सपण्णे णाममेगे

युक्त १ एक व्यवहारिक से अनार्य और आर्य भाव युक्त और ४ एक क्षेत्रादिक से अनार्य और अनार्य भाव युक्त ॥ ३ ॥ चार प्रकार के वृषभ कहे हैं १ जाति संपन्न अर्थात् गुणवंत माता की कुक्षि में उत्पन्न हुआ, कुल संपन्न अर्थात् जिस के पिता गुणवंत है सो ३ बल सपन्न सो बोजा उठाने को समर्थ ४ और रूप संपन्न सो सुंदराकार ऐसे ही चार पुरुष की जाति कही जाति संपन्न सो सुशीला माता का पुत्र कुल संपन्न सो गुणवंत पिता का पुत्र, बल सपन्न सो पराक्रमवन्त और रूप सपन्न सो सुंदराकार चार प्रकार के वृषभ कहे हैं १ एक वृषभ जाति का उत्तम है परंतु कुल का उत्तम नहीं है, २ एक कुल का उत्तम है परंतु जाति का उत्तम नहीं है, ३ एक कुल का उत्तम और जाति का भी उत्तम ४ और एक कुल का भी उत्तम नहीं और जाति का भी उत्तम नहीं ऐसे ही चार पुरुष कहे हैं एक जाति

नक णा० नहीं जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक कु० कुलसपन्न जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो नहीं जा० जातिसंपन्न ए०कितनेक णो०नहीं कु०कुलसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुषजात जा०जातिसपन्न ए०कितनेक णो० नहीं कु० कुलसपन्न च०चार उ० वृषभ जा०जातिसपन्न ए० कितनेक णो० नहीं ब० बल सपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात जा० जातिसपन्न ए० कितनेक णो० नहीं ब० बलसंपन्न च० चार उ० वृषभ जा० जातिसपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसपन्न ए० ऐसे च० चार पु०

णा कुलसपन्ने, ४ । चत्तारि उसभा प० त० जाइसपन्ने नाममेगे नोबल सपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० जाइसपन्ने णाममेगे णोबलसपन्न । चत्तारि उसभा प० त० जाइसंपन्ने णाममेगे नोरूवसपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० जाइसपन्ने णाममेगे णोरूवसपन्ने ४ ।

का उत्तम है परंतु कुलका उत्तम नहीं है २ एक कुलका उत्तम है परंतु जाति का उत्तम नहीं है ३ एक कुलका उत्तम और जाति का भी उत्तम और ४ एक कुलका उत्तम नहीं और जाति का भी उत्तम नहीं चार प्रकार के वृषभ कहे १ एक जाति का उत्तम परंतु बल में निर्बल २ एक बलसपन्न परंतु जातिसपन्न नहीं ३ एक बलसंपन्न और जातिसंपन्न और ४ एक बलसंपन्न नहीं और जातिसंपन्न भी नहीं इस तरह पुरुष के चार भांगे कहना चार प्रकार के वृषभ १ जातिका उत्तम परंतु रूप का हीन २ जाति

पुरुष जात जा० जातिसंपन्न ए०कितनेक नो० नहीं रू०रूपसंपन्न च०चार उ०वृषभ कु०कुलसंपन्न ए०कित नक णो० नहीं ब० बलसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात कु० कुलसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं ब० बलसंपन्न च० चार उ० वृषभ कु० कुलसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात कु० कुलसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न च० चार उ० वृषभ कु०

चत्तारि उसभा प० त० कुलसपन्ने णाममेगे णोबलसपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० कुलसपन्ने नाममेगे णोबलसंपन्ने ४ । चत्तारि उसभा प० त० कुलसपन्ने णाममेगे णोरूवसपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त०

का हीन और रूप का उत्तम ३ जाति का उत्तम और रूप का भी उत्तम और ४ जातिका हीन और रूप का भी हीन ऐसे पुरुष जाति के चार भांगे कहना चार प्रकार के वृषभ १ एक कुल का उत्तम और बलका हीन, २ एक कुल का हीन और बलका उत्तम, ३ एक कुलका उत्तम और बलका भी उत्तम और एक कुलका हीन बल का भी हीन. ऐसे ही पुरुष के चार भेद कहे हैं चार प्रकार के वृषभ १ एक कुलका उत्तम और रूप का हीन, २ कुलका हीन और रूप का उत्तम ३ एक कुलका उत्तम और रूपका भी उत्तम और ४ एक कुलका हीन और रूप का भी हीन ऐसे ही चार पुरुष कहे हैं चार प्रकार के

कुलसपन्ने णाममेगे णोरूवसंपन्ने ४ । चत्तारि उसभा प० त० बलसंपन्ने णाममेगे णोरूवसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० बलसपण्णे णाममेगे णो रूवसपण्णे ४ ॥ ४ ॥ चत्तारि हत्थी प० त० भद्दे, मंदे मिए, सकिण्णे । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० भद्दे, मंदे, मिए, सकिण्णे, । चत्तारि हत्थी प० त०

सम्पन्न ए० कितनेक णा० नहीं रू० रूपसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात ब० बलसंपन्न णा० कितनेक णा० नहीं रू० रूपसंपन्न ॥ ४ ॥ च० चार ह० हस्ति भ० भद्र म० मन्द मि० मृग स० संकीर्ण ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात भ० भद्र म० मंद मि० मृग, सं० संकीर्ण च० चार ह० हस्ति भ० भद्र ए० कितनेक भ० भद्र मन भ० भद्र ए० कितनेक मं० मंद मन भ० भद्र ए० कितनेक मि० मृग मन भ० भद्र ए० कितनेक सं० संकीर्ण मन ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात भ० भद्र ए० कितनेक भ० भद्रमन भ० भद्र

वृषभ कहे हैं १ एक बल मे उत्तम और रूप में हीन, २ एक बल में हीन और रूप मे उत्तम, ३ एक बल में उत्तम और रूप में भी उत्तम और एक बल में हीन और रूप में भी हीन ॥ ४ ॥ चार प्रकारके हस्ती, भद्र, मंद, मृग, और संकीर्ण ऐसे ही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं भद्र, मंद, मृग, और संकीर्ण चार प्रकार के हस्ती कहे १ एक हस्ती जाति का भद्र, और मन का भी भद्र, २ एक हस्ती जाति का भद्र, और मन का मंद अर्थात धैर्य रहित ३ एक जाति का भद्र परंतु मन का मृग है और एक जातिका

प० कितनेक … … … … म० मद्रमन … …
चार ह० हस्ति म० मंद प० कितनेक म० मद्रमन म० मंद प० कितनेक म० मद्रमन … …
कितनेक मि० मगमन म० मंद प० कितनेक म० सकीर्णमन ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात में मद्र
प० कितनेक म० मद्रमन च० चार ह० हस्ति मि० मृग प० कितनेक म० मद्रमन मि० मृग ए० कितनेक
म० मंदमन मि० मृग प० कितनेक मि० मृगमन मि० मृग प० कितनेक स० सकीर्णमन ए० एस च०

भद्देणाममेगे भद्दमण, भद्देणाममेगे मदमण भद्देणाममेगे मियमणे, भद्देणाममेग संकिण्ण
मण। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० भद्देणाममेगे भद्दमणे, भद्द णाममेगे
मदमण, भद्देणाममेगे मियमणे, भद्दणाममेगे संकिण्णमणे। चत्तारि हत्थी प० त०
मंदेणाममेगे भद्दमणे, मदेणाममेगे मदमणे मंदेणाममेगे मियमणे मदेणाममगे संकि-
ण्णमणे। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मंदेणाममगे भद्दमणे तचत्र।

भद्र परंतु मन का संकीर्ण है ऐसे ही चार पुरुष कहना १ एक पुरुष जाति का भद्र और मन का भद्र
२ एक जाति का भद्र और मन का मंद एक जाति का भद्र और मन का मृग और ४ एक जाति का भद्र
और मन का संकीर्ण चार प्रकार के हस्ती कहे १ जाति का मंद और मन का भद्र, २ जाति का मंद
और मन का भी मंद, जाति का मंद और मन का मृग और ४ जाति का

चार पु० पुरुष जात म० मृग कितनेक म भद्रमन च० चार ह० हस्ती स० संकीर्ण ए० कितनेक भ० भद्रमन स० संकीर्ण ए० कितनेक मं० मंदमन सं० संकीर्ण ए० कितनेक मि० मृगमन स० संकीर्ण ए० कितनेक स० संकीर्णमन ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात स० संकीर्ण ए० कितनेक भ० भद्रमन जा० यावत् स० संकीर्ण ए० कितनेक स० संकीर्णमन म० मधुगुटिका पिं० पीली अ० आंख अ अनुक्रम से

चत्तारि हत्थी प० तं० मिएणाममेगे भद्दमणे, मिएणाममेगे मंदमणे मियणाममेगे मियमणे मिएणाममेगे सकिण्णामणे एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० मिएणाममेगे भद्दमणे तचेव चत्तारि हत्थी प० त० सकिण्णेणाममेगे भद्दमणे, सकिण्णेणाममेगे मंदमणे सकिण्णनाममेगे मियमणे, सकिण्णेनाममेगे सकिण्णामणे। एवामेव च

भद्र और मन का संकीर्ण ऐसे ही चार पुरुष कहे हैं चार प्रकार के हस्ती कहे हैं १ एक जातिका मृग और मनका भद्र २ एक जातिका मृग और मनका मंद ३ एक जातिका मृग और मनका भी मृग और मनका भी मृग और एक जातिका मृग और मनका संकीर्ण ऐसेही चार पुरुष की जातिकही अब चार प्रकार के हाथी कहे हैं १ जातिका संकीर्ण और मनका भद्र २ एक जातिका संकीर्ण और मनका मंद, ३ एक जातिका संकीर्ण और मनका मृग और ४ एक जातिका संकीर्ण और मनका भी संकीर्ण ऐसेही चार पुरुष पर चार भांगे कहना अब चार प्रकार हस्ती का लक्षण कहते हैं

पु० उत्पन्न वी० दीर्घ लं० पूछ पु० आगे उ० उन्नत धी धीर स० सयोग स० समाधि भ० भद्र प० सिंहमे स्थूल वि० विषम च०चर्मवाला थू०बडाशीर्ष थू०बडा पे० पूछ थू बडे ण०नख दं०दंत वा०पाल ह सिंहमे स्थूल वि० विषम च०चमडावाला त सूक्ष्म त० त्वचा ब ते पि० पीले लो० लोचन मं० मंद त सूक्ष्म से त० सूक्ष्म त० तनकीग्रीवा त सूक्ष्म त० त्वचा ब मूक्ष्म दं० दांत ण नख वा० वाल भी डरपोक उ० उद्वेगवाला वो शान्त भ० भय से मि० मृग ए०

चत्तारि पुरिस जाया प० त० सकिण्णेणाममेगे भद्दमणे, तंचेव जाव सकिण्णेणाममेगे सकिण्णमणे ॥ गाथा ॥ मधुगुलियपिंगलक्खो । अणुपुव्वसुजायदीहलंगूलो ॥ पुरओ उदग्गधीरो । सव्वंगसमाहिओ भद्दो ॥ १ ॥ चलबहलविसमचम्मो । थूलसिरो थूलएण पेएण ॥ थूलणहदंतवालो। हरिपिंगललोयणो मदो ॥ २ ॥ तणुओतणुग्गीओ। तणुयतओ तणुयदंतणहवाले। ॥ भीरूतत्थुव्विग्गो। तासीअ भए मिए णाम ॥३॥एए

मधुगुटिका समान पीत वर्ण युक्त चक्षुवाला, बल रूपादि गुणों से भरपूर दीर्घ पूछवाला और उन्नत कुंभ स्थल वाला अक्षोभ्य व सब लक्षणोपेत हस्ती भद्र कहाजाता है बहु स्थूल व विषम चमडीवाला, स्थूल मस्तक पूछडीवाला, स्थूल नख, दंत, व वालवाला वैसे ही सिंह समान पील नेत्रवाला हस्ती मंद कहा जाता है सूक्ष्म से भी सूक्ष्म गीवा, नख, कर्ण, वालवाला, भयभीत होनेवाला और भय आने से इन्द्रियों को क्षोभित करनेवाला हाथी मृग जाति का कहाजाता है उक्त तीनों हाथी को थोडा बहुत मिलता होवे

न ह० हस्ति में धा० धारा जा० जो अ० अनुसरता है ह० हस्ती रू० रूप से सी० शील से सो० वह म० संकीर्ण णा० जानना भ० भद्र म० मस्त होता है स० शरद्ऋतु में मं० मन्द व० मस्त होता है व० वसन्तऋतु में मि० मृग उ० मस्त होता है हे० हेमन्त में स० संकीर्ण स० सर्व काल में ॥ २ ॥ च० चार वि० विकथा प० प्ररूपी इ० स्त्रीकथा भ० भक्तकथा द० देशकथा रा० राजकथा इ० स्त्रीकथा च०

मि हत्थीण। थोवं थोवं तु जो अणुहरइ हत्थी॥ रूवेण व सीलेण य। सो संकिण्णोत्ति णायव्वो ॥ ४ ॥ भद्दो मज्जइ सरए। मंदो उम्मज्जए वसंतम्मि ॥ मिउ मज्जइ हेमंते। संकिण्णो सव्वकालम्मि ॥ ५ ॥ चत्तारि विकहाओ पण्णत्ताओ त० इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा रायकहा। इत्थिकहा चउव्विहा प० त० इत्थीण जाइकहा, इत्थीण कुलकहा,

सो संकीर्ण जाति का हस्ती जानना भद्र जाति का हस्ती शरत्काल में मद में आता है, मंद जाति का हस्ती वसन्त ऋतु में मद में आता है मृग जाति का हस्ती हेमंत काल में मद में आता है और संकीर्ण जाति का हस्ती सब काल में मद चढता है ॥ २ ॥ चार प्रकार की कथा कही स्त्री कथा, भक्त (भोजन) कथा देश कथा, और राज कथा स्त्री की कथा चार प्रकार की स्त्री की जाति की कथा, स्त्री के कुल की कथा, स्त्री के रूप की कथा और स्त्री के वेश की कथा भक्त कथा चार प्रकार की भोजन को अच्छा बुरा बतलाने सो आवाप कथा, पकवान्न के भेदों की प्रशंसा करे और दोष की

न० चार प्रकार की इ० स्त्री की जा० जातिकथा इ० स्त्री की कुलकथा इ० स्त्री की रू० रूपकथा इ० स्त्री के ने० वस्त्र कथा भ० भक्तकथा च० चार प्रकार की भ० भक्त की आ० आवाप कथा भ० भक्तकी णि० निर्व्वाप कथा भ० भक्तकी आ० आरंभ कथा भ० भक्तकी निष्ठानकथा दे० देशकथा च० चार प्रकार की दे० देशविधि कथा दे० देशविकल्प कथा दे० देशछंद कथा दे० देशनेवत्थ कथा रा० राजकथा

इत्थीण रूवकहा, इत्थीण नेवत्थकहा। भत्तकहा चउव्विहा प० त० भत्तस्स आवावकहा, भत्तस्स णिव्वावकहा, भत्तस्स आरंभकहा, भत्तस्स णिट्ठाणकहा। देसकहा चउव्विहा प० त० देसविहिकहा, देसविकप्पकहा, देसच्छंदकहा, देसनेवत्थकहा रायकहा

काल सो निर्वाप कथा, भोजन में लूण, मिरची कम ज्यादा बोलना सो भोजन के आरंभ की कथा और अमुक द्रव्य अमुक वस्तु में डालने से ही वस्तु अच्छी बनती ऐसा कहना सो निष्ठान कथा। देश कथा चार प्रकारकी अमुक देश में खान, पान वस्त्रादि पहिनने की विधि अच्छी या बूरी है ऐसा कहना सो देश विधि कथा, अमुक देश का नियत, कोट, मुरनादिक की कथा करना सो देश विकल्प कथा, अमुक देश के लोक गाथा, श्लोक, छंद, दुहा आदिके जाननेवाले हैं सो देश छंद कथा, देश के स्त्री पुरुष के वेष की कथा सो देश नेपथ्य कथा राज कथा। चार प्रकार की राजा के अतियान की कथा

प० चार मकार की र० राजा अतियान कथा र० राजनिज्जान कथा र०राजा का ब० सैन्य वा० वाहन कथा र० राजा का कोष्ठागार कथा ॥ १ ॥ च० चार मकार की कथा अ० आक्षेपनी कथा वि विक्षेपनी म संवगनी णि निर्वेगनी अ० आक्षेपनी कथा च० चार मकार की आ० आचाराक्षेपनी व व्यवहारा क्षपनी प० मज्ञप्ति आक्षपनी दि० दृष्टिवादाक्षेपनी वि० विक्षेपनी कथा च० चार मकार की स० स्वसमय

चउव्विहा प० त० रण्णो अइयाणकहा, रण्णो निज्जाणकहा, रण्णोबलवाहणकहा, रण्णो को सकोट्ठागारकहा॥१॥ चउव्विहा कहा प० त० अक्खेवणी, विक्खेवणी, संवेगणी णिव्वेगणी। अक्खेवणी कहा चउव्विहा प० त० आयारक्खेवणी, ववहारक्खेवणी पण्णत्तिक्खेवणी। दिट्ठि वाय अक्खेवणी। विक्खेवणीकहा चउव्विहा प० तं० ससमय कहेइ, ससमय कहेत्ता

सो राजा के नगर मवेश की वार्ता, सामंतादि मिलकर गाजते वाजते नगर की बाहिर नीकलने की कथा सो राजा की नियाण कथा, राजा का बल, वाहन की कथा, और राजा का कोश कोठार की कथा करना ॥ १ ॥ और भी चार मकार की कथा १ मोह से आत्मा को आकर्षनेवाली आक्षेपनी कथा, २ आत्मा को सन्मार्ग में से कुमार्ग में और कुमार्ग में से सन्मार्ग में लावे सो विक्षेपनी कथा, ३ जिस कथा सुनने से वैराग्य उत्पन्न होय सो संवेगनी, ४ जिस को सुनने से आत्मा निर्वेद मास करे सो निर्वेगणी आक्षेपनी कथा चार मकार की आचार का कहना सो आचार की कथा, पाप से निवर्तन योग्य

क० कहा स स्वसमय क० कहता प० परसमय क० कहे प० परसमय क कहता स स्वसमय ठा० स्थापकर स सम्यक् वाद क० कहे स० सम्यक् वाद क कहता मि मिथ्यावाद कहे मि० मिथ्यावाद क० कहता स० सम्यक् वाद ठा० स्थापनकर सं० संवेगनी कथा च० चार प्रकार की इ यह लो० लोकसंवेगनी प० परलोक संवेगनी आ आत्म शरीर संवेगनी प० परशरीर संवेगनी नि० निर्वेगनी कथा

परसमय कहेइ परसमयकहेत्ता ससमय ठावित्ता भवइ, सम्मावाय कहेइ, सम्मावाय कहेत्ता मिच्छावाय कहइ, मिच्छावाय कहेत्ता सम्मावायं ठावइत्ता भवइ । संवेगणीकहा चउव्विहा प० तं० इहलोग संवेगणी, परलोगसंवेगणी, आयसरीरसंवेगणी, परसरीर

प्रायश्चित्त देवे सो व्यवहार शुद्ध करने की कथा, संशयवाले पुरुष को मधुर वचन से कहना अथवा सूक्ष्म जीवादिक की अथवा दृष्टिवाद सूत्र की कथा सो दृष्टि जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति प्रमुख सो प्रज्ञप्ति आक्षेपणी, वाद आक्षेपणी विक्षेपणी कथा चार प्रकार की १ स्वसमय के गुणों का कथन करके उन को प्रदर्शित कर और अपना गुण कहता हुवा परसमय के दोषों बतलावे २ परसमय के दोषों बताते अपन समय की स्थापना करे ३ सम्यग् वाद का कथन करते हुवे मिथ्यावाद के दोषों बतलावे ४ और मिथ्यावाद कहकर सम्यक् वाद की स्थापना करे संवेगनी कथा चार प्रकार की यह सब मनुष्यादि असार है सो इहलोग संवेगनी, २ देवतादिक भी ईर्षा, विषाद, भय, वियोग और दुःख से पराभवे हुवे हैं सो परलोक संवेगनी

प० चार प्रकार की इ० इस लोकमें दु० खराब किये कर्म इ० इसलोक में दु० दुःख फलका वि० विपाक सं० युक्त भ० होवे इ० इसलोक में दु० खराब कियेकर्म प० परलोक में दु० दुःख फल का वि० विपाक स० युक्त भ० होवे प परलोक में दु० खराब कियेकर्म इ० इसलोक में दु० दुःख फल का वि० विपाक स० युक्त भ० होवे प० परलोक में दु० खराब कियेकर्म प परलोक में दु० दुःखफल का वि० विपाक स० युक्त भ०

संवेगणी । णिव्वेगणी कहा चउव्विहा प० तं० इहलोग दुच्चिण्णाकम्मा इहलोगदुहफलविवागसंजुत्ता भवति । इहलोगदुच्चिण्णाकम्मा परलोग दुहफल विवाग संजुत्ता भवति परलोग दुच्चिण्णाकम्मा इहलोग दुहफल विवाग संजुत्ता भवति,

१ यह शरीर विष्टादिक से बना हुवा है सो आत्म शरीर संवेदनी, ४ वैसे ही अन्य का शरीर बना हुवा है सो पर शरीर संवेदनी निर्वेदनी कथा चार प्रकार की १ इस लोक में किये हुवे अशुभ कर्मों का फल इस लोक में ही मिलता है जैसे चोर को चोरी का फल मिलता है, २ इस लोक में किये हुवे अशुभ कर्मों के फल पर लोक नरकादिक में दुःख रूप मिलते हैं ३ पीछले भव में किये हुवे अशुभ कर्मों के फल इस लोक में दुःख रूप मिलते हैं और ४ पर लोक में किये हुवे पाप कर्मों के फल से यहां पर काक, गीध आदि होवे और यहां से चवकर अन्य स्थान नरकादिक में [illegible] भी चार भांगे कहते हैं

हात इ० परलोक में सु० अच्छे किये कर्म इ० परलोक में सु अच्छाफल का० वि० विपाक से० भोगना भ होते इ० परलोक में सु० अच्छे किये कर्म प परलोक में ख० अच्छेफल का वि० विपाक प० भोगना भ० होवे ॥ ७ ॥ च० चार पु पुरुष जात कि० कृश प० कितनेक कि० कृश कि कृश प० कितनेक द० दृढ द० दृढ प कितनेक कि० कृश द० दृढ प० कितनेक द० दृढ च० चार पुरुषजात

परलोग दुचिण्णाकम्मा परलोग दुहफल विवाग संजुत्ता भवंति ॥ इहलोग सुचिण्णाकम्मा इहलोग सुहफल विवाग संजुत्ता भवति, इहलोग सुचिण्णाकम्मा परलोग सुहफल विवाग संजुत्ता भवति, एवं चउभंगो तहेव ॥ ७ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० किसणाममेगे किसे, किसेणाममेगे दढे, दढेणाममेगेकिसे, दढे णाममेगे दढे,

१ इस लोक में किये हुवे अच्छे कर्मों के फल इसी लोक में सुखदायी होते हैं २ इस लोक में अच्छे कर्मों के फल अन्य लोक में सुखदायी होते हैं ३ पीछले भव के शुभ कर्मों के फल इस लोक में सुख दायी होते हैं और ४ पर लोक में किये हुवे शुभ कर्मों के फल से यहां सुख की प्राप्ति करके फीर पर लोक में भी सुख की प्राप्ति करते हैं ॥ ७ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक शरीर से दुर्बल और भाव से दुर्बल (हीन सत्त्ववाला) २ एक शरीर से कृश और भाव से दृढ सत्त्व का धणी, ३ एक शरीर

कि० कृश प० कितनेक कि० कृश शरीर कि० कृश ए० कितनेक द० दृढ शरीर द० दृढ ए० कितनेक कि० कृश शरीर द० दृढ ए० कितनेक द० दृढ च० चार पु० पुरुष जात कि० कृश को ए० एक णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता है णो० नहीं द० दृढ शरीरी को द० दृढ शरीरी को ए० एक णा० ज्ञान द० दर्शन स० उत्पन्न होता है णो० नहीं कि० कृश शरीरी को ए० एक कि

चत्तारि पुरिस जाया प० त० किसे णाममेगे किससरीरे, किसेणाममेगे दढसरीरे, दढणाममेगे किससरीरे दढे णाममेगे दढ सरीरे ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० त० किसस्स णाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जइ णोदढसरीरस्स, दढ सरीरस्स णाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जइ णो किससरीरस्स, एगस्स किस सरीरस्सवि णाणदंसणे

स दृढ और भाव से कृश, ४ एक शरीर से दृढ और भाव से दृढ चार प्रकार के पुरुष १ एक सत्त्व से कृश और शरीर से कृश, २ एक सत्त्व से कृश और शरीर से दृढ ३ एक सत्व से दृढ और शरीर का कृश और ४ एक सत्व से दृढ और शरीर का दृढ। और भी चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ कृश शरीरवाले को ज्ञानावरणीयादिक के क्षयोपशम से ज्ञान दर्शन उत्पन्न होता है परंतु दृढ शरीरवाले को नहीं उत्पन्न होता है, २ दृढ शरीरवाले को ज्ञान दर्शन उत्पन्न होता है परंतु कृश शरीरवाले को ज्ञान दर्शन नहीं उत्पन्न होता है ३ कृश शरीरवाले को ज्ञान दर्शन उत्पन्न होता है, वैसे ही दृढ शरीरवाले को

कृश शरीरी का णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता है द० दृढ शरीरी को ए० एक को णो० नहीं कि०
कृश शरीरी को णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता है णो० नहीं द० दृढ शरीरी को ॥ ८ ॥ च०
चार स्थान से णि० साधु णि० साध्वी अ० इस समय में अ० अतिशेष णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न
होता णो० नहीं स० उत्पन्न होवे अ० वारवार इ० स्त्री कथा भ० भक्त कथा दे० देशकथा रा०राजकथा
क० करता भ० होवे वि० विवेक वि० व्युत्सर्ग णो० नहीं स० सम्यक् अ० आत्मा को भा० भावता भ०
होवे पु० पूर्वकाल में णो० नहीं ध० धर्म जागरण जा० जागता भ० होवे फा० प्रासुक ए० ऐषणिक उ०

समुप्पज्जइ दढसरीरस्सवि, एगस्स णो किससरीरस्स णाणदंसणे समुप्पज्जइ णो
दढसरीरस्स ॥८॥ चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा अस्सिं समयंसि अइसेसे
नाणदंसण समुप्पज्जिउकामेवि णो समुप्पज्जेज्जा—अभिक्खणं २ इत्थिकहं, भत्तकहं, देसकहं,
रायकहं कहेत्ता भवइ, विवेगेण विउस्सग्गेण णोसम्ममप्पाणं भावेत्ता भवइ, पुव्वरत्तावरत्त
कालसमयंसि णोधम्म जागरियं जागरित्ता भवइ, फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदा

भी उत्पन्न होता है, और ४ कृश शरीरवाले का ज्ञान दर्शन की उत्पत्ति नहीं होती है और वैसे ही दृढ
शरीरवाले का भी ज्ञान दर्शनकी उत्पत्ति नहीं होती है ॥८॥ चार कारण से इस समय में किसी साधु साध्वी
को उत्पन्न ज्ञान केवलदर्शनकी प्राप्ति होवी होवे सो भी नहीं होती है १ वारवार स्त्री कथा, भक्त कथा, देश

शुद्ध सा० सामुदानिक पो० नहीं स० सम्यक् गा० गवेषता भ० होवे इ० इन च० चार स्थान से० णि० साधु णि० साध्वी का मा० यावत णा० नहीं स उत्पन्न होवे च० चार स्थान से णि० साधु णि० साध्वी अ० अतिक्षेप ना० ज्ञान द दर्शन स० उत्पन्न होता स० उत्पन्न होवे इ स्त्री कथा भ० भक्तकथा दे० देशकथा रा राजकथा णा० नहीं क० करता भ० होवे वि विवेक वि० व्युत्सर्ग स सम्यक् भ० आत्मा को मा भावता भ० होवे पु० पश्चिमी र० रात्रिकाल में ध० धर्म जागरण जा० जागता भ० होवे फा० फासुक ए० ऐषनिक उं शुद्ध स० सामुदानिक स० सम्यक् ग० गवेषता भ० होवे इ० इन

णियस्स णोसम्मं गवेसइत्ता भवइ इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गथाणवा णिग्गर्थीणवा जाव णोसमुप्पज्जेज्जा । चउहिं ठाणेहिं निग्गथाणवा निग्गथीणवा अइसेसे नाणदसणे समुप्पज्जि उकामे समुप्पज्जेज्जा तं • इत्थिकहं, भत्तकहं, देसकहं, रायकहं णो कहेत्ता भवइ विवेगेण विउस्सग्गेण सम्ममप्पाणं भावेत्ता भवइ, पुव्वरत्तावरत्तकाल समयसि धम्मजाग रियं जागरित्ता भवइ, फासुयस्स एसणिज्जस्स उछस्स सामुदाणियस्स सम्मं गवेसइत्ता

कथा और राज कथा करने से, २ विवेक युक्त वियुत्सर्ग से आत्मा को नहीं भावने से, ३ पीछली रात्रि में धर्म जागरणा नहीं करने से और ४ फासुक ऐषणिक आहार की गवेषणा नहीं करने से। इस समय में चार कारणसे साधु साध्वीको केवल ज्ञान केवल दर्शनको प्राप्ति होती है श्री

चार स्थान से नि० साधु नि० साध्वी जा० यावत् स० उत्पन्न करे ॥ १ ॥ णो० नहीं क० कल्पता है नि० साधु नि० साध्वी को म महाप्रतिपदा को स०सज्झाय क० करना आ० अषाढ प्रतिपदा इ०आश्विन प्रतिपदा क कार्तिक प्रतिपदा सु० फाल्गुण प्रतिपदा णो० नहीं क० कल्पता है नि० साधु नि साध्वी को च चार स० सन्ध्या में स० सज्झाय क करना प० प्रथम प० पश्चिम म मध्यम अ अर्धरात्रि में

भवइ । इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा जाव समुप्पज्जेज्जा ॥ १ ॥ णोकप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथीणवा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झाय करेत्ता त० आसाढ पाडिवए इदपाडिवए, कत्तियपाडिवए सुगिम्हपाडिवए । णो कप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथीणवा चउहिं सज्झाय करेत्तए त० पढमाए, पच्छिमाए मज्झण्हे, अद्धरत्ते ।

निरुक युक्त कायोत्सर्ग करने से, सदैव पीछली रात्रि में धर्म जागरणा करने से और निर्दोष आहार पानी ग्रहण करने से ॥ १ ॥ साधु साध्वी को चार बडी प्रतिपदा को सूत्र की स्वाध्याय करना कल्पता नहीं है १ आषाढ प्रतिपदा, इन्द्र (आश्विन) प्रतिपदा, कार्तिक प्रतिपदा, और ग्रीष्मकाल (फाल्गुन) की प्रतिपदा । चार सन्ध्या में स्वाध्याय करना साधु साध्वी को नहीं कल्पता है प्रथम सन्ध्या सो सूर्योदय से दो घटिका, पश्चिमाह्न सो सूर्यास्त से दो घटिका, मध्याह्न सो दो प्रहरकी दो घटिका और मध्य रात्रि में भी दो घटिका। साधु साध्वी को चार प्रहर में स्वाध्याय करना कल्पता है दिन के प्रथम

१ प्रत्येक महिने की पूर्णिमा पीछे आती हुई प्रतिपदा यहांपर ग्रहण की गई है

क० रूल्पता है णि० साधु णि० साध्वी का च चार काल स० सज्झाय क० करने को पु० पूर्वाह्न अ० अपराह्न प० प्रदोष में प० प्रत्युष में ॥ १० ॥ च० चार प्रकार की लो० लोकस्थिति आ० आकाश प० प्रतिष्ठित वा वायु वा० वायु प प्रतिष्ठित उ उदधि उ० उदधि प० प्रतिष्ठित पु० पृथिवी पु० पृथिवी प० प्रतिष्ठित त० त्रसस्थावर प्राणी ॥ ११ ॥ च० चार पुरुष जात प० प्ररूपी त० तथ्य ए० कितनेक णो० नहीं त० तथ्य ए० कितनेक सो० सौवस्तिक ए० कितनेक प० प्रधान ए० कितनेक ॥ १२ ॥ च०

कप्पइ णिग्गथाणवा णिग्गथीणवा चउकाल सज्झाय करेत्तए पुव्वण्हे, अवरण्हे पओसे पच्चूसे ॥ १० ॥ चउव्विहा लोगट्ठिई प०त० आगासपइट्ठिए वाए, वायपइट्ठिएउदही, उदहि पइट्ठिया पुढवी, पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा ॥११॥ चत्तारि पुरिस जाया पण्णत्ता त० तहेणाममेगे, णोतहेणाममेगे, सोवत्थीणाममेगे, पहाणेणाममेगे ॥ १२ ॥

प्रहर में, दिन के छेल्ले प्रहर में, रात्रि के प्रथम प्रहर में और रात्रि के छेल्ले प्रहर में ॥ १० ॥ चार प्रकारसे लोक स्थिति कही है १ आकाश प्रतिष्ठित वायु, २ वायु प्रतिष्ठित उदधि, ३ उदधिप्रतिष्ठित पृथ्वी ४ पृथ्वी प्रतिष्ठित सब त्रस स्थावर जीवों हैं ॥ ११ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष सत्यवादी, २ एक पुरुष असत्यवादी ३ एक पुरुष सौवस्तिक [मंगलिक] बोलनेवाला ४ और एक प्रधान पुरुष सो पुण्यवन्त आराधने योग्य ॥ १२ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं एक

चार पु०पुरुषजात आ०आत्मा का अंतकरे ए०कितनेक णो० नहीं प०परका करे प०परका कर ए कितनेक णो नहीं आ० आत्मा का कर ए० कितनेक आ आत्मा का करे प० परका करे ए० कितनेक णो० नहीं आ० आत्मा का करे णो० नहीं प० परका कर च० चार पु० पुरुष जात आ० आत्मतमा ए० कितनेक णो० नहीं प० परतमा प० परतमा ए० कितनेक णो० नहीं आ० आत्मतमा च चार पु० पुरुष

चत्तारि पुरिसजाया प० त० आयतकरेणाममेगे णोपरतकर, परतकरेणाममेगे णो आयतकरे, एगे आयतकरेवि परतकरेवि, एगे णो आयतकरे णोपरतकरे। चत्तारि पुरिस जाया प० त० आयतमेणाममेगे णो परतमे, परंतमेणाममेगे णो आयंतमे, ४।

आत्मा को मोक्ष पहुंचावे परंतु अन्य के भव का अंत न करावे प्रत्येक बुद्धादि साधुवत् २ एक अन्य के भव का अंत करावे परंतु अपना आत्माके भवका अंत करे नहीं अभव्य आचार्यादि, ३ एक अपना आत्मा के भव का अंत करे और पर के भव का भी अंत करे तीर्थंकरादि ४ एक अपना आत्मा का भी अंत करे नहीं और अन्य के आत्मा का भी भव करे नहीं कालकाचार्य या मूर्ख। चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक अपना आत्मा पर क्रोध करे परतु अन्य पर क्रोध न करे, २ एक अपना आत्मा पर क्रोध न करे परंतु अन्य के पर क्रोध कर ३ एक अपना आत्मा पर क्रोध न करे और अन्य पर भी क्रोध कर

चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आयदमेणाममेगे णोपरदमे, परदमेणाममेगे णो आयदमे एगे आयदमेत्रि परदमेत्रि, एगे णो आयदमे णो परदमे ॥ १३ ॥ चउव्विहा गरहा प० त० उवसंपज्जामि एगा गरहा, वितिगिच्छामि एगा गरहा, जं

मात आ० आत्मा को द० दमने वाला ए० कितनेक णो० नहीं प० दूसरे को द० दमने वाला प० दूसरे को द० दमने वाला ए० कितनेक णो० नहीं आ० आत्मा को द० दमने वाला ए० कितनेक आ० आत्मा को द० दमने वाला प० दूसरे को द० दमने वाला ए० कितनेक णो० नहीं आ० आत्मा को द० दमने वाला णो० नहीं प दूसरे द० दमने वाला ॥ १३ ॥ च० चार प्रकार की ग० गर्हा सं० स्वदोष प्रकाश नि० निन्दा करे जं० जो किं० किंचित मि० मिथ्या दुष्कृत ए० ऐसे प चिंतवना ए० एक ग० गर्हा

नहीं और ४ एक अपना आत्मा पर क्रोध करे और अन्य पर भी क्रोध करे। और भी चार पुरुष कहे हैं १ एक अपना आत्मा का दमते हैं परंतु अन्य को नहीं दमते हैं, २ एक अपना आत्मा को नहीं दमते हैं परंतु अन्य को दमते हैं, ३ एक अपने आत्मा को भी दमता है और अन्य की आत्मा को भी दमता है ४ और एक न अपने आत्मा को दमता है और न अन्य के आत्मा को दमता है ॥ १३ ॥ भगवन्तने चार प्रकार की गर्हा कही है १ गुरु आदि के सन्मुख आकर अपने पापों की निन्दा करना सो एक गर्हा, २ शंका करता हुवा किये हुए पापों की निन्दा करना यह दूसरी गर्हा, ३ किये हुवे पापों का

॥ १४ ॥ च० चार पु० पुरुष जात अ० आत्मा को ए० कितनेक अ० रोकता है णो नहीं प दूसरे को प० दूसरे को ए० कितनेक अ० रोकते हैं णो० नहीं अ० आत्मा को ए० कितनेक अ० आत्मा को अ० रोकते हैं प० दूसरे को ए० कितनेक णो० नहीं अ आत्मा को अ० रोकते हैं णो० नहीं प दूसरे को ॥ १५ ॥ च० चार म० मार्ग उ० सरल ए० कितनेक उ० सरल उ० सरल ए कितनेक पं०

किंचिमिच्छामि एगा गरहा एव वि पण्णत्ति एगा गरहा ॥ १४ ॥
चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अप्पणोणाममेगे अलमंथू भवइ णोपरस्स, परस्सणाममे
गे अलमंथू भवइ णोअप्पणा, एग अप्पणोवि अलमंथू भवइ परस्सवि, एगे णोअप्प
णो अलमंथू भवइ णोपरस्स । ॥ १५ ॥ चत्तारि मग्गा प० तं० उज्जुणाममेगे उ

मिथ्या दुष्कृत लेना सो तीसरी गर्हा और ४ और जिस दोष की जिस प्रकार शुद्धि होवे सो चौथी गर्हा ॥ १४ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक अपनी आत्मा को पाप से निवारने को समर्थ होवे परंतु पर की आत्मा को पाप से निवारने में समर्थ नहीं होवे २ एक पुरुष अन्य की आत्मा को निवारने में समर्थ होवे परंतु अपनी आत्मा को निवारने में समर्थ होवे नहीं, ३ एक अपनी आत्मा को निवारने में समर्थ होता है और अन्य की आत्मा को भी निवारन में समर्थ होता है ४ एक न तो अपनी आत्मा को निवारने में समर्थ होता है और न पर की आत्मा को निवारन में समर्थ होता है ॥ १५ ॥ चार प्रकार के

वांके वं०वांके ए० कितनेक उ० सरल व० वांके ए० कितनेक व०वांके ए०ऐसे च०चार पु० पुरुष जात उ० सरल ए० कितनेक स० सरल च० चार म० मार्ग खे० क्षेम ए० कितनेक खे० क्षेम खे० क्षेम ए० कितनेक अ० अक्षेम ए ऐसे च० चार पु० पुरुष जात खे क्षेम ए० कितनेक खे० क्षेम च० चार म० मार्ग खे०

उज्जु उज्जुणाममेगे वंके, वकेणाममेगे उज्जु वकेणाममेगे वके । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उज्जुणाममेगे उज्जु, ४। चत्तारि मग्गा प० तं० खेमेणाममेगे खेमे खेमेणाममेगे अखेमे ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त०

मार्ग कहे हैं १ एक मार्ग आदि में सरल और अंत में भी सरल २ एक मार्ग आदि में सरल और अंत में वक्र ३ एक आदि में वक्र और अंत में सरल और ४ एक आदि में वक्र और अंत में भी वक्र। ऐसे ही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष आदि में तत्त्व का ज्ञान और अंत में भी तत्त्व का ज्ञान, २ एक आदि में सरल और पीछे वक्र ३ एक आदि में वक्र और अंत में सरल और ४ एक आदि में वक्र और अंत में भी वक्र। चार प्रकार का मार्ग कहा १ एक मार्ग आदि में क्षेम [उपद्रव रहित] और पीछे भी क्षेम २ एक मार्ग आदि में क्षेम और पीछे अक्षेम (उपद्रव सहित) ३ एक मार्ग आदि में अक्षेम और अंत में क्षेम और ४ एक मार्ग आदि में अक्षेम और अंत में भी अक्षेम। ऐसे ही पुरुष जाति पर

क्षम प० कितनेक स० क्षेमरूप खे० क्षम प० कितनेक अ० अक्षेमरूप ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जाव स० क्षम प० कितनेक खे० क्षमरूप ॥ १६ ॥ च० चार स० संख वा० डावे प० कितनेक वा० डावा आवर्त आवत वा० डावे प० कितनेक दा० जिमना आवर्त दा० जिमना प० कितनेक वा० डावा आवर्त

खमणाममेगे खम ४ । चत्तारि मग्गा प० तं० खेमेणाममेगे खेमरूवे, खेमेणाममेगे असमरूवे, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० खेमेणाममेगे खेमरूवे ॥१६॥ चत्तारि संबुका प० तं० वामे णाममेगे वामावत्ते, वामेणाममेगे दाहिणावत्ते, दाहि-ण णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते, । एवामेव चत्तारि पुरिस

चार भांगे कहना, और भी चार प्रकार का मार्ग कहा, १ एक मार्ग क्षेम और सुरूप २ एक मार्ग उपद्रव रहित परंतु स्वरूप नहीं यों चार भांगे कहना। वैसे ही पुरुष जाति पर भी चार भांगे जानना ॥ १६ ॥ चार प्रकार के शंख कहे हैं १ एक शंख वाम बाजु पे रहा है और अन्दर का आवर्त भी वाम है (यह दुःखदायी है) २ एक शंख वाम बाजु में रहा है परंतु उस का आवर्त दक्षिण है यह सुखदायी है ३ एक शंख दक्षिण बाजु में है परंतु आवर्त वाम है [यह दुःखदायी है] और ४ एक शंख दक्षिण बाजु का रहा है और आवर्त भी दक्षिण है (यह बहुत सुखदायी है)। ऐसे ही चार पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष स्वभाव का वाम [वक्र] और प्रवृत्तिका भी वक्र २ एक पुरुष स्वभावका वक्र परंतु प्रवृत्तिका सरल,

न० निमना प० कितनेक दा० निमना आवत व एमे च० चार पु० पुरुप जात बा० दावे प० कितनेक बा० दापा आवत च चार धू० धूम्र शिखा प० मरूपी बा० दावी प० कितनेक बा० दावा आवर्त प० एव च० चार इ० स्त्री बा० दावी प० कितनेक बा० दावा आवर्त च चार अ० अग्निसिखा बा० दावी

जाया प० तं० वामेणाममेगे वामावत्ते ॥ चत्तारि धूमसिहाओ पण्णत्ताओ त० वामाणाममगा वामावत्ता, ४ । एवामेव चत्तारि त्थियाओ प० त० वामाणाममेगा वामावत्ता ४ । चत्तारि अग्गिसिहाओ प० त० वामाणाममेगा वामावत्ता, ४ । ए वामेव चत्तारि त्थियाओ पण्णत्ताओ, त० वामाणाममेगा वामावत्ता, ४ । चत्तारि वायमडलिया प० त० वामाणाममेगा वामावत्ता, ४ । एवामेव चत्तारि त्थियाओ

एक पुरुष स्वभाव का सरल परंतु प्रवृत्ति वक्र और एक का स्वभाव भी सरल है और प्रवृत्तिका भी सरल है। चार प्रकार की धूम्र शिखा कही १ एक धूम्र शिखा बायें तरफ है और उस का आवर्त भी बायें तरफ है २ एक धूम्र शिखा बायें तरफ है परंतु आवर्त दक्षिण तरफ है ३ एक धूम्र शिखा दक्षिण तरफ है परंतु आवर्त बायें तरफ है और ४ एक धूम्र शिखा दक्षिण तरफ है और आवर्त भी दक्षिण तरफ है। ऐसे ही चार प्रकार की स्त्रियों कही एक का स्वभाव वक्र और प्रवृत्ति भी वक्र, एक का स्वभाव वक्र और प्रवृत्ति सरल ऐसे चारों भांग कहना। चार प्रकार की अग्नि शिखा एक शिखा वाम है और आ

प० कितनेक पा० डावी आवर्त च० चार मा० मायुमेदल बा० डावे ए० कितनेक पा० डावा आवर्त ए
वम च० चार प० पुरुष जात मा० डावे ए० कितनेक पा० डावा आवर्त ॥ १७ ॥ च० चार स्थान
स नि० साधु नि० साध्वी आ० बोलता हुवे सं० विशेष भाषण करते ण० नहीं अ० अतिक्रमते हैं
पं० रस्ता पछते पं० रस्ता बतलाते अ० असन पा० पानी खा खादिम सा० स्वादिम द० देते

प० त० वामाणाममेगा वामावत्ता ४ । चत्तारि वणसंडा प० त० वामेणाममेगे वामावत्ते, ४

वामावत्त ४ । एवामेव पुरिस जाया प० तं० वामेणाममेगे वामावत्ते, ४ णाइक्कमइ

॥ १७ ॥ चउहिंठाणेहिं णिग्गंथ णिग्गंथिं आलवमाणेवा, संलवमाणेवा, दलयमाणेवा,

त० पंथपुच्छमाणे, पंथदेसमाणे, असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दलयमाणेवा,

वत भी वाम है यों चार भांगे कहना । वैसे ही चार भांगे स्त्रियों पर कहना । मायुमंडली के चार भांगे
कहे एक मायु मंडली वाम है और आवर्त भी वाम है यों चारों भांगे मानना । और ऐसे ही स्त्री जाति
पर चार भां। जानना । चार प्रकार का वनखंड कहा एक वनखंड वाम बाजु में है और वायु से उसका
आवर्त भी वाम बाजु में है । यों चारों भांगे कहना और पुरुष जाति पर भी चार भांगे उतारना ॥ १७ ॥
चार कारण से साधु अकेली साध्वी की साथ वार्तालाप करता हुवा भगवंत की आज्ञा का उल्लंघन नहीं
करे १ ऐसे से मार्ग की पृच्छा करे, २ मार्ग बतावे, ३ अशन, पान, खादिम स्वादिम,

द० दिगन ॥ १८ ॥ त० तमस्काय के च० चार णा० नाम त० तम त० तमस्काय अं० अंध कार म० महांधकार त० तमस्काय के च० चार णा० नाम लो० लोकांधकार लो० लोकतम दे० देवांधकार दे० देवतम त० तमस्काय के च० चार णा० नाम वा० वायुफलिका वा० वायुफलिका का क्षोभ

दत्तावमाण वा ॥ १८ ॥ तमुक्कायस्सणं चत्तारि णामधेज्जा प० तं० तमेइवा, तमुक्काएइवा, अंधकारेइवा, महंधकारेइवा । तमुक्कायस्सणं चत्तारि णामधेज्जा प० तं० लोगंधयारेइवा, लोगतमसेइवा, देवंधयारेइवा, देवतमसेइवा । तमुक्कायस्सणं चत्तारि णामधेज्जा प० तं० वायफलिहेइवा वायफलिहखोभेइवा, देवरण्णेइवा,

भाति क्षे या ८ अन्य से क्षिसके ॥ १८ ॥ असंख्यातवा अरुणवर द्वीप की बाहिर की वेदिका के अंत से अरुणवर समुद्र में ४२ हजार योजन जावे वहां पानी से एक प्रदेश श्रेणी तमकाय नीकलकर १७२१ योजन ऊंची जाकर तिर्च्छी विस्तार पाई है प्रथम के चार देवलोक का घेर कर ऊपर पांचवा देवलोक का रिष्ट विमान की प्रतरमक जाकर रही है उस के गुण निष्पन्न चार २ नाम से १२ नाम कहे हैं २ अंधकार रूप होने से तम, अपकाय रूप होने से तमस्काय, ३ अंधकार और ४ महा अंधकार और भी तमस्काय के चार नाम १ लोकांधकार २ लोकतम, ३ देवांधकार कृष्णराजी है इस लिये ४ और देव तम अंधकार और भी तमस्काय के चार भेद कहे हैं १ वायु की लोगली सरिखा सो वातफलिका

देवगुहेइवा । तमुक्काएणं चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठइ तं० सोहम्मीसाण सणकुमारमाहिंद ॥ १९ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० संपागड पडिसेवी णाममेगे, पच्छण्णपडिसेवी णाममेगे पडुप्पण्णणंदी णाममेगे, णिस्सरण णंदीणाममेगे ॥ २० ॥ चत्तारि सेणाओ प० तं० जइत्ताणाममेगा णोपराजिणित्ता, पराजि

दे० देवारण्य दे० देवविग्रह त० तमस्काय च० चार क० कल्प आ० घेर के चि० रही है सो० सौधर्म ई० ईशान स० सनत्कुमार मा० महेन्द्र ॥ १९ ॥ च० चार पु० पुरुष जात सं० प्रगट प० प्रतिसेवी प० कितनेक प० गुप्त प० प्रतिसेवी ए० कितनेक प० प्रत्युत्पन्न आ० आनंदी ए० कितनेक णि० निकलने से आनंदी ए० कितनेक ॥ २० ॥ च० चार से० सैन्य ज० जेता ए० एक णो० नहीं प० पराजय

२ वायु के माग का रूंपन करे सो वातफल का क्षोभ ३ अग्नी भयादिक से देवतादिक को भगने का स्थान होना सो देवारण्य और ४ देवताओं का विग्रह होने का स्थान सो देव विग्रही यह तमस्काय सोधर्म, ईशान, सनत्कुमार और महेन्द्र इन चार देवलोक को घेर करराही है ॥ १९ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं एक साधु कारण विशेष आचार्यादिक की समक्ष पाप कर्म सेवे, २ एक प्रच्छन्नपने पाप कर्म सेवे, ३ एक साधु को आचार्य या शिष्यादि मिलने से आनंद होवे और एक साधु का अकेला विचरने से ही आनंद होवे ॥ २० ॥ एक सेना रिपु बल को जीत और उस से भगे नहीं २ एक सेना रिपु बल से भग

कर्ता प० पराजय कर्ता ए एक णा नहीं ज० जेता ए० एक ज० जेता प० पराजय कर्ता ए एक णा० नहीं ज० जेता णो० नहीं प० पराजय कर्ता ए० ऐसे च० चार पु पुरुष जात ज० जेता ए० एक णा० नहीं प० पराजय कर्ता च० चार स० सैन्य ज० जेता ए० एक ज० जीतता है ज जेता ए० एक

णित्ता णाममेगा णो जइत्ता, एगा जइत्तावि पराजिणित्तावि, एगा णो जइत्ता णो पराजिणित्ता । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० त० जइत्ताणाममेगे णो पराजिणिता, ४ । चत्तारि सेणाओ प० त० जइत्ताणाममेगा जयइ जइत्ताणाम मेगा

और उस को जीते नहीं ३ एक सेना जय प्राप्त करे परंतु कारण विशेषसे भग भी जावे, ४ और एक सेना जीते भी नहीं और भगे भी नहीं। ऐसे ही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक साधु परिषह की सेना को जीते परंतु परिषह से भगे नहीं वीरवत् २ एक साधु परिषह से भगे परंतु जीते नहीं कुंडरीकवत् ३ एक साधु परिषह को जीते परंतु कारण विशेष उस से भग जावे क्षेलक राजर्षिवत् और ४ एक साधु को परिषह भी उत्पन्न हुए हैं और उनोंने जीते भी नहीं है। और भी चार प्रकार की सेना कही १ एक सेना शत्रु को जीतकर फीर भी प्रसंग आवे तो जीते २ एक सेना पहिला शत्रु को जीते और फीर कभी भग जावे, ३ एक सेना पहिले शत्रु के डर से भग जावे फीर उस को जीते और ४ एक सेना पहिले भी भगे और पीछे से भी भगे। ऐसे ही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष चार

प० पराजय करता है प० पराजय कर्ता ए० एक ज० जीतता है प० पराजय करता ए० एक प० पराजय करता है ए० ऐसे च० चार पुरुष जात ज० जैसा ए० एक ज० जीतता है ॥ २१ ॥ च० चार के० बांके व० वांसका मूल क० बांका में० मेंढा का शृंग के० बांका गो० गोमूत्र के० बांका अ० बांसकी छाती के० बांकी ए० एस च० चार प्रकार की मा० माया व० वांसकी मूलका के० बांक समान जा० यावत् अ० वांसकी छाती का बांक समान वं० वांसकी मूलक के बांक समान मा० माया में अ० रहाहुआ

पराजिणइ पराजिणिचा णाम मेगा जयइ, पराजिणिचा णाममेगा पराजिणइ, । एवा मेव चचारि पुरिस जाया प० तं० जइचाणाममेगे जयइ ॥ २१ ॥ चत्तारिकेअणा प० त० वसीमूलकेअणए, मेंढविसाणकेअणए, गोमुत्तिकेअणए अविलेहणियाकेअणए । एवामेव चउव्विहा माया प० त० वसीमूलकेअणसमा

चार परिषह जीतता रहे, २ एक पुरुष प्रथम परिषह जीतलेवे फीर घबराकर वस मे भग जावे, ३ एक नविन दीक्षित प्रथम तो भगे परंतु फीर दृढ बन जावे और ४ एक पुरुष परिषह आने पर भगता ही रहे ॥ २१ ॥ चार प्रकार केतन (वक्र वस्तु) कही वंश का मूल, २ मेंढे का शृंग, ३ गाय का मूत्र, और ४ घास की छाती ऐसे ही चार प्रकार की माया कही १ एक वंशी मूल केतन समान जैसे वंश के मूल की गांठ में वक्रता होती है वैसे ही किसी को गुप्त माया होती है २ मेंढ के शृंग में जैसे वक्रता होती है

क्र० किरमजी रा० रंगने र० रक्त व० कर्दम रा० रंगते र० रक्त ख० काजल रा० रंगने र० रक्त ह० हाले ग रा० रंगते र० रक्त ए० एने च० चार प्रकार का लो० लोभ कि० किरमजी रंगसे र० रक्त वस्त्र समान क० कर्दम रंगते र० रक्त वस्त्र समान खं० काजल रंगते र० रक्त वस्त्र समान ह० हलिद्रा रंगते र० रक्त वस्त्र समान कि० किरमजी रंगसे र० रक्त वस्त्र समान लो० लोभ में अ० रहाहुवा जी० जीव का० काल

सजनरागरत्ते हलिद्दरागरत्ते एवामेव चउव्विहे लोभे प० तं० किमिरागरत्तवत्थसमाण, कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे, खजणरागरत्तवत्थसमाणे, हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे किमिरागरत्तवत्थसमाण लोभमणुप्पविट्ठे जीवे काल करेइ नेरइएसु उववज्जइ, तहेव जाव हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुप्पविट्ठे जीवे काल करेइ देवेसु उववज्जइ

स्वाभाविक रक्त पुद्गलों स बनाहुवा वस्त्र, जरू जावे परंतु रंग जावे नहीं २ कर्दम के रंग से रंगा हुवा वस्त्र बहुत परिश्रम से कुच्छ शुद्ध होवे ३ खंजन के रंग से रक्त वस्त्र धोने से स्वच्छ होवे और ४ हल्दी के रंग से रंगा हुवा वस्त्र धूप में रखने स ही स्वच्छ होजावे ऐसी तरह चार प्रकार का लोभ कहा १ कृमिराग से रक्त वस्त्र समान मरण पर्यंत नाम छूटे नहीं और उस में काल कर नरक में जावे २ कीचड से भराहुवा वस्त्र समान लोभ बहुत परिश्रम से कम होवे ऐसा लोभवाला मरकर तिर्यंच में जाता है

करक ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे त० तैसे जा० यावत् ह हलिद्रा रंगस र० रक्त वस्त्र समान लो०
माय में प० रहाहुआ जी० जीव का० काल करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होता है ॥ २४ ॥ च०
चार प्रकार का सं० संसार ण० नरक संसार जा० यावत् दे० देवसंसार च० चार प्रकार का आ०
आयुष्य ण० नरक आयुष्य जा० यावत दे० देव आयुष्य च० चार प्रकार का भ० भव णे० नरक भव
जा० यावत दे० देवभव ॥ २५ ॥ च० चार प्रकार का आ० आहार अ० असन पा० पानी खा०

चउव्विहे आ
॥ २४ ॥ चउव्विहे संसार प० तं० णेरइयसंसारे, जाव देवसंसारे, । चउव्विहे आ
उए प० त० णरइय आउए जाव देवाउए। चउव्विहे भवे प० त० णेरइयभवे, जा
व देवभवे ॥ २५ ॥ चउव्विहे आहारे प० त० असणे, पाणे खाइमे, साइमे ।

१ खंजन रंग समान कुच्छ समझान स लोभ कम होवे ऐसा लोभवाला मनुष्य में आवे और हलदी के
रंग समान स्वभाव से ही बहुत कम लोभ करनेवाला होवे यह मरकर देवता में उत्पन्न होता है ॥२४॥ चार
प्रकार का संसार कहा नारकी, तिर्यंच, मनुष्य और देवता का संसार, चार प्रकार का आयुष्य नारकी,
तिर्यंच, मनुष्य और देवता का आयुष्य चार प्रकार का भव नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, और देव का
भव ॥ २५ ॥ चार प्रकार का आहार असन, पान, खादिम और स्वादिम चार प्रकार का आहार

स्वादिम सा० स्वादिम च० चार प्रकार का आ आहार उ० उपस्कर संपन्न उ० उपस्कृत संपन्न स० स्वभाव संपन्न प० पर्युषित संपन्न ॥ २५ ॥ च० चार प्रकार का ब० बंध प० प्रकृतिबंध ठि० स्थितिबंध अ० अनुभागबंध प० प्रदेशबंध च० चार प्रकार का उ उपक्रम बं० बंधनोपक्रम उ० उदीरणापक्रम उ० उपशमनापक्रम वि० विपरिणामनोपक्रम बं० बंधनोपक्रम च० चार प्रकार

चउव्विहे आहारे प० तं० उवक्खरसंपन्ने, उवक्खडसंपन्ने, सभावसंपन्ने, परिजुसियसंपन्ने। २५।

चउव्विहे बंधे प० तं० पगइबंधे ठिइबंधे, अणुभावबंधे, पएसबंधे। चउव्विहे उवक्कमे

प० तं० बंधणोवक्कमे, उदीरणोवक्कमे, उवसामणोवक्कमे, विप्परिणामणोवक्कमे।

अग्नि में पकाहुवा, २ परासादि से पकाहुवा, ३ स्वभाव से पकाहुवा और ४ विशेष काल रखकर पकावे सो अचार वगैरह ॥ २५ ॥ चार प्रकार के बंध कहे १ ज्ञानावरणीयादि आठ कर्म की प्रकृति का बंध, २ कर्म का कालमान सो स्थिति बंध, ३ कर्म प्रकृतिका विपाक तीव्र मंद सो अनुभाग बंध, और जीव प्र देश की साथ कर्म प्रदेश का बंध होना सो प्रदेश बंध इस पर भगवंत दृष्टांत कहते हैं सुंठ, गुड़, वगैरह द्रव्य से बना हुवा कोई मोदक वात हरता है तो कोई पीत हरता है वैसे ही कोई कर्म प्रकृति ज्ञान गुण को रुके, कोई दर्शन गुण को रुके २ जैसे कोई मोदक एक मास दो मास या अमुक काल तक अच्छा

... प्रकार ... उदीरणोपक्रम ... उदीरणोपक्रम
उ० उदीरणोपक्रम प० चार प्रकार का प० प्रकृति उदीरणोपक्रम ... उपशमनोपक्रम प० चार प्रकार का
अ० अनुभागोदीरणोपक्रम प० प्रदेशोदीरणोपक्रम उ० उपशमनोपक्रम प० चार प्रकार का वि० विपरी
प० प्रकृति उपशमन उपक्रम ठि० स्थिति अ० अनुभाग प० प्रदेश उपशमनोपक्रम

बंधणोवक्कम चउव्विहे प० तं० पगइ बंधणोवक्कमे, ठिइबंधणोवक्कमे, अणुभाव बंधणोवक्कमे पएसबंधणोवक्कमे, । उदीरणोवक्कमे चउव्विहे प० तं० पगइ उदीरणोवक्कमे, ठिइउदीरणोवक्कमे, अणुभागउदीरणोवक्कमे, पएसउदीरणोवक्कमे, ।उवसामणोव

सुख का ... होता है और कोई कटु भी होता है वैसे ही कोई कर्म सुख के दाता और कोई कर्म दुःख के दाता होता है ८ जैसे मोदक में घृतादिकका प्रमाण होता है वैसे ही कर्म में भी पुद्गल परमाणु का प्रमाण होता है। चार प्रकार के उपक्रम [जीव शक्ति विशेष] १ जीव के प्रदेश और कर्म के पुद्गलों का परस्पर में संबंध होना सो बंधनोपक्रम । वह प्रकृति स्थिति, प्रदेश और अनुभाग ऐसे चार प्रकार का है, २ उदय में नहीं आये हुवे कर्मों को उदीरणा से उदय में लावे सो उदीरणोपक्रम इस के भी प्रकृति, स्थिति प्रदेश और अनुभाग ऐसे चार भेद होते हैं, ३ उदय, उदीरणा, निधत्त और निकाचित करने

णामनोपक्रम प० चार प्रकार का प० प्रकृति ठि० स्थिति अ० अनुभाग प० प्रदेश विपरीणामनोपक्रम च० चार प्रकार का अ० अल्प बहुत प० प्रकृति अल्प बहुत ठि० स्थिति अ० अनुभाग प० प्रदेश अल्प बहुत च० चार प्रकार का स० संक्रम प० प्रकृति संक्रम ठि० स्थिति अ० अनुभाग

कम्मे चउव्विहे प० तं० पगइ उवसामणोवक्कमे, ठिइअणुभावपएस उवसामणोवक्कमे।

विप्परिणामणोवक्कम चउव्विहे प० तं० पगइ—ठिइ—अणुभाव—पएस विप्परिणामणोव-

क्कम। चउव्विहे अप्पाबहुए प० तं० पगइ अप्पाबहुए, ठिइ अणुभाव, पएस

योग्य कर्मों की स्थापना करना सो उपशमन उपक्रम इस के प्रकृति, स्थिति, प्रदेश और अनुभाग ऐसे चार भेद जानना ४ द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावादि कारण विशेष से अवस्थान्तर का करना सो विप रिणामनोपक्रम. इस के भी प्रकृति, स्थिति, प्रदेश और अनुभाग एस चार भेद जानना चार प्रकारकी अल्पाबहुत्व कही है यह भी प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश इन चार प्रकार की होती है १ ज घन्य स्थिति बंध सपनि के एकेन्द्रिय के बादर पर्याप्ता के जघन्य संख्यात गुण सब से कमी अनुभाग रस गैंए प्रमादि साधु के कर्म बन्धा होवे उस मे असंख्यात गुण अनंत गुण स्थानक है वैसे ही प्रदेश के अल्पाबहुत्व के आठों कर्मों का बन्ध करनेवाले आयुष्य के प्रदेश बन्ध सबसे अल्प, नाम गोत्र दोनों तुल्य और आयुष्य से कुच्छ अधिक ज्ञान दर्शन व अंतराय परस्पर तुल्य जिस से मोहनीय वेदनी के कुच्छ

प० प्रदेश संक्रम च० चार प्रकार का नि० निधत्त प० प्रकृति निधत्त ठि० स्थिति अ० अनुभाग
प० प्रदेश निधत्त च० चार प्रकार का नि० निकाचित प० प्रकृतिनिकाचित ठि० स्थिति निका
चित अ० अनुभागनिकाचित प० प्रदेशनिकाचित ॥ २७ ॥ च० चार ए० एक द० द्रव्य एक मा०
मातृक एक प० पयत एक स० संग्रह एक च० चार क० केई द० द्रव्यकेई मा० मातृक केई प० पर्यव

चउव्विहे संकमे प० त० पगइसंकमे, ठिइ, अणुभाव, पएससंकमे। चउव्विहे संकमे प० त० पगइसंकमे,
अप्पाबहुए । चउव्विहे संकमे प० त० पगइसंकमे, ठिइ, अणुभाव, पएससंकमे । चउव्वि
चउव्विह निधत्ते प० तं० पगइ निधत्ते, ठिइ-अणुभाव-पएसनिधत्ते । चउव्वि
हे निगाइए प० त० पगइनिगाइए, ठिइनिगाइए, अणुभावनिगाइए, पएसनिगाइए,॥२७॥
चत्तारिएक्का प० तं० दविएएक्कए, माउएक्कए, पज्जवएक्कए, संगहएक्कए । चत्तारिकई

भावार्थ एक कर्म की प्रकृति दूसरे कर्म में संक्रमे उसे संक्रम कहते हैं वह भी प्रकृति, स्थिति, प्रदेश
और अनुभाग यों चार प्रकार का होता है. जैसे लोहे की सुई को कीट बंधन करता है वैसे ही कर्मों का
आत्म प्रदेश की साथ बंधन होना उसे निधत्त कहते हैं और उस के प्रकृति, स्थिति, प्रदेश और अनु
भाग ऐसे चार भेद होते हैं और लोह की सुई कीट से मिली हुइ होवे फीर उसे आगे तपाकर घन से
कूटकर एकमित करे और उस समय जो कर्म बंधन होता है उसे निकाचित कर्मबंध कहते हैं इसके प्रकृति,
स्थिति, प्रदेश और अनुभाग ऐसे चार भेद हैं ॥ २७ ॥ मुख्यतासे चार वस्तु एक कही है १ द्रव्य मात्र

कई सं० संग्रह को स० चार स० सत्य ना० नाम सत्य ठ० स्थापना सत्य आ० आदेश सत नि० निरपेक्ष सत्य ॥ ८ ॥ मा० मानुषोत्तर प० पर्वत की च० चारदिशा में च० चार कू० कूट र० रत्न र०

प० त० रत्नियकूड़ मउयक्कड़, पजवकई सगहक्कड़ । चत्तारिसचा प० तं० णाम-सचए ठवणसच्चए, आएससच्चए निरवसससच्चए ॥ २८ ॥ माणुसुत्तरस्सणं

एक ही वस्तु स्वाभाविक है (बीजभूत) २ मातृका पद एक ही है, अथवा अकारादि मातृका पद सब आगम व्यापार में व्यापक है इस लिये शास्त्रीय मातृका पद ३ धर्मादि धर्मवाली पर्याय एक ही है, और ४ समुदाय यानी संग्रह एक है क्यों कि एक शालि सो भी शालि कहलाती है और बहुत शालि भी शालि कहलाती है गौणता से चारों द्रव्य के अनेक भेद होते हैं सचित्त, अचित्त और मिश्रादि अनेक पद, स्वर व्यंजनादि भेदवाला मातृका पद, वर्ण, गंध, रस पर्यायवाली पर्याय पद और ग्राम, नगर, शालि वगैरह संग्रह पद। चार प्रकार के सत्य १ नाम सत्य सो जिस वस्तु का यथार्थ अगयार्थ नाम दिया सो, २ स्थापना सत्य सो रुपैया, महोर, पाव, शेर वगैरह, आदेश करना सो आदेश सत्य और निरपेक्ष सत्य सो मनुष्य, पट, घट, तथा इत्यादि सत्य कितनीक जगह "सव्वे" का भी पाठ दीखता है १ नाम सर्व सो सब वस्तु नाम सत्य है, २ सब वस्तु अक्षरादि स्थापना सत्य है, ३ सब वस्तु प्रधान पद का आदेश है और ४ निरपेक्ष सत्य सो देवता मेनोन्मेष बिना काम देखते हैं इत्यादि सर्व

रत्नाश्रय म० मनोरत्न र० ...... २० ॥ जं० जंबूद्वीप के भ० भरत ए० ऐरवत में ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु० सुषमसुषमा काल में च० चार सा० सागरोपम को० कोडा कोडी काल हो० था जं० जंबूद्वीप में भ० भरत ए० ऐरवत में इ० इस अ० अवसर्पिणी में सु० सुषमा सुषम स० समय च० चार सा० सागरोपम को० कोडा कोडी का० काल था जं० जंबूद्वीप में आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में सु० सुषमा सुषम समय च० चार सा० सागरोपम .... रयणे, रयणुच्चए, सव्वरयणए रयणसंचए। ॥२९॥

पव्वयस्स चउद्दिसिं चत्तारिकूडा प० तं० रयणे, रयणुच्चए, सव्वरयणए रयणसंचए। ॥२९॥

जंबूद्दीवे भरहेएरवएसु वासेसु तीयाए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारिसागरोवमको-डाकोडीओ काले होत्था जंबूद्दीवे भरहेरवए इमाए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवम कोडाकोडीओ काले होत्था ; जंबूद्दीवे दीवे आगमिस्साए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवम कोडाकोडीओ काले भविस्सइ।

॥२८॥मानुषोत्तर पर्वतकी चारों दिशामें चार कूट कहे हैं रत्नकूट, रत्नाश्रय, सर्व रत्नकूट, रत्न संचय कूट ॥२९॥जम्बूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्रमें गत उत्सर्पिणी कालमें सुषम २ आरा चार कोडाकोडी सागरोपम का था वैसे ही वर्तमान अवसर्पिणी काल था और आगामिक उत्सर्पिणी के सुषम सुषम काल चार कोडाकोडी सागरोपम का होगा जम्बूद्वीप में देव कुरु और उत्तरकुरु छोडकर अकर्मभूमि के चार क्षेत्र हैं हेमवय,

पम को कोरा कोरी का० काल म० होगा मं मबूद्वीप में दे० देवकुरु उ उत्तरकुरु व० वर्मकर च० चार अ० अकर्मभूमी है० हेमवय है० ऐरण्णवय ह हरिवास र० रम्यकवास त० उनके च० चार व० गोल वैताढ प० पर्वत स० शब्दापाति वि० विकटापाति गं० गंधापाति मा माल्यवंत पर्याय त० तहां प चार दे० देव म० महर्धिक जा० यावत् प० पल्यापम स्थितिवाले प० बसते हैं सा० स्वाति प० प्रभास अ० अरुण प० पद्म जं० जंबूद्वीप में म महाविदेहक्षेत्र च० चार प्रकार का पु० पूर्वविदेह अ अपरविदेह दे०

जबूद्दीव दीवे देवकुरु उत्तरकुरुवज्जाओ चत्तारि अकम्मभूमीओ प० त० हेमवए एरण्णवए हरिवासे, रम्मगवासे। तत्थण चत्तारि वट्टवेयड्डपव्वया प० त० सद्दावई, वियडावई, गंधावई, मालवंतपरियाए। तत्थणं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओ वमट्ठिइया परिवसंति त० साई, पभासे, अरुणे पउमे। जंबूदीवे दीवे महाविदेहवासे चउव्विहे प० त० पुव्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा सव्वेवि ण णिसढ

ऐरणवय, हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष. उस के चार वर्तुलाकार वैताढ पर्वत रहे हुवे हैं शब्दापाति विकटापाति, गंधापाति और माल्यवंत यहां पर पल्योपम की स्थितिवाले चार देव रहते हैं १ स्वाति, २ प्रभास ३ अरुण और ४ पद्म जम्बूद्वीप में चार महाविदेह कहे हैं ...

हेमकूट उ० उत्तरकुरु स० सब में नि० निषध और नीलवंत वा० वर्षधर प पर्वत च० चार जो० योजन मेरु नीचे अ० जम्बूद्वीप में म मेरु म० मा उ० ऊंचे उ ऊंचपने च० चार गा गाउ स० सो उ० ऊंडे अ० नीचे अ० जम्बूद्वीप में म मेरु पर्वत की पु० पूर्वदिशा में सी सीता महानदी के उ उत्तर किनारेपे च चार च० वखारा पर्वत चि० चित्रकूट प० पद्मकूट न० नलिनकूट ए एक शैलकूट जं० जंबूद्वीप के म० मेरु पर्वत की पु पूर्वदिशा में सी० सीता महानदी के दा० दक्षिण किनारेपे च चार वखारा प० पर्वत ति० त्रिकूट वे वैश्रमण कूट अं०

णीलवंत वासहर पन्वया चत्तारि जोयणसयाई उड्ढंउच्चत्तेण, चत्तारि गाउयसयाइ उव्वेहेण प० त० । जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीआए महाणई ए उत्तरकूले चत्तारि वक्खार पव्वया प० तं० चित्तकूडे, पम्हकूडे, णलिणकूडे, एगसेले । जंबूमंदर पुरत्थिमेण सीआए महाणईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया प० तं० तिकूडे वेसमणकूडे अंजणे, मायंजणे, । जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओआ

और उत्तरकुरु विषय सब निषध और नीलवंत वर्षधर पर्वत चार सो योजन के ऊंचे हैं और चार सो गाउ के ऊंडे जमीन में है जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व दिशा में सीता महा नदी के उत्तर किनारेपे चार वखार पर्वत रहे हुवे हैं चित्रकूट, पद्मकूट, नलिनकूट और एक शैलकूट. जम्बू मंदर की पूर्व दिशा में सीता महा नदी के दक्षिण किनारेपे चार वखारे पर्वत रहे हुवे हैं त्रिकूट, वैश्रमणकूट, अंजन और मातंजन

भेमन मा० मातमन न० जंबूद्वीप के म० मेरु पर्वत की प० पश्चिम में सी० सीतोदा महानदी के दा० दक्षिण किनारेपे च० चार व० वखार पर्वत अं० अंकावाति प० पद्मावति आ० आशीविष सु० सुखावह म० जंबूद्वीप के म० मेरु पर्वत की प० पश्चिमदिशा में सी० सीतोदा म० महानदी के उ० उत्तर किनारेपे च० चार व० वखारा प० पर्वत चं० चंद्र पर्वत सू० सूर्यपर्वत दे० देवपर्वत णा० नाग पर्वत जं० जंबूद्वीप के म० मेरु पर्वत की च० चार वि० विदिशा में च० चार व० वखारा पर्वत सो० सोमनस वि० विद्युत्प्रभ

ए महाणईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खार पव्वया प० तं० अंकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे । जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खार पव्वया प० तं० चंदपव्वए सूरपव्वए देवपव्वए णागपव्वए जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खार पव्वया प० तं० सोमणसे, विज्जुप्पभे, गंधमायणे मालवंते ॥ जंबूद्दीवेदीवे महाविदेहेवासे

जम्बू मेरु की पश्चिम में सीतोदा महा नदी के दक्षिण किनारेपे चार वखारे पर्वत रहे हुवे हैं अंकापती पद्मावती, आशी विष, और सुखावह जम्बू द्वीप के मेरु से पश्चिम दिशामें सीतोदा नदी के उत्तर किनारेपे चार वखारे पर्वत हैं चंद्र पर्वत, सूर्य पर्वत देव पर्वत और नाग पर्वत जम्बू द्वीप के मेरु की चारों दिशाओं में चार वखारे पर्वत रहे हुवे हैं सोमनस, विद्युत्प्रभ, गंधमादन और माल्यवंत जम्बू द्वीप के महा

ग० गंधमादन मा० माल्यवंत जं० जंबूद्वीप के म० महाविदेह क्षेत्र में ज० जघन्य च० चार अ० अरिहंत उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं च० चार च० चक्रवर्ति च० चार ब० बलदेव च० चार वा० वासुदेव उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होवेंगे जं० जंबूद्वीप के म० मेरु पर्वतपे च० चारवन भ० भद्रशालवन नं० नंदनवन सो० सोमनस पं० पंडकवन जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत के पं० पंडकवन में च० चार अ० अभिषेक शिला पं० पंडुकंबलशिला अ० अतिपंडुकंबलशिला र० रक्तकंबलशिला अ० अतिरक्तकंबलशिला मं० मेरुपर्वत की

जहण्णपए चत्तारि अरहंता, चत्तारि चक्कवट्टी, चत्तारि बलदेवा, चत्तारि वासुदेवा, उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा। जंबूदीवेदीवे मंदरे पव्वए चत्तारि वणा प० तं० भद्दसालवणे, णंदणवणे, सोमणसवणे, पंडगवणे। जंबूमंदरपव्वय-पंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ प० तं० पंडुकंबलसिला, अतिपंडु कंबलसिला, रत्तकंबलसिला, अतिरत्त कंबलसिला। मंदरचूलियाणं उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता॥ एवं धायइखंडदीवपुरिच्छिमद्धेवि, कालं आउकरित्ता जाव

विदेह क्षेत्र में जघन्य चार तीर्थंकर, चार चक्रवर्ती, चार बलदेव और चार वासुदेव अतीत काल में उत्पन्न हुए, वर्तमान में होरहे हैं और भविष्य में उत्पन्न होवेंगे जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत में चार वन हैं भद्रशाल वन, नंदन वन, सोमनस वन और पंडक वन जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत के पंडक वन में तीर्थंकर की

चुलिका उ० उपर च० चार जो० योजन वि० चौडी प० प्रवपी ए० ऐसे धातकी खण्डद्वीप पु० पूर्वार्ध में का० काल से मा० लेकर मा० यावत् म० मरु की चुलिका क० ऐसे मा० यावत् पु० पुष्करार्ध द्वीप के प० पश्चिमार्ध में मा० यावत् मे० मेरु की चुलिका जं० जंबूद्वीप आ० ऐसे का० काल से चू० चुलिका धा० धातकी खंड में पु० पुष्करार्ध में पु० पूर्व अ० अपर बाजु जं० जम्बूद्वीप के च० चारद्वार वि० विजय वे० वैजयन्त ज० जयन्त अ० अपराजित ते० वे दा० द्वार च० चार जो० योजन वि० चौडे ता० इतना

मंदरचूलियाए ॥ एवं जाव पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे जाव मंदरचूलियाए ।
जंबूदीवग आवस्सग तु कालाओ चूलिय धायइसंडे पुक्खरवरेय पुव्वावरेपासे,
जंबुदीवस्सणं दीवस्स चत्तारि दारा प० तं० विजये वेजयंते, जयंते, अपराजिए ।
ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण तावइयं चेव पवेसेणं प० । तत्थणं चत्तारि

चार अभिषेक शिला कही है १ पांडुकंबला, २ अति पांडुकंबला, ३ रक्तकंबला और ४ अति रक्तकम्बला मेरु पर्वत की चूलिका पर चार योजन की चौडाइ कही ऐसे ही धातकी खंड के पूर्वार्ध यावत् पुष्करवर के पश्चिमार्ध तक काल से लेकर जम्बूद्वीप की चूलिकातक सब अधिकार कहना जम्बूद्वीप के कोट को चार द्वार कहे हैं विजय, विजयंत, जयंत और अपराजित ये चारों द्वार चार योजन के चौडे हैं और इतने ही योजन प्रमाण से हैं वहांपर पल्योपम की स्थिति

॰ प्रदेश त॰ वहां च॰ चार दे॰ देव म॰ महर्द्धिक जा॰ यावत् प॰ पल्योपम की स्थितिवाले प॰ रहते हैं वि॰ विजय वे॰ वैजयन्त ज॰ जयन्त अ॰ अपराजित ॥ १० ॥ ज॰ जंबूद्वीप में मं॰ मेरु प॰ पर्वत की दा॰ दक्षिण दिशा में चु॰ चुल्लहेमवन्त वा॰ वर्षधर प॰ पर्वत के च॰ चार वि॰ विदिशा में ल॰ लवण समुद्र ति॰ तीन २ जो॰ योजन स॰ सो ओ॰ अवगाह कर ए॰ वहां च॰ चार अ॰ अन्तरद्वीप ए॰ एकरुप आ॰ आभास वे॰ वैपाणिक णं॰ नांगुलिक ते॰ उस द्वीप में च॰ चार प्रकार के म॰

देवा महड्डिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसति त॰ विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिए ॥ १० ॥ जम्बूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स चउसुविदिसासु लवणसमुद्द तिण्णितिण्णि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प॰ तं॰ एगरुअदीवे आभासिअदीवे, वेसाणियदीवे, णंगोलियदीवे । तेसुणंदीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति एगूरुया, आभासिया,

विजय देवता, वैजयंत देवता जयन्तदेवता और अपराजित देवता ॥ १० ॥ जम्बूद्वीपके मेरु की दक्षिण दिशासे चूल हेमवत वर्षधर पर्वत की चारों विदिशाके लवणसमुद्र में तीनसो २ योजन को अवगाहकर चार अंतर द्वीप रहे हैं॰ एकरुप, आभास, वैपाणिक और नांगूलिक यहांपर चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं: एकरुप मनुष्य, आभास मनुष्य, वैपाणिक और नांगुलिक उन द्वीप से चारों विदिशा में लवण समुद्र में चार

मनुष्य प० वसते हैं ए एकरुक मा० अभाव रे० वैमानिक पं० सांमुद्रिक व० उत्तर दी० द्वीपमें च० चार वि० विदिशा मे ल० लवण समुद्र में च० चार २ जो० योजन स० सो ओ० अवगाहकर च० चार अं० अंतरद्वीप ह० हयकर्णद्वीप ग० गजकर्णद्वीप गो० गोकर्णद्वीप स० शष्कुलीकर्ण ते० उन दी० द्वीप में० च० चार प्रकार के म० मनुष्य प० वसते हैं ह० हयकर्ण ग० गजकर्ण गो० गोकर्ण स० शष्कुलिकर्ण ते० उस दी० द्वीप के च० चार वि० विदिशा में ल० लवन समुद्र में पं० पांच २ जो० योजन स० सो

वेसाणिया, णंगोलिया ॥ तेसिणं दीवाण चउसुवि दिसासु लवणसमुद्दे चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थणचत्तारि अंतरदीवा प० त० हयकण्णदीवे, गयकण्णदीवे, गोकण्णदीवे, सक्कुलिकण्णदीवे । तेसुणं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति तं० हयकण्णा, गयकण्णा गोकण्णा, सक्कुलिकण्णा ॥ तेसिण दीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्द पंचपंच जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थणं चत्तारि

चार सो योजन के अन्दर जाते चार अंतर द्वीप रहे हुवे हैं हयकर्ण द्वीप, गजकर्ण द्वीप, गोकर्ण द्वीप, शष्कुली कर्ण द्वीप उस में उसी नामवाले चार प्रकार के मनुष्य बसते हैं उन चार द्वीप से आगे लवण समुद्र में चार विदिशा में पांच सो २ योजनवाले चार अंतर द्वीप कहे हैं आदर्शमुख, मेंढमुख, अयोमुख, और गोमुख, और उसी नामवाले मनुष्य उन चारों द्वीप में रहते हैं वहां से आगे [illegible]

मो॰ भवगाहे कर च॰ चार अं॰ अंतरद्वीप आ॰ आयंसमुख मे॰ मेंढमुख अ॰ अयोमुख गो॰ गौमुख ते॰ उस दी॰ द्वीप में म॰ चार प्रकार के म॰ मनुष्य भा॰ कहना ते॰ उस दी॰ द्वीप के च॰ चार वि॰ विदिशा में ल॰ लवण समुद्र में छ॰ छ जो॰ योजन स॰ सो ओ॰ अवगाहकर च॰ चार अं॰ अंतरद्वीप आ॰ अश्वमुख ह॰ हस्तिमुख सी॰ सिंहमुख व॰ व्याघ्रमुख ते॰ उस दी॰ द्वीपमें म॰ मनुष्य भा॰ कहना ते॰ उस दी॰ द्वीपकी च॰ चार वि॰ विदिशा में ल॰ लवन समुद्र में स॰ सात २ सो॰ योजन

अंतरदीवा प॰ तं॰ आयंसमुहदीवे, मेंढगमुहदीवे, अओमुहदीवे, गोमुहदीवे । तेसुणं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा ॥ तेसिणं दीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्दं छ छ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प॰ तं॰ आसमुहदीवे, हत्थिमुहदीवे, सीहमुहदीवे, वग्घमुहदीवे तेसुणं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा तेसिणं दीवाणं चउसुवि विदिसासु लवणसमुद्दं सत्तसत्त जोयणसयाइं ओगाहित्ता

विदिशा में छसो २ योजन के चार अंतर द्वीप रहे हैं अश्वमुख, हस्ती मुख, सिंह मुख, और व्याघ्रमुख इस द्वीपों में उसी नामवाले चार प्रकार के मनुष्य जानना इन से आगे चारों विदिशा में सात सो २ योजनवाले चार अंतरद्वीप रहे हैं अश्वकर्ण, हस्ति कर्ण, अकर्ण और कर्णप्रावर्ण इन में उसी नामवाले मनुष्य जानना इन से आगे लवण समुद्र में चारों विदिशा में आठसो २ योजन के लम्बे चोडे चार अंतर

प० मो आ० अवगाहकर च० चार अं० अंतरद्वीप अ० अश्वकर्ण ह० हस्तिकर्ण अ० अकर्ण क० कर्ण प्रावरण ते० उस दी० द्वीप में म० मनुष्य भा० कहना ते० उस दी० द्वीप में च० चार वि० विदिशा में ल० लवन समुद्र में अ० आठ २ जो० योजन स० सो ओ० अवगाहकर च० चार अं० अंतरद्वीप उ० उल्का मुख मे० मेघमुख वि० विद्युन्मुख वि० विद्युद्दंतमुख ते० उस दी० द्वीप में म० मनुष्य भा० कहना ते०

एत्थण चत्तारि अंतरदीवा प० त० आसकण्णदीवे, हत्थिकण्णदीवे, अकण्णदीवे, कण्णापाउरणदीवे । तेसुणं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा ॥ तेसिणं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं अट्ठअट्ठ जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थण चत्तारि अंतरदीवा प० त० उक्कामुहदीवे, मेहमुहदीवे, विज्जुमुहदीवे, विज्जुदंतदीवे । तेसुणं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा ॥ तेसिणं दीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्दं णव णव जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थण चत्तारि अंतरदीवा प० त० घणदंतदीवे, लट्ठदंतदीवे,

द्वीप हैं उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख और विद्युद्दंत द्वीप वैसे ही चार प्रकार के मनुष्य उसी नामवाले मानना यहां से आगे लवण समुद्र में चारों विदिशा में नवसो २ योजन के चार अंतर द्वीप हैं घनदंत, लष्टदंत, गूढदंत और शुद्धदंत और उस में घनदंता, लष्टदंता, गूढदंता, और शुद्धदंता नाम के चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं. यह भगवान कहे. जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर में शिखरी [illegible]

उस दी• द्वीप की प पार वि० विदिशा में स• लवण समुद्र में ण० नप ? मो• योगन स० सो ओ० अवगाहकर प० चार अंतरद्वीप प• पनदंत ल० लष्टदंत गू गूढदंत सु० सुद्धदंत जं जंपूद्वीप के म० मरु की उ० उत्तर में सि० शिखरी वर्षधर प• पर्वत के च० चार वि० विदिशा में ल० लवन समुद्र में ति० तीन २ सो० योजन स० सो ओ• अवगाहकर च० चार अं० अंतरद्वीप प० एकरूप से० शेष व• जैसे नि• निर्विशेष भा० कहना भा यावत् सु० सुद्धदंत ॥ ३१ ॥ ज० जम्बूद्वीप के बा० बाहिर की वे०

गूढदतदीवे सुद्धदनदीवे तेसुणदीवेसु चउव्विहामणुस्सा परिवसति त• घणदंता लट्ठ-

दंता, गूढदता, सुद्धदता ॥ जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण सिहरिस्स वासहर

पव्वयस्स चत्तारि चउसु विदिसासु लवणसमुदं तिण्णितिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता

एत्थण चत्तारि अंतरदीवा प• त• एगरूयदीवे, सेसतहेव निरवसेस भाणियव्व जाव सुद्धदता

॥३१॥जंबूदीवस्सणदीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयाओ चउद्दिसिंलवणसमुद्द पचाणउयं जोयण

उस की चारों विदिशाओं में चार शाखा निकली हुइ हैं यह सब अधिकार जैसा आगे कहा वैसा ही कहना इस तरह से सब मिलकर ५६ अंतर द्वीप हुवे, उन पर बसनेवाले सब युगलियें अर्धांग सुंदर मनोहर हैं उस का आयुष्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग का है ८०० धनुष्य की अवगाहना है और उन सब का ६४ पसलियां रही हुइ हैं, वे चतुर्थ भक्त आहार करते हैं ७९ दिन तक बच्चे की प्रतिपालना करते हैं और यहां से मरकर देवता होते हैं॥३१॥जम्बूद्वीप की बाहिर की वेदिका से चारों दिशा में लवण

वेदिका की च० चारदिशा में स० लवन समुद्र में पं० पंचानु जो० योजन स० हजार ओ० अवगाहकर प० यहां में बड़े अ० अलंजर सं० संठान से सं० रहे हुवे च० चार म० महापाताल व० वडवामुख के० केतुक प० यूपक ई० ईश्वर त० वहां च० चार दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम ठि० स्थितिवाले प० रहते हैं का० काल म० महाकाल वे० वेलंब प० प्रभंजन ॥ १२ ॥ जं० जम्बूद्वीप की चा०

सहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थण महइ महालिया महालिंजर संठाण संठिया चत्तारि महापायाला प०, तं०-वडवामुहे, केउए, यूवए, ईसरे । तत्थणं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसंति, तं० काले, महाकाले, वेलंबे पभंजणे ॥ १२ ॥

समुद्र में ९५ हजार योजन अवगाहकर जावे तो वहां बहुत बड़े, अलंजर (पानी के घड़े) के आकारवाले चार पाताल कलश कहे हैं १ पूर्व दिशा में वडवामुख, २ दक्षिण दिशा में केतु, ३ पश्चिम दिशा में यूपक और उत्तर दिशा में ईश्वर. इन चारों कलशपर महा ऋद्धिवाले व पल्योपम की स्थितिवाले चार देवताओं रहते हैं उन के नाम काल, महाकाल, वेलंब और प्रभंजन ॥ १२ ॥ जम्बूद्वीप की वेदिका से बाहिर

* ये चारों कलश लक्ष योजन के ऊंचे और मध्य भाग में चौड़े हैं मुख और तिरा दश हजार योजन का चौड़ा है, इन एक २ के तीन २ कांड ३३३३३ से साधिक हैं प्रथम कांड में वायु दूसरे में वायु व पानी और तीसरे में मात्र पानी है

बाहिर की वे० वेदिका से ल० लवण समुद्र में प० बयालीस जो० योजन स० हजार आ० अवगाहकर ए० वेलंधर णा० नागराजा के च० चार आ० आवास प० पर्वत गो० गोथूम पर्वत द० दकभास सं० शंख पर्वत दा० दाम पर्वत त० वहां च० चार म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम ठि० स्थिति वाले दे० देव प० रहते हैं गो० गोथूम सि० सिव सं० संख म० मनशिला जं० जंबूद्वीप की बा० बाहिर की वे० वेदिका से च० चार दिशि में ल० लवण समुद्र में ब० बयालीस२ जो० योजन स० हजार ओ० अवगाहकर च० चार अ० अनुवेलंधर

जंबूदीवस्सणं बाहिरिल्लाओ वेइयन्ताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं बायालीसं जोयणसह-स्साइं ओगाहित्ता एत्थणं चउण्ह वेलंधर णागरायाणं चत्तारि आवासपव्वया प० तं० गोथूभे, दओभासे, संखे, दासीमे। तत्थणं चत्तारि महिड्डिया जाव पलिओवमठिइया देवा परिवसंति–गोथूभे सिवए संखे, मणोसिलए ॥ जम्बूदीवस्सणं दीवस्स बाहिरिल्लाओ

लवण समुद्र में चारों दिशा में बियालिस हजार योजन अवगाहकर जावे तो वहां वेलंधर नागराजा के चार आवास पर्वत कहे हैं १ गोथूभ पूर्व दिशा में, २ दकभास दक्षिण दिशा में, ३ शंख पश्चिम दिशा में, और दाम उत्तर दिशा में. यहां पर गोथूभ, शिव, शंख, व मनःशिल नामवाले महर्द्धिक व पल्योपम की स्थितिवाले

---

१ पूर्वोक्त चारों महा कलश के नीचे के भाग में से वायु गुंजायमान होता है तब ऊपर के भाग का पानी उछलता है उस को रोकनेवाला वेलंधर देव है और उस की पास रहनेवाला अनुवेलंधर है

ण०नाग दसवा के च०चार आ०आवास पर्वत क०कर्कोटक वि विद्युत्प्रभ के० कैलास अ०अरुणप्रभ त०तहां च चार म० महर्द्धिक जा यावत प पल्योपम ठि० स्थिति वाले दे देव प० रहते हैं क० कर्कोटक क० कर्दम के कैलास ण० अरुणप्रभ ॥ ३३ ॥ ल० लवण समुद्र में च० चार च० चंद्र प० प्रकाशे प० प्रकाशते हैं प० प्रकाशेंगे च० चार सू० सूर्य त० तपे त० तपते हैं त० तपेंगे च० चार क० कृत्तिका जा० यावत च० चार भ० भरणी च० चार अ० अग्नि जा० यावत् च० चार य० यम च० चार ॥०

वेइयंताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्द बायालीसं २ जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थणं चउण्ह अणुवेलंधरणागरायाणं चत्तारि आवासपव्वया प० तं० कक्कोडए, विज्जुप्पभओ केलासे, अरुणप्पभे । तत्थणं चत्तारि महिड्डिया जाव पलिओवमठिईयादेवा परिवसंति कक्कोडए कद्दमए केलास अरुणप्पभे ॥ ३३ ॥ लवणेणं समुद्दे चत्तारी चंदा

प्रकाशते हैं जम्बूद्वीप की बाहिरली वेदिका के अंत से चार विदिशा में बियालिस २ हजार योजन को अवगाहकर रहनेवाले अनुवेलधर नाग राजा के चार आवास पर्वत कहे हैं कर्कोटक, विद्युत्प्रभ, कैलास और अरुणप्रभ वहां पर पल्योपम की स्थितिवाले म महर्द्धिक चार देव कहे हैं कर्कोटक, कर्दम, कैलास और अरुण प्रभ ॥ ३३ ॥ लवण समुद्र में चार चंद्रमाने प्रकाश किया, प्रकाश करेंगे, और प्रकाश करते हैं, चार सूर्य तपे, तपते हैं और तपेंगे और चार २ अठाइस ग्रह उन के देवता और अठासी नक्षत्र

अगारक मा० यावत् च चार मा भावकेउ ॥ ३४ ॥ ल० लवन समुद्र के च० चार दा० द्वार १० विजय वे० वैजयन्त ज० जयन्त अ० अपराजित ते० वे द्वा० द्वार च० चार जो० योजन वि० चौडे ता० इतनाही प० प्रवेश त० तहां च० चार दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम ठि स्थिति वाले प० रहते हैं वि० विजय जा० यावत अ० अपराजित ॥ ३५ ॥ धा० धातकी खंड के च० चार जो०

पभासिंसु पभासंति वा पभासिस्सति वा । चत्तारि सूरिया तविंसु तवति वा तविस्संति चत्तारि कत्तियाओ जाव चत्तारि भरणीओ, चत्तारि अग्गि जाव चत्तारि भावकेऊ ॥ ३४ ॥ लवणस्सणं समुद्दस्स चत्तारि दारा प० तं० विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिए तेणंदारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइय चेव पवेसेणपण्णत्ता । तत्थणं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमठिइया परिवसति विजए जाव अपराजिए ॥ ३५ ॥

(भाव केतुवक) रहे हुवे हैं ॥ ३४ ॥ लवण समुद्र को चार योजन के पहुले और ऊंचे चार द्वार रहे हैं विजय वैजयंत, जयंत और अपराजित यहां पर महाऋद्धि क धारक व पल्योपम की स्थिति के चार देवताओं रहे हुवे हैं विजय, वैजयंत, जयंत और अपराजित ॥ ३५ ॥ धातकी खंड द्वीप चारों तरफ फिरता हुवा

योमन स० लाख च० चारोंतरफ वि० चौडा ॥ १६ ॥ ज० जंबूद्वीप की बा० बाहिर च० चार भ० भरत च० चार ए० ऐरवत ए० ऐसे ज० जैसे स० दूसरे ठाणे में त० तैसे णि० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् च० चार मं० मेरु च० चार म० मेरु की चूलिका ॥ १७ ॥ ण० नंदीश्वर द्वीप की च० चारों बाजु वि० चौडे ब० बहु म० मध्य दे० देशभागके च० चारदिशा में च० चार अं० अंजनक प० पर्वत पु० पूर्व में दा० दक्षिण में प० पश्चिम में उ० उत्तर में ते० वे अं० अंजनक पर्वत च० चौरासी

भायइसंडेणंदीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेण प० ॥ ३६ ॥ जंबू-दीवस्सणं दीवस्स बाहिया चत्तारि भरहाइं चत्तारि एरवयाइं, एवं जहा सद्दुद्देसए तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव चत्तारि मंदरा, चत्तारि मंदरचूलियाओणं ॥ ३७ ॥ णंदीसरवरस्सणं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभाए चउद्दिसिं चत्तारि अं-जणग पव्वया प० तं० पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए, दाहिणिल्ले अजणग पव्वए,

चार लाख योमन का चौडा है ॥ १६ ॥ जम्बूद्वीप की बाहिर धातकी खंड, और पुष्करार्ध द्वीप में चार भरत, चार ऐरवत, चार हरिवर्ष, चार रम्यक वर्ष, यावत् सब अधिकार मेरु पर्वत की चूलिकातक का स्वरूप ठाणा का दूसरा उद्देशा जैसे कहना ॥ १७ ॥ आठवा नंदीश्वर द्वीप १६,३,८४००,००० योजन का चौडा है उस के मध्य में चारों दिशाओं में चार अंजनक पर्वत कहे हैं पूर्व दिशा

जा० योजन स० सहस्र उ० ऊंचे उ० ऊपपने ए० एक जा० योजन स० सहस्र उ० ऊंड मु मूलमें द० दस जा० योजन स० सहस्र वि० चौड़ा त० पीछे मा० थोडा थोडा प० घटता २ उ० उपर ए० एक जो० योजन स० सहस्र वि० चौड़ा मू० मूल में ए० एकतीस जो० योजन स० सहस्र छ० १०३ जो० योजन स० सत प० परिधि उ० उपर ति० तीन० जो० योजन स० सहस्र प० १६२ जो० योजन

तेणं अंजणगा पव्वया पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए उत्तरिल्ले अंजणगपव्वए । चउरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेण एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं तदणंतरं च णं मायाए मायाए परिहायमाणा परिहायमाणा उवरि मेगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं प० । मूले एकतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, उवरिं तिण्णि जोयणसहस्साइं एगं च बावट्ठिं जोयणसयं परिक्खेवेणं मूले विच्छिण्णा, मज्झे संखित्ता

पश्चिम दिशा और उत्तर दिशा में ये चारों अंजनक पर्वत चौरासी हजार योजन के ऊंचे, एक हजार योजन के ऊंडे जमीन में हैं मूल में दस हजार योजन के चौड़े हैं, और अनुक्रम से कम होते २ शिखरपर एक हजार योजन के चौड़े रहे हैं मूल में ३१,०२३ योजन की परिधि है और उपर ३१६२ योजन की परिधि है मूल में विस्तीर्ण है बीच में सकडे हैं, और उपर पतले हैं, गायपुच्छ के आकारवाले हैं

स॰ सत प॰ परिधि भू॰ भूमर्म विस्तीर्ण म॰ मध्य में स॰ सांसित उ॰ उपर त॰ सूक्ष्म गो॰ गोपुच्छ स॰ सठान से स॰ रहाहुवा स॰ सर्व अं॰ काले अ अच्छे जा॰ यावत् प॰ प्रतिरूप ते॰ उन अं अंजनक प॰ पर्वत पे ब॰ बहुत स॰ देखने याग्य भू॰ भूमिभाग ते॰ उस ब॰ बहुत म॰ देखने योग्य भू॰ भूमिभाग के ब॰ बहुत म॰ मध्य देशभाग में च॰ चार सि॰ सिद्धायतन से॰ वे सि॰ सिद्धायतन ए॰ एक जो॰ योजन स॰ सो आ॰ लम्बे प॰ पचास जो॰ योजन वि॰ चौडा बा बोत्तर जो॰ योजन उ॰ ऊंचे उ॰ ऊंचपने ते॰ उन सि सिद्धायतनोंको च॰ चारों दिशीमें च॰ चार दा॰ द्वार दे॰ देवद्वार अ॰ असुरद्वार,

उप्पितणुया गोपुच्छसठाणसठिया, सव्वअजणगमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तेसिण अंजणगपव्वयाण बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा प॰ तेसिण बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाण बहुमज्झदेसभाए चत्तारि सिद्धायणा प॰ तेणं सिद्धायणा एग जोयणसय आयामेण प॰ पण्णास जोयणाइ विक्खंभेणं बावत्तरि जोयणाइ उड्ढुच्चत्तेण । तेसिण सिद्धायणाण चउद्दिसिं चत्तारिदारा प॰ तं॰ देवदारे, असुरदारे

सब अंजन [कालेरंग] के रत्न समान निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं उन अंजनक पर्वत पर बहुत रमणिक भूमि के मध्य भाग में चार सिद्धायतन कहे हुवे हैं वे सिद्धायतन सो योजन के लम्बे, पचास योजन के चौडे और बहोत्तर योजन के ऊंचे कहे हैं उन सिद्धायतनों की चारों दिशि में चार द्वार कहे हैं पूर्व में देवद्वार, दक्षिण में असुर, पश्चिम में नाग और उत्तर में सुवर्ण इन द्वारों में चार जाति के देव रहते हैं

ना० नागद्वार सु० सुवर्णद्वार ते० उन दा० द्वारमें च० चार प्रकारके दे० देव अ० असुर ना० नाग सु० सुवर्ण ते० उस दा द्वारके पु० आगे च० चार मु० मुख मंडप ते० उस मु० मुखमंडप के पु० आगे च० चार पे० प्रेक्षा ग० गृहमंडप ते० उस पे० प्रेक्षा घ० गृहमंडप के ब० बहुत म मध्यदेश भाग में च० चार व० वज्रमय अ० आखाटक ते० उन व० वज्रमय अ० आखाटक के ब बहुत म० मध्यदेश भाग में च० चार म० मणिपीठिका ता० उन म० मणिपीठिका के उ उपर च० चार सी० सिंहासन ते० उस सी० सिंहासन की उ उपर च० चार वि० विजयदूष्य ते० उस वि०

णागदारे, सुवण्णदारे, । तेसुणं दारेसु चउव्विहा देवा परिवसंति तं० देवा, असुरा, नागा, सुवण्णा । तेसिणं दाराणं पुरओ चत्तारि मुहमंडवा प० । तेसिणं मुहमंडवाणं पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमंडवा प० । तेसिणं पेच्छाघरमंडवाणं बहुमज्झ देसभाए चत्तारि वइरामया अक्खाडगा प० । तेसिणं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसे चत्तारि मणिपेढियाओ प० । तासिणं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि सीहासणा प० । तेसिणं सीहासणाणं उवरिं चत्तारि विजयदूसा प० । तेसिणं

देव, असुर, नाग और सुवर्ण उन द्वारों के आगे चार मुख मंडप कहे हैं उन की आगे चार प्रेक्षा मंडप कहे हैं उन प्रेक्षा मंडप के मध्यभाग मे चार अखाडे कहे उनके मध्यमें चार मणिरत्न की पीठिका (चबुतरे) कही उन पीठिका पर चार सिंहासन कहे उन सिंहासनो की उपर चार विजयदूष्य (रत्न मयवस्त्र) कहे उन

विजयदृष्य की म० बहुव म० मध्य दे० देशभाग में च० चार व० वज्रमय अ० अंकुश है उस व० वज्रमय अ० अंकुश में च० चार कुं० कुंभी जैसी मु० मोतीयोंकी माला है० ये कु० कुंभीजैसी मु० मोतीकी माला प० प्रत्येक २ अ० अन्य त० उस से अ० अर्ध प० प्रमाण से च० चार अ० अर्ध कुं० कुंभीजैसे मु० मोती की माले स० सर्व बाजू स० रही हुई है० उस पे० प्रेक्ष्य गृहमंडप के पु० आगे च० चार म० मणिपीठिका ता० उस म० मणिपीठिका की उ० ऊपर च० चार चे० चैत्यस्तूप ते० उस चे० चैत्यस्तूप की प० प्रत्येक २ च० चारदिशा में च० चार म० मणिपीठिका ता० उस म० मणि

विजय दूसगाण बहुमज्झदेसभाए चत्तारि वइरामया अकुसा प० । तेसिणं वइरामएसु अकुसेसु चत्तारि कुंभिया मुत्तादामा प० । तेणं कुंभियामुत्तादामा पत्तेयं पत्तेयं अण्णेहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिएहिं मुत्तादामेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता । तेसिणं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ चत्तारि मणिपीढिया प० । तासिणं मणिपी ढियाणं उवरिं चत्तारि चेइयथूभा प० तेसिणं चेइयथूभाणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि

विजयदृष्यों के चार वज्रमय अंकुश कहे उन अंकुशों में कुंभके आकार वाली चार मोतियोंकी मालाए कही है कुंभ समान मोतियों की मालाएं अन्य अर्ध कुंभाकार वाली मोतियों की मालाओंसे घिराइ हुए हैं अब उन प्रेक्षमंडप की आगे चारमणिपीठिका कही उन मणीपीठिका पर चार चैत्यस्तूप हैं और चैत्यस्तूप की चारों दिशामें चार मणिपीठिका हैं उन मणिपीठिका परस्तूपकी ओर मुख करके पर्यंका

पीठि का की उ० उपर च चार जि० जिनप्रतिमा स० सर्व र० रत्नमय म० पर्यंकासनस थू० स्तूप की ओर मुख मे चि० रही हैं रि० वृषभ व वर्धमान चं चंद्रानन वा० वारिसेन ते० उस चे० चैत्यस्तूप री पु० आगे च० चार म० मणिपीठिका ता उस म० मणिपीठि का की उ उपर च चार चे० चैत्यवृक्ष ते० उस चे० चैत्यवृक्ष की पु० आगे च० चार म० मणिपीठि का ता० उस म० मणि पीठिका की उ० उपर च० चार म० महेन्द्रध्वजा ते उस म० महेन्द्रध्वज की पु० आगे च० चार

मणिपेढियाओ प० । तासिणं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमाओ सव्वरय-णामइयाओ सपलिअंकणिसण्णाओ थूभाभिमुहीओ चिट्ठंति त० रिसभा वद्धमाणा, चंदाणणा, वारिसेणा । तेसिणं चेइयथुभाण पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ प० । ता-सिण मणिपेढियाण उवरिं चत्तारि चेइयरुक्खा प० ।तेसिणं चेइयरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ प० ।तासिणमणिपेढियाण उवरिं चत्तारि महिंदज्झया प० ।तेसिण महिंदज्झ-याण पुरओ चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ प० ।तासिणं पोक्खरणीणं पत्तेयं पत्तेय चउदिसिं

चार जिनप्रतिमाएं रही उनके नाम ऋषभ, वर्धमान, चंद्रानन, और वारिसेन चैत्य स्तूप की आगे चार मणि पीठिका कहीं उन मणिपीठिकाओपर चैत्यवृक्ष कहे उन चैत्यवृक्षकी आगे चार मणिपीठिका कही और

प० नंदापुष्करणी ता० उस पा० पुष्करणी की च० प्रत्येक ? च० चारोंदिशा में च० चार व० वनखंड पु० पूर्व में दा० दक्षिण में प पश्चिम में उ० उत्तर में पु० पूर्व में अ० अशोकवन दा० दक्षिण में हो० है स० सप्तपर्णवन प० पश्चिम में च० चंपकवन चू० आम्रवन उ० उत्तर में त० उसमें जे० जैसे पु० पूर्व में अं० अंजनक प० पर्वत त० उसकी च चारोंदिशा में च० चार नं० नंदापुष्करणी प० कही नं० नंदा नं नंदुत्तरा आ० आनंदा नं० नंदिवर्धना त० उस नं० नंदापुष्करणी से ए० एक जो० योजन स सहस्र आ० लम्बाइ में प० पचास जो० योजन स० सहस्र वि० चौडाइ में द० दश योजन स० सहस्र

चत्तारि वणखंडा प० तं० पुरच्छिमेण, दाहिणेण, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेण॥ पुव्वेण असोगवणं, दाहिणओ होंति सत्तिवण्णवणं, अवरेण चंपगवणं, चूतवणं उत्तरे पासे॥ १ ॥ तत्थणं जेसे पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए तस्सणं चउदिसिं चत्तारि णंदापोक्खरणीओ पण्णत्ताओ तं० णंदा, णंदुत्तरा, आणंदा, णंदिवद्धणा । ताओणं णंदापोक्खरणीओ एगं जोयण सयसहस्सं आयामेणं, पण्णासं जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं दस जोयणसयाइं उ

आगे चारों दिशामें चार वनखंड कहे—पूर्वमें अशोक वन, दक्षिणमें सप्तच्छद (सादरी पूंसका) वन, पश्चिममें चंपकवन और उत्तर दिशामें आम्रवन है पूर्वदिशाका अंजनक पर्वतकी चारों दिशामें चार नंदा पुष्करणी बावडी यों कही है नंदोत्तरा, नंदा, आनंदा और नंदीवर्धना इन नंदा नामक पुष्करणियोंकी लम्बाइ

उ० गहराइ स ता० उस पों० पुष्करणी को प० प्रत्येक २ च० चारोंदिशा में च चार ति० त्रिसोपान प० प्रतिरूपक ते० उन ति० त्रिसोपान के प० प्रतिरूपक पु० आगे च० चार तो० तोरण पु० पूर्व में दा० दक्षिण में प० पश्चिम में उ० उत्तर में पु० पूर्व में अ० अशोकवन जा० यावत् चू० आम्रवन उ० उत्तरदिशा में । ता० उस पु० पुष्करणी के ब० बहु म० मध्य विभाग में च० चार द० दधिमुख प० पर्वत प० कहे ते० वे द० दधिमुख पर्वत च० चौसठ जो० योजन सहस्र उ० ऊंचे ए० एक जो० योजन

व्वेहेण, । तासिणं पोक्खरणीणं पत्तेयं पत्तेय चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाण पडिरूवगा

प० तेसिणं तिसोवाण पडिरूवगाण पुरओ चत्तारि तोरणा प० त० पुरच्छिमेणं,

दाहिणेणं, पच्चत्थिमेण उत्तरेणं ।। तासिणं पोक्खरणीण पत्तेय पत्तेग चउद्दिसिं चत्तारि

वणसंडा प० त० पुरओ, दाहिणओ, पच्चत्थिमेण। उत्तरेणं पुव्वेण असोगवण जाव चूयवणं

उत्तरेपासे। तासिणं पुक्खरणीणं बहुमज्झदेसभाए चत्तारि दहिमुहग पव्वया प० ।तेण दहि

मुहग पव्वया चउसट्ठि जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं एग जोयणसहस्स मुव्वेहेण,

सस योजन की है और चौरास पचास हजार की व ऊंडाइ एक हजार योजन की है उन प्रत्येक बावडियोंकी चारोंदिशामें जो द्वार रहे हैं उनको तीन २ सोपान रहे हैं पूर्वादि चारों दिशामें चार तोरण रहे हैं उस पुष्करणी की चारो दिशाओमें चार वनखंड हैं पूर्वदिशामें अशोक वन यावत् उत्तर दिशामें आम्रवन तक जानना उसके मध्यभागमें शोभायमान उज्ज्वल चार दधिमुख पर्वत कहे हैं वे चौसठ हजार योजन

उ० ऊंचाइ में स० सर्वत्र स० सरिखे प० पर्यंकासन सं० सस्थान से स संस्थित द० दश जो० योजन सहस्र वि० चौडाइ में ए० एकतीस जो० योजन सहस्र छ छत्तेविइस योजन प० परिधि में स० सर्व र० रत्नमय अ० आश्चर्यजनक जा० यावत प० प्रतिरूप से० उन द० दधिमुख प० पर्वत के उ० ऊपर ब० बहुत स० सरिखे र० रमणिक भू० भूमिभाग प० कहा से० बाकी का म० जैसे अ० अजनक प० पर्वत का त० वैसेही णि० निरवशेष भा कहना भा० यावत् चू० आम्रवन उ० उत्तरदिशा में । त० उसमें दा० दक्षिण दिशा के अ० अजनक पर्वत त० उसकी च० चारोंदिशा में च० चार नं० नंदा

सव्वत्थसमा पल्लगसंठाण सठिया—दस जोयण सहस्साइं विक्खभेणं, एकतीस जोयण सहस्साइं छव्वतेवीसेजोयणसए परिक्खेवेण, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसिंग दहिमुहग पव्वयाण उवरिं बहु समरमणिज्जा भूमिभागा प० से स जहेव अजणगपव्वयाणं तहेव णिरवसेस भाणियव्वं जाव चूअवण उत्तरेपासे । तत्थणं दाहिणिल्ले अंजणग पव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ

के ऊंचे हैं एक हजार योजनके ऊंडे हैं ऊंचे, नीचे और मध्यभाग में सबठिकाने सरिखे हैं पालाके आकार वाले हैं और दस हजार योजनकी चौडाइ है ३१६२३ योजनकी परिधि है सर्वरत्नमय उज्वल यावत् प्रतिरूप है उस दधिमुख पर्वतके ऊपर रमणीय, मनोहर, व समभूमि भाग है यावत् सब अधिकार अजनक पर्वत जैसे कहना दक्षिण दिशामें जो अजनक पर्वत

पुष्करणी प० कही भ० भद्रा, वि० विशाला कु० कुमुदा पु० पौंडरीकिणी ...

ए० एक यो० योजन सहस्र से० शेष त० वैसा जा० यावत् द० दधिमुख पर्वत जा० यावत् व० वनखंड।
त० उसमें जे जो प० पश्चिम का अं० अंजनक पर्वत त० उसकी च० चारोंदिशा में च० चार नं०
नं० नंदापुष्करणी प० कही नं० नंदीसेना भा० आमोघा गो गोस्थूमा सु० सुदर्शना से० शेष तं०
उम अनुसार त० वैसही द० दधिमुख प० पर्वत त० वैसेही सि० सिद्धायतन जा० यावत् व० वनखंड

प० तं० भद्दा, विसाला कुमुया पोंडरीकिणी। ताओण णदाओ पोक्खरणीओ एक्क
जोयण सयसहस्स सेस तचेव जाव दहिमुहगपव्वया जाव वणखंडा। तत्थण जेसे प
च्चत्थमिल्ले अजणगपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि णदाओ पोक्खरणीओ
पण्णत्ताओ त० णंदिसेणा, आमोहा गोथूभा। सुदसणा, सेसंतचेव तहेव दहिमु-
हग पव्वया, तहेव सिद्धाययणा, जाव वणखंडा। तत्थण जेसे उत्तरिल्ले अजणग

नामक पुष्करनी कही भद्रा, विशाला, कौमुदी और पुंडरिकिणी ये चारों एक लक्ष योजनकी लम्बी
आदि सब अधिकार दधिमुख पर्वत व वनखंड तकका उक्त कथनानुसार मानना अब पश्चिमदिशामें जो
अंजनक पर्वत है उसकी चारों दिशाओंमें चार पुष्करणी बावडी कही नंदीषेणा आमोघा, गोस्थूभा और
सुदर्शना शेष सब अधिकार दधि मुख पर्वत व वनखंड आदिका उस कथनानुसार जानना उत्तर दिशि

ग० गिरी न० नाम उ० उत्पादिका म अ० अजनक पर्वत त० उसकी च० चारदिशि में च चार न० नंदा पो० पुष्करणी प० कही वि० विजया वे० वैजयंती ज० जयन्ति अ० अपराजिता ता० वे पो० पुष्करणियों ए० एक योजन स० शत [सौ] तं० उस अनुसार प० प्रमाण त० वैसेही द० दधिमुख पर्वत त० वैसेही सि० सिद्धायतन जा० यावत् व० वनखंड णं० नंदीश्वर द्वि० द्वीप च० चौवाड़ में ब० बहुत म० मध्य में च चार दि० विदिशा में च० चार र० रतिकर प० पर्वत प० कहे उ० इशान कोन का पर्वत दा० अग्निकोन का पर्वत दा० नैऋत्य कौन का र० रतिकर पर्वत उ० वायव्य कोन का र० रतिकर

पव्वए तरसणं चउद्दिसिं चत्तारि णदाओ पोक्खरणीओ प० त० विजया, वेजयंति, जयंति, अपराजिया । ताण पोक्खरणीओ एग जोयणसय तंचेव पमाण, तहेव दहि-मुह पव्वया, तहेव सिद्धाययणा, जाव वणखंडा ॥ णदीसरवरस्सण दीवस्स चक्कवाल विक्खंभस्स बहुमज्झदेसभाए चउसु विदिसासु चत्तारि रतिकरग पव्वया प० त० उत्तर पुरच्छिमिल्लरतिकरगपव्वए, दाहिणपुरच्छिमिल्ल रतिकरग पव्वए दाहिणपच्चत्थिमिल्लरति

उसका अंजनक पर्वत की चारों दिशामें चार पुष्करणी हैं, विजया, वेजयंती, जयंती और अपराजिता वे पुष्करणीयों एक सौ योजनकी लम्बी हैं बाकी सब अधिकार दधिमुख जानना नंदीश्वरद्वीपके मध्यभाग में चार विदिशाओंमें चार रतिकर पर्वत हैं ईशान, अग्नि, नैऋत्य, और वायव्य विदिशाके रतिकर

प० पर्वत म० म र० रतिकर प० पर्वत द० दश जो० योजन स शत उ० ऊंचाइ म द० दश गा० कोश स० मो उ० ऊंड स० सर्व स० बराबर झ० झालर के सं० संस्थान से सं० रहे हुवे हैं द० दश सहस्र योजन वि० चौडाइ में ए० एकतीस जो० योजन सहस्र छ० छ० ते० तेइस जो० योजन स० मो प० परिधि में स० सब र रत्नमय जा यावत् प० प्रतिरूप त० उसमें जे जो उ० ईशान कोन का र० रतिकर प० पर्वत त उसकी च चारों दिशा में ई० ईशानेन्द्रपता की च० चार अ० अग्र-

करग पव्वए, उत्तरपञ्चत्थिमिल्ल रतिकरग पव्वए। तेण रतिकरग पव्वया दसजोयण सयाइं उड्ढ उच्चत्तेण दस गाउय सयाइ उव्वेहेण सव्वत्थसमाय झल्लरिसंठाणसंठिया, दस जोयण सहस्साइं विक्खमेणं, एकतीस जोयण सहस्साइं छच्चतेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, सव्व रयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। तत्यणं जेसे उत्तरपुरच्छिमि-ल्ले रतिकरग पव्वए तस्सण चउद्दिसि मीसाणस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं

पवत ये रतिकर पर्वतों एक हजार योजनके ऊंचे हैं और एक हजार कोशके भूमिमें ऊंडे हैं उपर, नीचे और मध्यभागमें बराबर हैं झालरके आकार वाले हैं दश हजार योजनके चौडे हैं ३१६२३ योजनकी परिधि है सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ईशान कोनका रतिकर पर्वत की चारों दिशामें ईशानेन्द्र देवता की कृष्णा, राजि, रामा, व रामरक्षिता नामकी चार अग्रमहिषीयों की एक लक्षयोजनकी चार राजधानी

जम्बूद्दीवपमाण मेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं० णंदोत्तरा, णंदा उत्तरकुरा, देवकुरा, । कण्हा राइए, रामाए, रामरक्खियाए । तत्थण जेसे दाहिण पुरच्छिमिल्ले रतिकरग पव्वए तस्सण चउदिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्ह अग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ प० तं० सुमणा, सोमणसा, अच्चिमाली, मणोरमा ॥ पउमाए सिवाए, सुईए, अंजूए । तत्थणं

मादेरियों की ज० जम्बूद्वीप प्रमाण च० चार रा० राज्यधानियों प० कही नं० नंदोत्तरा, न० नंदा उ० उत्तरकुरा, दे० देवकुरा क० कृष्णा, रा० राजी रा० रामा रा० रामरक्षिता । त० तहां जे० जो दा० अग्निकोन का र० रतिकर प० पर्वत त० उसकी च० चारोंदिशाओं में स० शक्र दे० देवेन्द्र की च० चार अ० अग्रमाहिषियों की ज० जम्बूद्वीप प्रमाण च० चार रा० राज्यधानियों प० कही सु० सुमना सो० सोमनसा अ० अर्चिमाली म० मनोरमा प० पद्मा सि० शिवा सु० शुचि अं० अंजू । त० तहां जे० जो

व नंदा, नंदोत्तरा, उत्तरकुरा, और देवकुरा अग्निकोनमें जो रतिकर पर्वत रहा है उसकी चारों दिशाओंमें शक्रेन्द्रकी पद्मा, शिवा, शुचि व अंजू नामक चार अग्रमहिषियोंकी एक लक्ष योजनकी च्यार राज्यधानियों कही है सुमना, सोमनसा, अर्चिमाली और मनोरमा नैऋत्य कोनमें रहा हुवा रतिकर पर्वतकी चारों दिशाओंमें ईशानेन्द्रकी अमला, अप्सरमा, नवमिका व रोहिणी नामक चार अग्रमहिषियों की एक लक्ष योजन

स्रा० नैऋत्य कान का र० रतिकर प० पर्वत त० उसकी च० चारों दिशा में म० शक्र दे० देवेन्द्रकी न० चार अ० अग्रमहिषियों की ज० जम्बूद्वीप प्रमाण च० चार रा० राज्यधानियों प० कही भू० भूता भू० भूतावतंसा गो० गोस्तूभा सु० सुदर्शना अ० अमला अ० अप्सरसा न० नवमिका रो० रोहिणी उ० उत्तर वायव्य कोन का र० रतिकर पर्वत त० उसकी च० चारोंदिशाओं में ई० ईशानेन्द्र की च० चार अ० अग्रमहिषियों की जं० जम्बूद्वीप प्रमाण च० चार रा० राज्यधानियां प० कही र० रत्ना र० रत्नोच्चया स० सर्वरत्ना र० रत्नसंचया व० वसु व० वसुगुप्ता व० वसुमित्रा व० वसुंधरा

जस्स दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्सणं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्ह अग्गमहिसीणं जंबूदीवपमाण मेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं० भूया, भूयवडिंसा, गोथूभा, सुदंसणा। अमलाए, अच्छराए, नवमियाए रोहिणीए। तत्थणं जेसे उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्सणं चउदिसिं ईसाणस्स चउण्ह अग्गमहिसीणं जंबूदीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं० रयणा, रयणोच्चया, सव्वरयणा, रयणसंचया। वसुए, वसुगुत्ताए,

की चार राजधानियों हैं भूता, भूतावतंसा, गोस्तूभा व सुदर्शना वायु कोनमें रहाहुवा रतिकर पर्वतकी नामक चार अग्रमहिषियोंकी जम्बूद्वीप

॥ १८ ॥ च० चार प्रकार के स० सत्य णा० नाम सत्य ठ० स्थापना सत्य द० द्रव्य सत्य भा० भाव सत्य ॥ १९ ॥ आ० आजीविक को च० चार प्रकार का स० तप उ० उग्रतप गो० घोरतप र० रस निर्यहनातप जि० जिह्वेन्द्रिय प० प्रतिसम्लीनता ॥ ४ ॥ च० चार प्रकार के सं० संयम म० मनसंयम

वसुमित्ताए वसुधराए ॥ ३८ ॥ चउव्विहेसच्चे प० तं० णामसच्चे, ठवणासच्चे,द व्वसच्चे भावसच्चे, ॥ ३९ ॥ आजीवियाण चउव्विहे तवे प० तं० उ गतवे, घोरतवे, रसनिज्जुहणया, जिब्भिदियपडिसलीणया ॥ ४० ॥

प्रमाण एक लक्ष योजनकी चार राजधानी कही हैं रत्ना, रत्नोच्चया, सर्वरत्ना व रत्नसंचया ॥ ३८ ॥ भगवनन चार प्रकारके सत्य कहे हैं जिस वस्तुका जो नाम होवे उसी नामसे उसे बोलाना सो नामसत्य, बहुत मनुष्य मीलकर अमुक वस्तुकी स्थापना करे कि यह शेर है, पाव है, तोला है, गाम है उसे उसी नामसे कहनासो स्थापना सत्य, अमुक में भावी गुणोंकी प्राप्ति होनेवाली है परंतु वर्तमानमें ही भावी गुणोपेत नामसे कहना सो द्रव्यसत्य जैसे राज्य पुत्रको राजा कहना, और जिसमें यथातथ्य गुणोंकी प्राप्ति होगइ होय भार फीर उसको उसी नाम से बोलाना सो भाव सत्य ॥ ३९ ॥ आजीविकमतानुसारीके चार प्रकारके तप कहे हैं १ उपवास छठ अष्टमादिक तप सो उग्रतप, लोक सुखकी वांच्छा रहित तप करना सो घोरतप, घृतादि रसकात्याग करना सो रसनिज्जूहणा और अच्छे बूरे आहारमें रागद्वेष नहीं करना सो जिह्वेन्द्रिय प्रतिसंलीनता ॥ ४० ॥ मन वचन व काया का निरोध करना तथा भंड उपकरण बहुमूल्य नहीं

व० वचन संयम का० काय संयम उ० उपकरण संयम च० चार प्रकार का त्यि० त्याग म० मनःत्याग व० वचन त्याग का० काय त्याग उ० उपकरण का त्याग च० चार प्रकार की अ० मन अकिंचनता व० वचन अकिंचनता का० काय अकिंचनता उ० उपकरण अकिंचनता ॥ ४१ ॥ ४ ॥ २ ॥

चउव्विहे संजमे प० त० मणसंजमे, वयसंजमे, कायसंजमे, उवकरणसंजमे, । चउव्विहे चियाए प० त० मणचियाए, वइचियाए, कायचियाए, उवकरण चियाए । चउव्विहा अकिंचणया प० त० मण अकिंचणया, वइअकिंचणया, काय अकिंचणया उवकरण आकिंचणया ॥ ४१ ॥ इति चउत्थ ठाणस्स बीओद्देसो सम्मत्तो ॥

चत्तारि राईओ प० तं० पव्वयराई, पुढविराई, वालुयराई उदगराई । एवामेव

रखना ऐसे चार प्रकारके संयम. अशुभ मन, वचन काया, व उपकरणका परिहार करना यह चार प्रकारका त्याग है उक्त चारोंपर ममत्वभाव कम करना सो चार प्रकारकी अकिंचनता ॥ ४१ ॥ यह चौथाठाणा का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा जो संयमी होगा वह कषाय कम करेगा यह उपदेश बतानेवाला तीसरा उद्देशा कहते हैं श्री श्रमण भगवंतने चार प्रकारकी रेखा कही पृथ्वी की रेखा, पत्थरकी रेखा, वालुकी रेखा और

च० चार रा० राजी (तराह) प० पर्वतराजी पु० पृथ्वीराजी वा० बालुराजी उ० पानी की तराह ए० ऐसेही च० चार मकार के को० क्रोध प० पर्वत की तराह समान पु० पृथ्वी की तराह समान वा बालु [रेती] की तराह समान उ० पानी की तराह समान। प० पर्वत की तराह समान को क्रोध में अ० प्रवेश करने वाला जी० जीव का० काल क० कर के ने० नारकीमें उ० उत्पन्न होता है पु० पृथ्वी की तराह समान को० क्रोध अ० करने वाला जी० जीव का० काल क० करता हैं ति० तिर्यंच योनि में उ० उत्पन्न होता है बा० बालु की तराह समान को० क्रोध अ० करने वाले जी० जीव का०

चउव्विहे कोहे प० तं० पव्वयराइसमाणे, पुढविराइसमाणे, वालुयराइसमाणे, उदगराइसमाणे । पव्वयराइसमाणं कोह मणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ णेरइएसु उववज्जइ, पुढविराइ समाणं कोहमणुप्पविट्ठे जीवे कालकरेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ, वालुयराइसमाणं कोह मणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

पानीकी रेखा ऐसेही चार मकारका क्रोध कहा १ पर्वतकी रेखा समान, यह क्रोध जीवन पर्यंत रहता है, और ऐसा क्रोधवाला पुरुष कालकरके नरकमें उत्पन्न होता है २ धरतीकी रेखा समान इस क्रोधकी स्थिति एक बरसकी है और ऐसा क्रोधी काल करके तिर्यंचमें उत्पन्न होता है ३ बालुकी रेखा समान क्रोधकी स्थिति चार मासकी है और ऐसा क्रोधी भीत कालकरके मनुष्यमें उत्पन्न होता है और ४ पानीकी रेखा समान